Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

।। जय गुरुदेव ।।

भिण्ड जिले का भौगोलिक, वास्तुशास्त्रीय अध्ययन

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर (म0प्र0)

की

पीएच0डी0 (विद्यावारिधि) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

वर्ष 2001

शोध निर्देशक
(भूगोल)
डॉ0 ओम प्रकाश जोशी
अध्यक्ष भूगोल विभाग
एम0जे0एस0 महाविद्यालय,
भिण्ड (म0प्र0)

शोध निर्देशक
(वास्तुशास्त्र)
प्रो0 ओम प्रकाश शर्मा
पूर्व परिसर प्रभारी
म0म0यो0वै0वि0वि0 परिसर
भिण्ड (म0प्र0)

शोधकर्ती
कु0 नीता पाण्डेय
म0म0यो0वै0वि0
परिसर ग्वालियर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह पुस्तक देय नहीं है।

सन्दर्भ पुस्तक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मूल्यांकन हेतु अग्रसारित

भुवनेश शर्मा
सङ्काय प्रमुखः / विभागाध्यक्षः
महर्षि वेद विज्ञान सङ्कायः
महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालयः
जबलपुरम् – म.प्र.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

।। जय गुरूदेव ।।

भिण्ड जिले का भौगोलिक, वास्तुशास्त्रीय अध्ययन

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर (म०प्र०)

की

पी-एच०डी० (विद्यावारिधि) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

वर्ष २००१

शोधकर्ती

कु० नीता पाण्डेय
एम०ए० (भूगोल)
शोधछात्रा म०म० यो०वै०
वि० परिसर, ग्वालियर

शोध निर्देशक
(भूगोल)
डा० ओम प्रकाश जोशी
अध्यक्ष भूगोल विभाग
एम०जे०एस० महाविद्यालय,
भिण्ड (म०प्र०)

शोध निर्देशक
(वास्तुशास्त्र)
प्रो० ओम प्रकाश शर्मा
पूर्व परिसर प्रभारी
म०म०यो०वै०वि०वि परिसर
भिण्ड (म०प्र०)

सह निर्देशक
डा० सुखदेव सिंह सेंगर
शिक्षा विभाग
भिण्ड (म०प्र०)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शोध निर्देशक का प्रमाण-पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि शोध छात्रा कु० नीता पाण्डेय महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर द्वारा प्रस्तुत "भिण्ड जिले का भौगोलिक, वास्तुशास्त्रीय अध्ययन" विषय पर एक मौलिक एवं अध्ययन परक शोध प्रबन्ध है। शोद्यार्थी ने परिश्रम एवं निष्ठा के साथ मेरे निर्देशन में निर्धारित समय तक उपस्थित रहकर शोधकार्य पूर्ण किया है।

निर्देशक

ओ० जोशी

(डा० ओम प्रकाश जोशी)
अध्यक्ष भूगोल विभाग
शासकीय महाराजा जीवाजी राव
सिन्धिया स्नाकोत्तर महाविद्यालय
भिण्ड (म०प्र०)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शोध निर्देशक का प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कु० नीता पाण्डेय शोध छात्रा "महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय जबलपुर" ने मेरे मार्गदर्शन में "भिण्ड जिले का भौगोलिक, वास्तुशास्त्रीय अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया है। उक्त शोध कार्य में कु० नीता ने विभिन्न स्थलों पर भ्रमण करके शोधपरक वास्तुशास्त्रीय अध्ययन कर शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया है।

वैदिक निर्देशक

ओ० प्र० शर्मा

(ओम प्रकाश शर्मा)
पूर्व प्राचार्य
ऋषीश्वर महाविद्यालय फूप
भिण्ड (म०प्र०)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Kåroundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सह निर्देशक का प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कुमारी नीता पाण्डेय शोध छात्रा महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय जबलपुर ने "भिण्ड जिले का भौगोलिक, वास्तुशास्त्रीय अध्ययन" विषय पर मेरे सह निर्देशन में शोधकार्य किया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध परिश्रम पूर्वक एवं अनुसन्धान परक तथा मौलिक है।

सह निर्देशक

(डा० सुखदेव सिंह सेंगर)
शिक्षा विभाग
जिला भिण्ड (म०प्र०)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घोषणा-पत्र

मैं कु० नीता पाण्डेय यह घोषित करती हूँ कि "भिण्ड जिले का भौगोलिक, वास्तुशास्त्रीय अध्ययन" विषयक प्रस्तुत शोध प्रबन्ध स्वयं के द्वारा संकलित तथ्यों के आधार पर मेरी मौलिक कृति है। मेरी जानकारी में इस विषय पर शोध प्रबन्ध किसी उपाधि के लिये किसी भी विश्वविद्यालय एवं अन्य शिक्षण संस्थान में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

शोधकर्ता

नीता पाण्डेय

(कु० नीता पाण्डेय)
म०म०यो०वै०वि०वि०
परिसर ग्वालियर (म०प्र०)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्राक्कथन

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध 'भिण्ड जिले के भौगोलिक, वास्तुशास्त्रीय अध्ययन' पर आधारित है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में भिण्ड जिले का भौगोलिक एवं यहाँ के प्रसिद्ध किलों, मन्दिरों, मस्जिदों, गढ़ियों, मठों एवं आवासों का अनुशीलनात्मक वास्तुशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। शोध प्रबन्ध तैयार करते समय विभिन्न कार्यालयों तथा पुस्तकालयों से जो सहयोग मिला है उसके लिये मैं उनकी हृदय से आभारी हूँ। मैं अपने पर्यवेक्षक डा० ओम प्रकाश जोशी, प्रो० ओम प्रकाश शर्मा तथा सहायक मार्गदर्शक डा० सुखदेव सिंह सेंगर की हृदय से आभारी हूँ, जिन्होनें अत्यन्त व्यस्त समय में से अल्प समय निकालकर मेरा सदैव मार्ग दर्शन किया है। मैं अपनी माता तुल्य मैडम डा० ओम कान्ता शर्मा (प्रो० ऋशीश्वर महाविद्यालय, फूप) की भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होनें मेरे कार्य में हमेशा उत्साह वर्धन किया है। मैं बड़ी बहन तुल्य डा० निरूपमा शर्मा (परिसर प्रभारी महर्षि महेश योगी महिला परिसर, भिण्ड) का भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होनें प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में कोई कठिनाई नहीं आने दी।

श्री काजी तनवीर तथा डा० किशोरी सिंह (रीडर के०के० महाविद्यालय, इटावा) की भी मैं हृदय से आभारी हूँ जिन्होनें भिण्ड जिले के बारे में अनेक जानकारियाँ प्रदान कीं। डा० रमाकान्त (सहायक प्रवक्ता के०के० महाविद्यालय, इटावा) तथा श्री आर०एस० दीक्षित (अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य थियोसोफीकल इण्टर कालेज, इटावा) की भी मैं हृदय से आभारी हूँ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

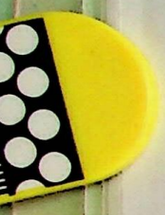

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अन्त में मैं अपने परम् पूज्य नाना जी एवं नानी जी की तथा अपने पूज्य पिता श्री महेश कुमार पाण्डेय एवं माता जी श्रीमती कमलेश पाण्डेय तथा चाचा जी समान श्री दाऊ दयाल वर्मा को कृतज्ञता ज्ञापन करती हूँ जिन्होनें इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण कराने में तन, मन तथा धन से पूर्ण सहयोग प्रदान किया है। मैं अपनी छोटी बहिन अंशुल पाण्डेय तथा छोटे भाई आकर्ष पाण्डेय की अत्यन्त आभारी हूँ, जिनसे किसी न किसी रूप में हमेशा सहयोग मिलता रहा है। मैं उन सभी व्यक्तियों की हृदय से आभारी हूँ, जिन्होनें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मेरे इस कार्य को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान किया।

मुझे आशा एवं विश्वास है कि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध "भिण्ड जिले का भौगोलिक, वास्तुशास्त्रीय अध्ययन" भिण्ड जिले की भौगोलिक एवं वास्तुशास्त्रीय जानकारियाँ प्रदान करेगा तथा यहाँ के निवासियों को वास्तुशास्त्रीय ज्ञानार्जन की ओर प्रेरित करने में सहयोग प्रदान करेगा।

शोधकर्ता

नीता पाण्डेय

(कु० नीता पाण्डेय)
२३२, न्यू कालोनी,
(अशोक मार्केट के पीछे)
चौगुर्जी
इटावा (उत्तर प्रदेश)
२०६००१

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Kâroundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

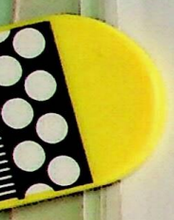

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रस्तावना

प्राचीन समय से ही भूगोल में अनेक भूगोलवेत्ताओं ने उसके विभिन्न अंगों का वर्णन किया है। यूनानी एवं रोमन भूगोलवेत्ताओं ने भूगोल के अन्तर्गत खगोलीय भूगोल, जलवायु, ऋतु परिवर्तन, कृषि की फसलों, उद्योगों, मानवीय बस्तियों, जिलों, यात्राओं आदि का वर्णन किया है। मध्य युग में ईसाई एवं अरब भूगोलवेत्ता यात्राओं का तथा विभिन्न देशों के यात्री लोग अनेक क्षेत्रों का भौगोलिक़ वर्णन करते रहे। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद भूगोल के अध्ययन में सभी देशों में गहरी रुचि ली गई। अब लोगों में इस विषय के प्रति जिज्ञासा तेजी से बढ़ रही है। आधुनिक समय में प्रतिवर्ष हजारों भौगोलिक शोधपत्र, पत्रिकायें अन्वेषण पत्र व पुस्तकें प्रकाशित हो जाती हैं और लगभग प्रत्येक दस वर्षों में इस विषय का साहित्य पहले से लगभग दो गुना हो जाता है।

किसी भी क्षेत्र के स्थापत्य का विकास उस क्षेत्र के भौगोलिक कारकों का ही प्रतिफल होता है। भौगोलिक कारक और उस क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधन वहाँ के निवासियों को प्रभावित करते हैं। निवासियों के भोजन, आवास, कृषि, उद्योग के साथ ही उनके शारीरिक गठन एवं चरित्र के पीछे भौगोलिक़ कारण ही निहित हैं। विशेषकर भिण्ड जिले के स्थापत्य पर भौगोलिक तत्वों का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित है। अतः उन्हीं तत्वों को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थिनी ने शोध कार्य करने की रुपरेखा तैयार की है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Kåroundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मध्य प्रदेश में भिण्ड जिले की स्थिति महत्वपूर्ण है। यहाँ पर भू-संरचना की दृष्टि से विभिन्न कल्पों की शैलें देखने को मिलती हैं। यह जिला ४४५६ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है। प्राकृतिक बनावट की दृष्टि से यह जिला मध्यप्रदेश के अन्य जिलों से भिन्न है। यहाँ के निवासियों पर यहाँ की जलवायु, अपवाहतन्त्र, मिट्टियों तथा प्राकृतिक वनस्पति का विशेष प्रभाव पड़ा है।

क्षेत्रीय अपवाहतन्त्र के कारण यहाँ के उच्चावचन में विषमता पायी जाती है। भिण्ड जिले की नदियों ने लम्बे समय से अपरदन कार्य करते हुए एक विस्तृत भू-भाग को ऊबड़-खाबड़ भूमि में परिवर्तित कर दिया है, जिसे स्थानीय भाषा में 'भरका' कहते हैं। प्राकृतिक दृष्टि से इस जिले को विभिन्न बीहड़ी तथा मैदानी क्षेत्रों में विभक्त किया गया है।

इस जिले के ८६१२ हैक्टेअर भूमि पर वन फैले हैं। यहाँ मुख्य रुप से नीम, पीपल, इमली, शीशम, बबूल आदि के वृक्ष पाये जाते हैं। सरकार इन वनों के विस्तार के लिये प्रयत्नशील है। यहाँ पर कहीं-कहीं कटीली झाड़ियाँ भी पायी जाती हैं। ये झाड़ियाँ प्राचीन समय से आज तक विभिन्न दस्युदलों का संरक्षण स्थल बनी हुई हैं। दस्युओं की समस्या के कारण ही यहाँ के घरों के निर्माण में सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा जाता है। भिण्ड जिले के सभी गाँव एवं नगरों में अधिकांश भवन वास्तुशास्त्र के अनुसार नहीं बनाये गये हैं। यहाँ के निवासियों में वास्तुशास्त्रीय ज्ञान का अभाव है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस जिले में ८८८ मानव बस्तियाँ पायी जाती हैं। सबसे अधिक गाँव गोहद तहसील में हैं। यहाँ सघन एवं बिखरी दोनों प्रकार की बस्तियाँ हैं। यहाँ की बस्तियों के प्रतिरूपों में आयताकार, पँक्तिनुमा, त्रिभुजाकार, अनियमित या अनाकार आदि प्रतिरूप प्रमुख हैं। भिण्ड जिले में ११ नगरीय केन्द्र हैं जिनमें भिण्ड यहाँ का प्रमुख नगर है। इसकी जनसंख्या १०६,७५५ है।

प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का मुख्य उद्देश्य भिण्ड जिले का भौगोलिक एवं वास्तुशास्त्रीय अध्ययन करके जनकल्याण की कामना करना है। क्षेत्रीय नियोजन के परिवेश में इस शोध प्रबन्ध के उद्देश्य निम्नांकित हैं –

(i) भिण्ड जिले की समग्र रूपरेखा प्रस्तुत करना।

(ii) भूमि की बनावट, नदियों, मैदान, ऊबड़-खाबड़ भूमि का अध्ययन करना।

(iii) यहाँ के निवासियों पर यहाँ की जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति के प्रभाव का विश्लेषण करना।

(iv) यहाँ के नगरीय, ग्रामीण अधिवास तथा नवनिर्मित एवं प्राचीन भवन निर्माण की कला का विश्लेषण करना।

(v) भिण्ड जिले के प्रसिद्ध किलों, गढ़ियों तथा छत्री में प्रयुक्त तत्कालिक वास्तुशास्त्र के महत्व का विश्लेषण करना।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

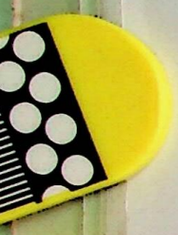

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(vi) भिण्ड जिले के विभिन्न मन्दिर, मस्जिद, मठों का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन करना। यहाँ के निवासियों के भवनों में वास्तुशास्त्रीय गुण दोषों का विश्लेषण करना।

(vii) भूली हुई वास्तुविद्या से लोगों को परिचित कराना एवं भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार ही भवन बनाने के लिये प्रेरित करना।

शोध प्रबन्ध में प्रयुक्त विधितन्त्र :

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध एक क्रमबद्ध अध्ययन है। भारत के नियोजन में जिले को क्षेत्रीय नियोजन इकाई के रूप में वरीयता प्रदान की गयी है। इस शोध प्रबन्ध में जिले की तथा उसकी तहसीलों के आँकड़े उपलब्ध किये गये हैं। विभिन्न बिधियों के प्रयोग द्वारा विश्लेषण करके तथ्यों को ज्ञात किया गया है। वास्तुशास्त्रीय अध्ययन करने के लिये शोधकर्ता ने स्वयं भिण्ड जिले के चुने हुए स्थानों में जाकर उनका शोधपरक दृष्टि से अध्ययन करके विश्लेषण किया तथा चुने हुए क्षेत्रों के फोटोग्राफ्स प्राप्त करके संग्रहीत किये हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

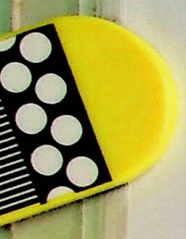

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड जिले का भौगोलिक, वास्तुशास्त्रीय अध्ययन

अध्याय : एक - भिण्ड जिले का सामान्य परिचय - पृष्ठभूमि

१:१ सामान्य परिचय

१:२ स्थिति तथा विस्तार

१:३ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

१:४ भिण्ड जिले का सामाजिक परिवेश

१:४:१ सामाजिक परिवेश

१:४:२ धार्मिक परिवेश

१:४:३ सांस्कृतिक परिवेश

अध्याय : दो - भिण्ड जिले की भौगोलिक संरचना

२:१ भिण्ड जिले का उच्चावचन

२:२ भिण्ड जिले की जलवायु

२:३ भिण्ड जिले का अपवाह तंत्र

२:४ भिण्ड जिले की मिट्टियां

२:५ भिण्ड जिले की वनस्पति

अध्याय : तीन - भिण्ड जिले के अधिवासों का अध्ययन

३:१ ग्रमीण अधिवास

३:२ नगरीय अधिवास

३:३ पूर्व निर्मित एवं वर्तमान निर्मित अधिवासों की तुलना

अध्याय : चार - भिण्ड जिले की ऐतिहासिक इमारतों का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन

४:१ भिण्ड जिले के किले

४:१-१ भिण्ड का किला

४:१-२ अटेर का किला

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४:१-३ गोहद का किला

४:१:२ भिण्ड जिले की गढ़ियाँ

४:१:२:१ मछण्ड की गढ़ी

४:१:२:२ लहार की गढ़ी

४:१:२:३ आलमपुर की गढ़ी

४:१:२:४ इन्दुरखी की गढ़ी

४:१:२:५ ज़मुहां की गढ़ी

४:१:३ मल्हारराव होल्कर छत्री (स्मारक)

अध्याय : पाँच - प्राचीन धार्मिक मन्दिरों का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन

५:१ भिण्ड जिले के जैन सिद्धक्षेत्रीय मन्दिर

५:१:१ बरही मन्दिर

५:१:२ बरासों मन्दिर

५:१:३ पावई मन्दिर

५:२ भिण्ड जिले के प्राचीन शिव मन्दिर

५:२:१ वनखण्डेश्वर मन्दिर, भिण्ड

५:२:२ शिव मन्दिर बोरेश्वर

५:२:३ नंदीश्वर मन्दिर बूढ़ा सोंसरा

५:२:४ हरिहरेश्वर शिव मन्दिर, आलमपुर

५:३ भिण्ड ज़िले के प्राचीन हनुमान मन्दिर

५:३:१ हनुमान मन्दिर दंदरौआ

५:३:२ हनुमान मन्दिर कांकसी

५:३:३ हनुमान मन्दिर डिड़ी

५:३:४ हनुमान मन्दिर नवादा बाग

५:३:५ हनुमान मन्दिर जामना

५:४ अन्य मन्दिर

५:४:१ मठीपुरा की माता

५:४:२ बैजनाथ मन्दिर मिहोना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

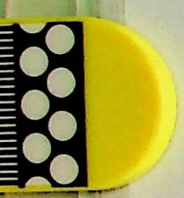

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:४:३ स्वामी केशवानन्द मन्दिर रजपुरा

५:४:४ सूर्य मन्दिर मिहोना

५:४:५ मलखन का मन्दिर रेहकुलादेवी

५:४:६ मंगलादेवी मन्दिर लहार

५:४:७ चामुण्डादेवी मन्दिर अटेर

५:४:८ रामजनकी मन्दिर एस०ए०एफ० भिण्ड

५:४:९ अन्य मन्दिर

अध्याय : छः - प्राचीन मठों-मस्जिदों का अध्ययन

६:१ कुशवाह मठ गोहद चौराहा

६:२ महावीरगंज मस्जिद भिण्ड

६:३ नयापुरा मस्जिद भिण्ड

६:४ आलमपुर की प्राचीन मस्जिद

अध्याय : सात - उपसंहार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

DISTRICT BHIND
LOCATION

India

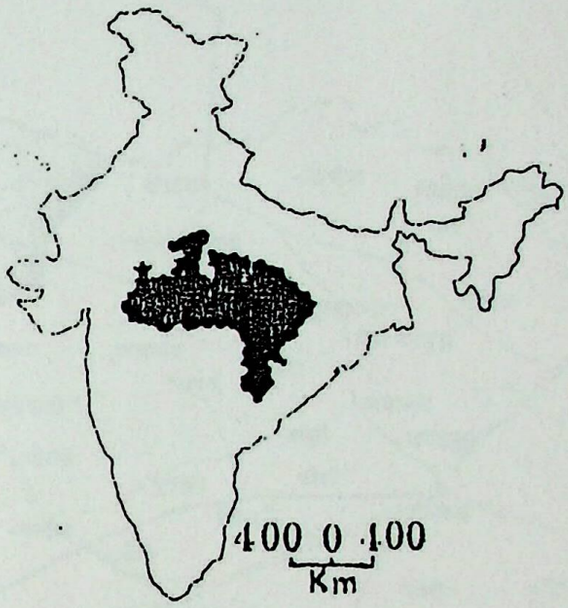

Madhya Pradesh

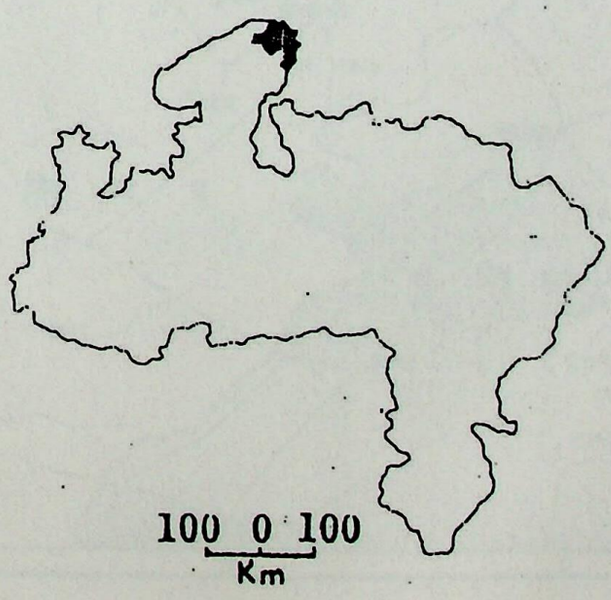

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय – एक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

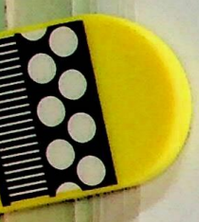

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड जिले का सामान्य परिचय - पृष्ठभूमि

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

"भूगोल वह आभामय विज्ञान है जो कि पृथ्वी की झलक स्वर्ग में देखता है।"

टॉलेमी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

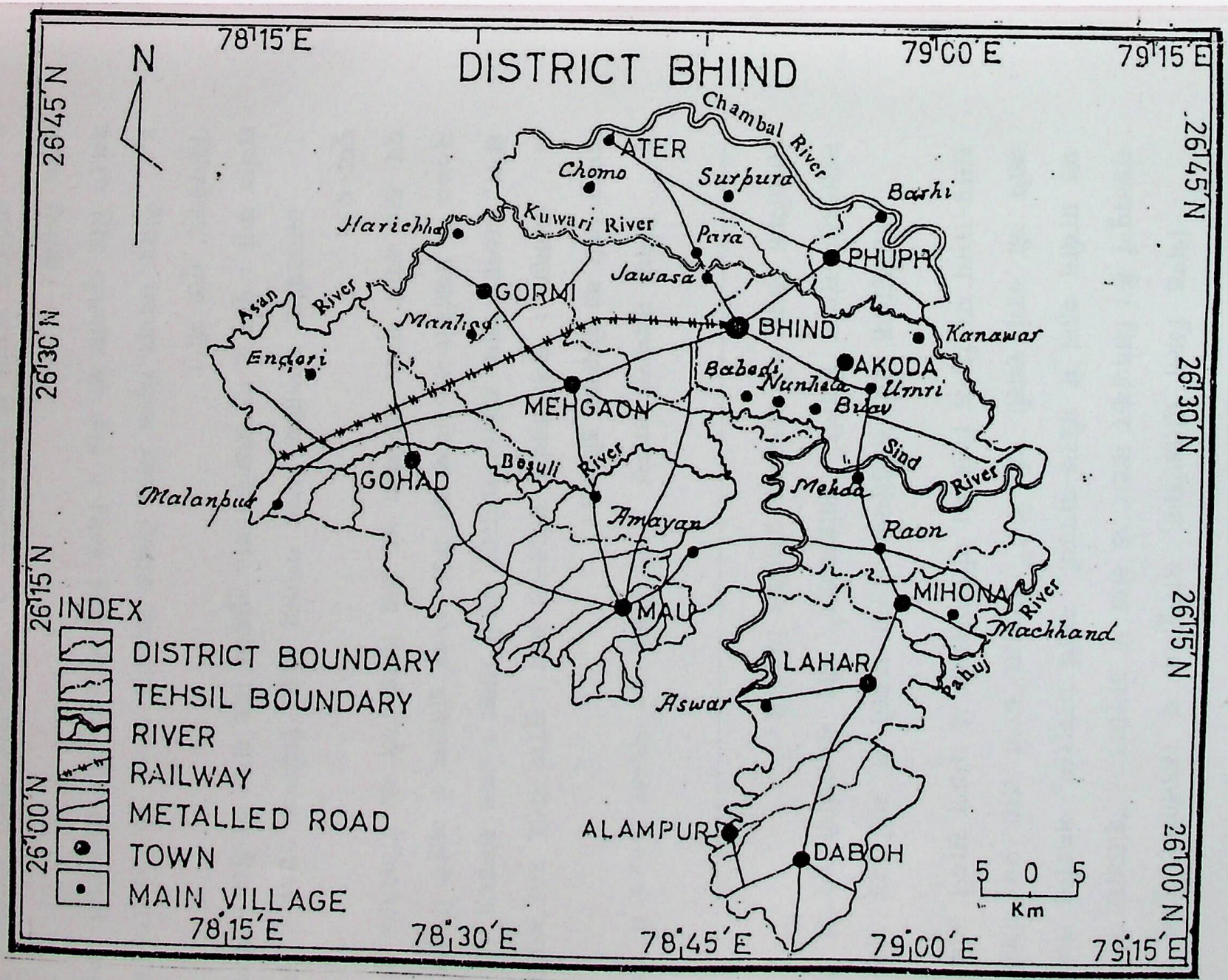

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१) भिण्ड जिले का सामान्य परिचय - पृष्ठभूमि

भिण्ड जिला ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। शिवशंकर कटारे के लेख के अनुसार - "इतिहास की दृष्टि से यह प्राचीन काल में कौरव-पाण्डवों, महर्षि परशुराम, जमदग्नि तथा भिण्डी ऋषि की कार्य स्थली रही है।"[१] इतिहास ग्रन्थों तथा पत्र पत्रिकाओं में समय-समय पर भिण्ड जिले की ऐतिहासिकता के प्रमाण सामने आये है।[२]

सांस्कृतिक एवं साहित्यिक चेतना जगाने में यहाँ कई राजनीतज्ञ[३], स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी[४], साहित्यकार[५] और समाजसेवी हुए हैं, जिन्होनें सामाजिक जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है।

---

१. दैनिक नवभारत टाइम्स : नई दिल्ली २१ नवम्बर १९८१ में प्रकाशितः चम्बल घाटी का रोमांचक इतिहास।

२. फनकार : काजी तनवीर अभिनन्दन ग्रन्थ : सुरेश नीरव, डा० सुखदेव सिंह सेंगर, अ०भा० भाषा साहित्य सम्मेलन दिल्ली साखा : प्रथम संस्करण १५ अगस्त २००० में प्रकाशित डा० मिश्रा का लेख- भिण्ड इतिहास के आइनें में पृष्ठ ६०५ एवं डा० श्याम सुन्दर सोनकिया का लेख भिण्ड जिले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पृष्ठ-६१६

३. आउटपोस्ट साप्ताहिक भिण्ड गणतन्त्र दिवस विशेषांक १९९८ : सम्पादक संजीव वर्मा : पृष्ठ ८ पर प्रकाशित डा० सुखदेव सिंह सेंगर का लेख - 'भिण्ड के 'किंगमेकर' भूता जी'।

४. दैनिक उदगार भिण्ड जिला विकास विशेषांक १९९३ पृ० ८८ पर प्रकाशित बजरंग सिंह कुशवाह का लेख - भिण्ड जिले के प्रथम और पश्चातवर्ती स्वतन्त्रता संग्रम सेनानी।

५. ग्वालियर संभाग के साहित्यकारः डा० सुखदेवसिंह सेंगरः अनामिका हिन्दी साहित्य समिति, ग्वालियर १९८१।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV),"Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

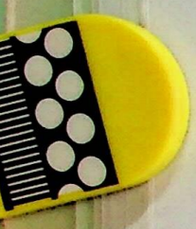

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भौगोलिक दृष्टि से इस जिले में कृषि योग्य जमीन, वन-सम्पदा, खनिज और नदियाँ यहाँ के जन-जीवन के लिये पर्याप्त सहयोगी और सहभागी हैं। भिण्ड जिले का सामान्य परिचय और पृष्ठिभूमि निम्नांकित बिन्दुओं में प्रस्तुत है -

१.१ सामान्य परिचय :

भिण्ड जिला भारत के मध्य-प्रदेश राज्य के उत्तरी-पश्चिमी भाग में स्थित है इसके पूर्व में जालौन, झाँसी जो उत्तर-प्रदेश में स्थित है तथा पश्चिम में मुरैना जो कि मध्य प्रदेश की सीमा के अर्न्तगत आता है तथा इसके उत्तर में आगरा और इटावा जिले स्थित हैं इटावा तथा आगरा जिले उत्तर प्रदेश के अर्न्तगत आते हैं। भिण्ड के दक्षिण में दतिया तथा ग्वालियर जिले स्थित हैं जो मध्य प्रदेश के भू-भाग में आते हैं।

भू-आकृतिक दृष्टि से भिण्ड जिला प्रान्त के अन्य भागों से पर्याप्त भिन्नता रखता है। भिण्ड जिले का धरातलीय निर्माण नदियों द्वारा लायी गयी मिट्टी और वर्षा के पानी के कटाव से हुआ है। यह जिला चम्बल सम्भाग में पूर्व की ओर है। भिण्ड जिला यहाँ की प्रसिद्ध नदियों चम्बल, सिन्ध, क्वारी तथा पहूज की घाटियों में स्थित है। "भिण्ड जिले की अधिकतम लम्बाई १०५ किमी० है।"[१]

---

१. चम्बल के आस-पास : डा० कालीचरण स्नेही सांस्कृतिक चेतना समिति लहार, प्रथम संस्करण १९९८ : भिण्ड जिला इतिहास के आइने में : डा० बी० एस० अनन्त : पृष्ठ - १९

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV),*Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१.२ स्थिति तथा विस्तार :

मानचित्र के अनुसार भिण्ड जिले का अक्षांशीय विस्तार २५° - ५५' उत्तरी अक्षांश से २६° - ४८' उत्तरी अक्षांश तक तथा देशान्तरीय विस्तार ७८° - १२' से ७९° - ०५' पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है।

भिण्ड जिले का कुल क्षेत्रफल जिला सांख्यकीय पुस्तिका के अनुसार ४४५९.० वर्ग किलोमीटर है।[1] १९९१ की जनगणना के अनुसार भिण्ड जिले की जनसंख्या १२१९०००है। भिण्ड जिले में ८८७ गाँव तथा ११ कस्बे हैं।

भिण्ड जिले की समुद्र तल से ऊँचाई ५००' से ६००' तक है।[2]

जिला जनगणना पुस्तिका १९९१ के अनुसार भिण्ड जिले की प्रशासनिक दृष्टिकोण से सात तहसीलें ... गोहद, अटेर, भिण्ड, मेहगाँव, रौन व लहार हैं तथा छः विकास खण्ड हैं।

---

१. जिला सांख्यकी पुस्तिका १९९६ : जिला सांख्यिकी कार्यालय, भिण्ड।

२. सेंसस ऑफ इण्डिया १९६१ : मध्य प्रदेश : डिस्ट्रिक सेंसस हैण्डबुक भिण्ड डिस्ट्रिक जी० जगथपति : पब्लिशस्ड बाई दि गॉवमेन्ट मध्य प्रदेश १९८४ पृष्ठ = ३७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV),'Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

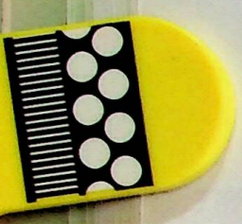

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रशासनिक ढाँचा

जिला	तहसील	ब्लाक	प्रशासनिक उपविभाग
भिण्ड	अटेर	अटेर	१. अटेर
			२. फूप
	भिण्ड	भिण्ड	१. पीपरी
			२. भिण्ड
			३. ऊमरी
	मेहगाँव	मेहगाँव	१. गोरमी
			२. मेहगाँव
			३. अमायन
	गोहद	गोहद	१. खण्डोरी
			२. गोहद
			३. देहगाँव
			४. मौ
	रौन	रौन	१. रौन
	मिहोना	मिहोना	१. मिहोना
	लहार	लहार	१. लहार
			२. दबोह
योग	०७	०६	१६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१.३ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

भिण्ड जिले का नाम भिण्ड कस्बे के नाम पर रखा गया। जनश्रुति के अनुसार भाण्डव ऋृषि ने अपने नाम पर इस कस्बे का नाम रखा। बाद में इन्हें लोग भिण्डी ऋषि के नाम से जानने लगे। इसी कस्बे के नाम से यह भिण्ड जिला कहलाया।

"पृथ्वीराज चौहान चन्देल सेनापति मलखान से युद्ध करने के लिये सिरसागढ़ जाते हुए यहाँ से गुजरा था। चौहान नरेश पृथ्वीराज मलखान को धोखा देने के लिये ग्वालियर से बटेश्वर की ओर मुड़ गया और उसने यह घोषणा की कि वह वटेश्वर भगवान शंकर के दर्शन को जा रहा है। बटेश्वर से वह सीधा भिण्ड पहुँचा। उसने वर्तमान नगर में उस स्थान पर पड़ाव डाला जहाँ वनखण्डेश्वर का मन्दिर स्थित है। कहते हैं कि पृथ्वीराज चौहान शिव की पार्थिव पूजा किया करता था। उसने यहाँ भगवान शंकर की पूजा की और शिवलिंग स्थापित किया।"[१] उसी ने एक मील लम्बे तथा दो सौ पचास फीट चौड़े एक भव्य तालाब का निर्माण कराया इसका नाम भगवती पार्वती के नाम पर 'गौरी तालाब' रखा गया। वन खण्ड में स्थापित होने के कारण मन्दिर का नाम वनखण्डेश्वर पड़ा।[२]

---

१. भदावर का इतिहास : डा० एस०के० जैन : डा० शिव शंकर कटारे : प्रथम संस्करण १९८४ : पृष्ठ - १२४

२. कैलाश श्रीवास्तव : स्मारिका : संम्भाग स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता : १९७६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुछ समय पश्चात गौरी तालाब का जीर्णोद्धार भदौरिया शासकों ने कराया तथा इसके घाट सुन्दर बनवाये। स्थानीय लोगों के अनुसार यहाँ पर एक सौ एक मन्दिर बनवाये गये थे। इसमें से बहुत से मन्दिर आज भी भग्नावस्था में मौजूद हैं।

जनश्रुति के अनुसार भिण्ड भदौरिया राजपूतों की राजधानी रही है लेकिन वास्तव में भिण्ड भदौरिया राजपूतों की राजधानी न होकर उनकी उपराजधानी थी। उनकी राजधानी तो अटेर थी। यद्यपि भिण्ड के साथ भदावर नाम जुड़ जाने से सामान्य लोग यह समझने लगते है कि यहाँ पर भदौरिया राजपूतों का सर्वाधिक महत्व रहा है लेकिन वर्तमान समग्र भिण्ड जिले के भू-भाग पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट होता है, कि भिण्ड जिले में बहुत कम ही भू-भाग पर भदौरिया राजपूतों का प्रभाव था। यहाँ पर भदौरियों की अपेक्षा कुशवाह क्षत्रियों का भिण्ड जिले के अधिक भू-भाग पर प्रभाव रहा है। भदौरिया राजाओं ने यहाँ पर चार सौ वर्षों के राज्यकाल में भिण्ड, पिनाहट, कचौरा, बटेश्वर, परा, जवासा, अटेर, नौगाँव तथा कनेरा में किले बनवाये थे। वर्तमान में भिण्ड जिले के अर्न्तगत जितना भू-भाग है वह विभिन्न समयावधियों में प्रथक-प्रथक राजसत्ताओं के द्वारा शासित रहा है।

पुरातात्विक दृष्टि से भी भिण्ड जिला विशेष महत्वपूर्ण है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग भिण्ड जिले के पुरातात्विक सर्वेक्षण में विशेष कार्य कर रहा है। बाराहेड़ में स्थानीय एक सरोवर के पास चार 'मण्डपिकायें' एवं अन्य पुरावशेष यत्र-तत्र विखरे हैं। इन पुरावशेषों में विशेष उल्लेखनीय एक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विलक्षण लिंग विग्रह है। यह शिवलिंग अपनी अनूठी कलात्मक शैली की विशिष्टताओं के कारण विलक्षण है। नागों के सिक्के पदमावती तथा कान्तिपुरी के अतिरिक्त नरवर, अकोड़ा, गोहद आदि स्थानों से भी प्राप्त हुए हैं।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि भिण्ड ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। भिण्ड जिले की प्राचीनता का प्रस्तुत विवरण भिण्ड जिले के क्रमिक विकास एवं विभिन्न राजनीतिक हलचलों को स्पष्ट करता है। भिण्ड जिला ऐतिहासिक दृष्टि से ही नहीं वरन् भौगोलिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१.४ भिण्ड जिले का सामाजिक परिवेश :

भिण्ड जिला विभिन्न जातियों, धर्मों और सांस्कृतिक संस्कारों को लिये हुए एक निश्चित भू-भाग है जिसमें कहीं बीहड़-भरके हैं कहीं समतल मैदान हैं तो कहीं पहाड़ी भू-भाग हैं।

सामाजिक चेतना की दृष्टि से यहाँ स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों ने अपना पूर्ण योगदान दिया। यहाँ के सेनानी अंग्रेजी प्रशासन को अव्यवस्थित करने, भारतियों में स्तवन्त्रता की जागृति पैदा करने, राजनीतिक सम्मेलन आयोजित करने, रेल की पटरियाँ उखाड़ने, टेलीफोन के तार काटने तथा जिले की जनता को संगठित करने और जागरूक करने की दृष्टि से साइक्लोस्टाइल कर अखवार तथा पर्चे निकालकर वितरित करने जैसे महत्वपूर्ण कार्य करते रहे; जिसके अपराध में उन्हें जेल भी जाना पड़ा। स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों में श्री रघुवीर सिंह कुशवाह एवं श्री श्रीनाथ गुरू का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

भिण्ड जिले में प्रायः सभी जाति और वर्ग के लोग निवास करते हैं। किसान, व्यापारी, नौकर-पेशा, मजदूर आदि व्यावसाय में संलग्न लोग अपनी जीविका का निर्वाह करते हैं। यहाँ के सामाजिक परिवेश को डाकुओं (दस्युओं) ने बहुत प्रभावित किया है। जिले के इस सामाजिक परिवेश को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत प्रस्तुत किया गया है -

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१:४:१ सामाजिक परिवेश :

बारह लाख उन्नीस हजार जनसंख्या वाले इस जिले का सामाजिक परिवेश एक जैसा न होकर विविधता लिये हुए है।

यहाँ पर कई जातियों व धर्मों के लोग रहते हैं, शैक्षणिक दृष्टि से भी यह जिला पिछड़ा हुआ है। औद्योगिक इकाइयाँ न होने के कारण निम्न वर्ग के लोग मजदूरी पर निर्भर रहते हैं। सम्पन्न और समर्थ लोग व्यापार धन्धों में लगे हुए हैं। इस प्रकार की विभिन्न स्थितियों और स्तरों के अनुसार सामाजिक विषमता होना स्वभाविक है।

भिण्ड जिले में व्यवहृत बोली रूपों पर विचार एवं शोध करने हेतु सरलता एवं सुबोधता की दृष्टि से इस भू-भाग को जातिगत आधार पर घारों में विभाजित कर लिया गया है। भिण्ड जिले में प्रायः सभी जातियाँ निवास करती हैं।

जातिगत आधार पर डा० प्रताप नारायण उपाध्याय ने इस क्षेत्र को प्रमुख रूप से चार घारों जिनमें भदावर, कद्दवाह, जटवारा तथा बुन्देलखण्ड में विभाजित किया है।

श्री बिजेन्द्र सिंह चौहान[1] ने अपने शोध कार्य में भिण्ड जिले को छः

---

१. चम्बल के आस-पास : डा० कालीचरण स्नेही : सांस्कृतिक चेतना समिति लहार (भिण्ड) म०प्र० : अगस्त १९८८ : डा० सीताकिशोर खरे द्वारा लिखित कछवाहघारी की भाषा वैज्ञानिक रुपरेखा : पृष्ठ १९१

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निम्नांकित घारों में विभाजित किया है -

(i) भदावर घार।

(ii) कछवाह घार।

(iii) राजपूत घार।

(iv) तौंर घार।

(v) गूजर घार।

(vi) जटवारौ।

डा० प्रतापनारायण ने 'घार' को विशिष्ट जाति समूह बहुल क्षेत्र तो स्वीकार किया है पर वे अपने वर्गीकरण में भिण्ड जिले की लहार और मेहगाँव तहसीलों के ८४ गाँवों में बसे हुए राजपूत घार का विवरण देना छोड़ गये।

श्री बिजेन्द्र सिंह चौहान[1] ने घारों की संख्या छः रखी उसमें तौंर घार तथा गूजर घार को सम्मलित किया है किन्तु उन्होनें इन घारों की भौगोलिक स्थिति नहीं दी है। अतः भिण्ड में तोमर बहुल इलाका और गूजर बहुल इलाका निश्चित नहीं किया जा सकता। लहार तहसील में दबोह, आलमपुर इलाके में 'कौरव' जाति के बयालीस गाँव हैं तथा मेहगाँव तहसील में लोधियों की 'नरवरिया' शाखा के बावन गाँव हैं। इन दोनों घारों को वर्गीकरण में सम्मलित न करना भी उचित नहीं है।

---

१. चम्बल के आस-पास : डा० कालीचरण स्नेही : सांस्कृतिक चेतना समिति लहार (भिण्ड) म०प्र० : अगस्त १९८८ पृष्ठ - १९

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

डा० श्याम सुन्दर सोनकिया ने सम्पूर्ण जिले की स्थिति पर दृष्टिपात करते हुए घारों के आधार पर भिण्ड जिले को इस तरह वर्गीकृत[1] किया है-

(१) भदावर घार -

सम्पूर्ण भिण्ड तहसील तथा मेहगाँव तहसील का उत्तरी-पश्चिमी भाग।

(२) जटवारा -

गोहद तहसील तथा मेहगाँव तहसील का दक्षिणी-पूर्वी भाग।

(३) राजपूत घार -

मेहगाँव तहसील एवं लहार के चौरासी गाँव।

(४) नरवरिया घार -

नरवरिया लोधियों के मेहगाँव तहसील के उत्तरी भाग में स्थित बावन गाँव।

(५) कछवाया घार -

लहार तहसील के बत्तीस गाँव तथा भिण्ड तहसील के बावन गाँव को मिलाकर चौरासी गाँव।

---

१. जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (१९७१) : भिण्ड मुरैना के लोकगीत : डा० प्रताप नारायण उपाध्याय : पृष्ठ - २

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(६) कौरवों के बयालीस गाँव लहार तहसील का दबोह और आलमपुर इलाका।

उपर्युक्त घारों के वर्गीकरणोपरान्त यहाँ पर उचित प्रतीत होता है कि जातियों के आधार पर निर्मित घारों को पूर्णता प्रदान करने की दृष्टि से छः के स्थान पर नौ घारें बनायी जायें।

भिण्ड जिले के सामाजिक परिवेश को प्रमुख रूप से घारों में विभक्त किया गया है जो जाति विशेष के बसाव, उनके रहन-सहन और उनकी सांस्कृतिक विशेषताओं के लिये पृथक से जाना जाता है। अतः यहाँ पर नौ घारों का संक्षिप्त विवेचन निम्नांनुसार प्रस्तुत है -

(१) कछवाहा घार :

डा० सोनकिया के अनुसार[1] "यह घार कछवाहों की चौरासी कहा जाता है। यह चौरासी बावन-बत्तीसी से मिलकर बनी है।" रौन और लहार तहसील के बत्तीस तथा भिण्ड तहसील के बावन गाँवों को मिलाकर कुल चौरासी गाँव कछवाह घार के अर्न्तगत आते हैं। यह क्षेत्र लहार, रौन, भिण्ड तहसीलों के अन्तर्गत आते हैं तथा भिण्ड तहसील का पूर्वी भाग रौन और लहार तहसील मुख्यालय से पश्चिमोत्तरी भू-भाग कछवाह घार के नाम से जाता है।

---

१. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन : डा० श्याम सुन्दर सौनकिया : आराधना ब्रदर्स कानपुर, १९९६ पृष्ठ - २३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस क्षेत्र में कुशवाह राजपूतों की जनसंख्या आधिक्य के कारण यह क्षेत्र कछुवाहा घार कहलाया। चूँकि वर्तमान में अब काछी लोग भी अपने नाम के पीछे कुशवाह लिखने लगे हैं। इसलिये कुशवाह राजपूतों ने अब अपने नाम के पीछे राजावत लिखना आरम्भ कर दिया है।

(२) कौरव घार :

यह क्षेत्र लहार तहसील मुख्यालय के उत्तरी पूर्वी दिशा में दबोह और आलमपुर नगरों के आस-पास बसा है। इसके अर्न्तगत बयालीस लहार तहसील के गाँव सम्मिलित हैं। कौरव जाति के लोगों का आधिक्य होने से यह क्षेत्र कौरव घार के नाम से जाना जाता है।

(३) सराय घार :

यह क्षेत्र भिण्ड नगर से लगभग आठ से दस किलोमीटर की दूरी पर बहती हुई क्वारी नदी के उस पार का पूर्वोत्तर क्षेत्र है जो फूप नगर के आस-पास ग्राम भवनपुरा नयी गढ़ी, साँकरीं, बरही, भदाकुर, सराया, सकराया, दुलहगन, किसूपुरा, रमाकोसण, जमसारा, अटेर आदि गाँव तथा कस्बे सरायघार के अन्तर्गत आते हैं। यानिकि क्वारी और चम्बल नदी के बीच भिण्ड जिले का भू-भाग सरायघार में आता है। इस क्षेत्र में भदौरिया जाति के लोगों का आधिक्य है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(४) नरवरिया घार :

नरवरिया जाति को लोधी राजपूत भी कहते हैं। यह क्षेत्र भिण्ड जिला मुख्यालय से पश्चिम की ओर है। जिसकी सीमा क्वारी नदी ने पश्चिम और दक्षिण की ओर बनायी है। नरवरिया घार के प्रमुख ग्रामों में पुर, ऐंतार, पीपरी, नुनहड़, गोअर, खुर्द, पचैरा, मसूरी, बगुलरी, पुटरौली, कचनाऊ कला, सुकान्ड, आरौली परोसा, बेंदीपुरा आदि आते हैं। मेंहगाँव तहसील के उत्तरी भाग में स्थित बावन गाँव इसमें सम्मलित हैं।

(५) जटवारा :

गोहद तहसील तथा मेहगाँव तहसील का दक्षिणी-पूर्वी भाग जटवारा या जाट घार कहा जाता है। यहाँ पर किसी समय जाट राजाओं का राज्य रहा था।

(६) राजपूत घार :

इस घार के अन्तर्गत मेहगाँव तहसील का दक्षिणी-पूर्वी भाग एवं लहार तहसील के पश्चिमी भाग को मिलाकर कुल चौरासी गाँव आते हैं। यहाँ के प्रमुख निवासी चौहान (राजपूत) हैं।

(७) भदावर घार :

भदावर घार के भू-भाग की पट्टी लहार से उत्तर की ओर सम्पूर्ण भिण्ड तहसील का उत्तर-पश्चिमी भाग इसके अन्तर्गत आता है। इससे आगे चम्बल नदी को पार कर उत्तर-प्रदेश की सीमा में चला जाता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भदौरिया राजपूतों का आधिक्य होने के कारण यह क्षेत्र भदावर के नाम से जाना जाता है।

(८) तौंर घार :

गोहद तहसील का उत्तरी भाग तौंर घार के नाम से जाना जाता है। इसमें प्रमुख रूप से खनेता, एण्डोरी, शेरपुर आदि गाँव आते हैं। इस घार में निवास करने वाली प्रमुख जाति तोमर है। जिसे सुविधा की दृष्टि से तौंर या तंवर भी कहते हैं।

(९) गूजर घार :

भिण्ड जिला में यद्यपि अन्य घारीय जातियों की अपेक्षा गूजरों के गाँवों की संख्या कम है। फिर भी एक निश्चित क्षेत्र में बसे होने के कारण 'गूजर घार' नाम प्रथक से लिया जाना उचित होगा।

भिण्ड जिले की उक्त नौ घारों का सामाजिक परिवेश उनके साथ ही दिया जाना उचित नहीं है, क्योंकि घारों में बसे जाति बहुल जनों के अतिरिक्त अन्य जातियों के लोग भी उनमें बसे हुए हैं। जो अपने मुख्य व्यवसाय के साथ-साथ निम्न वर्ग के लोग मजदूरी का कार्य भी करते हैं। अतः यहाँ पर सामाजिक परिवेश को अलग से दिया जाना ही उचित होगा।

भिण्ड जिले में निवास करने वाली औरतें वस्त्राभूषण की शौकीन रहीं हैं। वे गहनों में तरकियाँ, वारीपत्ता, बीज, मटरमाला, लल्लरी, हँसली,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खगोरिया, गुलूबन्द, पैजना, अनौखा, झाँजे, लच्छा, घुघँरिया, पाँवपीस, बिछुआ, गुच्छी, करधौनी, पँगरिया, कील, लोंग, बेसर, बदयाने, हमेल, गोप, कठला, अंगूठी, चूरा, पटेला, गजरियाँ, दस्तानें, कौंचियाँ, बाजूबन्द, बैंदी, टिपकी, बैंदा, बुलाक, बाला, कनफूल, कमरपेटी, डोरा, झुमकी, बाँके, ठुसी, ऐरन, टॉप्स, कुण्डल पहनती हैं।

इस अंचल के निवासियों के स्त्री-पुरूष विविध वस्त्र फतूम, सलूका, लुँगरी, लाँगा, बाठ, टेजा, अंगोछी, सेलाबागो, अचकन, फेंटा, पाग, पंचा, सरई, फरिया, साफा, घुघरिया, धोती, पिछौरा, जोरौ, खेस, पल्ली, गदेला, मुड़ीसौ, कमरा, अंगरखा आदि का उपयोग करते हैं। भिण्ड जिले में पर्दा प्रथा का प्रचलन अधिक है।

भिण्ड जिले के निवासियों का मुख्य भोजन दाल-रोटी है। विशेष पर्वों और त्योहारों पर यहाँ के निवासी पक्का भोजन बनाना, खाना तथा खिलाना पसन्द करते हैं। मुस्लिम परिवारों में जर्दा-पुलाव बनाने व खाने की प्रथा है। यहाँ पर निवास करने वाले जैन समुदाय के लोग शुद्ध शाकाहारी हैं, ये लोग सायंकाल से पूर्व ही भोजन कर लेते हैं। जैन समुदाय में एक लोकोक्ति आज भी चर्चित है - गड़ई, डोर और छन्ना, कनक कलेवा और भन्ना। सिक्ख समुदाय के लोगों में भी अन्य समुदाय के लोगों की तरह अच्छा व विशेष प्रकार का भोजन खाने व खिलानें की प्रथा व्याप्त है।

भिण्ड जिले में मिली-जुली संस्कृति के दर्शन होते हैं। वैसे इस क्षेत्र में निवास करने वाले हिन्दुओं में स्वयं को श्रेष्ठ समझने की भावना पायी जाती

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है। हिन्दू व मुसलमान अभिन्नता के सूत्र में बँधकर रह रहे हैं। वेश-भूषा व खानपान तक में इंसानियत और मेल-मिलाप के प्रभाव पनपे हैं। हिन्दुओं में कायस्थ और क्षत्रिय जातियाँ प्रायः मुस्लिम वेश-भूषा का खूब उपयोग करते हैं। अचकन, शेरवानी, ढ़ीला और तंगकुर्ता, चूड़ीदार पाजामा सभी पहनते हैं, परन्तु हिन्दू और मुस्लिम वर्ग की स्त्रियों के पहनावे में थोड़ा सा अन्तर देखने को मिलता है, हिन्दू स्त्रियाँ साड़ी पहनना पसन्द करती हैं, जबकि मुस्लिम स्त्रियाँ घर से बाहर निकलने पर एक विशेष प्रकार का परिधान जिसे 'बुरखा' कहते हैं, पहनती हैं।

नगरीय क्षेत्र के अलावा ग्रामीण अंचल में स्त्रियों में पर्दा प्रथा अधिक पायी जाती है परन्तु हिन्दू परिवारों की अपेक्षा आज भी शहरी क्षेत्रों में मुस्लिम वर्ग की स्त्रियों में पर्दा प्रथा अधिक व्याप्त है। सलवार कुर्ता पहनना हिन्दू, मुस्लिम, जैन, सिक्ख व ईसाई सभी धर्मों व सभी वर्गों की स्त्रियाँ पसन्द करती हैं।

भिण्ड जिले में अधिकांश हिन्दू कृषि व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। हिन्दू परिवारों के कुछ लोग सिविल सेवा में कार्यरत हैं तो बहुत से लोग सैनिक सेवा में भी संलग्न हैं। अधिकांश हिन्दू परिवारों का कृषि के साथ-साथ पशुपालन भी मुख्य धन्धा है। मुस्लिम वर्ग के लोग हिन्दुओं की अपेक्षा कृषि में कम तथा अन्य व्यवसायों में लगे हुए हैं।

शिक्षा की दृष्टि से हिन्दुओं की अपेक्षा मुस्लिम वर्ग के लोग कम पढ़े लिखे मिलते हैं, लेकिन अब शहरों में रहने वाले लोग अधिक पढ़-लिख गए

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

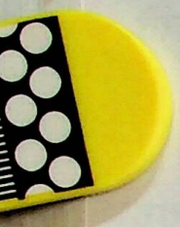

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हैं जबकि भिण्ड जिले में जैन समाज के लोग ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरों में अधिक संख्या में निवास करते हैं। जैन लोगों में बहुत से लोग बहुत पढ़े लिखे भी मिलते हैं परन्तु ये लोग नौकरी करने की अपेक्षा अपना स्वयं का व्यवसाय करना अधिक पसन्द करते हैं। इन लोगों की वेश-भूषा हिन्दुओं जैसी ही है तथा बोली में भी खास अन्तर नहीं पाया जाता है। यहाँ पर रहने वाले सिक्ख व ईसाई समुदाय के लोगों की वेश-भूषा में थोड़ा सा अन्तर देखने को मिलता है। ये लोग अपने सिरों को पगड़ी से ढके रहते हैं तथा भाषा में थोड़ा सा अन्तर पाया जाता है। ईसाई धर्म के लोग श्वेत वस्त्र धारण करना अधिक पसन्द करते हैं तथा इन लोगों की संस्कृति भी भिन्न पायी जाती है।

इतनी भिन्नता के रहते हुए भिण्ड ज़िले में हर धर्म, हर जाति के परिवारों के रहन-सहन में भिन्नता देखने को नहीं मिलती। भिण्ड जिले में मिली-जुली सभ्यता के दर्शन होते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१:४:१:१ भिण्ड जिले के परिवार

भिण्ड जिले में प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी परिवार का सदस्य रहा है या है। "समाज में परिवार ही अत्यधिक महत्वपूर्ण समूह है।"[१] श्यामाचरण जी दुबे ने अपनी पुस्तक में परिवार के बारे में कुछ इस प्रकार से कहा है-

"मानव की समस्त सामाजिक संस्थाओं में परिवार एक आधारभूत और सर्वव्यापी सामाजिक संस्था है। सांस्कृतिक के सभी स्तरों में चाहे उन्नत कहा जाये या निम्न, किसी न किसी प्रकार का पारिवारिक संगठन अनिवार्यतः पाया जाता है।[२]

परिवार भावात्मक घनिष्ठता का वातावरण प्रदान कर बच्चे के समुचित लालन-पालन, सामाजीकरण और शिक्षण में योग देता है। परिवार अपने सदस्यों की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक आवश्यकताओं की पूर्ति में भी योग देता हैं। परिवार मनुष्य जाति के आत्म संरक्षण, वंश वर्धन और जाति में निरन्तरता बनाये रखने का प्रमुख साधन है।

---

1. MacIver and Page, Society (Hindi) P. 143
२. डा० श्यामाचरण दुबे : मानव और संस्कृति, पृ० ६६
* "The family is a group defined by a sex-relations sufficiently precise and unduring to provede for procreation and up bringing of the children."

MacIver and Page, Socity, P. 238

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मानव में सदैव जीवित रहने की इच्छा होती है। मानव मरणशील प्राणी है लेकिन मानव जाति अमर है। मानव विवाह द्वारा परिवार का निर्माण करता है तथा सन्तानों के माध्यम से परिवार का विस्तार करता है। मानव एक ओर तो अपनी मृत्यु का दुख मनाता है तो दूसरी ओर वह इससे संन्तोष प्राप्त कर लेता है कि वह अपने परिवार द्वारा अपने वंशजों के रूप में अनन्त काल तक जीवित रहेगा। प्रसिद्ध विद्वान मैलिनोवस्की कहते हैं – "परिवार ही एक ऐसा समूह है जिसे मनुष्य पशु अवस्था से अपने साथ लाया है।"

परिवार संस्कृति की रचना, सुरक्षा, हस्तान्तरण एवं संवर्धन में योग देता है। परिवार एक संघ, समूह तथा एक संस्था के रूप में सदैव विद्यमान है। संक्षेप में परिवार को जैवकीय सम्बन्धों पर आधारित एक सामाजिक समूह के रूप में पारिभाषित कर सकते हैं; जिसमें माता-पिता और बच्चे होते हैं तथा जिनका उद्देश्य अपने सदस्यों के सामान्य निवास, आर्थिक सहयोग, यौन सन्तुष्टि और प्रजनन, समाजीकरण और शिक्षण आदि की सुविधायें जुटाना है।

भिण्ड जिले में केन्द्रीय या नाभिक परिवारों की संख्या बहुतायत रूप में है परन्तु पूरे जिले में केन्द्रीय परिवारों के अलावा कुछ मात्रा में संयुक्त परिवार तथा पितृ स्थानीय एवं पितृसत्तात्मक परिवार भी पाये जाते है। भिण्ड जिले के अधिकतर नगरों में केन्द्रीय परिवारों की संख्या अधिक है। भिण्ड जिले की अटेर, भिण्ड, मेहगाँव, गोहद, रौन, मिहोना तथा लहार तहसीलों में पितृस्थानीय तथा पितृसत्तात्मक परिवार हैं, कहीं-कहीं पर संयुक्त परिवार भी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिलते हैं परन्तु समय के परिवर्तन के साथ भिण्ड जिले में समाज में उत्पन्न अनेक समस्याओं के कारण संयुक्त परिवार विघटित हो रहे हैं। यही संयुक्त परिवार केन्द्रीय परिवार या नाभिक परिवार का रूप ले रहे हैं। केन्द्रीय या नाभिक परिवार, परिवार का सबसे छोटा रूप होता है जो एक पुरुष, स्त्री तथा उनके आश्रित बच्चों से मिलकर बना होता है। इस प्रकार के परिवार में अन्य रिश्तेदारों को सम्मिलित नहीं किया जाता है। इस प्रकार के परिवार में बच्चे भी अविवाहित रहने तक ही रहते हैं। विवाह के बाद वे स्वयं ही अपना नाभिक परिवार बना लेते हैं। ऐसे परिवार में सदस्य भावात्मक आधार पर एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े होते हैं। ऐसे परिवारों का आकार बहुत ही सीमित होता है और इनका बच्चों के जीवन पर काफी रचनात्मक प्रभाव पड़ता है।

भिण्ड जिले के ग्रामीण अंचलों में संयुक्त परिवार की प्रथा आज भी विद्यमान है। आधुनिक समय में संयुक्त परिवार को परिवर्तित करने वाले कारणों का प्रभाव ग्रामीण अंचलों पर पड़ा है फिर भी भिण्ड जिले के ग्रामीण अंचल के कुछ क्षेत्रों में संयुक्त परिवार की प्रथा कायम है परन्तु भिण्ड जिले में ऐसे परिवारों की संख्या कम रह गयी है जो कुछ संयुक्त परिवार बचे हैं वे भी विघटन की कगार पर खड़े हैं। ऐसे परिवारों में आये दिन झगड़ा दंगा फसाद बना रहता हैं, जिसके फलस्वरूप संयुक्त परिवार विघटित होते जा रहे हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आई०पी० देसाई ने संयुक्त परिवार को पारिभाषित करते हुए लिखा है-

"हम उस गृह को संयुक्त परिवार कहते हैं जिसमें एकाकी परिवार से अधिक पीढ़ियों (अर्थात तीन या अधिक) के सदस्य रहते हैं और ज़िनके सदस्य एक दूसरे से सम्पत्ति, आय और पारस्परिक अधिकारों तथा कर्तब्यों द्वारा सम्बद्ध हों।"[1]

उपर्युक्त बिन्दुओं के आधार पर भिण्ड जिले में सामाजिक विविधता दिखाई देती है परन्तु यह विविधता या असमानता व्यक्ति और समाज को एक दूसरे से परस्पर सम्पर्क रखना तथा सहयोग करना यहाँ की विशेषता है।

प्रमुख पर्वों और त्योहारों, शादी-विवाहों विभिन्न संस्कारों आदि शुभ-अशुभ अवसरों पर एक दूसरे के यहाँ जाना और उन कार्यक्रमों अनुष्ठानों में सम्मलित होना पूर्ववत बना हुआ है तथा इस जिले में पाये जाने वाले पितृसत्तात्मक परिवार एवं पितृस्थानी एवं संयुक्त परिवार हर जाति हर धर्म के लोग इन्हीं परिवारों के ही सदस्य हैं या सदस्य रहे हैं। भिण्ड जिले में इतनी विविधता होने के बाबजूद एकता के दर्शन होते हैं। इस जिले में विभिन्न धर्मों के लोग निवास करते हैं फिर भी ये लोग अलग-अलग होते हुए भी एक हैं। इन सब में आपस में भाई-चारे की भावना विद्यमान रहती है।

---

1. I.P. DESAI : The joint family in India, an article in Sociological Bulletin, Vol. V No. 2 September 1956 P. 148

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१:४:२ धार्मिक परिवेश :

धर्म भारतीय सामाजिक व्यवस्था का प्रमुख आधार है। इसी पर समाज की सम्पूर्ण व्यवस्था क्रियाशील है। शाब्दिक दृष्टि से देखा जाय तो धर्म वह है जिसे हम धारण करें, सभी प्राणियों की रक्षा करें। धर्म से तात्पर्य किसी ईश्वरीय मत या विश्वास से नहीं है और न ही वह किसी अलौकिक समाजोपरि शक्ति से सम्बन्धित है। धर्म का तात्पर्य मनुष्य के नैतिक कर्तव्यों से है, जिनका उद्देश्य व्यक्ति का क्रमिक विकास कर उसे परम लक्ष्य की प्राप्ति में सहायता देना है।

धर्म एक विशेष और व्यापक शब्द है जिसका अर्थ सभी विद्वानों ने भिन्न-भिन्न तरीके से प्रस्तुत किया है। फिर भी धर्म एक अर्न्तनिहित भावना और विश्वास है जो बाल्यकाल से आजन्म उसी प्रकार विचारों पर अपना आधिपत्य बनाये रहता है परन्तु थस्टर्न और देव के इस विचार को नेल्सन ने इस प्रकार प्रमाणित किया है कि -

"सामूहिक रूप में महिलायें पुरूषों की अपेक्षा अधिक धार्मिक होती हैं।"[१]

---

१. उच्चतर समाजशास्त्रीय सिद्धान्त : रवीन्द्र नाथ मुखर्जी, सरस्वती सदन : दिल्ली : चतुर्थ संस्करण १९७४ : पृष्ठ - ४४६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

डा० श्यामाचरण दुबे के अनुसार "धर्म धार्मिक व्यवहारों व उपासना का एक रूप प्रतीकों की रचना व पूजा है।"[1] तो दुर्खीम समाज को ही धर्मो का देवता मानते हैं।[2] और वह धर्म को पारिभाषित करते हुए लिखते हैं -

"धर्म पवित्र वस्तुओं से सम्बन्धित विश्वासों और आचरणों की वह समग्र व्यवस्था है जो इन पर विश्वास करने वालों को एक नैतिक समुदाय से संयुक्त करती है।"[3] धार्मिक समुदाय का प्रतीक सदस्य अपने आचरण और व्यवहार में नैतिकता और परहितकारी भावना बनाये रखता है।

भिण्ड जिले की संस्कृति धर्म प्रधान है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ बताये गये हैं। पुरुषार्थ का अर्थ है- वह वस्तु जिसे मनुष्य अपने प्रयत्नों से प्राप्त करता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारों वस्तुएँ प्राप्त करनी चाहिये। इस प्रकार विधि पूर्वक किया गया कार्य धर्म कहलाता है। यहाँ पर विधि का अर्थ है धर्म। धर्म मर्यादा का बन्धन है जिसमें कल्याण छिपा होता है। धर्म यदि प्राण

---

१. उच्चतर समाजशास्त्रीय सिद्धान्त : रवीन्द्र नाथ मुखर्जी, सरस्वती सदन : दिल्ली : चतुर्थ संस्करण १९७४ : पृष्ठ - ४४६

२. वही, पृष्ठ - ४४६

३. Religion is a unified system of beliefs and practices relative to sacred things – which unite in to one single moral community called church all those who adhere to them : Elementary forms of the religious life : Durkheim, Translated by J.W. Twani, Free press Glencoe 1947 P. 47

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है तो नियम उसका शरीर। अतः धर्म प्राप्ति मनुष्य का प्रथम पुरूषार्थ है। मनुस्मृति में धर्म के लक्षण बताते हुए मनु ने लिखा है -

घृति क्षमा दमाडस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

अर्थात

घृति - धैर्य, सन्तोष आत्मावलम्बन।

क्षमा - औचित्य के प्रति उदारता।

दम - मन संयम।

अस्तेय - न्यायपूर्ण जीवन।

शौच - अंतरंग - बहिरंग की पवित्रता।

इन्द्रिय विग्रह - विषयों के अधोगामी प्रवाह को रोकना।

धी - बुद्धि - विवेक।

विद्या - आत्मज्ञान, सत्कर्मों में प्रवृत्ति।

सत्य - प्रिय सत्य बोलना।

अक्रोध - आवेश में न आना।

भिण्ड जिले में प्रचलित धर्म :

धार्मिक संस्थायें व्यक्ति के विकास में बाधक व साधक दोनों ही होती हैं। पाप-पुन्य, लोक-परलोक, स्वर्ग-नरक, अलौकिक शक्ति में विश्वास और

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निष्ठा हमारे व्यक्तित्व के निर्माण की दिशा निर्धारित करती हैं। धर्म के संस्कार गहरे व स्थायी होते हैं। अनेक परिस्थितियों में वे हमारा मार्गदर्शन करते हैं। प्रत्येक धार्मिक संस्था की अपनी विशेषताएँ होती हैं जिनसे संस्थाओं में अनेक प्रकार के गुण व दोष पनपते हैं।

भिण्ड जिला धर्म व संस्कृति की संश्लिष्टता के लिये प्रख्यात है। जहाँ एक ओर वैष्णव और शैव धर्म खूब फले फूले हैं वहीं जैन धर्म और बौद्ध धर्म का भी यहाँ प्रचार प्रसार हुआ है। सेंसस के अनुसार भिण्ड जिले में प्रचलित मुख्य रूप से छः धर्म बताये गये हैं –

"Separate figures are given only for the six main religions: Hindu, Muslim, Jain, Sikh, Christian and Buddhis. figures for persons professing other religions have been clubbed together under the head other Religions and persuasions."[1]

अन्य जिलों की तरह भिण्ड जिले की संस्कृति में भी धन-सम्पत्ति त्याज्य नहीं है, परन्तु जो धन आये धर्म से आये । यहाँ के मनीषियों ने भी अर्थ और धर्म का अर्जन चतुर व्यक्ति के लिये आवश्यक माना है। भारतीय संस्कृति में काम को भी सम्माननीय स्थान दिया गया है, किन्तु यहाँ काम का अर्थ केवल रति न होकर सुख भोग माना है और इसका मर्यादित रूप ही ग्राह्य बताया गया है।

---

१. फेयर एण्ड फेस्टीवल ऑफ मध्य प्रदेश : सेंसस ऑफ इण्डिया १९६१ : के०सी० दुबे, एम०जी० मोहरिल, द मैनेजर ऑफ पब्लिकेशन, दिल्ली संस्करण १९६५, पृष्ठ – ६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड जिले की संस्कृति का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है। यहाँ पर मोक्ष का अर्थ आनन्द, परम सुख एवं स्वतन्त्रता माना गया है। यहाँ पर स्वतन्त्रता का अर्थ सामाजिक एवं पारिवारिक माया मोह से परे है। अतः दुख, मोह, अशान्ति और चिन्तामुक्ति ही मोक्ष है। आधुनिक काल में जयशंकर प्रसाद[1] तथा तथा राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त[2] जैसे कवियों के काव्य में भी समन्वय की भावना प्रतिबिम्बित हुई है।

जैसा कि सेंसस में बताया गया है कि भिण्ड जिले में प्रमुख रूप से छः धर्म पाये जाते हैं। उनका विवेचन निम्नानुसार प्रस्तुत है -

१:४:२:१ हिन्दू धर्म :

हिन्दू धर्म भारत का सबसे प्राचीन धर्म है जो ईसा के लगभग ३,००० वर्ष पूर्व आर्यों के साथ ही भारत में आया था। यह संसार का एक मात्र ऐसा धर्म है जिसे किसी व्यक्ति ने नहीं चलाया। सदियों पुराना यह धर्म वास्तव में असंख्य ऋषियों, मुनियों एवं तत्वदर्शियों के ज्ञान एवं अनुभूतियों का संचित कोष है। वेदों की रचना के साथ इस धर्म को वैदिक धर्म का नाम दिया गया। पुराणों एवं स्मृतियों की रचना के बाद इसे पौराणिक कहा जाने

---

१. कामायनी (महाकाव्य) भारती भण्डार इलाहाबाद पृष्ठ - २७२

२. साकेत (महाकाव्य) साहित्य सदन चिरगाँव, झांसी, सम्बत २०३६ वि०, पृष्ठ - १४२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लगा और जब भारत को हिन्दुस्तान कहने लगे तो यहाँ के निवासियों के धर्म को हिन्दू धर्म की संज्ञा दी गयी।

वेद हिन्दू धर्म के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। इन पर आधारित धर्म को वैदिक धर्म कहा गया है। वेदों में सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद को कहा गया है। ऋग्वेद में नैतिक आदर्शों को अत्यधिक महत्व दिया गया है। नैतिक आदर्शों की महानता पर ही किसी धर्म का महत्व समाज में स्थापित हो सकता है। वैदिक युग से आज तक की लम्बी यात्रा के पश्चात भी यह अपना स्वरूप और अस्तित्व बनाये रखने में सक्षम रहा है। इसका एक प्रमुख कारण हिन्दू धर्म की सहिष्णुता और विश्व-बन्धुत्व की भावना है।

पूरे जिले में शायद ही कोई ऐसा हिन्दू परिवार हो जो धर्म में आस्था न रखता हो। प्रत्येक घर या परिवार में एक अलमारी में किसी देवी या देवता की मूर्ति या मूर्तियाँ अवश्य रखीं पायीं जाती हैं जिन पर सुबह-शाम पूजा अर्चना स्वरुप दीप प्रज्ज्वलन व अगरबत्ती अवश्य लगायी जाती है। इस दैनिक अनुष्ठान से आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त होती है। दैवी मूर्तियों में राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान, शिव, पार्वती, गणेश, दुर्गा, लक्ष्मी-विष्णु आदि हैं।

हिन्दू धर्म के स्त्री पुरूष विभिन्न देवी देवताओं की पूजा के बाद ब्रत या उपवास भी रखते हैं। इन उपवास तथा ब्रत में विभिन्न प्रकार की कथायें निश्चित तिथि या दिन में की जाती हैं। इनमें सत्यनारायण की कथा, सोमवार ब्रत कथा, बृहस्पतिबार ब्रत कथा, सन्तोषी माँ की शुक्रवार ब्रत कथाएँ मुख्य हैं। मंगल व शनिवार हनुमान स्तुति के शुभ दिन माने जाते हैं। रविवार सूर्य

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देवता की स्तुति का शुभ दिन माना जाता है। कुछ लोग नियमित रूप से मन्दिरों में जाकर पूजा अर्चना के समय जल और पुष्प व फल अवश्य चढ़ाते हैं। कुछ लोग नियमित रूप से स्नानोपरान्त रामचरिमानस व गीता तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करते हैं।

जिला सांख्यिकी पुस्तिका १९९६ के अनुसार सन् १९८१ में धर्मानुसार हिन्दू धर्मावलम्बियों की संख्या ७२१३७१ थी, जिसमें १९७१-१९८१ के दशक में २२.२३ प्रतिशत की बृद्धि हुई।[1]

१:४:२:१ मुस्लिम धर्म :

भारत में इस्लाम धर्म का प्रारम्भ प्रमुखतः तेरहवीं शताब्दी से माना जाता है। वैसे तो इस्लाम धर्म का जन्म सातवीं सदी में अरब देश में हुआ। इस धर्म के संस्थापक और प्रवर्तक हजरत मुहम्मद साहब थे। कहा जाता है कि मुहम्मद साहब ने १५ वर्षों तक एक गुफा में रहकर चिन्तन एवं मनन किया और उन्हें अल्लाह के दर्शन हुए तथा उन्होंने मुहम्मद साहब को आदेश दिया कि जाओ और अल्लाह के बन्दों को रास्ता दिखाओ।

---

१. जिला सांख्यिकी पुस्तिका १९९६ : जिला सांख्यिकी कार्यालय : भिण्ड, पृष्ठ - १०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मोहम्मद साहब ने अपने आपको अल्लाह का दूत (पैगम्बर) कहा और अल्लाह द्वारा बताये गये मार्ग को लोगों के समक्ष रखा। भारत में प्रवेश पाने वाला मुस्लिम धर्म पहला धर्म था, जिसने भारतीय समाज के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया।

मुस्लिम शासकों ने अपने शासन काल में जोर-जबरदस्ती, प्रलोभन, प्रचार और तलवार की नोंक पर भारतियों को इस्लाम का अनुयायी बनाया और आज इस्लाम के अनुयायियों की संख्या हिन्दुओं के बाद सर्वाधिक है।

भिण्ड जिले में धार्मिक दृष्टि से मुस्लिम सम्प्रदाय नियमित पालन करने वाला है। अधिक से अधिक लोग तो प्रतिदिन मस्जिद में जाकर नमाज अदा करते हैं। जुमा (शुक्रवार) की नमाज तो लगभग सभी मुस्लिम अदा करते हैं। मस्जिदों के अलावा दरगाह, मजार आदि स्थानों पर पूजा अर्चना के लिये जाते हैं। अगरवत्ती लगाना और चादर चढ़ाना मुख्य धार्मिक अनुष्ठान माना जाता है। साफ कपड़े पहनना तथा नंगे सिर न जाकर टोपी लगाना अनिवार्य होता है।

मोहर्रम में ताजिये निश्चित स्थानों पर रखे जाते हैं। यह त्यौहार हजरत मोहम्मद साहब की स्मृति में मनाया जाने वाला मोहर्रम एक अनूठा त्योहार है। जब ताजिये सामूहिक रूप से निकलते हैं, तो उन्हें देखने के लिये सड़कों के दोनों ओर दुकानों, छज्जों, छतों पर सभी धर्म व सभी वर्ग के लोगों की भारी भीड़ हो जाती है। इस समय मुस्लिम युवक तलवारों, लाठियों, कटारों के द्वारा अपने विशेष करतब दिखलाते हैं। ताजिये निकलने से एक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

माह पूर्व विशेष व्यक्तियों द्वारा तैयार करना प्रारम्भ कर देते हैं। इन ताजियों को शहर से निकालकर एक निश्चित स्थान पर दफना दिया जाता है। इनके यहाँ हज करना सबसे पाक माना जाता है। रमजान के महीने में ये लोग रोजा रखते हैं।

जिला सांख्यिकी पुस्तिका १९९६ के अनुसार भिण्ड जिले में १९८१ में मुस्लिम धर्मावलम्बी ३३२०२ थे, जिनमें १९७१-८१ के दशक में ३० प्रतिशत की बृद्धि हुई।[१]

१:४:२:३ जैन धर्म :

ईसा पूर्व छठी शताब्दी की धार्मिक क्रांन्ति ने विशेष योग दिया। जैन धर्म में ज्ञान प्राप्त महात्माओं, संस्थापकों और जितेन्द्रिय महापुरूषों कोतीर्थकर कहा जाता है। तीर्थकर का अर्थ है - "संसार सागर के पार उतरने वाला।"

जैन धर्म के अनुसार जैन धर्म के चौबीस तीर्थकर हुए हैं। पहले तीर्थकर ऋषभ देव थे। उनके समय में भारत प्रायः असभ्य एवं बर्बर था। उन्होनें ही असभ्य समाज को सभ्यता का प्रथम पाठ पढ़ाया। तेईसवें तीर्थकर पार्श्वनाथ थे जो एक ऐतिहासिक पुरूष थे। इनका जन्म महावीर स्वामी से

---

१. जिला सांख्यिकी कार्यालय भिण्ड, पृष्ठ - १०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२५० वर्ष पूर्व हुआ था। स्वयं महावीर स्वामी के माता-पिता इनके अनुयायी थे। जैन धर्म में वर्तमान में दो प्रमुख सम्प्रदाय हैं - दिगम्बर और श्वेताम्बर। दिगम्बर जो पूरी तरह नग्न रहते थे अर्थात् आकाश ही जिनका वस्त्र था वे दिगम्बर कहलाये। श्वेताम्बर - जो श्वेत वस्त्र धारण करते थे वे श्वेताम्बर कहलाये।

वैसे तो भिण्ड जिले में सभी धर्मों - जातियों के लोग निवास करते हैं मगर जैन धर्म के लोग भिण्ड नगर में अन्य धर्मों की अपेक्षा सर्वाधिक हैं। वैसे तो भिण्ड जिले के भिण्ड नगर के अलावा जिले के सुदूर क्षेत्रों में भी जैन निवास करते हैं परन्तु कुछ समस्याओं के कारण जैन समुदाय के लोग ग्रामीण अंचलों को छोड़कर नगरों में आकर बसने लगे हैं। नगर में व्यापार करने की दृष्टि से भी जैन समुदाय के लोग भिण्ड नगर में आकर बसने लगे हैं। चम्बल के बीहड़ में डाकुओं का भय होने के कारण जैन समुदाय के लोग गाँवों से शहर की ओर आये हैं। ये डाकू धनी परिवार के सदस्यों का अपहरण करके उनसे रूपयों की माँग रखते हैं, रूपये मिल जाने के पश्चात अपहरण किये व्यक्ति को छोड़ देते हैं।

चम्बल घाटी में बीहड़ और ऊँचे गहरे टीले होने के कारण डाकुओं को सुरक्षित स्थान मिलने से उनकी संख्या में निरन्तर बृद्धि हो रही है और यह परम्परा वर्षों से चली आ रही है जैसा कि सेंसस ऑफ इण्डिया १९६१[१] से इसकी पुष्टि होती है। क्रमशः....

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

अपराध						डाकुओं की स्थिति		
वर्ष	डकैती	राहजनी	अपहरण	मर्डर	दंगाफसाद	गिरफ्तारी	मारे गये	आत्म समर्पण
१९५१	१०	१२	०४	३२	११	०७	०५	–
१९५२.	२८	२१	०१	४२	२३	२४	०४	–
१९५३	४३	१७	०७	३४	१४	२०	०१	–
१९५४	६२	१५	१४	२८	–	१९	०६	–
१९५५	७१	११	०५	४५	०२	१३२	३७	–
१९५६	९८	११	०२	५३	१९	१६१	१३	२
१९५७	५७	२१	२१	६७	१९	१७७	४०	७
१९५८	५०	४२	२५	५४	२१	१००	०८	१८
१९५९	३३	५९	३७	५१	२७	४१	२२	२२
१९६०	३६	६९	६९	४६	३९	९२	१३	४१
योग	४८८	२७८	१८५	४५२	१७५			

* सेंसस ऑफ इण्डिया : १९६१ : मध्य प्रदेश : डिस्ट्रिक सेंसस हैण्डबुक भिण्ड डिस्ट्रिक भिण्ड : जी० जगथपति : पब्लिशिस्ड बाई द गॉवमेन्ट : मध्य प्रदेश १९८४ : पृष्ठ XI एवं XII

(4 0) (41)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जैन धर्म के लोग धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं। जैन समुदाय के किसी परिवार में सन्तान न होने पर वह व्यक्ति अपने किसी निकटतम परिवार के व्यक्ति या रिश्तेदार को अपना मकान नहीं देते हैं। ऐसे धार्मिक प्रवृत्ति के लोग अपने मकान में मन्दिर बनवा देते हैं। यही कारण है कि भिण्ड नगर में जैन मन्दिरों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है।

जैन परिवार के लोग स्नान करने के बाद प्रतिदिन मन्दिर में जाकर पूजा-अर्चना करते हैं तथा वहाँ पर रखे हुए ग्रन्थों का पाठ करते हैं। एक वर्ष में चतुर्मास (चार महीने) आता है जिसमें ये लोग किसी जैन सिद्ध पुरूषों को आमंत्रित करते हैं तथा ये सिद्ध पुरूष किसी एक जैन मन्दिर में ही रूकते हैं तथा बारी-बारी से विभिन्न मन्दिरों में प्रवचन करते हैं। ऐसेअवसरों पर जैन धर्म से सम्बन्धित अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

भिण्ड जिले में जैन धर्म के तीन प्रमुख अतिशय क्षेत्र हैं। ये क्षेत्र बरही, बरासों तथा पावई हैं। बरही, बरासों क्षेत्र का निर्माण काल ढाई हजार वर्ष पूर्व का हुआ बताया जाता है। पावई अतिशय क्षेत्र का निर्माण काल ग्यारहवीं शताब्दी का बना बताया जाता है। इनके अतिरिक्त अन्य प्रमुख रौन का जैन मन्दिर, जैन मन्दिर बडेरी, जैन मन्दिर जमसारा जो बहुत पुराने बताये जाते हैं। इनमें समय-समय पर मेलों का आयोजन भी होता है। ग्रामीण क्षेत्रों के कुछ मन्दिर ऐसे भी हैं जहाँ से जैन समाज के लोगों के नगरों से

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आकर बस जाने से वहाँ के मन्दिर सुनसान हो गये हैं। उनकी मूर्तियाँ लाकर नगरों के मन्दिरों में सुरक्षित कर दी गयीं हैं।

१:४:२:४ सिक्ख धर्म :

भारत में सिक्ख धर्म के उदय के पीछे एक लम्बा इतिहास रहा है। जिस समय इस धर्म का उदय हुआ उस समय देश नाना प्रकार की सामाजिक विषमताओं, रूढ़ियों, पाखण्डों व कुरीतियों में लिप्त था। उस समय समाज कट्टर जाति ब्यवस्था से ग्रस्त था। उच्च जातियों द्वारा किये गये उत्पीडन और भी बढ़ गये। इससे निम्न व पिछड़ी जातियों की दशा और भी अधिक बिगडती गयी। उस समय उन्हें घृणा की दृष्टि से देखा जाने लगा। अलगाव तथा छुआछूत की भावना तो इतनी अधिक फैली हुई थी कि निम्न जातियों को सामूहिक रूप से अलग रखा गया ताकि उच्च जाति के लोगों की दृष्टि भी इन पर न पड़े।

इन सम्पूर्ण परिस्थितियों का यह परिणाम हुआ कि अत्याचार बर्दाश्त करते-करते निम्न वर्ग थक-सा गया और समाज के उच्च वर्ग ने भी वर्षों से चली आ रही इस आडम्बर पूर्ण ब्यवस्था का डटकर विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। ऐसी स्थिति में कई समाज सुधार आन्दोलनों ने जन्म लिया उनमें से एक आन्दोलन सिक्ख आन्दोलन भी था, जिसके संस्थापक गुरू नानक देव थे।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिक्ख धर्म के सन्दर्भ में यदि हम यह कहें कि यह धर्म भारतीय संस्कृति और उसके आदर्शों के नजदीक होते हुए भी उससे भिन्न है, तो अतिशयोक्ति न होगी। सिक्ख धर्म एक समन्यवयात्मक, प्रगतिशील व व्यावहारिक धर्म है जिसमें धर्मों की विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

सिक्ख धर्म हिन्दू धर्म के अत्यधिक नजदीक होने के कारण इनके संस्कारों में मौलिक रूप से काफी समानता पायी जाती है। बोली में पंजाबी का मेल होने के कारण इनकी हिन्दी भाषा भी अटपटी सी लगती है। रहन-सहन में खास तौर पर पुरूष दूर से ही पहचाने जा सकते हैं। अपने बढ़े हुए केशों, दाड़ी और लोहे के कड़े से। महिलाओं में भी बाल लम्बे रखने का शौक होता है। महिलाएँ आम तौर पर सलवार कमीज धारण करतीं हैं। खास मौकों पर कमीज के साथ ली जाने वाली चुन्नी भारी और कामदार होती है। पुरूष प्रायः पाजामा या पैन्ट शर्ट धारण करते हैं।

सिक्ख घरों के भोजन की विशेष बात यह होती है कि ये लोग खूब चटपटा और मसालेदार खाना पसन्द करते हैं। यूँ तो स्वभावतया ये शाकाहारी हैं, किन्तु यदा-कदा लोग मांसाहारी भोजन भी खा लेते हैं।

'गुरू ग्रन्थ साहिब' सिक्खों का एक 'आदि ग्रन्थ' है। जिसे वे साक्षात गुरूतुल्य ही समझते हैं। अनेक धार्मिक उत्सवों या संस्कारों के समय इसकी उपस्थिति को प्रायः शुभ व आवश्यक माना गया है। नानक की रचनाओं में 'जपुजी' सिक्खों को सर्वाधिक प्रिय है और हर रोज प्रातः काल इसका पाठ अच्छा माना जाता है। इस जपुजी का पाठ सिक्खों के लिये उतना ही

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनिवार्य है, जितना हिन्दुओं के लिए 'श्रीमदभगवदगीता' का पाठ। गुरू ग्रन्थ साहिब सिक्खों का महान ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में सिक्ख गुरूओं की रचनाओं व उपदेशों को स्थान दिया गया है जो ब्रह्म, नाम, त्याग, गुरूभक्ति, आत्मज्ञान आदि से सम्बन्धित है।

भिण्ड जिले में सिक्ख धर्म के लोगों की संख्या पर्याप्त मात्रा में पायी जाती है। भिण्ड नगर में १९८४ से पहले सिक्ख भाइयों के कुछ घर थे, लेकिन थोड़ी संख्या में होने के कारण यहाँ के सिक्ख भाई भिण्ड जिले के गोहद तहसील के अन्तर्गत रहने लगे। अब इस समय भिण्ड जिले के गोहद नगर में सिक्ख धर्म के बच्चों की शिक्षा के लिये 'गुरु गोविन्द सिंह पब्लिक स्कूल' की स्थापना की गई है। भिण्ड जिले में सिक्खों की संख्या गोहद तथा गोहद के आस-पास फैले गाँवों में बहुतायत मात्रा में देखने को मिलती है।

यद्यपि भिण्ड नगर में भी सिक्ख समुदाय के कुछ परिवार रहते हैं जो राजनीति में भी सक्रिय हैं तथा कुछ आर्युवैदिक पद्धति चिकित्सक भी हैं। बहुत से परिवार इन्द्रागाँधी की हत्या के उपरान्त हुए उपद्रवों के शिकार होने के कारण भयभीत होकर भिण्ड से पलायन भी कर चुके हैं। उस समय भिण्ड में सिक्ख भाइयों के घरों में लूटपाट भी की गयी थी तथा एक सिक्ख भाई की हत्या भी कर दी गयी थी।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१:४:२:५ ईसाई धर्म :

विश्व में ईसाई धर्म के अनुयायी सर्वाधिक हैं तथा भारत में इसका स्थान तीसरा है। १९९१ की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या का २.४३ प्रतिशत भाग ईसाई धर्म के अनुयायियों का है। ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह थे। ऐसा माना जाता है कि ईसाई धर्म, यहूदी धर्म एवं बुद्धवाद का मिश्रित एवं रूपान्तरित रूप है।

ईसाई धर्म इस्लाम धर्म के बहुत नजदीक है और दोनों में बहुत समानताएँ देखने को मिलती हैं। दोनों ही एकेश्वरवाद में विश्वास करते हैं तथा मूर्तिपूजा के विरोधी हैं। ईसाई धर्म हिंसात्मक यज्ञों का विरोधी है। यह धर्म, दया, प्रेम, समानता एवं भाईचारे के सिद्धान्तों में विश्वास करता है। ईसाई धर्म का सम्पूर्ण उल्लेख बाइबिल में मिलता है। ईसा ईश्वर की दिव्य शक्ति में विश्वास करनें, एकनिष्ठ बने रहने, सबके प्रति दया करने एवं मुस्कराते रहने तथा नेक व ईमानदार बनने का उपदेश देते हैं। ईसाई धर्म सन्यास में विश्वास करता है। ईसा कहते हैं –

"जिसे अमृत्व की प्राप्ति करनी हो बाल-बच्चे छोड़कर मेरा भक्त होना चाहिए।"

भिण्ड जिले में ईसाइयों की संख्या काफी कम है। विशेष रूप से एक मैडम विलियम और उन्नकी बेटियाँ जो भिण्ड स्कूलों में अध्यापिका हैं ईसाई

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धर्म का पालन करती हैं तथा पूरे जिले में ईसाई धर्म के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रहीं हैं।

ईसाई धर्मावलम्बियों में पाश्चात्य सभ्यता के नजदीक होने के कारण बोलचाल तथा रहन-सहन में अंग्रेजियत का पुट है। साधारण तौर पर पैन्ट-कमीज, लम्बा कोट तथा महिलाओं में मैक्सी व मिडी का अच्छा-खासा प्रचलन है, किन्तु जिले की आबोहया व वातावरण ने इसके रहन-सहन में भारतीयता का पुट ला दिया है। खान-पान में यह बिना किसी हिचक के माँसाहारी भोजन खा लेते हैं। बड़े भोज या त्योहार पर मांसाहारी भोजन का बनना लगभग अनिवार्य होता है। अण्डे का सेवन भी इसी भाव से किया जाता है। खुला माहौल होने के कारण वीयर का सेवन भी वर्जित नहीं है।

१:४:२:६ बौद्ध धर्म :

गौतम बुद्ध को बौद्ध धर्म का प्रवर्तक माना गया है, उनके जन्म का नाम सिद्धार्थ था। सन्यासी होने के बाद गौतम साधना में लीन हो गये। कहते हैं गौतम बुद्ध को गया में वट वृक्ष के नीचे वैशाख पूर्णिमा को ज्ञान की प्राप्ति हुई। ज्ञान प्राप्ति के बाद गौतम 'तथागत' और 'बुद्ध' कहलाये। बोध प्राप्ति के कारण गया 'बोध गया' तथा बट बृक्ष जिसके नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई, 'बोधि वृक्ष' कहलाया। बुद्ध ने सृष्टि सम्बन्धी विषय पर अपने विचार प्रकट नहीं किये। उनका धर्म व्यावहारिक धर्म था, जो प्राणीमात्र की उन्नति का साधन था। इस धर्म में अन्ध विश्वासों को कोई महत्व नहीं दिया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भारत बौद्ध धर्म की जन्म भूमि है किन्तु कालचक्र के फेर में भारत में बौद्ध धर्म के चिन्ह मात्र ही छोड़े हैं इस मामले में भिण्ड सौभाग्यशाली ही कहा जायेगा कि यहाँ बौद्ध धर्मावलम्बी भी मित्रभाव से रह रहे हैं। प्रारम्भ में गौतम बुद्ध द्वारा कैवल्य प्राप्ति के उपरान्त सत्य, अहिंसा अस्तेय अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य के संस्थापित नियम समय के साथ ढ़ीले पड़ गये हैं।

महात्मा बुद्ध द्वारा वैदिक धर्म में सुधार हेतु मूर्तिपूजा समाप्त करने का बीड़ा उठाया था। शनैः -शनैः यह बन्धन भी कमजोर पड़ गया है। कुषाण शासक कनिष्क के समय में दो भागों में विभाजित हुआ यह धर्म हीनयान व महायान शाखा के रूप में जाना जाता है। हीनयान में धर्म के नियम कठोर हैं पर महायान शाखा नें अपने आपको इतना अधिक परिवर्तित कर लिया है कि वह भारतीय हिन्दू धर्म के काफी हद तक नजदीक आ गया है। फलस्वरूप बौद्धों की वेशभूषा व. आचार-विचार उन्हें आम निवासियों से ज्यादा अलग नहीं करते।

भिण्ड नगर के पास फूप में बौद्ध धर्म के लोगों के लिये कुछ वर्ष पूर्व से एक धर्म स्थल बनाया गया है जहाँ पर कुछ बौद्ध भिक्षु रहते हैं तथा बौद्ध भिक्षुओं का आवागमन बना रहता है। ये बौद्ध भिक्षु समाज में अत्यन्त घुले मिले हैं तथा राजनीति में भी सक्रिय भाग लेते हैं। वर्तमान में नगर पालिका अध्यक्ष फूप भी एक बौद्ध ही हैं।

भिण्ड जिला प्राचीन काल से ही विभिन्न धर्मों की पुण्यभूमि रहा है। यहाँ के निवासियों के जीवन में धर्म का प्रमुख स्थान है। बौद्ध, जैन तथा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिक्ख धर्मों को हिन्दू धर्म का ही अंग माना जाता है। धार्मिक विविधता के कारण समय-समय पर विभिन्न धर्मावलम्बियों के बीच यहाँ तनाव एवं संघर्ष भी उत्पन्न हुए हैं यद्यपि भिण्ड जिले में धार्मिक सहिष्णुता एवं समन्वय के तत्त्व भी मौजूद रहे हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१:४:३ सांस्कृतिक परिवेश :

"सांस्कृतिक संस्थायें हमें समूह की जीवन विधि से परिचित कराती हैं। यही नहीं वरन् वेश-भूषा, प्रथा, परम्परा, आदर्श व मूल्य, नियम व निषेधों से परिचित कराकर ब्यक्तित्व के निर्माण में सहायता करती है।"[१]

व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में संस्कृति का विशेष योगदान रहता है। संस्कृति व ब्यक्तित्व का इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि बिना संस्कृति के व्यक्ति जीवधारी व जंगली रहेगा, वह मानव नही बन सकता। यह भी सच है कि संस्कृति की अमिट छाप ब्यक्तित्व पर पड़ती है। रूथ वैनेडिक्स के अनुसार -

"ब्यक्तित्व जिन प्रथाओं में जन्म लेता है वे बच्चे के ब्यवहार को आरम्भ से ही निर्मित करने लगती हैं। जब बात करने योग्य होता है तो अपनी संस्कृति का एक लघु प्राणी हो जाता है और बड़ा होकर संस्कृति के कार्यों में भाग लेने लायक होता है तो संस्कृति की आदतें, संस्कृति की असम्भावनाएँ उनकी असम्भावनाएँ होती हैं।" [२]

---

१. समाजशास्त्र : जे०एन० सचान, बाई०एन० कंचन : चित्रा प्रकाशन ११०, सिविल लाइन्स, इटावा : अष्टम संस्करण १९८६-८७, यूनिट V : समाजीकरण

२. वही, पृष्ठ - १५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि संस्कृति ब्यक्तित्व का निर्माण व विकास करती है परन्तु संस्कृति का निर्माण भी मनुष्य ही करता है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री मैकाइबर तथा पेज ने संस्कृति को पारिभाषित करते हुए लिखा है –

"Culture is the expression of our nature in our modes of living and of thinking in over everday intercourse in art, in literature, in religion, in recreation and enjoyment." [1]

१:४:३:१ संस्कृति और सभ्यता :

प्रायः लोग संस्कृति और सभ्यता को एक ही मान लेते हैं, जबकि इन दोनों के बीच में बहुत बड़ा भेद है। संस्कृति अन्तःकरण है, सभ्यता शरीर है।[२] संस्कृति सभ्यता द्वारा व्यक्त की जाती है। संस्कृति, सभ्यता की अपेक्षा स्थायी और व्यापक है। संस्कृति की अपेक्षा सभ्यता शीघ्र बदलती है और उसका अनुकरण भी हो सकता है जबकि संस्कृति बुद्धिसात की जा सकती है, किन्तु उसका अनुकरण नहीं हो सकता।

---

१. समाजशास्त्र : जे०एन० सचान, वाई०एन० कंचन : चित्रा प्रकाशन ११०, सिविल लाइन्स, इटावा : अष्टम संस्करण १९८६-८७, यूनिट V : समाजीकरण, संस्कृति व व्यक्तित्व पृष्ठ – १७

२. भारतीय संस्कृति का प्राण, डा० सम्पूर्णानन्द (सम्मेलन पत्रिका), १९७३, पृष्ठ – २५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अगर कोई व्यक्ति अच्छे कपड़े पहन ले, अच्छे भवन में रहने लगे और अंग्रेजी बोलने लगे, किन्तु उसकी संस्कृति में तब तक कोई परिवर्तन नहीं होगा जब तक कोई विचार या व्यवहार बहुजन समाज द्वारा एक लम्बी अवधि तक व्यवहार में न लाया जाय, जब तक कोई अस्थाई विचार और व्यवहार संस्कृति का स्वरूप नहीं ले सकता। इस प्रकार संस्कृति वैदिक विकास की अवस्थाओं को सूचित करती है और सभ्यता का परिणाम शारीरिक एवं भौतिक विकास है। "संस्कृति का सम्बन्ध आत्मा से है और सभ्यता का सम्बन्ध कार्यकलाप से है।"[१]

१:४:३:२ भारतीय संस्कृति और संस्कार :

वैसे तो संस्कृति का सम्बन्ध स्थान, काल और धर्म के साथ भी जुड़ा हुआ है। जैसे ईरानियन संस्कृति, बाबिलोनियन संस्कृति, चीनी संस्कृति आदि। इसी प्रकार कालवाची संस्कृति में प्राचीन संस्कृति, मध्य कालीन संस्कृति और धर्म से सम्बन्धित संस्कृति में हिन्दू संस्कृति, मुस्लिम संस्कृति, पारसी संस्कृति आदि आती है। वस्तुतः "भारतीय संस्कृति"[२] का आशय प्रकाश के मार्ग से अनुष्ठान करने से प्राप्त होने वाली संस्कार सम्पन्नता से है।

---

१. संस्कृति और सभ्यता, डा० प्रसन्न कुमार आचार्य (सम्मेलन पत्रिका) १९७३, पृष्ठ - ३१

२. वैदिक संस्कृति के मूल तत्व, पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर (सम्मेलन पत्रिका) १९७३, पृष्ठ - ४४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

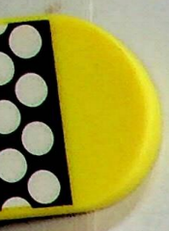

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धार्मिक क्रियाओं तथा व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक या बौद्धिक परिष्कार के लिये किये जाने वाले अनुष्ठानों से है, जिससे व्यक्ति समाज का पूर्ण विकसित सदस्य हो सकें। संक्षेप में व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का परिष्कार शुद्धि व विकास इसके प्रमुख उद्देश्य हैं। हिन्दुओं के जीवन संस्कार जन्म से मृत्यु तक चलते हैं। उनकी संख्या के सम्बन्ध में विचारक एक मत नहीं हैं। सामान्य रूप से सोलह संस्कार माने जाते हैं। संस्कार मानव जीवन के लिये कई दृष्टियों से उपयोगी हैं। इनका प्रतीकात्मक उद्देश्य है। यह अशुभनाशक तथा विपत्तियों से रक्षा करने वाले हैं। इनसे सामाजिक स्थिति प्राप्त होती है। ये सामाजीकरण के प्रमुख साधन हैं तथा सांसारिक सुख की प्राप्ति में सहायक हैं। ये आध्यात्मिक उन्नति के साधन हैं। संस्कार पवित्र तथा सतकर्मों पर बल देकर आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

जैसा कि बताया गया है कि संस्कृति संस्कारों की कार्यविधि है। यह हमारे संस्कारों से ही निर्मित होती है, परन्तु संस्कारों के बारे में भी विद्वानों में मतभेद है। अश्वलायन ग्रहसूत्र में ११, पारासर ग्रह सूत्र में १३, मनुस्मृति में १३, बोधायन ग्रहसूत्र में १३, बेंखानस ग्रहसूत्र में १८ संस्कार गिनाये गये हैं तो गौतम धर्म सूत्र[1] में आठ आत्मगुणों के साथ ही चालीस संस्कारों की

---

१. हिन्दू संस्कार, डा० राजवलि पाण्डेय, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, चतुर्थ संस्करण १९८५, पृ० २१

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूची (चत्वारिंशत् संस्काराः अष्टौ आत्मगुणाः) हैं, परन्तु सर्वाधिक मान्य संस्कार सोलह हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती की "संस्कार विधि"[१], पं० भीमसेन शर्मा की "सोडस संस्कार विधि"[२], डा० आदर्श मिश्रा के "भिण्ड क्षेत्र का सांस्कृतिक सर्वेक्षण"[३], डा० सुखदेवसिंह सेंगर के शोध प्रबन्ध - डा० हरिहर निवास द्विवेदी के साहित्यिक कृतित्व का मूल्यांकन[४] और डा० अनीता जैन के "भिण्ड जनपद के संस्कार गीत"[५] कृतियों और ग्रन्थों में सोलह संस्कार ही मान्य हैं। जिनकी पुष्टि "हिन्दू संस्कार"[६] ग्रन्थ से होती है।

---

१. बैदिक मन्त्रालय अजमेर से प्रकाशित

२. ब्रह्म प्रेस इलाहाबाद से प्रकाशित

३. जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर की पी०एच०डी० (इतिहास) शोध उपाधि (१९८७) हेतु स्वीकृत शोध प्रबन्ध।

४. जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर की पी०एच०डी० शोध उपाधि (१९९३) हेतु स्वीकृत शोध प्रबन्ध।

५. जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर की पी०एच०डी० (हिन्दी) शोध उपाधि १९८९ हेतु स्वीकृत शोध प्रबन्ध।

६. डा० राजवलि पाण्डे के ग्रन्थ पृ० क्रमशः ५९, ७३, ७८, ८९, ११०, ११३, ११९, १२९, १३७, १४३, १८१, १८४, १८७, १९५ और २९६ पर इन सोलह संस्कारों का वर्णन है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१:४:३:३ भिण्ड जिले में संगीत और सांस्कृतिक कार्यक्रम :

संत कुमार लोहिया भिण्ड नगर की सांस्कृतिक परम्परा लेख के अनुसार – भिण्ड जनपद की सांस्कृतिक गतिविधियों का इतिहास सर्वप्रथम रंगमंचीय रूप में कंस अथवा कृष्ण लीला से प्रारम्भ होता है और इसका मुख्य अभिनव स्थल वहां था जहाँ वर्तमान में टैगोर संगीत विद्यालय स्थित है। यहीं कुछ आगे बढ़कर एक टीला था, जिस पर कंस लीला का प्रदर्शन होता था। बहुत समय तक रामलीला ब्यापार मण्डल धर्मशाला में की जाती रही। उसके पश्चात यही रामलीला रंगविहार के मंच पर की जाने लगी। जैन समाज ने नगर में जनमेला लगाना प्रारम्भ किया तभी लगभग अस्सी वर्ष पूर्व "दि जैन रिफार्मर ड्रामिटिक क्लब भिण्ड" नाट्य संस्था की स्थापना हुई। इस संस्था की स्थापना श्री गेंदालाल जैन ने की। उक्त संस्थाओं की स्थापना क्रमशः १९१३ और १९२३ में हुई।

१९६० के लगभग एम० जे० एस० कॉलेज, के भिण्ड के हिन्दी के विभागाध्यक्ष श्री सत्यव्रत अवस्थी ने भिण्ड में एक लोकायन संस्था की स्थापना की थी। जिसकी साहित्यक गतिविधियां दो दशकों तक चलती रहीं। वर्तमान में "लोकसंस्कृति संस्कृत एवं जन कल्याण परिषद" एक सांस्कृतिक संस्था के रूप में महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसका लक्ष्य भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा करना है। भिण्ड के तरुणों को पात्र बनाकर यह संस्था संस्कृत के लघु नाटकों का मंचन करती है। अभी तक इस संस्था ने ग्वालियर, सागर, भिण्ड और इटावा में भारते धर्म विप्लव, कलियुगे सीतावतारण, विश्वस्य एक विशंति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

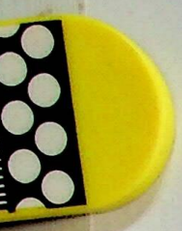

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शताब्दयां प्रवेशः निर्वाचन इत्यादि लघु एकांकियों का मंचन किया है। भरते धर्म विप्लवः शीर्षक के नाटक पर अखिल भारतीय नाटक प्रतियोगिता सागर में द्वितीय पुरस्कार दो हजार की पुरस्कार राशि भी प्राप्त हुई है। यह राशि मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी ने नाटक को भारत वर्ष में द्वितीय स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में दी थी। इस संस्था के संचालक पूर्व प्राचार्य श्री ओम प्रकाश शर्मा जी हैं। भिण्ड की संगयन साहित्य सभा द्वारा अभी-अभी एक बीस कवियों का गीत गुंज्जन नामक संकलन प्रकाशित हो रहा है। जो भिण्ड की भूमि का ओजस्वी साहित्यिक स्वर होगा।

भिण्ड जिले में कई और भी संस्थाएँ बनती और बिगडती रही, किन्तु जिले का सांस्कृतिक स्तर अभी भी जीवन्त है।

मेले :

सन् १९५८ में श्री हरिकिशन दास जी जादव भूता ने सर्वप्रथम गल्ला मण्डी भिण्ड नगर में नुमाइश का शुभारम्भ किया। उसके कुछ वर्षों के बाद बॉयपास रोड पर सिटी कोतवाली के निकट श्री भूता जी ने नुमाइश की पक्की दुकानों का निर्माण कराया, जिसकी छत के रूप में टीन जड़ी हुई है।

एक चहारदीवारी के अन्दर निर्मित मेले में प्रवेश के लिये चार विशाल दरवाजे बने हुए हैं। मेले के दक्षिण में निर्मित "निराला रंगबिहार" नाम से एक मध्यम श्रेणी का स्टेडियम बना हुआ है। जो सम्भवतः कवि निराला के नाम से जिला स्तर पर बना हुआ देश का सबसे पहला और एकमात्र

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्टेडियम है। स्टेडियम के पश्चिम में सांस्कृतिक कायक्रमों के आयोजनों-संयोजनों के लिये रंगमंच बना हुआ है।

भिण्ड नगर में श्री हरिकिशन दास जादव जी भूता जहाँ नगर के विकास और उसकी समृद्धि कि लिये संकल्पित तथा समर्पित रहे। वहीं वह नागरिकों की सुख समृद्धि का भी ध्यान रखते थे। नगर के विकास में उनका योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता।

भूता जी के असामयिक देहावसान से नगर की जनता को एक अपूर्णनीय क्षति का अनुभव हुआ। तभी तो श्रद्धांजलि स्वरूप नेताओं, साहित्यकारों ने भूता जी पर लेख एवं कविताएँ लिखीं, तो पत्रकारों ने अपने पत्रों के "भूता स्मृति परिशिष्टांक" एवं विशेषांकों का प्रकाशन किया। जिनमें "श्रद्धा सुमन" शीर्षक से सम्पादकीय लेख मध्य प्रदेश के मंन्त्रियों में सर्व श्री नरसिंह राव दीक्षित, शिक्षा मन्त्री मिश्रीलाल गंगवार, वित्त मन्त्री प्रकाश चन्द्र सेठी आदि ने संदेश लेख संस्मरण आदि द्वारा भूता जी की सामाजिक एवं राजनीतिक सेवाओं को प्रस्तुत किया। भिण्ड नगर के अतिरिक्त कलकत्ता, दिल्ली, हाथरस, आगरा आदि दूरस्थ नगरों से भी भूता जी के सम्बन्ध में रचनाएँ प्राप्त और प्रकाशित हुई।[1]

---

१. भदावर केहरी पाक्षिक : भिण्ड सम्पादक व प्रकाशक बटेश्वर दयाल शर्मा : भूता स्मृति परिशिष्टांक : वर्ष - १, अंक - ६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

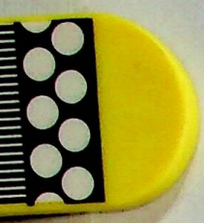

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऐसे परिशिष्टांकों में मुख्य पृष्ठ पर भूता जी के चित्र के साथ निम्नांकित पंक्तियाँ दी गई हैं।

कर्ता चले गये हैं, उनकी कृतियाँ शेष रहीं हैं।
मृत मृत्तिका हुई, पावन स्मृतियाँ शेष रही हैं।।

इस प्रकार से मेले हमारी सांस्कृतिक चेतना को बनाये रखने, विकसित करने और उसमें अपेक्षित सुधार करने के सशक्त माध्यम हैं।

भिण्ड के अलावा जिले में एक दिवस से लेकर पन्द्रह दिवसीय मेले[1] विभिन्न स्थानों पर आयोजित किये जाते हैं। ये मेले मुख्य रूप से तीन प्रकार के हैं। जो अधोलिखित हैं -

(१) धार्मिक मेले :

ये मेले किसी धार्मिक स्थान या अवसर विशेष पर लगने वाले मेले हैं। भिण्ड जिले में लगनें वाले मेलों में बरही का मेला, बरासों का मेला तथा पावई का मेला ये जैन मेला हैं। इनके अलावा चरथर का मेला, भिण्ड नसिया का मेला, कांकसी का मेला, लहार में नवदुर्गा में लगने वाला तेरह दिवसीय मेला तथा तुमान का मेला प्रमुख हैं।

---

१. फेयर एण्ड फेस्टीबल ऑफ म०प्र० सेंसस ऑफ इण्डिया - १९६१ : के०सी० दुबे, एम०जी० मोहरिल : द मैनेजर ऑफ पब्लिकेशन दिल्ली : संस्करण - १९६५, पृष्ठ - २ एवं ३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

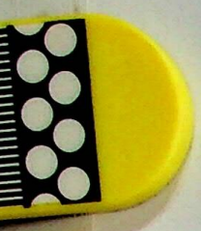

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(२) व्यापारिक मेले :

पशु-प्रदर्शनी एवं मेले के रूप में लगने वाले मेले व्यापारिक मेलों की श्रेणी में आते हैं। भिण्ड जिले में व्यापारिक मेलों में लगने वाले मेले अटेर में चलने वाला पन्द्रह दिवसीय मेला, मेधपुरा का जगन्नाथ जी मेला, इन्दुरखी का मेला व लहार का मेला इत्यादि प्रमुख मेले हैं।

(३) सम-सामयिक मेले :

सम-सामयिक मेले समय-समय पर धार्मिक उत्सवों-पर्वों पर लगने वाले मेले इस श्रेणी में आते हैं। भिण्ड जिले में इस प्रकार के मेलों में चरथर का मेला, पुरावली का मेला, कनावर का मेला, कचनाव खुर्द का मेला, दुल्हागन मेला, विलाव का मेला, बरोना का मेला, गोहद का मेला, बसोरा-विडखरी का मेला, मौ, गोहद, अजनैर, अमायन, गोरमी, तेजपुर, मेहगाँव, अँधियारी, अमाहरेहला, रसेल, सिहोनी, असमी, कुरथर, रहावली उबारी, असवार, अरवदेवा, सेंथरी, देवरी, आलमपुर, बडोखरी, सोंसरा, रौन आदि हैं।

इन मेलों में नगरीय ही नहीं वरन् ग्रामीण अंचल तथा दूसरे नजदीकी जिलों तथा प्रदेशों के व्यक्ति आते हैं, जिससे लोगों में परस्पर सांस्कृतिक चेतना विकसित होती है।

उपर्युक्त विवेचन में भिण्ड जिले के सामान्य-परिचय पर विहंगम दृष्टि डाली गयी है। भौगोलिक दृष्टि से भिण्ड की स्थिति एवं भिण्ड जिले के विस्तार के साथ ही साथ संक्षेप में जिला भिण्ड की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तथ्यपरक प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही साथ भिण्ड जिले का सामाजिक परिवेश जो अपने में विशिष्ट है, संक्षेप में अवलोकित किया गया है। जहाँ तक धार्मिक और सांस्कृतिक स्थितियों का प्रश्न है उनका भी विवेचन भिण्ड अंचल की तथ्यपरक विवेचना के आधार पर सम्यक अध्ययन करने के उपरान्त प्रस्तुत किया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

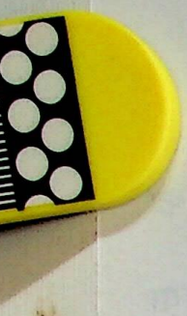

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय - दो

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

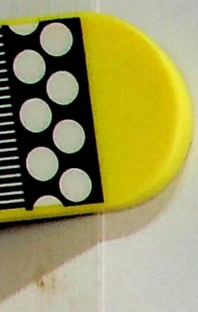

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड जिले की भौगोलिक संरचना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

"भूगोल भूतल का अध्ययन है, यह भूतल के भिन्न-भिन्न भागों में पायी जाने वाली विभिन्नताओं की व्याख्या करता है। इसमें (भूगोल) घटनाओं, क्रियाशील सम्बन्धों को विशेष महत्व दिया जाता है।"

इमेनुअल काण्ट

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२. भिण्ड जिले की भौगोलिक संरचना :

मध्य प्रदेश राज्य के उत्तरी सीमा पर स्थित भिण्ड जिला मध्य भारत के अन्तर्गत आता है। भिण्ड जिले में भू-संरचना की दृष्टि से आद्य महाकल्प कालीन, पूर्व कैम्ब्रियन तथा अभिनव महाकल्प काल की शैलें देखनें को मिलती हैं। आद्य महाकल्प काल की शैलें मोरार श्रेणी तथा पूर्व कैम्ब्रियन कालीन शैलें गोहद तहसील के कुछ सीमित क्षेत्रों में देखने को मिलती हैं। अभिनव महाकल्प काल की शैलें जलोढ़क के मोटा आवरण के रूप में जिले के अधिकांश भाग पर देखने को मिलती हैं, जिसमें मिट्टी, सिल्ट, बालू तथा बजरी की प्रधानता है।

४४५६ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला भिण्ड जिला भौगोलिक संरचना की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। भू-आकृतिक बनावट की दृष्टि से यह जिला प्रान्त के अन्य भागों से पर्याप्त भिन्नता रखता है। यहाँ पर नदियों के द्वारा जमा किये गये अवसादों से निर्मित मैदान हैं। भिण्ड जिले की जलवायु, अपवाहतन्त्र, मिट्टियाँ, प्राकृतिक वनस्पति ने यहाँ की सभ्यता को विशेष रूप से प्रभावित किया है। भिण्ड जिले का उच्चावचन, जलवायु, अपवाहतन्त्र, मिट्टियाँ तथा प्राकृतिक वनस्पति का वर्णन निम्न बिन्दुओं में प्रस्तुत किया जा रहा है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२:१ भिण्ड जिले का उच्चावचन :

भू-संरचना की दृष्टि से भिण्ड जिला एक मैदानी क्षैत्र है जो गंगा-यमुना मैदान के भाग के अन्तर्गत आता है। इस मैदानी क्षेत्र पर सभी जगह गोहद तहसील के कुछ भाग को छोड़कर यहाँ मोरार श्रेणी एवं विंध्य वालुकाश्म के कुछ अंश छोटी-छोटी आकार की पहाड़ी के रूप में दिखाई देते हैं। यहाँ भी पुरातन एवं नूतन जलोढ़क का मोटा आवरण फैला हुआ है। भिण्ड जिले के उच्चावचन में जो भी विषमताएँ दिखाई देती हैं उनके लिये क्षेत्रीय अपवाह तन्त्र ही उत्तरदायी है। इस क्षेत्र की संरचना पर यहाँ की अपवाह प्रणाली का इतना अधिक प्रभाव देखा जाता है कि जिले की गोहद तहसील के कुछ भाग को छोड़कर शेष सभी भाग में कोई भी पर्वत श्रेणी या छोटी-मोटी पहाड़ी तक नजर नहीं आती है।

गोहद तहसील का यह अत्यअल्प पहाड़ी क्षेत्र ग्वालियर रेंज का ही हिस्सा माना जाता है जो विन्ध्यन शैल समूह का भाग है लेकिन इस भाग को छोड़कर शेष समस्त जिले में लगभग २५ मीटर की गहराई तक भी चट्टानी सतह नहीं देखी जाती। इस क्षेत्र में प्रवाहित नदियाँ लम्बे समयसे अपरदन कार्य करती चली आ रहीं हैं। यहाँ की प्रवाहित नदियों के द्वारा किये गये कटाव के परिणामस्वरूप सभी जगह मिट्टी की मोटी-मोटी परतों का जमाव हो गया है जिससे यह क्षेत्र मैदान की भाँति बना दिया गया है लेकिन यहाँ की नदियों ने एक लम्बे सयम से अपक्षन कार्य करते हुए जहाँ एक ओर गहरी घाटियाँ एवं उनसें संलग्न बीहड़ घाटियों का निर्माण कर मैदानी उच्चावचन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

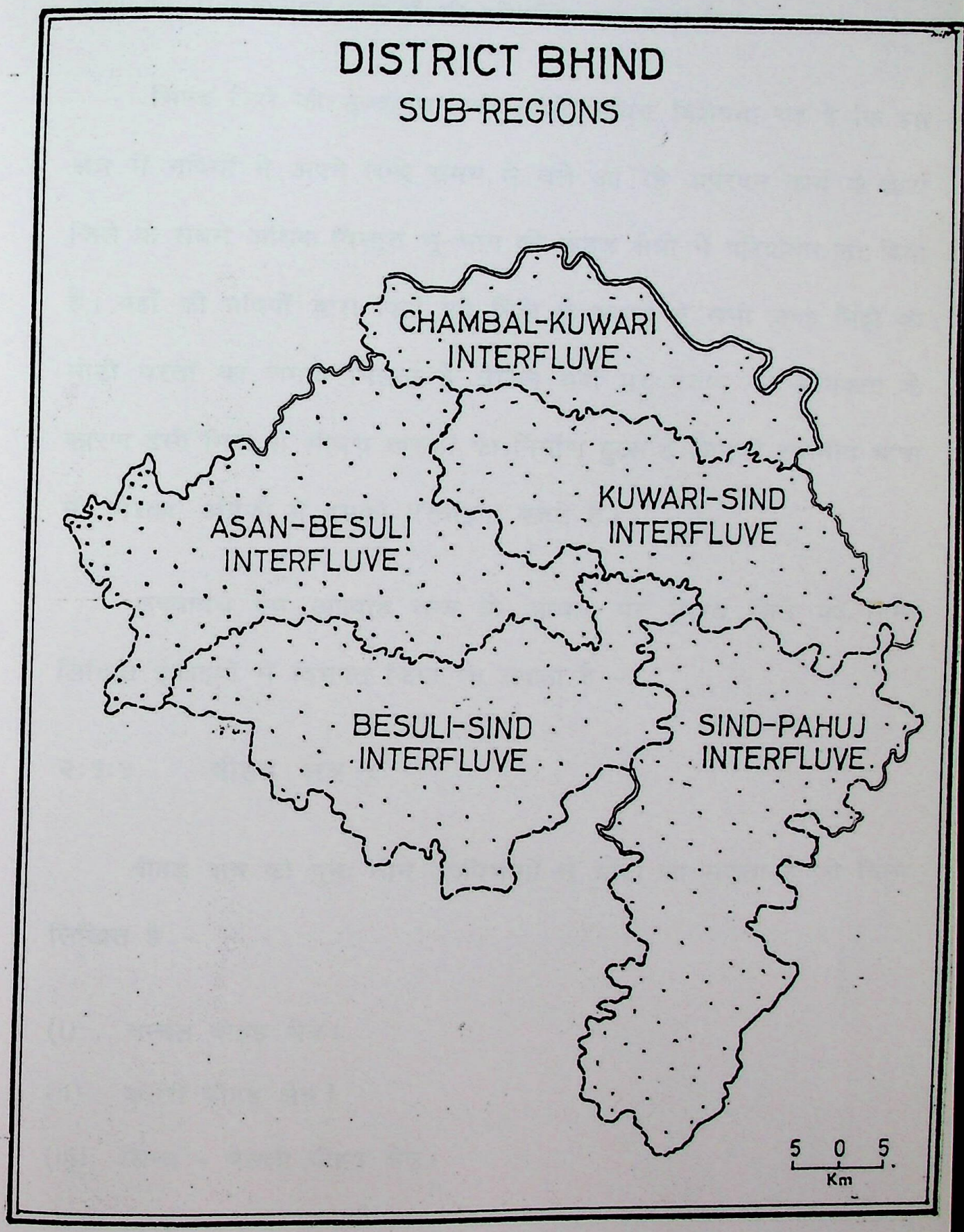

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की अनवरतता को भंग किया है। वहीं दूसरी ओर स्थलाकृतिक दृष्टि से पूरे जिले को अन्तःखण्डित क्षेत्र में भी परिवर्तित कर दिया है।

भिण्ड जिले की उच्चावचन की सबसे अधिक विशेषता यह है कि इस क्षेत्र में नदियों ने अपने लम्बे समय से चले आ रहे अपरदन कार्य के द्वारा जिले के सबसे अधिक विस्तृत भू-भाग को खड्ड क्षेत्रों में परिवर्तित कर दिया है। यहाँ की नदियों द्वारा किये गये मिट्टी के कटाव से सभी जगह मिट्टी की मोटी परतों का जमाव मिलता है लेकिन यहाँ पर कटाव की अधिकता के कारण इसी मिट्टी से भीषण खड्डों का निर्माण हुआ है जिनको स्थानीय भाषा में 'भरका' अंग्रेजी में इसको 'रिवाइन' कहते हैं।

उच्चावच एवं अपवाह तन्त्र के आधार पर भिण्ड जिले को निम्न लिखित इकाइयों में विभक्त किया जा सकता है -

२:१:१ बीहड़ क्षेत्र :

बीहड़ क्षेत्र को पुनः तीन उपविभागों में बाँटा जा सकता है जो निम्न लिखित हैं -

(i) चम्बल बीहड़ क्षेत्र।

(ii) क्वारी बीहड़ क्षेत्र।

(iii) सिन्ध - बेसली बीहड़ क्षेत्र।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

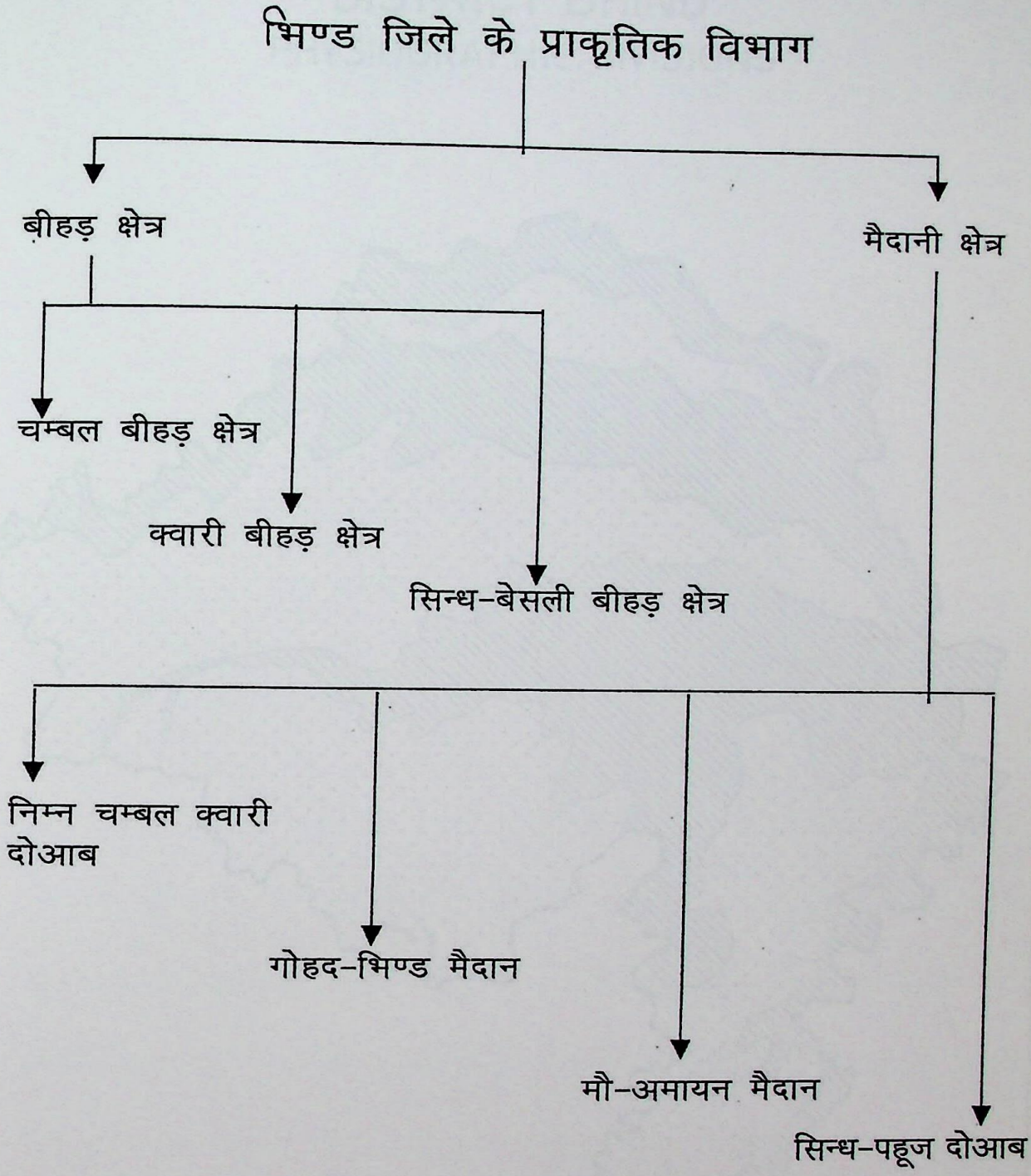

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

DISTRICT BHIND
PHYSIOGRAPHIC DIVISIONS

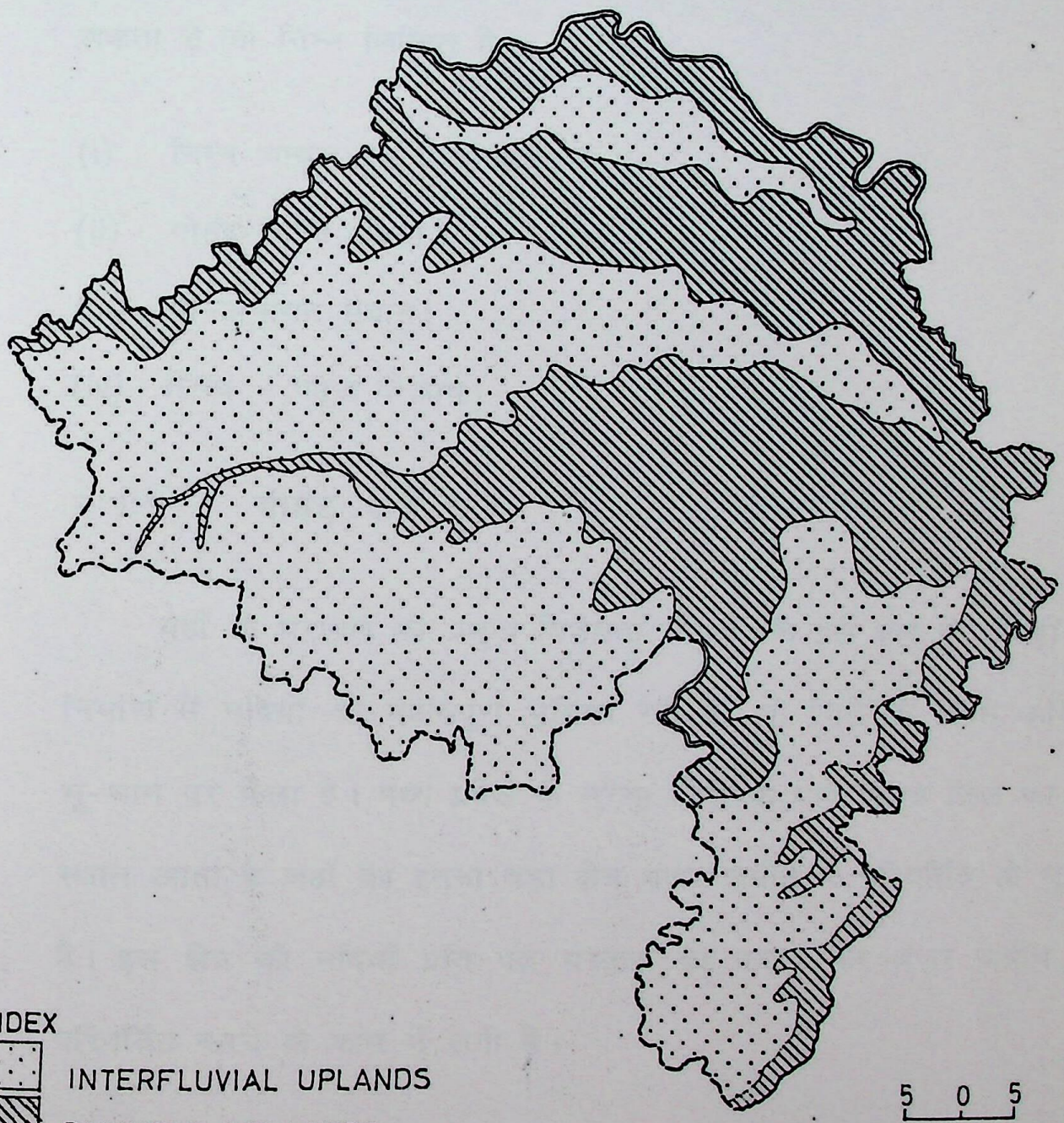

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

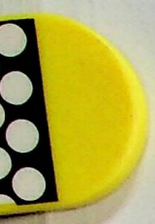

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२:१:२ मैदानी क्षेत्र :

भिण्ड जिले में मैदानों का निर्माण नदियों द्वारा बहाकर लायी गयी मिट्टी से हुआ है। मैदानी क्षेत्र को भी पुनः चार भागों में विभक्त किया जा सकता है जो निम्न लिखित है -

(i) निम्न चम्बल क्वारी दोआब।

(ii) गोहद-भिण्ड मैदान।

(iii) मौ-अमायन मैदान।

(iv) सिन्ध - पहूज दोआब।

२:१:१ बीहड़ क्षेत्र :

यहाँ के धरातल की प्रमुख विशेषता यह है कि इस क्षेत्र के बीहड़ों के निर्माण में नदियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जो जिले के सबसे अधिक भू-भाग पर फैला हैं। मध्य प्रदेश के मुरैना जिले के बाद भिण्ड जिले का ही स्थान आता है जहाँ का इतना बड़ा क्षेत्र बंजर जमीन में परिवर्तित हो चुका है। इस क्षेत्र की नदियाँ प्रति पल धरातल का कटाव कर बंजर जमीन में परिवर्तित करने के काम में लगी हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

"इन बीहड़ क्षेत्रों की सामान्य मैदानी सतह से गहराई १.२ मीटर से लेकर अधिकतम ३० मीटर तक है।"[1] नदियों द्वारा हर पल किया जाने वाला भूमि कटाव के साथ विरल होता जा रहा है। वनस्पति आवरण स्थानीय लोगों द्वारा भूमि के अनुचित उपयोग एवं अनियन्त्रित पशुचारण ने भी इन बीहड़ क्षेत्रों के प्रसार को अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान की हैं।

२:१:१:१ चम्बल बीहड़ क्षेत्र :

भिण्ड जिले की उत्तरी सीमा पर चम्बल नदी सर्पाकार आकृति में प्रवाहित हो रही है। इस नदी ने अपने "दोनों किनारों पर तीन किलोमीटर से चार किलोमीटर चौड़ी बीहड़ पट्टियों का सृजन प्रमुखतः चार सौ वर्षों की समयावधि में किया गया है।"[2] वर्तमान समय में चम्बल नदी अपने समीपवर्ती मैदानी सतह से नीचे की ओर बह रही है। तथा उसके दोनों किनारों पर मैदानी सतह से खड्ड क्षेत्र १५ से ३० मीटर तक गहरे हैं।

---

१. राघव के०पी०एस० (१९६६) दि जिआग्राफी ऑफ दि रैवाइन लैण्डस ऑफ भिण्ड डिस्ट्रिक, एम०ए० डिस्ट्रेशन, यूनीवर्सिटी ऑफ सागर, पृष्ठ - ३२

२. सिंह आर० एल० (१९७१) इण्डिया ए रीजनल ज्यॉग्राफी सिलवर जुबली पब्लिकेशन नेशनल ज्यॉग्राफिक सोसाइटी ऑफ इण्डिया, पृष्ठ - ५२४।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नदी अपरदन का इतना गहन तथा व्यापक स्वरूप पूरे देश के अन्य किसी क्षेत्र में देखने को नहीं मिलता है। इस खड्ड क्षेत्र के निर्माण में प्रमुख कारण के रूप में इस क्षेत्र में मुलायम मिट्टी की सतह का होना है। अन्य कारणों में उच्च ढाल की प्रवणता, वर्षा की तीब्रता, बढ़ती जनसंख्या के फलस्वरूप वन क्षेत्रों का कृषि क्षेत्रों में परिवर्तन, मुख्य वनस्पति आवरण के विनाश के साथ ही चम्बल नदी के सहायक नालों द्वारा अपरदन आदि तथ्यों की इन बीहड़ क्षेत्रों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

चम्बल नदी का यह बीहड़ क्षेत्र ०.१६० लाख हैक्टेअर क्षेत्र पर विस्तृत है।[1] यह नदी जैसे-जैसे पूर्व की ओर अपनी संगम दिशा में अग्रसर होती गयी है वैसे-वैसे दोनों किनारों पर भी फैलती गयी है। इसने खड्ड पट्टी का सृजन किया है। यह खड्ड पट्टी चौड़ी एवं गहरी होती गयी है। इस क्षेत्र में भू-क्षरण की क्रिया निरन्तर जारी है तथा प्रतिवर्ष अनुमानतः एक सौ बीस हैक्टेअर भूमि बीहड़ में परिवर्तित होकर खड्ड पट्टी में समाविष्ट हो जाती है।

---

१. रिपोर्ट ऑन रिक्लमेशन वर्क इन एम०पी०, डिपार्टमेन्ट ऑफ एग्रीकल्चरल सॉइल एण्ड वाटर कन्जर्वेशन, ऑफिस दि एग्जीक्यूटिव इन्जीनियर रैवाइन रिक्लमेशन स्कीम, मुरैना एम०पी० (१६७६), अपेन्डिक्स 'ए'।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२:१:१:२ क्वारी बीहड़ क्षेत्र :

चम्बल नदी की ही भाँति क्वारी नदी ने भी अपने दोनों किनारों पर बहुत बड़े भू-भाग को बीहड़ क्षेत्र में परिवर्तित कर दिया है। यह बीहड़ क्षेत्र कृषि के लिये अनुपयुक्त है। क्वारी नदी द्वारा निर्मित बीहड़ पट्टी ०.२८१ लाख हैक्टेयर क्षेत्र पर विस्तृत है[१] क्वारी नदी में चम्बल नदी की तुलना में अपरदन की क्षमता कम है। इसीलिए ये खड्ड़े चम्बल नदी द्वारा निर्मित खड्डों की तुलना में 'दो' मीटर से 'दस' मीटर[२] के मध्य है। यद्यपि यह बीहड़ क्षेत्र कृषि के लिए अनुपयुक्त है फिर भी इन क्षेत्रों में स्थानीय लोगों द्वारा कृषि की जाती है।

---

१. रिपोर्ट ऑन रिक्लमेशन वर्क इन एम०पी०, डिपार्टमेन्ट ऑफ एग्रीकल्चरल सॉइल एण्ड वाटर कन्जर्वेशन, ऑफिस आफ दि एग्जीक्यूटिव इन्जीनियर रैवाइन रिक्लमेशन स्कीम, मुरैना एम०पी० (१९७६), अपेन्डिक्स 'ए'।

२. रिपोर्ट ऑन दि जिओ - हाइड्रोलॉजिकल इन्वेस्टीगेशन इन भिण्ड ब्लाक डिस्ट्रिक भिण्ड एम०पी०, आफिस ऑफ दि चीफ इन्जीनियर (इन्वेस्टीगेशन) इरीगेशन डिपार्टमेन्ट, भोपाल एम०पी० {१९७८} पृष्ठ - ०७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२:१:१:३ सिन्ध-बेसली बीहड़ क्षेत्र :

चम्बल तथा क्वारी नदियों की ही भाँति सिन्ध तथा उसकी सहायक नदी बेसली ने भी अपने दोनों किनारों पर भिण्ड, मेहगाँव तथा गोहद तहसील के क्षेत्र में बीहड़ पट्टियों का निर्माण किया है। यद्यपि यह बीहड़ पट्टी चम्बल तथा क्वारी नदी द्वारा निर्मित बीहड़ पट्टी की तुलना में अपेक्षाकृत कम गहरी है, फिर भी ये क्षेत्र कृषि के लिये अनुपयुक्त हैं।

२:१:२ मैदानी क्षेत्र :

नदी अपरदन द्वारा निर्मित बीहड़ पट्टियों को छोड़कर सम्पूर्ण जिले का शेष भाग मैदानी है, जिस पर नदी द्वारा जमा की गयी जलोढ़क मिट्टी का मोटा आवरण विस्तृत है। क्षेत्रीय अपवाह तन्त्र ने मैदानी क्षेत्रों को बाँटकर उपक्षेत्रों में विभक्त कर दिया है। ये मैदानी उपक्षेत्र एक-दूसरे से नदी घाटियों एवं बीहड़ पट्टियों द्वारा अलग हैं। इन क्षेत्रों का वर्णन निम्नलिखित है -

२:१:२:१ चम्बल-क्वारी दोआब :

चम्बल तथा क्वारी नदियों के मध्य पश्चिम-पूर्व में विस्तृत यह मैदान जलोढ़क के निक्षेप के कारण निर्मित हुआ है। इस मैदान का सामान्य ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है। अटेर एवं फूप का सम्पूर्ण क्षेत्र इसी मैदान में स्थित है। इस मैदान की समुद्र तल से औसत ऊँचाई १४० मीटर से १५५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

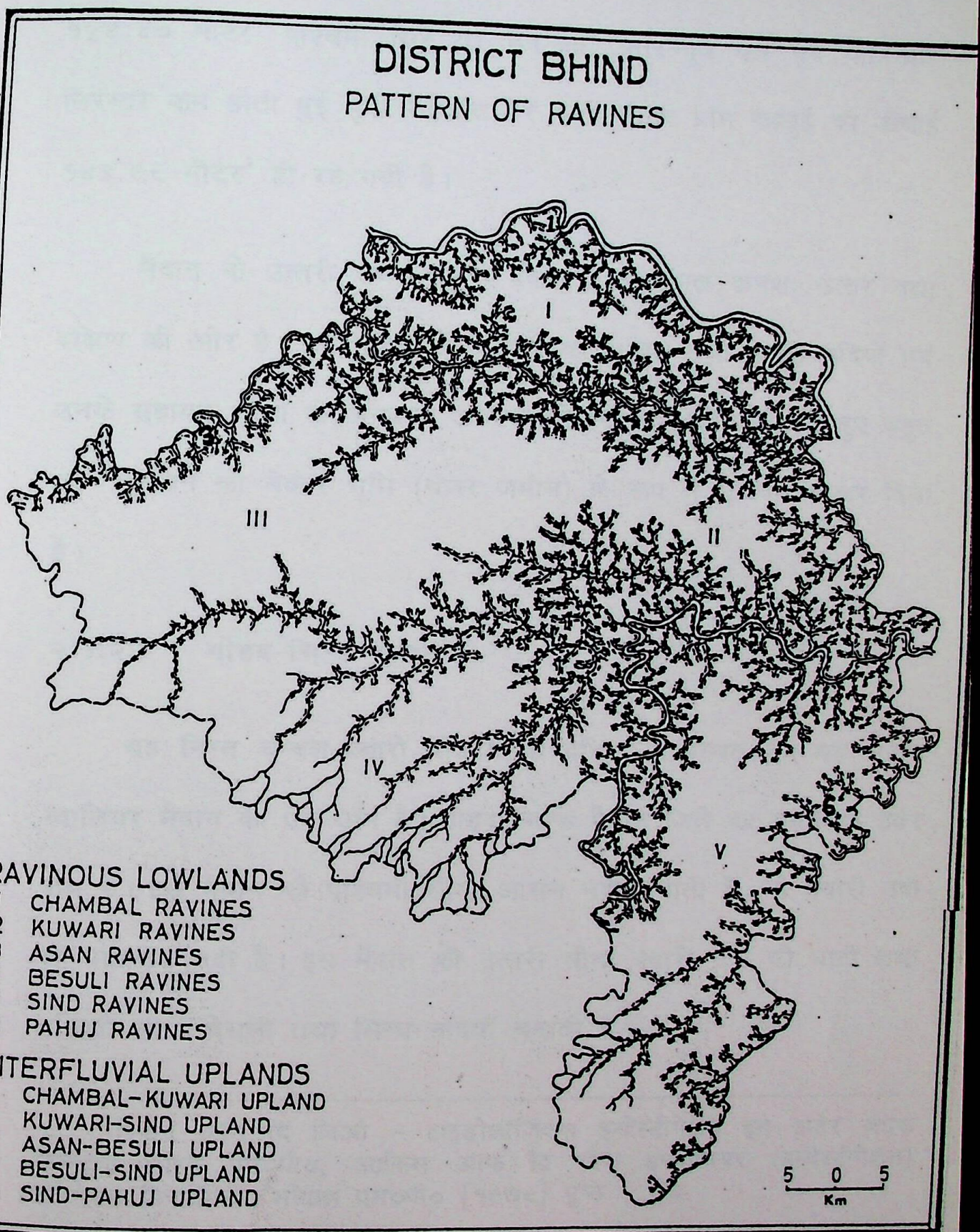

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मीटर[1] के मध्य है। इसकी अधिकतम ऊँचाई ग्राम छोंदा १५४ मीटर तथा १५४.४० मीटर[1] पश्चिमी सिरे पर है। जो उत्तर-पूर्व एवं पूर्व की ओर निरन्तर कम होती हुई पूर्वी सीमान्त पर १४३ मीटर ग्राम काछुई की ऊँचाई १४३.६६ मीटर[2] ही रह गयी है।

मैदान के उत्तरी तथा दक्षिणी किनारों का ढाल क्रमशः उत्तर तथा दक्षिण की ओर है। इस मैदान के विस्तार को चम्बल तथा क्वारी नदियों एवं उनके सहायक नालों के अनवरत अपरदन ने निरन्तर सीमित करते हुए बहुत बड़े भू-भाग को बेकार भूमि (बंजर जमीन) के रूप में परिवर्तित कर दिया है।

२:१:२:२ गोहद-भिण्ड मैदान :

यह निम्न चम्बल-क्वारी दोआब के दक्षिण में स्थित है। यह मैदान ग्वालियर मैदान का एक अंग है। गोहद-भिण्ड मैदान जिले का सर्वाधिक उर्वर क्षेत्र है। इस मैदान की पश्चिमी सीमा आसन नदी बनाती है, जो क्वारी नदी की सहायक नदी है। इस मैदान की उत्तरी सीमा क्वारी नदी की घाटी तथा दक्षिणी सीमा बेसली तथा सिन्ध नदियाँ बनाती हैं।

---

१. रिपोर्ट ऑन दि जिओ - हाइड्रोलॉजिकल इन्वेस्टीगेशन इन अटेर ब्लाक डिस्ट्रिक भिण्ड एम०पी०, आफिस ऑफ दि चीफ इन्जीनियर (इन्वेस्टीगेशन) इरीगेशन डिपार्टमेन्ट, भोपाल एम०पी० {१९७८} पृष्ठ - ०७

२. रिपोर्ट ऑन दि जिओ - हाइड्रोलॉजिकल इन्वेस्टीगेशन इन भिण्ड ब्लाक डिस्ट्रिक भिण्ड एम०पी०, आफिस ऑफ दि चीफ इन्जीनियर (इन्वेस्टीगेशन) इरीगेशन डिपार्टमेन्ट, भोपाल एम०पी० {१९७८} पृष्ठ - ०७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह समतल मैदानी क्षेत्र एण्डोरी, गोहद, मेहगाँव, गोरमी, पीपरी, भिण्ड तथा ऊमरी के अधिकांश क्षेत्रों पर विस्तृत है। इस मैदान की समुद्र तल से औसत ऊँचाई १५१ मीटर से १४१ मीटर के मध्य है। इस सम्पूर्ण मैदान पर पुरातन जलोढ़क मिट्टी का मोटा आवरण विस्तृत है। इस क्षेत्र में पायी जाने वाली प्रमुख मिट्टियां - दुमट, मटियार-दुमट अत्यधिक उपजाऊ हैं। इसीलिये यह मैदानी क्षेत्र कृषि की दृष्टि से सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में सिंचाई की सुविधाओं का काफी मात्रा में विस्तार है।

२:१:२:३ मौ - अमायन मैदान :

बेसली नदी तथा इसकी घाटी, गोहद-भिण्ड मैदान तथा मौ-अमायन मैदान के मध्य में विभाजन रेखा का कार्य करती है। इस मैदान के पश्चिम से पूर्व की ओर मोरार नाला, बेसली नदी तथा उसके सहायक नालों ने जिनमें जोरा नाला, कारू नाला, झिलमिल नाला तथा वरवा नाला प्रमुख हैं। मैदान के पूर्वी भाग में सिन्ध नदी के सहायक नालों ने मैदानी क्षेत्र को खड्ड क्षेत्र में परिवर्तित कर दिया है।

इस मैदान का ढाल दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर है। यहाँ की दक्षिण-पश्चिम में अधिकतम ऊँचाई १७७ मीटर है, जो उत्तर-पूर्व की ओर निरन्तर कम होती हुई सिन्ध के समीपवर्ती क्षेत्र में लगभग १४० मीटर ही रह गयी है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह मैदान उन स्थानों को छोड़कर जहाँ मोरार श्रेणी के कुछ अंश गुमारा, रतवा तथा झांकरी ग्रामों के निकट[1] तथा विन्ध्य वालुकाश्म के कुछ कुछ अंश मालनपुर, गोहद तथा बिरखड़ी ग्रामों के निकट[2] छोटी-छोटी पहाड़ियों एवं टीलों के रूप में देखनें को मिलते हैं, इसके अलावा सभी जगह पुरातन जलोढ़ मिट्टी का मोटा आवरण पाया जाता है।

२:१:२:४ सिन्ध-पहूज दोआब :

यह मैदान भिण्ड जिले की लहार तहसील के सम्पूर्ण क्षेत्र पर विस्तृत है। इसकी उत्तरी-पश्चिमी एवं उत्तरी सीमा का निर्माण सिन्ध नदी तथा पूर्वी सीमा का निर्धारण पहूज नदी करती है। स्थलाकति दृष्टि से सम्पूर्ण क्षेत्र समतल मैदानी है जो (दक्षिणी सीमा पर १७० मीटर से उत्तरी सिरे पर १३५

---

१. रिपोर्ट ऑन दि जिओ - हाइड्रोलॉजिकल इन्वेस्टीगेशन इन गोहद ब्लाक डिस्ट्रिक भिण्ड एम०पी०, आफिस ऑफ दि चीफ इन्जीनियर (इन्वेस्टीगेशन) इरीगेशन डिपार्टमेन्ट, भोपाल एम०पी० {१९७८} पृष्ठ - ११

२. रिपोर्ट ऑन दि जिओ - हाइड्रोलॉजिकल इन्वेस्टीगेशन इन गोहद ब्लाक डिस्ट्रिक भिण्ड एम०पी०, आफिस ऑफ दि चीफ इन्जीनियर (इन्वेस्टीगेशन) इरीगेशन डिपार्टमेन्ट, भोपाल एम०पी० {१९७८} पृष्ठ - ११

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मीटर के मध्य ऊँचा)[1] है। इस क्षेत्र की अधिकतम ऊँचाई ग्राम (भटपुरा १६८.६५ मीटर जो दक्षिणी सीमा)[1] पर है। यह ऊँचाई उत्तर की ओर निरन्तर कम होती गयी है। (सिन्ध नदी के समीपवर्ती ग्राम मेंहदा में इसकी ऊँचाई १३५ मीटर)[2] ही रह गयी है। जिले के अन्य मैदानी भागों की भाँति इस मैदान का भी निर्माण नवीन जलोढ़क के मोटे आवरण से हुआ है जिसमें मिट्टी, सिल्ट, बालू, बजरी, कंकड़ के मिश्रण की प्रधानता है।

२:१:३ भू-वैज्ञानिक संरचना :

भू-वैज्ञानिक संरचना की दृष्टि से भिण्ड जिले में आद्य महाकल्प कालीन, पूर्व कैम्ब्रियन तथा अभिनव महाकल्प काल के शैल समूह जाये जाते हैं, जो निम्नलिखित हैं -

---

१. रिपोर्ट ऑन दि जिओ - हाइड्रोलॉजिकल इन्वेस्टीगेशन इन लहार ब्लाक डिस्ट्रिक भिण्ड एम०पी०, आफिस ऑफ दि चीफ इन्जीनियर (इन्वेस्टीगेशन) इरीगेशन डिपार्टमेन्ट, भोपाल एम०पी० {१९७८} पृष्ठ - ६

२. रिपोर्ट ऑन दि जिओ - हाइड्रोलॉजिकल इन्वेस्टीगेशन इन रौन ब्लाक डिस्ट्रिक भिण्ड एम०पी०, आफिस ऑफ दि चीफ इन्जीनियर (इन्वेस्टीगेशन) इरीगेशन डिपार्टमेन्ट, भोपाल एम०पी० {१९७८} पृष्ठ - ६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भू-वैज्ञानिक समूह तथा चट्टानों के नाम

भू-वैज्ञानिक समूह	चट्टान श्रेणी	चट्टानों के नाम
ग्वालियर समूह	मोरार श्रेणी	शैल, जस्पर, बालू, बालू कंकड़
अपरविन्ध्यन समूह	कैमूर श्रेणी	शैल, बलुआ पत्थर, लारम स्ओन, सेंडस्टोन
नवीन समूह	चम्बल जलोढ़क	कंकड़, बालू, सिल्ट, मिट्टी

Source – Based on Goe-Hydrological Reports.

२:१:३:१ आद्य महाकल्प कालीन शैल समूह :

आद्य महाकल्प काल के शैल समूह के अंश मोरार श्रेणी के रूप में भिण्ड जिले की गोहद तहसील के दक्षिणी भाग में गुमारा, रतवा, जमदारा तथा झांकरी ग्रामों के निकटवर्ती क्षेत्रों में मिलते हैं।[1] गोहद तहसील में जहाँ पर मोरार श्रेणी के कुछ अंश देखने को मिलते हैं, उन्हीं क्षेत्रों में बहुत थोड़ी सी मात्रा में ग्वालियर ट्रेप के अंश भी मिलते हैं।

---

१. रिपोर्ट ऑन दि जिओ - हाइड्रोलॉजिकल इन्वेस्टीगेशन इन गोहद ब्लाक डिस्ट्रिक भिण्ड एम०पी०, आफिस ऑफ दि चीफ इन्जीनियर (इन्वेस्टीगेशन) इरीगेशन डिपार्टमेन्ट, भोपाल एम०पी० {१९७८} पृष्ठ - ११

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

DISTRICT BHIND

GEOLOGY

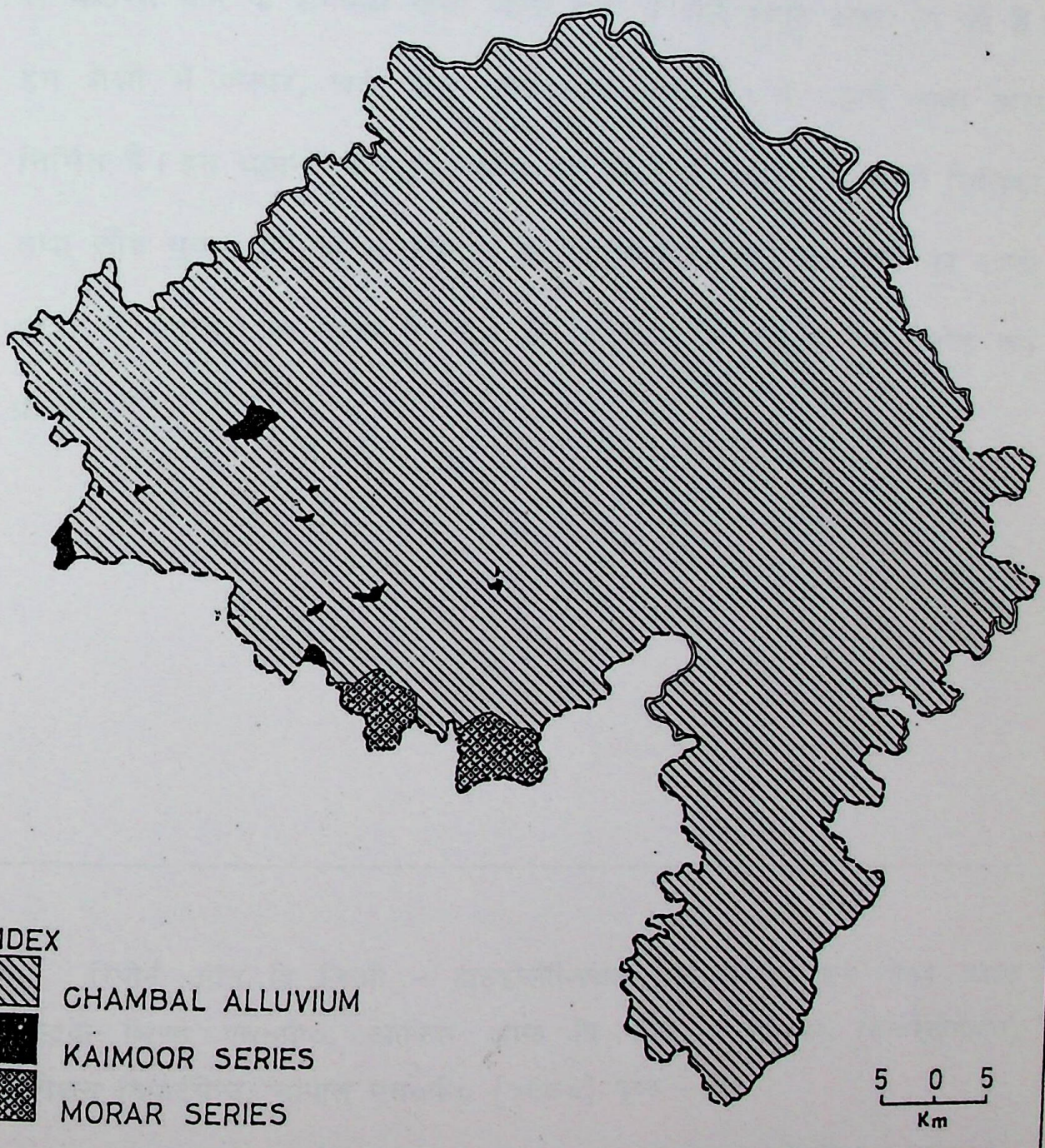

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मोरार श्रंखला के सम्पर्क में आये ग्वालियर ट्रेप के इस प्रकार के अंश गोहद तहसील के झांकरी ग्राम के निकट स्पष्ट रूप से देखे जा सकते है।[1] मोरार श्रेणी ऊपरी ग्वालियर क्रम के शैल समूहों का विस्तार है जो समय की दृष्टि से कडप्पा क्रम के समकक्ष पायी जाती है।[2] ये शैल समूह लाल रंग की हैं। इन शैलों में जस्पर, चर्ट, शैल, हॉर्नस्टोन आदि हैं। ये चट्टानें लावा द्वारा निर्मित हैं। इन चट्टानों में जस्पर तथा चर्ट दोनों ही प्रकार की चट्टानें सिलिका तथा लौह युक्त खनिजों के मिश्रण से निर्मित हैं। यद्यपि इन शैलों का काफी मात्रा में अपक्षय हो चुका है। दुबे के अनुसार "ये चट्टानें ५० करोड़ वर्ष प्राचीन हैं"।[3]

---

१. रिपोर्ट ऑन दि जिओ - हाइड्रोलॉजिकल इन्वेस्टीगेशन इन गोहद ब्लाक डिस्ट्रिक भिण्ड एम०पी०, आफिस ऑफ दि चीफ इन्जीनियर (इन्वेस्टीगेशन) इरीगेशन डिपार्टमेन्ट, भोपाल एम०पी० {१९७८} पृष्ठ - ११

२. वाडिया, डी०एन० (१९५७) जिओलॉजी ऑफ इण्डिया, मेकमिलन एण्ड कं० लिमिटेड लन्दन, पृष्ठ - १२३

३. अग्रवाल, अम्बिका प्रसाद (१९७१) भारतवर्ष : 'भू-वैज्ञानिक समीक्षा' मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पृष्ठ - ५४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२:१:३:२ पूर्व कैम्ब्रियन कालीन शैल समूह :

पूर्व कैम्ब्रियन कालीन शैलों के रूप में विन्ध्यन श्रेणी के कुछ अंश जिले की गोहद तहसील में मालनपुर, बिरखड़ी तथा गोहद के समीपवर्ती क्षेत्र में छोटी-छोटी पहाड़ियों तथा टीलों के रूप में मिलते हैं।[1] विन्ध्यन श्रेणी की शैलें वस्तुतः कैमूर श्रेणी से ही सम्बद्ध हैं। संरचना की दृष्टि से ये शैलें रंग में सफेद-भूरी, इनके कणों का आकार छोटे से लेकर मध्यम आकार के तथा कठोर होते हैं। इस श्रेणी में कहीं-कहीं शैलों में संस्तर भी पाये जाते हैं।[2] इस प्रकार के शैल समूह धरातल पर ऊपर से दृष्टिगोचर होते हैं, वहाँ इन शैलों पर अपक्षय तथा अपरदन ने अपनी क्रिया करके इनको ढक दिया है। पूर्व कैम्ब्रियन कालीन छोटी-छोटी पहाड़ियाँ वनस्पति के आवरण से आच्छादित हैं।

२:१:३:३ अभिनव कल्प कालीन शैल समूह :

गोहद तहसील के कुछ भाग को छोड़कर जिले का लगभग सम्पूर्ण क्षेत्र नदी के निक्षेप से निर्मित पुरातन एवं अभिनव जलोढ़ मिट्टी का है।

---

१. रिपोर्ट ऑन दि जिओ - हाइड्रोलॉजिकल इन्वेस्टीगेशन इन गोहद ब्लाक डिस्ट्रिक भिण्ड एम०पी०, आफिस ऑफ दि चीफ इन्जीनियर (इन्वेस्टीगेशन) इरीगेशन डिपार्टमेन्ट, भोपाल एम०पी० {१९७८} पृष्ठ - ११

२. वही , पृष्ठ - ११

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस मैदानी भाग में जलोढ़ मिट्टी का बहुत मोटा आवरण पाया जाता है। इस मैदान में नदियों द्वारा बहाकर लायी गयी मिट्टी की बहुलता है जो रंग तथा विन्यास में स्थानीय भेद रखती है। मिट्टी के अतिरिक्त यहाँ पर सिल्ट, बालू, कंकड़ तथा बजरी भी पर्याप्त मात्रा में पायी जाती है। जलोढ़ मिट्टी द्वारा निर्मित इस मैदान में मिट्टी का रंग पीला-सफेद तथा भूरे रंग का है।

जिले के इस क्षेत्र में नदी द्वारा निर्मित मैदान के अतिरिक्त विन्ध्यन कालीन शैलों के रूप में पायी जाने वाली छोटे आकार की पहाड़ियों में पाया जाने वाला प्रमुख खनिज है जो यहाँ से खण्डे के रूप में निकाला जाता है यह बालू एवं यहाँ से प्राप्त होने वाले खण्डे भवन निर्माण सामग्री के रूप में प्रयोग में लाये जाते हैं। यहाँ मौरम, ईंट, मिट्टी अन्य खनिजों के रूप में मिलती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२:२ भिण्ड जिले की जलवायु :

मध्य प्रदेश राज्य की उत्तरी सीमा पर स्थित भिण्ड जिला देश के मध्य भाग में स्थित होने के कारण यहाँ पर सामुद्रिक प्रभाव नहीं पड़ता है। सम्पूर्ण जिला कर्क अक्षांश से थोड़ा सा उत्तर में स्थित है। इन दोनों ही प्रकार की स्थितियों ने संयुक्त रुप से जिले में एक विशेष प्रकार की स्थिति को पैदा कर दिया है। यहाँ पर ग्रीष्म ऋतु अत्यधिक गर्म तथा शीत ऋतु ठण्डी एवं शुष्क होती है। यहाँ पर होने वाली वर्षा मानसूनी है जो जून माह से प्रारम्भ होकर सितम्बर माह तक चलती है। यहाँ पर पाला यदा-कदा ही पड़ता है। जिले में वार्षिक तापान्तर अधिक मिलता है।

जिले के सबसे ठण्डे महीने का तापमान भी १५° सेण्टीग्रेट से अधिक ही रहता है। जनवरी माह यहाँ का सबसे ठण्डा महीना है, जिसका औसत तापमान १५.३८° सेण्टीग्रेट रहता है। जनवरी माह की तुलना में दिसम्बर माह का औसत तापमान १° सेण्टीग्रेट अधिक रहता है। फरवरी से औसत तापमान में वृद्धि होना प्रारम्भ हो जाती है, जो जून तक जारी रहती है। फरवरी माह के औसत तापमान की तुलना में जून का औसत तापमान लगभग १७° सेण्टीग्रेट अधिक हो जाता है। सबसे गर्म महीना जून है, जिसका औसत तापमान ३४.३८° सेण्टीग्रेट रहता है।

जून महीने में मानसून प्रस्फोट के साथ ही पूरे जिले के औसत तापमान में ह्रास होने लगता है। जून माह की तुलना में जुलाई तथा अगस्त

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महीने के मध्य होने वाला तापमान ह्रास लगभग ३° सेण्टीग्रेट से ५° सेण्टीग्रेट के मध्य रहता है।

सितम्बर के महीने में मेघाच्छादन के कम होने के कारण औसत तापमान में थोड़ी सी वृद्धि होती है, परन्तु अक्टूबर माह से औसत ताषमान गिरना प्रारम्भ हो जाता है। सितम्बर महीने का औसत तापमान २६.७५° सेण्टीग्रेट की तुलना में अक्टूबर महीने का औसत तापमान घटकर २५.८८° सेण्टीग्रेट ही रह जाता है। औसत तापमान में गिरावट का मुख्य कारण रात्रि के तापमान में तीव्र कमी होना है। औसत तापमान में गिरावट की यह प्रक्रिया जनवरी तक जारी रहती है, परन्तु किसी भी महीने का औसत तापमान इतना नीचे नहीं जाता कि यहाँ की जनसंख्या तथा वनस्पति पर विपरीत असर पड़े।

२:२:१ भिण्ड जिले की ऋतुएँ :

भिण्ड जिला मानसूनी जलवायु के अन्तर्गत आता है। भिण्ड जिले के कर्क रेखा के उत्तर में स्थित होने के कारण यहाँ गर्मियों में अधिक गर्मी रहती है। स्थलीय हवाओं की अधिकता, वायु की शुष्कता, उच्च दैनिक तापमान एवं वर्षा की कमी आदि यहाँ की जलवायु की प्रमुख विशेषतायें हैं। यहाँ पर जलवायु के विभिन्न तत्वों में जैसे वर्षा, तापमान और वायुदाब में स्थानीय अन्तर बहुत कम पाया जाता है। देश के अन्य क्षेत्रों की ही भाँति इस क्षेत्र में भी चार ऋतुएँ पायीं जातीं हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(i) ग्रीष्म ऋतु।

(ii) वर्षा ऋतु।

(iii) मानसून निवर्तन ऋतु।

(iv) शीत ऋतु।

२:२:१:१ ग्रीष्म ऋतु :

जिले में ग्रीष्म ऋतु अप्रैल से प्रारम्भ होकर मध्य जून तक रहती है। इस समय सूर्य कर्क रेखा पर सीधा चमकता है तथा सम्पूर्ण जिले में सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं। अतः इन दिनों पूरे जिले में तापमान ऊँचा रहता है। इस ऋतु में सम्पूर्ण जिले में आसमान स्वच्छ रहता है, किन्तु धूलभरी हवाओं के चलने के कारण आकाश धूलाच्छादित हो जाता है और आसमान पीला दिखाई देने लगता है। इस ऋतु में दिन में गर्म हवायें चलती हैं, जिन्हें 'लू' कहते हैं। स्थानीय निवासी 'लू' को 'लपट' कह कर पुकारते हैं।

दिन में सूर्य की गर्मी बढ़ते ही शरीर को झुलसा देने वाली हवाएँ चलती हैं जिसके कारण ग्रीष्म काल में प्रातः से सांय काल तक घर से बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है। रात्रि के तापमान में गिरावट आ जाती है। इस ऋतु में वर्षा कभी-कभी नाम मात्र की होती है।

२:२:१:२ वर्षा ऋतु :

भिण्ड जिले में वर्षा ऋतु मध्य जून से प्रारम्भ होकर सितम्बर मास तक रहती है। जून में तापमान अधिक हो जाता है किन्तु जुलाई के बाद

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

RAINFALL OF BHIND

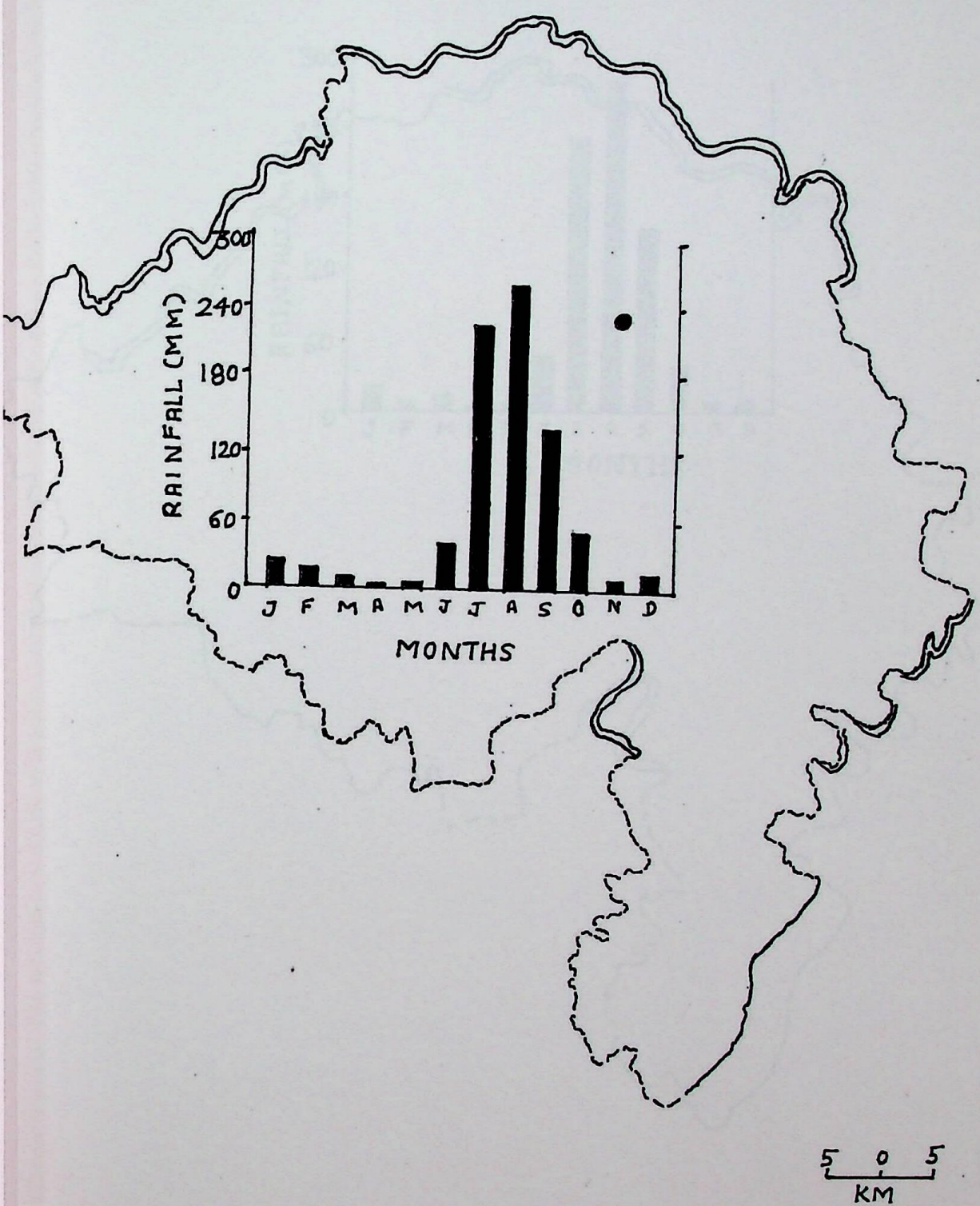

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

RAINFALL OF MEHGAON

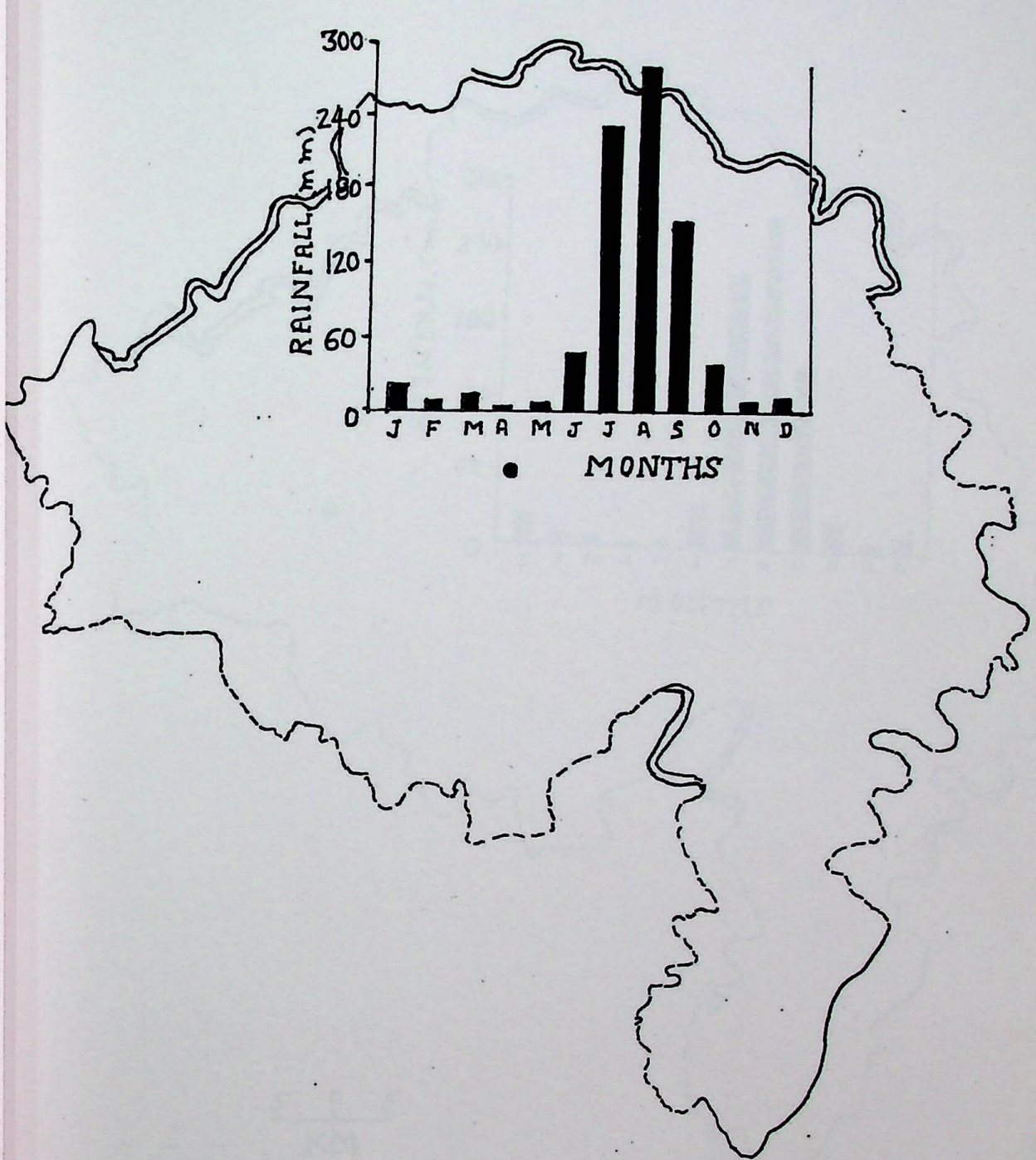

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

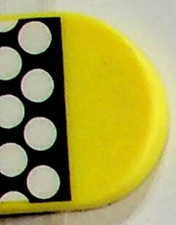

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

RAINFALL OF GOHAD

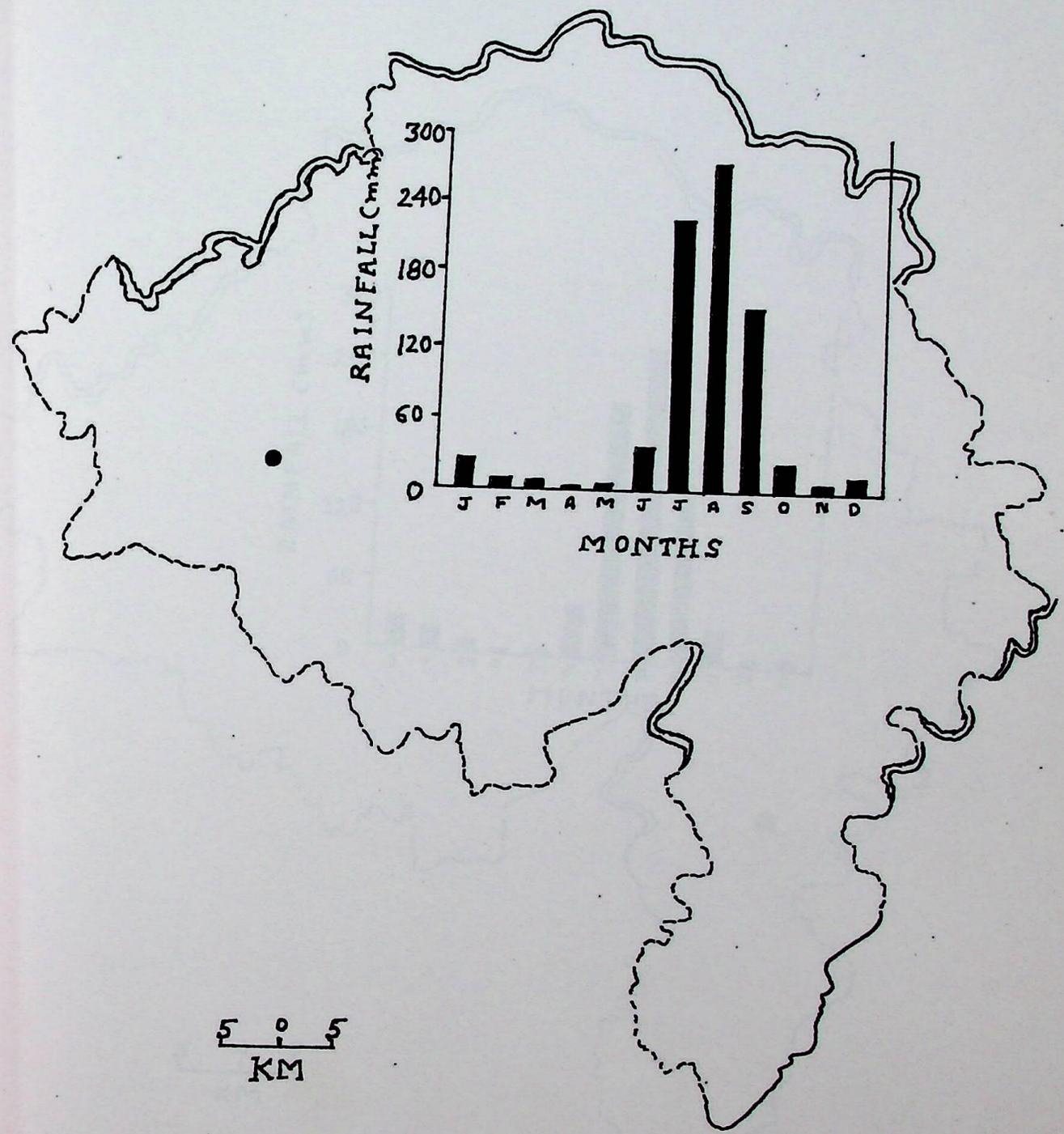

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

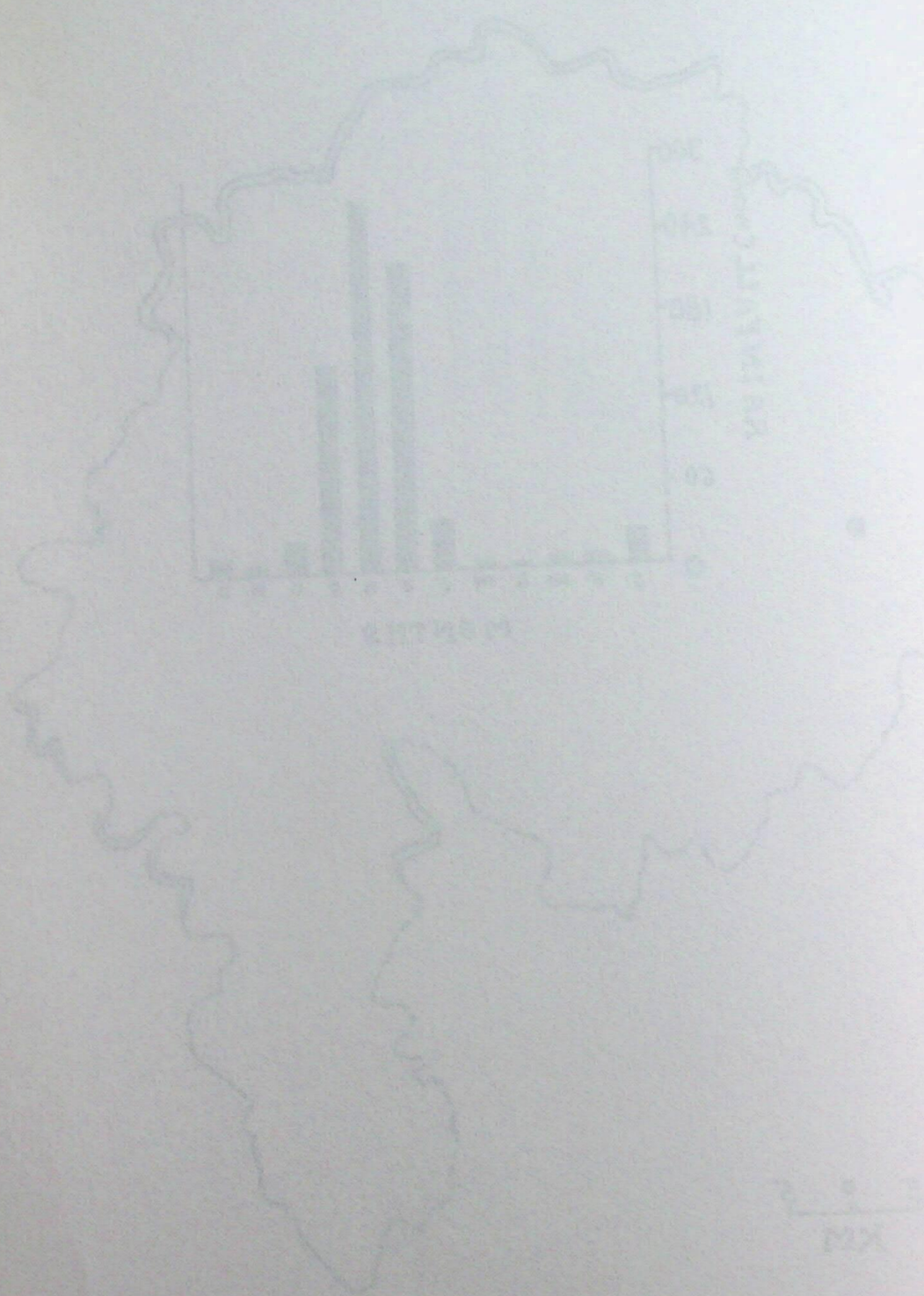

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

RAINFALL OF LAHAR

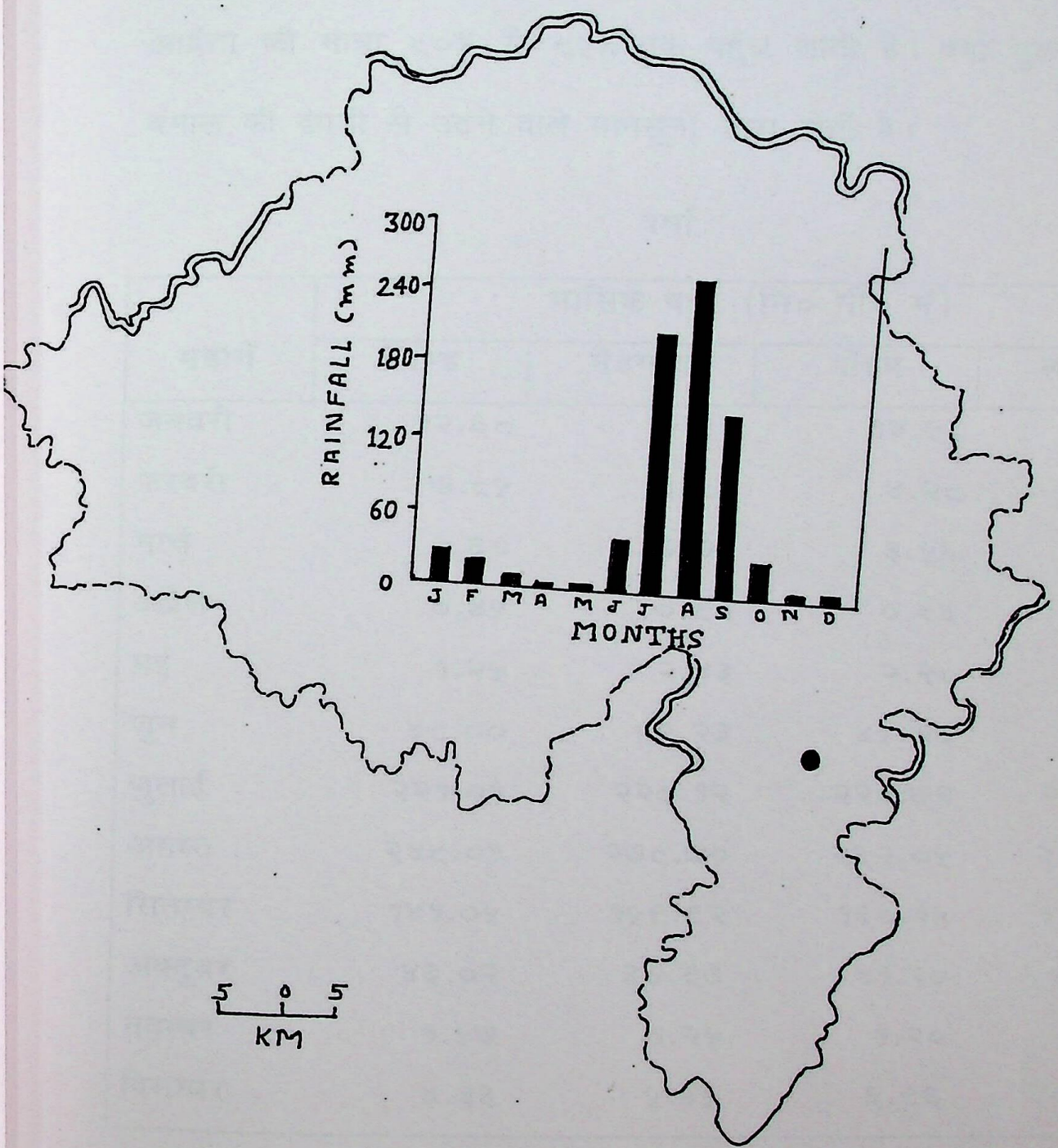

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तापमान में शनैः-शनैः गिरावट आने लगती है। वर्षा होते ही समस्त जिले के तापमान में गिरावट आ जाती है तथा तापमान ह्रास की यह प्रक्रिया अगस्त तक जारी रहती है। इस समय वायुमण्डल में नमी अधिक रहती है तथा आर्द्रता की मात्रा ८०% से ८५% तक पहुँच जाती है। वर्षा मुख्य रूप से बंगाल की खाड़ी से उठने वाले मानसूनों द्वारा होती है।

वर्षा

महीनें	मासिक वर्षा (मि० मी० में)			
	भिण्ड	मेहगाँव	गोहद	लहार
जनवरी	१२.६८	१५.३८	१४.५३	१२.६८
फरवरी	७.८५	३.६६	४.२८	७.८५
मार्च	३.६०	७.७२	३.५६	३.६०
अप्रैल	०.४५	०.८८	०.८६	०.४५
मई	१.२५	२.४३	२.२८	१.२५
जून	४८.००	५२.२३	४५.७६	४८.००
जुलाई	२२१.०१	२२०.१२	२२८.७२	२२१.०१
अगस्त	२४८.०१	२७८.७०	२६२.०५	२४८.०१
सितम्बर	१४१.०५	१५६.६२	१६०.१५	१४१.०५
अक्टूबर	४३.०२	३७.६७	४१.२०	४३.०२
नवम्बर	१.५७	१.२५	१.२०	१.५७
दिसम्बर	४.३३	५.४५	६.६६	४.३३

* Regional planning for Socio-economic development in district Bhind, M.P. India. A project report sponsored by Indian council for Social Science Research, New Delhi. ,Dr. Kishori Singh, Department of Geography, Karm Kshettra Post Gratuade College Etawah (U.P.) 206001. Affilated to : S.S.J.M. University, Kanpur – 14.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CLIMOGRAPH OF BHIND

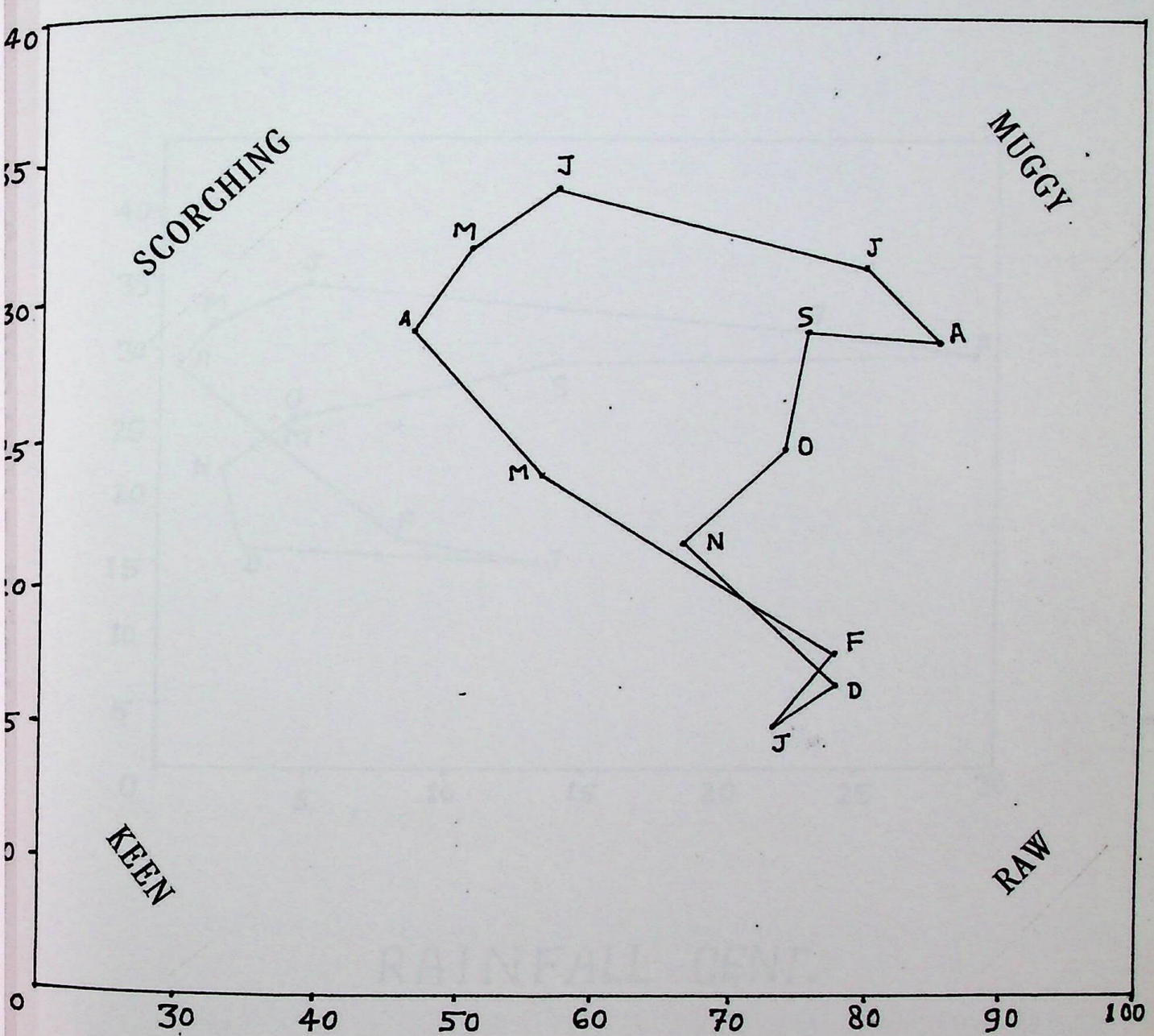

RELATIVE HUMIDITY RERCENTAGE

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

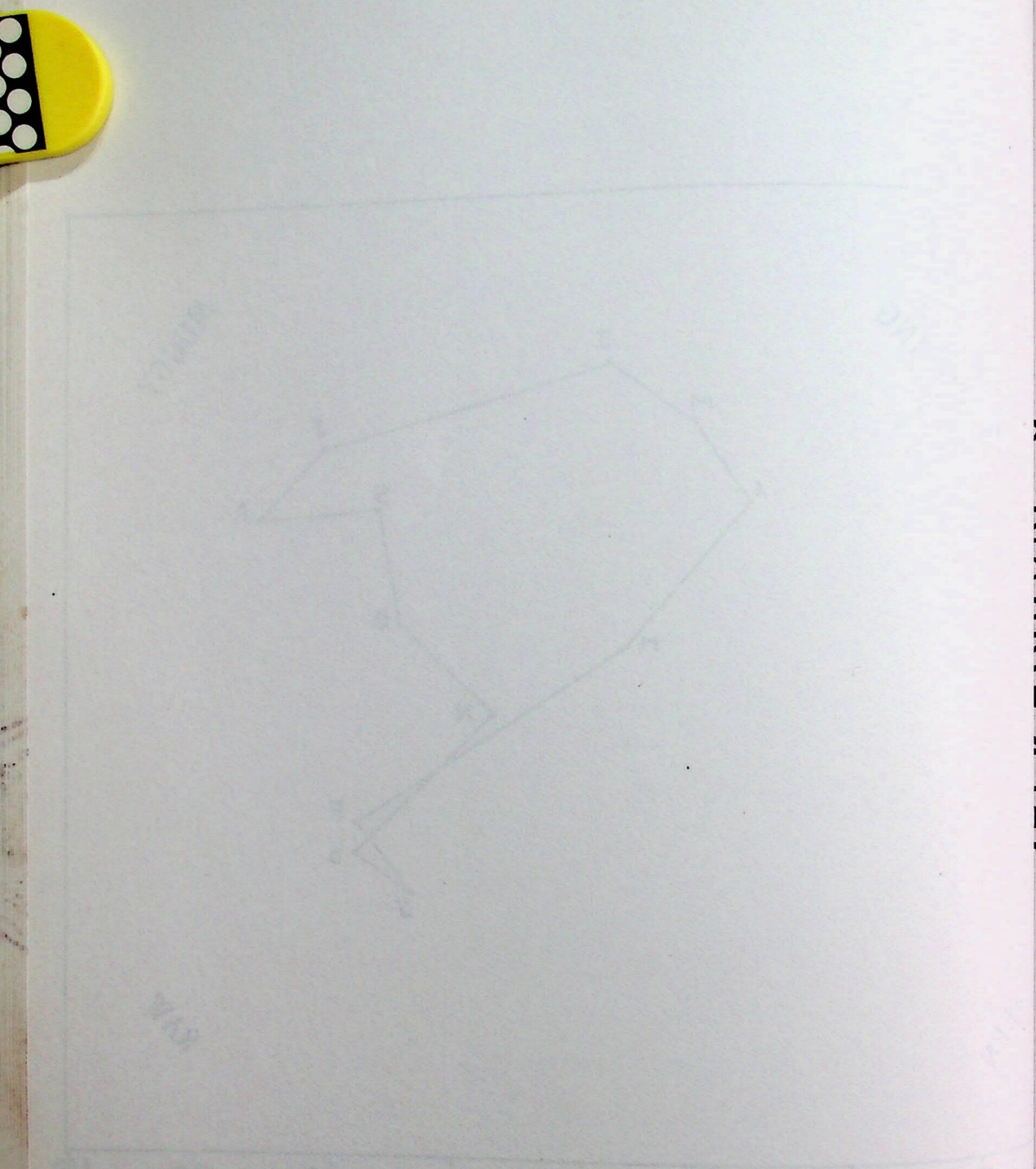

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

HYTHERGRAPH OF BHIND

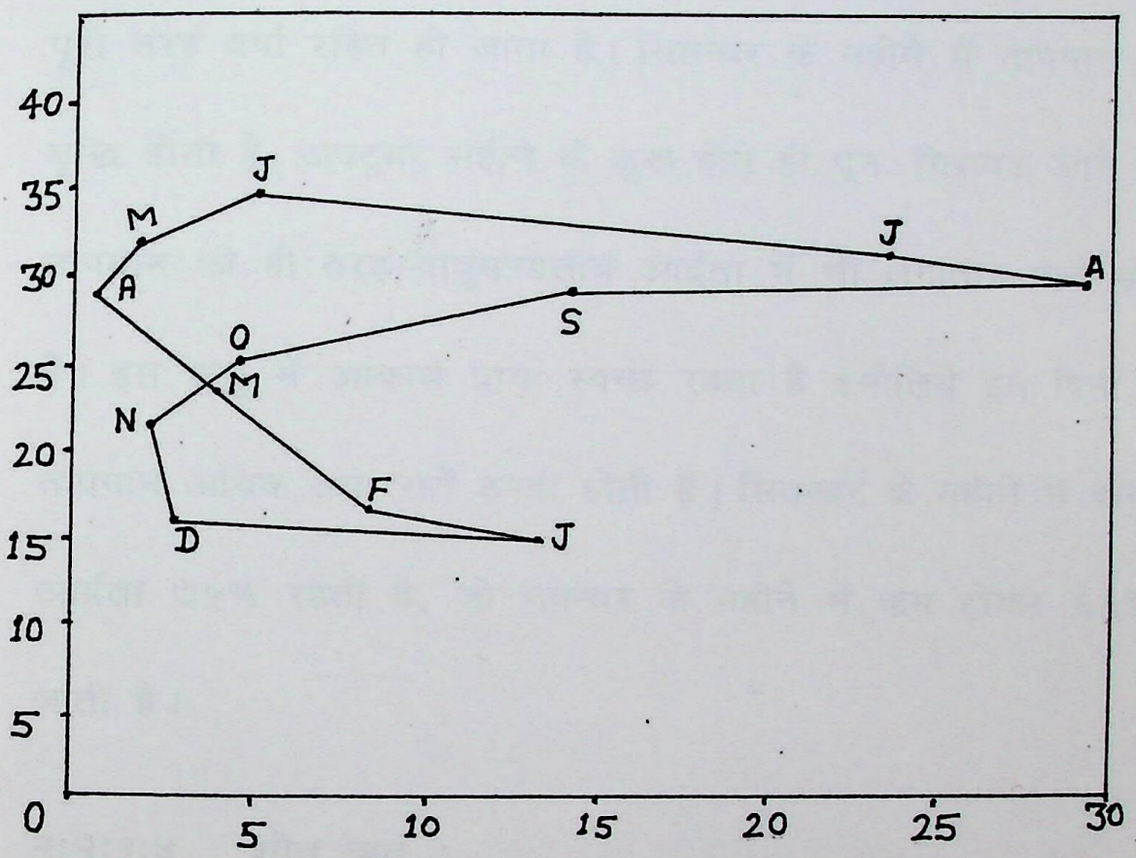

RAINFALL CENT.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

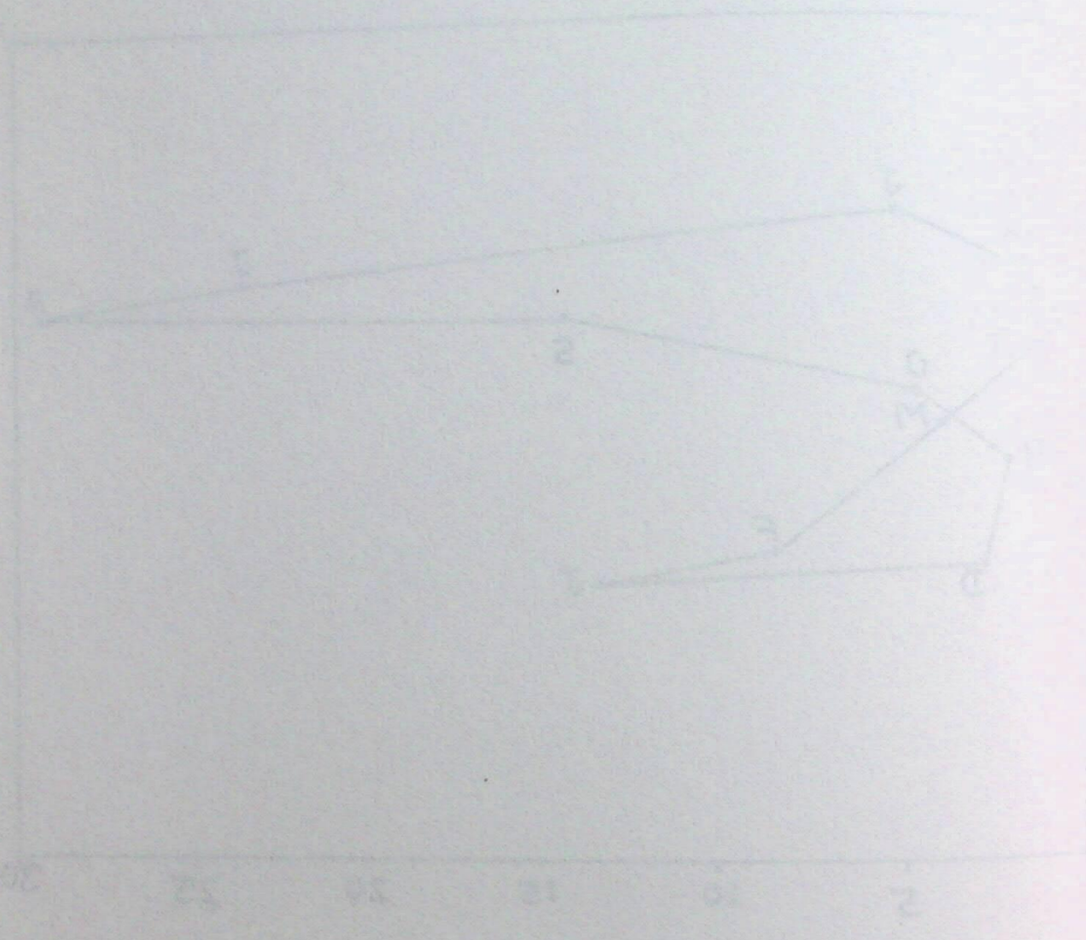

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२:२:१:३ मानसून निर्वतन ऋतु :

भिण्ड जिले में वर्षा ऋतु की समाप्ति सितम्बर मास के समाप्त होते ही शुरू हो जाती है। माह अक्टूबर में बहुत कम वर्षा होती है। नवम्बर महीना पूरी तरह वर्षा रहित हो जाता है। सितम्बर के महीने में तापमान में मामूली बृद्धि होती है, अक्टूबर महीने के शुरू होते ही पुनः गिरावट आने लगती है। तापमान की ही तरह वायुमण्डलीय आर्द्रता में भी लगातार कमी होती जाती है। इस ऋतु में आकाश प्रायः स्वच्छ रहता है इसीलिये इन दिनों, दिन का तापमान अधिक तथा रातें ठण्डी होती हैं। सितम्बर के महीने में वायुमण्डलीय आर्द्रता ७५% रहती है, जो नवम्बर के महीने में कम होकर ६६% ही रह जाती है।

२:२:१:४ शीत ऋतु :

नवम्बर माह के मध्य से ही तापमान में गिरावट आनी शुरू हो जाती है तथा तापमान में गिरावट धीरे-धीरे बढ़ती जाती है। नवम्बर माह की तुलना में दिसम्बर माह के तापमान में अत्यधिक गिरावट आ जाती है। इस समय सूर्य मकर रेखा पर होने के कारण सूर्य की किरणें इस क्षेत्र पर तिरछी पड़ती हैं, जिससे यह क्षेत्र न्यूनतम तापक्रम के क्षेत्र में आ जाता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जनवरी माह जिले का सबसे ठण्डा महीना होता है जबकि फरवरी माह से तापक्रम में फिर से वृद्धि होनी शुरू हो जाती है। शीत ऋतु में होने वाली वर्षा अत्यधिक परिवर्तन शील है। जनवरी माह सर्वाधिक वर्षा प्राप्त करता है। शेष माह मात्र ४ मिली मीटर से ८ मिली मीटर तक ही वर्षा प्राप्त करते हैं। शीतकाल में वर्षा मानसूनी चक्रवातों से होती है, इसे इस जिले में स्थानीय निवासी 'महावट' के नाम से पुकारते हैं। जब कभी कोहरे से आच्छन्न प्रभात भी इन्हीं दशाओं का प्रतिफल होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२:३ भिण्ड जिले का अपवाह तन्त्र :

भारत के आर्थिक विकास में नदियों का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। यहाँ नदियाँ आदि काल से ही मानव के जीवन और गतिविधियों का साधन रहीं हैं। प्राचीन काल में इन्हीं नदियों द्वारा व्यापार होता था, किन्तु भिण्ड जिले में सड़क मार्गों का विकास और जल मार्ग से उपेक्षा भाव होने से इस महत्वपूर्ण साधन का विकास कम हो गया है। भिण्ड जिले की नदियों का जल अधिकांशतः भूमि को सींचने के लिये बड़ा ही उपयुक्त साधन रहा है।

"नदी अपने उद्‌गम स्थान से मुहाने तक जिस मार्ग में बहती है तथा अन्य नदियों का जल संचित करती है उसे नदी का अपवाह क्षेत्र कहते हैं। किसी देश की नदियाँ जिस ओर को प्रवाहित होती हैं, उसी ओर देश का ढाल होता है। नदियों का अपवाह क्रम ही जल अपवाह प्रणाली को जन्म देता है।"[१]

भिण्ड जिले के अपवाह तन्त्र में यहाँ की नदियों का प्रमुख रूप से हाथ रहा है। भिण्ड जिले की प्रमुख नदी चम्बल नदी है। जो मध्य-प्रदेश तथा उत्तर-प्रदेश का आपस में विभाजन करती है। चम्बल नदी सीमा रेखा के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

---

१. हाईस्कूल भारत भूमि : डा० चतुर्भुज मामोरिया, जे०के० जैन : साहित्य भवन हॉस्पिटल रोड, १९८७, आगरा, पृष्ठ- २२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

DISTRICT BHIND
DRAINAGE

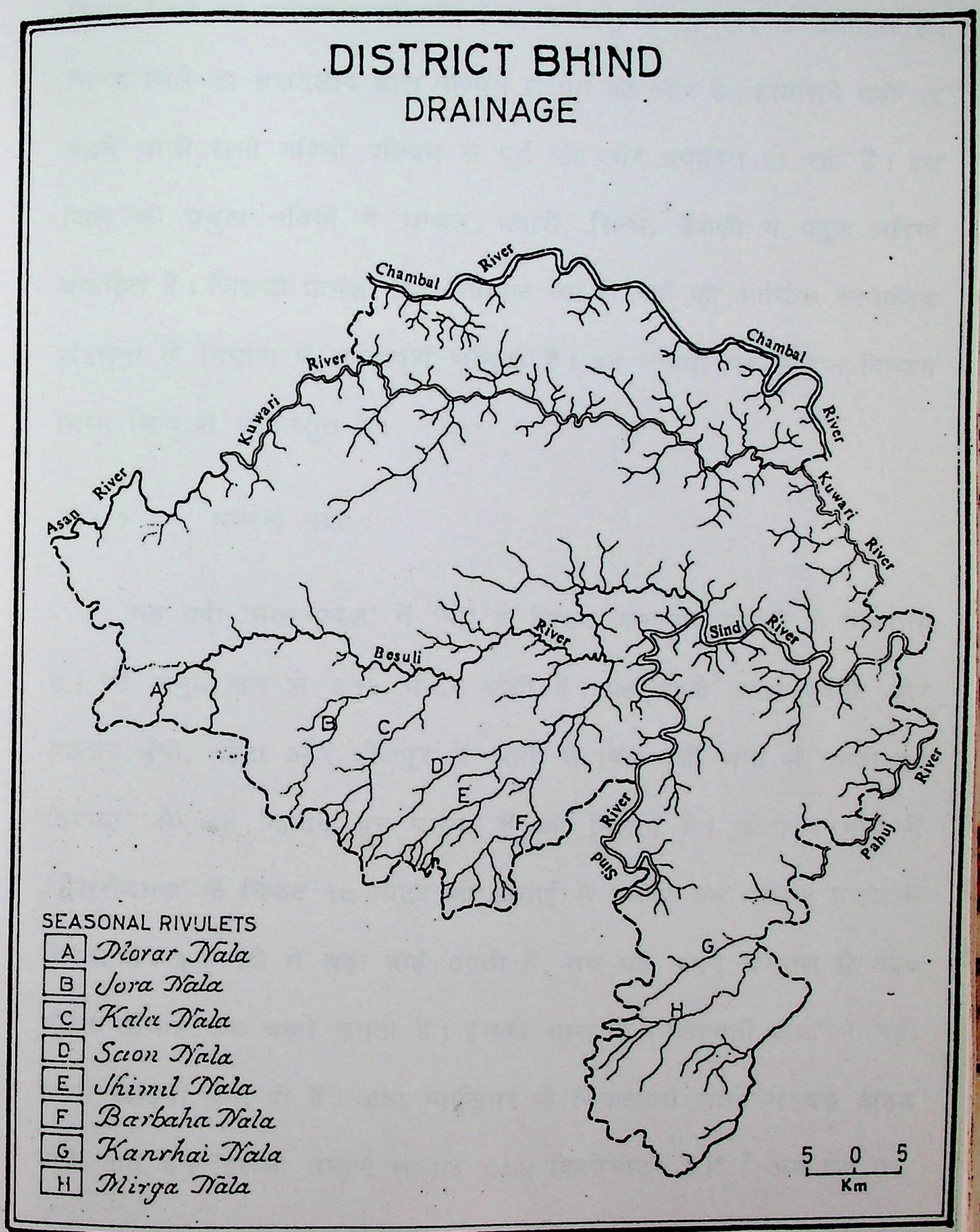

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

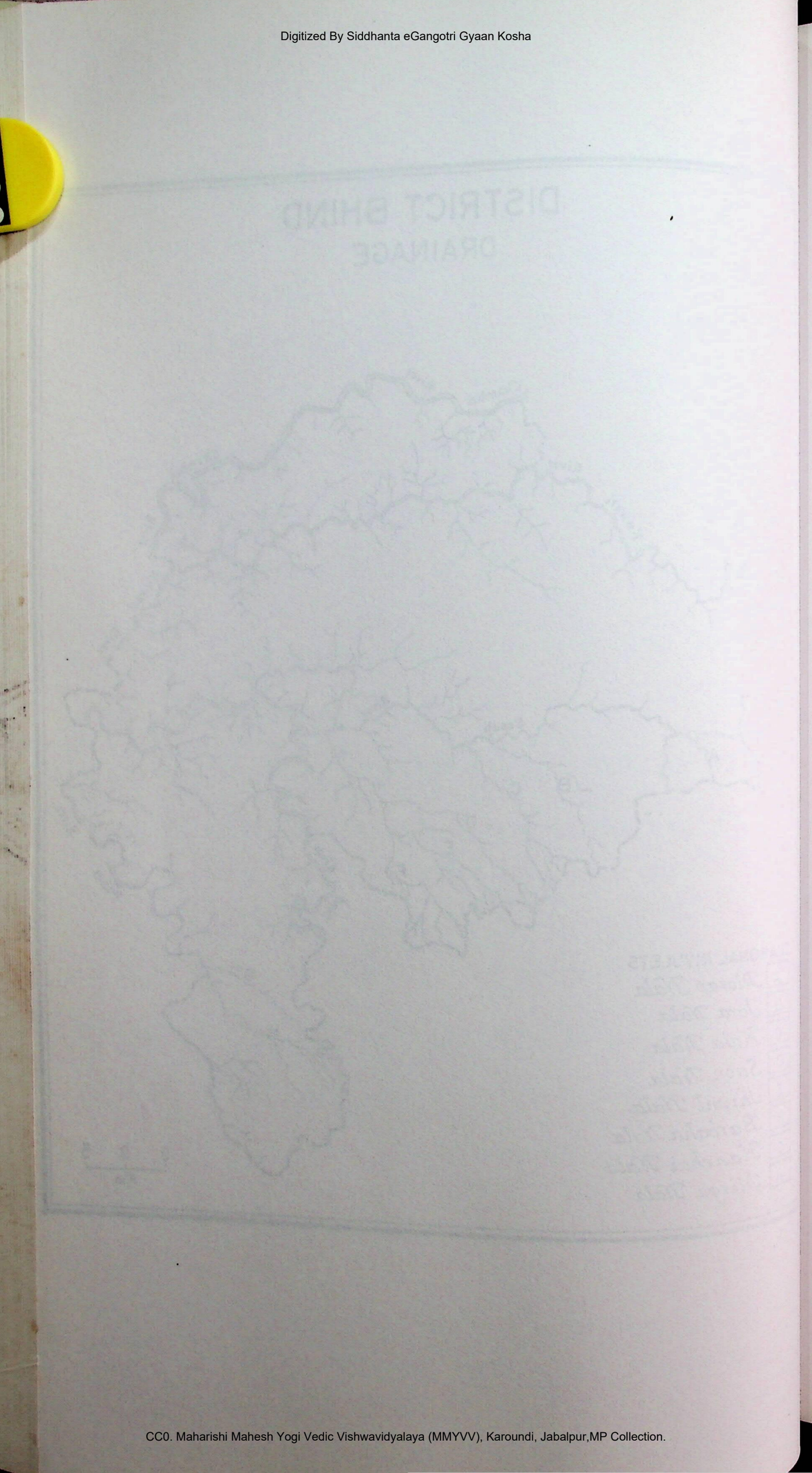

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड जिले की लगभग सभी नदियाँ अपने ढाल के अनुरूप ही प्रवाहित हैं। भिण्ड जिले का धरातलीय ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है। इसीलिये यहाँ पर बहनें वाली सभी नदियाँ पश्चिम से पूर्व की ओर प्रवाहित हो रही हैं। इस जिले की प्रमुख नदियों में चम्बल, क्वारी, सिन्ध, वैशली व पहुज नदियाँ प्रवाहित हैं। जिसकी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से यहाँ की आर्थिक, सामाजिक संरचना के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका है। इन नदियों का संक्षिप्त विवरण निम्न बिन्दुओं से प्रस्तुत है।

२:३:१ चम्बल नदी :

यह नदी 'मध्य-प्रदेश' में 'मौ' के निकट जानापाव पहाड़ी से निकलती है। जो समुद्र तल से ६१६ मीटर ऊँची है। यह पहले उत्तर-पूर्वकी ओर बहकर बूँदी, कोटा और धौलपुर में आती है फिर पूर्वी भाग में बहती हुई 'इटावा' से ३८ किमी० दूर यमुना में जा मिलती है। कोटा सम्भाग में 'भैसरोडगढ़' के निकट १८ मीटर की ऊँचाई से इसका जल चूलिया प्रपात में गिरता है। इस नदी में बड़ी बाढ़ें आती हैं, तब यह अपने धरातल से १३० मीटर ऊँचाई तक बहने लगती है। इसकी धारा ने निकटवर्ती क्षेत्रों में बड़ी गहरी खाइयाँ बना दी हैं। अतः ग्वालियर के निकटवर्ती भागों में बड़े खड्ड पाये जाते हैं। "इसकी सम्पूर्ण लम्बाई ६६५ किलोमीटर है।" [१] अब इस पर

---

१. आधुनिक भारत का भूगोल : डा० चर्तुभुज मामोरिया : साहित्य भवन आगरा षष्टम संस्करण १९८७ : पृष्ठ - १०७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चम्बल नदी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चम्बल जल विद्युत योजना बनायी गयी है। कीली, सिन्ध, पार्वती और बनास नदियों का जल इसमें मिल जाने पर यह नदी विशाल बन गयी है।

यह नदी चर्मावती के नाम से भी जानी जाती है। यह नदी भिण्ड जिले में बहाव के दृष्टिकोण से प्रचण्डगति वाली है, जिसके कारण पृष्ठ प्रदेशों में भीषण बीहड़ों का निर्माण हो गया है। यह नदी मध्य प्रदेश के इन्दौर, धार, उज्जैन, रतलाम एवं मन्दसौर जिले से प्रवाहित होती हुई राजस्थान की सीमा से गुजरकर मध्य-प्रदेश के मुरैना एवं भिण्ड जिले में प्रवेश कर 'पचनदा' नामक स्थान पर यह यमुना नदी में मिल जाती है।

जिले की नदियों का जलविसर्जन

क्रमांक	नदी	हाइड्रोलिक स्टेशन	जल विसर्जन (क्यूसेक में)
१.	चम्बल	बरही	१६५०००
२.	सिन्ध	मेंहदा	६०,०००
३.	क्वारी	डिड़ी	६७८०
४.	आसन	ऐनो	३०००
५.	बेसली	गोहद	३८००
६.	पहूज	कनाबर	२००००

* Regional Planning for Socio-Economic Development in District Bhind, M.P. India. A project report, sponsored by Indian Council of Social Science Research, New Delhi. Dr. Kishori Singh, Department of Geography, Karm Kshettra post Gratuate College Etawah (U.P.) 206001, Affiliated to : S.S.J.M. Kanpur University, Kanpur, P.N. 11

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२:३:२ क्वारी नदी :

क्वारी नदी भिण्ड जिले की दूसरी बड़ी नदी है। यह नदी भिण्ड एवं मुरैना के बीच प्राकृतिक सीमा का निर्धारण करती है तथा जिले की भिण्ड एवं मेहगाँव तहसील में होकर बहती है। जब यह नदी भिण्ड जिले में प्रवेश करती है तब इसका बहाव दक्षिण से उत्तर की ओर और आगे जिले की अन्य नदियों की तरह पश्चिम से पूर्व की ओर हो जाता है।

क्वारी नदी सिंन्ध नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी है। यह नदी मुरैना जिले के पठार से निकलकर चम्बल नदी के सहारे बहती हुई उत्तर-पूर्व में भिण्ड जिले की दक्षिणी सीमा के निकट सिन्ध नदी में जाकर मिल जाती है। भिण्ड जिले में क्वारी नदी के प्रवाह की कुल लम्बाई १२२ किमी० है। भिण्ड तहसील में इसका ७७ किमी० और मेहगाँव तहसील में ४५ किमी० की लम्बाई का कुल बहाव क्षेत्र है।

२:३:३ सिन्ध नदी :

सिन्ध नदी का प्रवाह मार्ग बहुत घुमावदार है तथा भिण्ड जिले की भिण्ड, मेहगाँव एवं लहार तहसीलों की भौगोलिक सीमा निर्धारित करती है। भिण्ड जिले में इसकी कुल लम्बाई लगभग १०६ किमी० है। इस नदी का विन्ध्यन के पठार में विदिशा जिले में हाटोली गाँव के पास उद्गम क्षेत्र है। इस पठार से यह उत्तर की ओर बहती है। जिरवासा गाँव के पास इसमें बेसली नदी आकर मिल जाती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह नदी ८६ किमी० भिण्ड जिले के आन्तरिक क्षेत्र में तथा २० किमी० भिण्ड दतिया जिले की सीमा पर प्रवाहित है। इसकी सहायक नदियाँ क्वारी, पहूज तथा वैशली हैं।

"यह नदी लद्दाख श्रेणी के उत्तरी भाग में ५००० मीटर की ऊँचाई से कैलाश चोटी के दूसरी ओर एक सहायक नदी सिंगी खम्बाव और दक्षिण की ओर से गरतंग चू आकर मिलती है।"[1] अन्त में यह नदी बहती हुई अरब सागर में गिर जाती है।

२:३:४ वैशली नदी :

वैशली नदी सिन्ध की प्रमुख सहायक नदी है। यह नदी ग्वालियर पठार के उत्तरी ढाल से बिलौउआ के पास से निकलती है। ग्वालियर जिले से यह उत्तर की ओर बहती हुई भिण्ड जिले में अलोरी गाँव के पास प्रवेश करती है। यह नदी भिण्ड जिले के भिण्ड, मेहगाँव, गोहद तहसीलों के अन्तर्गत प्रवाहित है। भिण्ड जिले में वैशली नदी के प्रवाह मार्ग की लम्बाई ११५ किमी० है, जिसका ४० किमी० गोहद तहसील में २० किमी० भिण्ड में एवं ५५ किलोमीटर भाग मेहगाँव तहसील में पड़ता है। उदयपुरा गाँव के पास वैशली नदी आगे चलकर सिन्ध नदी में मिल जाती है।

---

१. आधुनिक भारत का वृहद भूगोल : चर्तुभुज मामोरिया : साहित्य भवन आगरा, षष्टम संस्करण १९८७, पृष्ठ - १०८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२:३:५ पहुज नदी :

पहुज नदी सिन्ध नदी की सहायक नदी है। पहुज नदी शिवपुरी पठार के पासवपूर्वी ढाल पर करखेड़ा के पास से उद्‌गमित होती है। शिवपुरी, झाँसी, दतिया जिलों में बहती हुई यह नदी जिले में जखौली गाँव के पास प्रवेश करती है।

यह नदी भिण्ड की दक्षिणी-पूर्वी एवं पूर्वी सीमा पर बहती है। इस नदी का अधिकतर प्रवाह मार्ग उत्तर-प्रदेश के जिला जालौन में पड़ता है। यह नदी भिण्ड जिले को उत्तर प्रदेश के जिला जालौन से अलग करती है।

२:३:६ सोनभद्र या मृगा नदी :

यह नदी आसन नदी के नाम से भी जानी जाती है। यह नदी भिण्ड जिले के आलमपुर कस्बे के पास से बहती है, जिसका बहाव उत्तर से दक्षिण की ओर है। आगे चलकर इसका बहाव पश्चिम से पूर्व की ओर हो जाता है।

आलमपुर के आस-पास के लोग इसे सोनभद्र और आगे बहने पर दबोह कस्बे के स्थानीय लोग इसे मृगा नदी के नाम से सम्बोधित करते हैं। यह छोटी नदी है। यह आगे चलकर पहूज नदी में मिल जाती है।

भिण्ड जिले में अनेक छोटे-बड़े नाले भी हैं जो बरसात में वर्षा का जल बहाकर अपरदन कार्य करतें हैं, जिससे बड़ी मात्रा में भूमि का कटाव होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२:४ भिण्ड जिले की मिट्टियाँ :

मिट्टी प्राचीन काल से ही भारतीय कृषक की अमूल्य सम्पदा रही है, जिस पर देश का सम्पूर्ण कृषि उत्पादन निर्भर करता है। "मिट्टी भू-पृष्ठ पर मिलने वाले असंगठित पदार्थों की वह ऊपरी पर्त है जो मूल चट्टानों अथवा वनस्पति के योग से बनती है"।[1]

बिलकॉक्स ने मिट्टी को इस प्रकार पारिभाषित किया है -

"मानव सभ्यता का इतिहास मिट्टी का इतिहास है और प्रत्येक व्यक्ति की शिक्षा मिट्टी से ही प्रारम्भ होती है।"[2]

"धरातल के ऊपरी भाग को मिट्टी कहते हैं जिसमें चट्टानों के टूटे-फूटे बारीक कण तथा वनस्पतियों के सड़े-गले अंशों का समावेश होता है। मिट्टी में पौधे को उगने एवं बढ़ने के लिये आवश्यक पोषक तत्व विद्यमान होते हैं। मिट्टी में अनेक खनिज लवण व वैक्टीरिया मिले होते हैं। मिट्टी की गहराई ३ मीटर से ६ मीटर मानी जाती है। मिट्टी का निर्माण चट्टानों के टूटने-फूटने से होता है। वनस्पति के सड़े-गले अंश मिट्टी को उपजाऊ शक्ति प्रदान करते हैं।

---

१. आधुनिक भारत का वृहद् भूगोल : डा० चर्तुभुज मामोरिया : पृष्ठ - १६६

२. हाईस्कूल भारत भूमि : डा० चर्तुभुज मामोरिया, जे०के० जैन : साहित्य भवन आगरा : १६८७, पृष्ठ - ८१

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

DISTRICT BHIND

SOILS

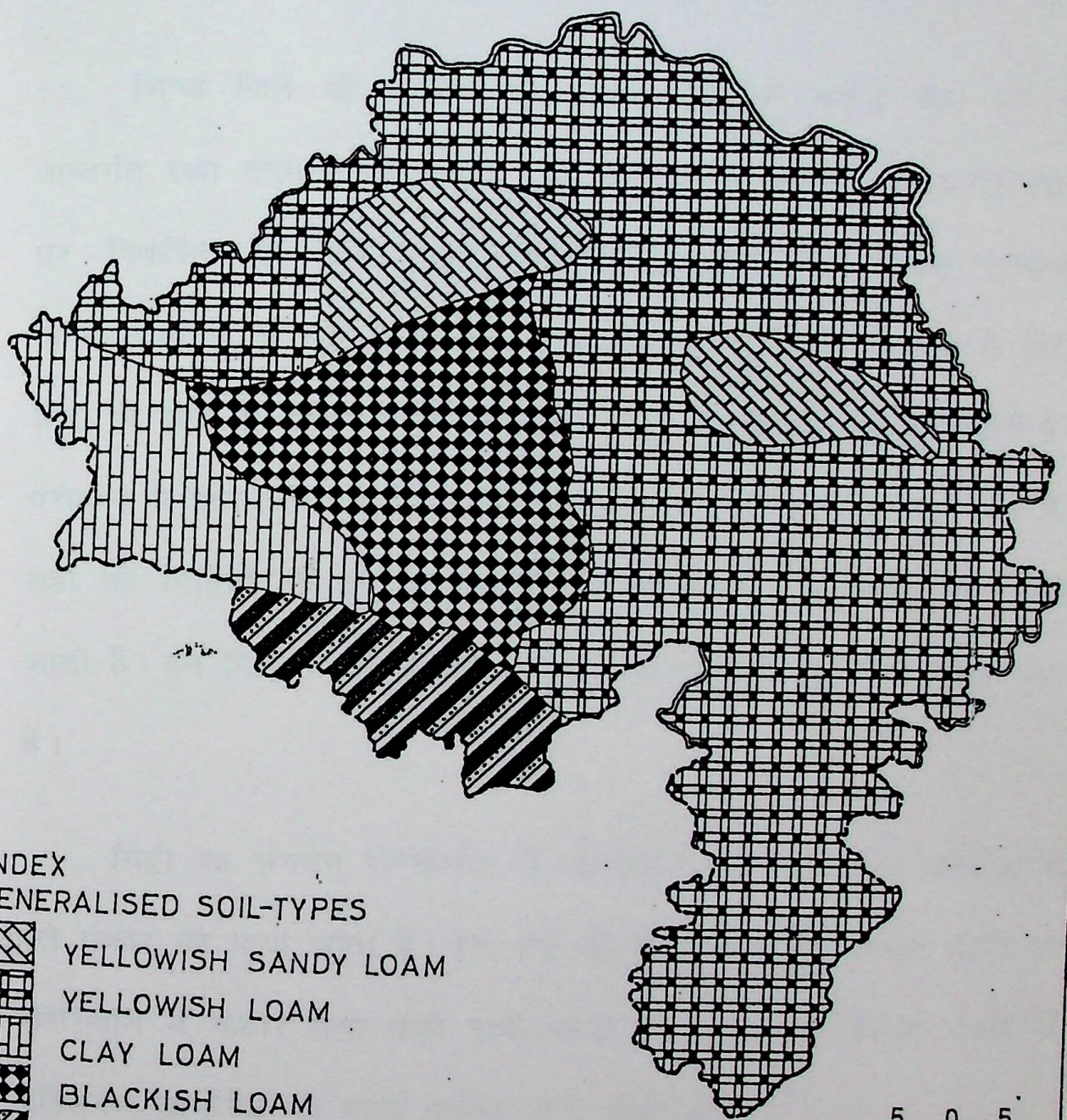

INDEX

GENERALISED SOIL-TYPES

- YELLOWISH SANDY LOAM
- YELLOWISH LOAM
- CLAY LOAM
- BLACKISH LOAM
- REDDISH LOAM

5 0 5
Km

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

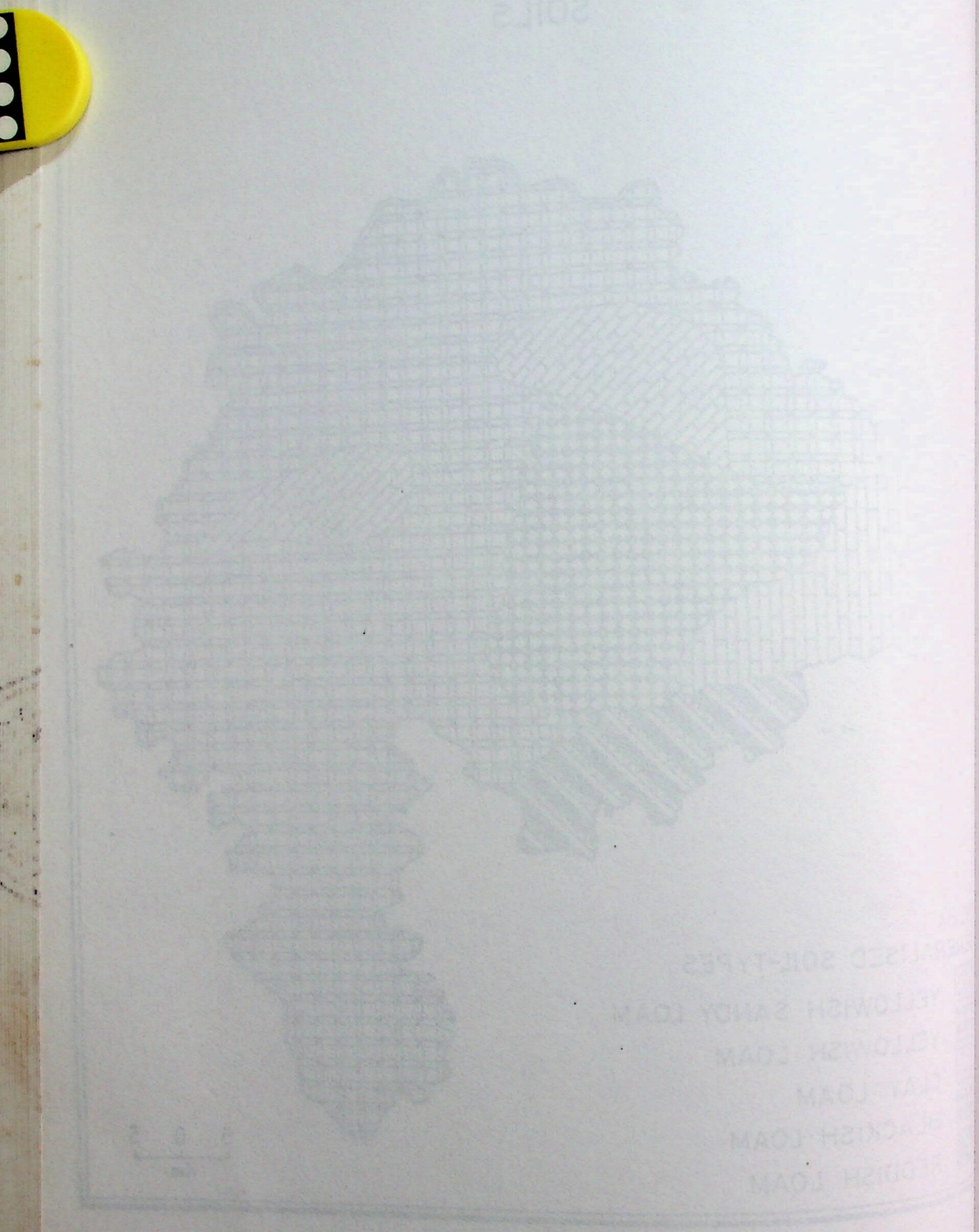

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस प्रकार मिट्टी के निर्माण में शैल तथा वनस्पति दोनोंका योग होता है। अच्छी मिट्टी पोटाश, फॉस्फेट तथा नाइट्रोजन युक्त होती है।" [1]

भिण्ड जिले की मिट्टियों को व्यापक रूप में जलोढ़ मृदा वर्ग के अन्तर्गत रखा जाता है जो वस्तुतः नदी निक्षेप जन्य जलोढ़क की ऊपरी सतह पर विकसित हुई है। मनुष्य की भोजन, वस्त्र एवं आवास सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति चाहे वह प्रत्यक्ष रूप से हो या परोक्ष रूप से मिट्टी द्वारा ही होती हैं। भिण्ड जिले की मिट्टियाँ मोटे समूहों की कछारी मिट्टियाँ हैं। परीक्षण से पता चलता है कि यहाँ की मिट्टी औसत से कहीं अधिक गहरी हैं। यहाँ की मिट्टियों की औसत गहराई ६० सेमी० से १२० सेमी० तक पायी जाती है। इन मिट्टियों का रंग भूरा, पीला भूरा से गहरा भूरा तक पाया जाता है।

मिट्टी का संगठन सेण्डीलोम से लोमीसेण्ड, सेण्डीक्लेलोम, क्लेलोम से क्ले प्रकार का पाया जाता है। इस क्षेत्र की मिट्टियाँ अपनी बनावट आदि की परिस्थिति में कठोर तथा कड़ी पायी जाती है। मिट्टी की विभिन्न सतहों में कैल्शियम कार्बोनेट की मात्रा पर्याप्त पायी जाती है।

---

१. हाईस्कूल भारत भूमि : डा० चर्तुभुज मामोरिया, जे०के० जैन : साहित्य भवन आगरा : १९८७, पृष्ठ - ८१

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिट्टियों के वर्गीकरण में कैल्शियम कार्वोनेट द्वारा प्रमुख भूमिका निभाई गयी है। श्यामपुर सीरीज की मिट्टियों में मिट्टी की विभिन्न सतहों में कैल्शियम कार्वोनेट की उपस्थिति तथा भुरेन्दी सीरीज में मिट्टी की सभी सतहों में कैल्शियम कार्वोनेट की उपस्थिति पायी गयी है। मिट्टी के परीक्षणों से यह पता चलता है कि भिण्ड जिले की मिट्टियों में जल को रोक सकने की क्षमता मध्यम से उच्च तक पायी जाती हैं।

भिण्ड जिले में मिट्टी संसाधन विभिन्न नदियों द्वारा बहाकर जमा की गयी है। यहाँ की मिट्टियों को दो प्रमुख वर्गों में बाँटा जा सकता है। जो अधोलिखित हैं –

(i) नूतन काँप

(ii) पुरातन काँप

२:४:१ नूतन काँप :

भिण्ड जिले के अधिकांश क्षेत्रों में नदियों द्वारा नित नयी मिट्टी ला कर जमा की जा रही है, उसे नूतन काँप की संज्ञा दी जाती है।

२:४:२ पुरातन काँप :

भिण्ड जिले के जिन क्षेत्रों में नदियों के द्वारा मिट्टी के जमाव का कार्य बन्द सा हो गया है, उस क्षेत्र की मिट्टी को पुरातन काँप मिट्टी कहा जाता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड जिले में नूतन तथा पुरातन दोनों ही प्रकार की मिट्टियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। स्थानीय आधार पर भिण्ड जिले की मिट्टियों को निम्न प्रकार से बाँटा गया है, जो असेसमेन्ट रिपोर्ट परगना पर आधारित है –

२:४:१:१ पडुआ तथा दोमट मिट्टियाँ :

ये बलुआ दोमट वर्ग की मिट्टियाँ हैं। ये दोनों ही प्रकार की मिट्टी गेहूँ, चना तथा सरसों के उत्पादन के लिये अत्यधिक अनुकूल हैं जिले के अधिकांश क्षेत्र पर इन्हीं मिट्टियों का विस्तार है।

२:४:१:२ मार एवं काँवर मिट्टी :

मार एवं काँवर मिट्टियों में जल धारण क्षमता अधिक होने से उर्वरता स्तर भी उच्च है। इस प्रकार की मिट्टी में सिंचाई की आवश्यकता बहुत कम होती है।

२:४:१:३ कछार तथा तीर मिट्टियाँ :

नदियों के तटीय क्षेत्रों में पायी जाने वाली नूतन जलोढ़ मिट्टी है। नदियों के अपरदन से निर्मित बीहड़ क्षेत्र नदी घाटी के मध्य के मैदान को कछार के नाम से जानते हैं। नदी धारा से संलग्न अत्यधिक संकरी मैदानी मिट्टियाँ 'तीर' के नाम से जानी जाती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२:४:१:४ डाँड़े मिट्टियाँ :

भिण्ड जिले के कुछ क्षेत्रों में फैली यह अपरदित भूमि होती है। इस प्रकार की भूमि में उर्वरा-शक्ति कम होती है।

२:४:१:५ बंजर तथा कदीम मिट्टियाँ :

बंजर तथा कदीम मिट्टियाँ वे मिट्टियाँ हैं जिन पर पहले कृषि होती थी परन्तु वर्तमान में बंजर तथा कदीम मिट्टी की उर्वरा शक्ति कम हो जाने के कारण बंजर भूमि में शामिल हो गयीं।

२:४:१:६ भूड़ा मिट्टियाँ :

भूड़ा मिट्टियाँ अत्यधिक बलुई मिट्टियाँ हैं इस प्र कार की मिट्टी की उर्वरा शक्ति निम्न कोटि की होती है तथा जल सोखने की क्षमता भी इन मिट्टियों में अपेक्षाकृत कम होती है। इस प्रकार की मिट्टियाँ चम्बल तथा अन्य नदियों के आस-पास अधिक मात्रा में पायी जाती हैं।

२:४:१:७ खेड़ा मिट्टियाँ :

खेड़ा मिट्टी कृषि के लिये उपजाऊ मिट्टी है इस प्रकार की मिट्टी में अनेक प्रकार की फसलें उगायी जाती हैं। यह मिट्टी भिण्ड जिले के अधिकांश ग्रामों के आस-पास पायी जाती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपरोक्त विवेचन एवं तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि भिण्ड जिले की मिट्टी ने यहाँ की जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। नदियों द्वारा निर्मित बीहड़ प्रदेश में जनसंख्या का नितान्त अभाव है अथवा अत्यन्त सीमित मात्रा में मानव समुदाय यत्र-तत्र बिखरा हुआ दिखाई पड़ता है, इसके विपरीत जिन क्षेत्रों में चीका युक्त चिकनी दोमट मिट्टी का विस्तार है उन क्षेत्रों में जनसंख्या का बसाव घना है।

२:४:३ मिट्टी का कटाव :

स्थानीय मनुष्यों द्वारा किये जाने वाले कार्यों अथवा अन्य किन्हीं कारणों द्वारा एक स्थान की मिट्टी हटाकर दूसरे स्थान पर पहुँचा दी जाती है तथा उस रिक्त स्थान पर दूसरे स्थान से नवीन मिट्टी का जमाव अवरुद्ध हो जाता है अथवा अपरदित मिट्टी की तुलना में जमा होने वाली मिट्टी कम रहती है तो इस प्रकार नवीन मिट्टी की आने की क्षमता एवं अपरदन के मध्य एक असन्तुलन का निर्माण हो जाता है। इस प्रक्रिया को मिट्टी का कटाव अथवा भू-क्षरण के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

मिट्टी के कटाव की समस्या एक गम्भीर समस्या है। क्योंकि मिट्टी के अत्यधिक कटाव से जनसंख्या तथा मिट्टी का क्षेत्रीय सन्तुलन बिगड़ जाता है। भूमि की उत्पादकता नष्ट हो जाती है, कृषि उत्पादन कम होने के साथ-साथ आर्थिक संकट उपस्थित हो जाता है, इससे जनसंख्या का जीवन स्तर निम्न हो जाता है। वास्तव में यह मिट्टी का कटाव नहीं वरन् मानवीय सभ्यता एवं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संस्कृति का क्षय रोग है, जिसके भयंकर परिणाम हो सकते हैं क्योंकि यदि मिट्टी नष्ट हो गयी तो मानव सभ्यता भी नष्ट हो जायेगी।

भिण्ड जिला सामान्यतया डाकुओं, नदियों एवं नदियों द्वारा निर्मित बीहड़ प्रदेश का क्षेत्र है। यह क्षेत्र चम्बल घाटी के निम्न बेसिन में स्थित है। चम्बल घाटी का भूमि अपरदन कार्य केवल मध्य प्रदेश की ही नहीं वरन् यह देश की एक गम्भीर समस्या है। इस घाटी में महीन चिकनी अथवा दुमट मिट्टी पायी जाती है। यहाँ की अर्द्धशुष्क जलवायु के कारण वानस्पतिक आवरण भी अधिक नहीं है। अतः चम्बल और उसकी सहायक नदियों के दोनों किनारों पर एक चौड़ी पट्टी गहरे-गहरे खड्डों में परिवर्तित हो गयी है। ये खड्डे भूमि का ग्रास करते जाते हैं। भिण्ड जिले में परत अपरदन तथा अवनालिका अपरदन अधिक मात्रा में हुआ है। स्थानीय नदी धाराओं ने गहरी घाटियों का निर्माण किया है और नालों के बनने से भरकों का तेजी से विस्तार हो रहा है।

भरकों की समस्या के उत्तरदायी कारणों के रूप में दो प्रमुख मत पाये जाते हैं। एक मत के अनुसार इनकी रचना क्षेत्रीय उठान के परिणामस्वरूप हुई, जिसके कारण नदियों ने अपनी घाटियों को काटा और जल तल के स्थानीय स्तर का अन्तर उत्पन्न हुआ, जिसके परिणामस्वरूप भरकों का निर्माण होना शुरू हो गया। दूसरे मत के अनुसार इस समूचे क्षेत्र की मिट्टी में कैल्शियम तत्वों की अधिकता के कारण यह अत्यधिक क्षरणशील हो गयी है। हल्की सी वर्षा होने पर ही ढ़लान वाले तल पर दरारें होना शुरू हो

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जाती हैं, जो कालान्तर में नालों का रूप ले लेती है। ये नाले क्षैतिज और लम्बाकार दोनों ही दिशाओं में फैलते जाते हैं और यही भरका कही जाने वाली घाटियां बन जाती हैं।

सामान्य रूप से हम यह कह सकते हैं कि मिट्टी के कटाव को स्थानीय वर्षा, सरिता-प्रवाह ढ़ाल तथा भूमि उपयोग आदि प्रभावित करते हैं। भिण्ड जिले में भूमि के कटाव के लिये उपरोक्त कारणों के साथ इस जिले में प्रवाहित चम्बल, सिन्ध एवं क्वारी नदियों का प्रचण्ड वेग भी उत्तरदायी कारक के रूप में शामिल है। चम्बल, सिन्ध का समूचा बेसिन इनकी तीव्र जलधारा द्वारा काट दिया गया है। इस क्षेत्र में भूमि की उर्वरा शक्ति समाप्त होने के कारण कृषि कार्य असम्भव हो गया है। इसके परिणामस्वरूप भिण्ड जिले का समूचा सामाजिक और आर्थिक जीवन मृदाक्षरण के कारण संकटग्रस्त है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२:५ भिण्ड जिले की प्राकृतिक वनस्पति :

वर्तमान समय में वनों को एक संसाधन के रूप में माना जाता है। प्राचीन काल में भारत में वन प्रदेश अधिक थे। इन्हीं वनों में आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ तथा धार्मिक कार्य किये जाते थे। वन देवता की पूजा की जाती थी, जिससे मानव जीवन सुखी रहे। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की अनेक घटनाएँ इन वनों से जुड़ी हुई हैं। नैमिषारण्य में ही महाभारत की रचना की गयी। सम्पूर्ण देश में तपोवन पाये जाते थे, जिनमें रहकर ऋषि तथा मुनि ईश्वराधना में लीन रहते थे। नन्दनवन, दण्डकारण्य, अशोकवन, वृन्दावन का अपना अलग ही महत्व था। वनों या प्राकृतिक वनस्पति का महत्व भारतीय जीवन के लिये कितना महत्वपूर्ण है यह इस बात से स्पष्ट होगा; अग्नि पुराण में कहा गया है -

"एक वृक्ष दस पुत्रों के बराबर होता है, और एक पुत्र भी वह जिससे भूमि को आर्द्रता, शीतल वायु तथा छाया मिलती है, भूमि का अपरदन रुकता है तथा खाद के लिये शुष्क पत्तियाँ मिलती हैं और खाने के लिये अनेक प्रकार के कन्द-मूल फल। ऐसा पुत्र जिसकी देखभाल ५ वर्षों तक करनी पड़ती है, उसके उपरान्त उसे न दूध की आवश्यकता होती है और न परिचारिका की।"

वनस्पति से मानव को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों में लाभ मिलता है। अब तो भारत सरकार ने इसके संरक्षण एवं प्रोत्साहन हेतु अनेक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रयास किये हैं। राष्ट्रीय वन नीति में वनों का महत्व इस प्रकार व्यक्त किया गया है –

"The trees have a great place in the economy of Nature. They hold up mountains, they cushion the rain and srtom, they discipline the rivers, they control the floods, they maintain the spring, they break the winds, they foster they bodies, they keep the air cool and clean, they are the guardians of the perennial springs of water, they are the natural defenders of dust storms, they prevent erosion, they provide the fuel timber and edible foods and fruits, they make the hydro-electric schemes possible and they give us a host of other products." [1]

भिण्ड जिला स्वयं में वनों की दृष्टि से निर्धन है, जबकि प्राचीन समय में जहाँ पर वर्तमान में भिण्ड जिला स्थित है वहाँ पर घने वन पाये जाने के प्रमाण मिलते हैं। यहाँ पर स्थित वनखण्डेश्वर मन्दिर का नाम वनखण्ड में होने के कारण ही पड़ा। वर्तमान समय में यह मन्दिर घनी आबादी के बीच में स्थित है।

अतः यह मन्दिर इस बात का प्रमाण है कि भिण्ड जिला प्राचीन समय में घने वनों से घिरा था। इसके अलावा और भी बहुत से ऐसे प्रमाण मिलते हैं,

---

1. The National Forest Policy of India, 1952 P.22

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिनसे यह पक्का हो जाता है कि भिण्ड जिला जंगली क्षेत्र के अन्तर्गत आता था। वर्तमान समय में यह क्षेत्र चम्बल के बीहड़ के नाम से प्रसिद्ध है।

भिण्ड जिले की प्राकृतिक वनस्पति

तहसील	वनक्षेत्र (हैक्टेयर में)	वनों का प्रतिशत
अटेर	३३२३	३३.२८%
भिण्ड	४१८३	४६.६४%
गोहद	१४०६	१५.७८%
महगाँव	–	–
लहार	–	–
रौन	–	–
मिहोना	–	–
कुल	८६१२	

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका, जिला भिण्ड

जिला सांख्यिकी पुस्तिका, भिण्ड १६६५ के अनुसार यहाँ पर ८६१२ हैक्टेयर क्षेत्र में वन पाये जाते हैं, जिसमें से ३३२३ हैक्टेयर भूमि पर अटेर में, ४१८३ हैक्टेयर क्षेत्र पर भिण्ड एवं १४०६ हैक्टेयर भूमि पर गोहद में वन पाये जाते हैं। मेहगाँव, लहार, रौन व मिहोना तहसीलें वन शून्य हैं। कुल वन क्षेत्रों का लगभग ३७.२८ प्रतिशत भाग अटेर तहसील में व ४६.६४ प्रतिशत भाग भिण्ड तहसील में विस्तृत है और केवल १५.७८ प्रतिशत भाग गोहद तहसील के अन्तर्गत आता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड जिले में कम वर्षा होने के कारण कंटीले वनों का विस्तार है। इन वनों का विस्तार प्रमुखतया क्वारी एवं चम्बल नदियों द्वारा निर्मित बीहड़ों में हैं। भिण्ड जिले में सम्पूर्ण प्रकार के वृक्ष मिले-जुले उगे हैं। इनमें मुख्य वृक्ष नीम, पीपल, इमली, शीशम आदि हैं। प्राकृतिक वनस्पति के रूप में केवल घास का ही विस्तार है, जो मौसमी प्रकृति की है। यह वर्षा ऋतु आने के साथ-साथ उगती है तथा वर्षा ऋतु के जाने के साथ-साथ सूखने लगती है और उनके स्थान पर कंटीली झाड़ियाँ उग आती हैं, जिन्हें यहाँ के निवासी क्षेत्रीय भाषा में 'झरोरी' कहते हैं। सम्पूर्ण जिले में कहीं भी वृक्षों की किसी एक निश्चित पेटी का विस्तार नहीं है। भिण्ड जिले में वन क्षेत्रों का कम प्रतिशत होने के कारण अब राज्य सरकार इनके विस्तार की ओर सतत् प्रयत्नशील है।

प्रशासकीय दृष्टि से भिण्ड जिले के वनों को दो भागों में विभक्त किया गया है। एक संरक्षित वन तथा दूसरे असंरक्षित वन। संरक्षित वनों के अन्तर्गत जिले का ६४०४ हैक्टेयर भाग आता है तथा शेष ८०६ हेक्टेयर क्षेत्र पर असंरक्षित वन हैं। भिण्ड जिले के वन पर्णपाती वन हैं जिनमें शीशम मुख्य हैं। शीशम के अतिरिक्त अन्य जातियों में खैर, बाँस, सागौन, बबूल तथा सुबबूल आदि अन्य प्रजातियाँ हैं। असंरक्षित तथा संरक्षित दोनों ही प्रकार के वनों में वृक्षों की यही प्रजातियाँ मिश्रित रूप से मिलती हैं। यहाँ पर इन वनों पर आधारित कुछ छोटे तथा कुछ बड़े उद्योग-धन्धे भी स्थापित हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नदी द्वारा निर्मित भरके

चम्बल बीहड़ क्षेत्र

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड जिले के बीहड़ सघन नहीं तो भयंकर अवश्य ही हैं। चम्बल, सिन्ध, क्वारी, पहूज और वैशली नदियों के किनारे बने ऊँचे-नीचे टीले और भयंकर भरके पर्याप्त गहराई लिये हुए हैं। इन भरकों की खोह में सर्दी, गर्मी और बरसात में आराम से छिपा जा सकता है। यही कारण है कि यहाँ पर डाकू गिरोह महीनों आराम से पड़े रहते हैं और कानों-कान किसी को इनकी खबर तक नहीं होती।

यद्यपि जिले में आरक्षित तथा संरक्षित दोनों ही प्रकार के वन हैं। जिले मे वन क्षेत्र की न्यूनता के साथ ही आर्थिक दृष्टि से भी ये वन विशेष उपयोगी नहीं हैं। मात्र स्थानीय जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति ईंधन की जलाऊ लकड़ी, कृषि उपकरणों के लिये लकड़ी, पशुचारण के लिये चारागाह, घास तथा डाब की पूर्ति के लिये ही इन वनों का उपयोग होता है।

चम्बल सम्भाग में चम्बल एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा अत्यन्त उपजाऊ भूमि को बीहड़ों में परिवर्तित कर दिया गया है। सम्भाग के १६.१४ लाख हैक्टेयर क्षेत्र में से लगभग ३.१० लाख हैक्टेयर भूमि बीहड़ों में रूपान्तरित हो चुकी है। जो सम्भाग के सम्पूर्ण क्षेत्र का २० प्रतिशत है। यह भी अनुमान लगाया गया है कि लगभग ८०० हैक्टेयर अच्छी भूमि बीहड़ बनती जा रही है, जिसका मूल्य करीब ४०० करोड़ रूपये है। बीहड़ केवल कृषि भूमि को ही प्रभावित नहीं कर रहे हैं बल्कि ग्राम, नहर, रास्ते, रेलवे लाइन की भी निरन्तर क्षति हो रही है। इस सम्भाग के ६४३ ग्राम बीहड़ों की वजह से उजाड़ हो चुके हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYV,V), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिले में वनों के वितरण पर दृष्टिपात करने पर इस तथ्य को सहज स्पष्ट किया जा सकता है कि वनों का सर्वाधिक विकास उन्हीं क्षेत्रों में किया गया है, जो लम्बे समय से नदियों द्वारा अपरदित होकर दुर्गम खड्ड क्षेत्रों में परिवर्तित हो चुके हैं। इसी कारण वनों का सर्वाधिक विस्तार भिण्ड तहसील में ही मिलता है।

इस अध्याय में भिण्ड जिले की भौगोलिक संरचना, उच्चावचन, जलवायु, अपवाह तन्त्र, मिट्टियाँ तथा प्राकृतिक वनस्पति का वर्णन किया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय - तीन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYV,V), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड जिले के अधिवासों का अध्ययन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

"बस्ती शब्द या पद, मकानों एवं गलियों की सुविधाओं समेत जो कि अधिवासियों की सेवा करती है, अध्यासन इकाई में जनसंख्या के अभिलाक्षणिक समूहन को प्रकट करता है..... दूसरे शब्दों में बस्ती इकाई, मानव के संगठित उपनिवेश को निरुपित करती है।"

ट्रिबार्था

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मानव अधिवास (मानव बस्तियाँ)

मानव अधिवास से अभिप्राय मनुष्य के द्वारा निर्मित की गई उस रचना से है जो उसके रहने अथवा कार्य करने या अन्य कोई आवश्यकता पूर्ति के लिये बनायी गयी है। मानव अधिवास किसी भी योजना के लिये बनाये जायँ अथवा उनका आकार कैसा भी हो उनकी निर्माण पद्धति कैसी भी क्यों न हो? सामान्यतः ये गुण सभी में देखनें को मिलते हैं :-

(i) इन अधिवासों में मानव एक सामाजिक प्राणी के रूप में रहता है। वह आपस में विचारों और बस्तुओं का आदान-प्रदान करता है।

(ii) मानव अधिवास में घर या मकान प्रारम्भिक इकाई होता हैं - चाहे वह मकान किसी भी सामग्री से निर्मित हो।

(iii) अधिवासों में एक दूसरे से सम्पर्क बनाये रखने के लिये गलियाँ या सड़कें बनायी जातीं है।

मानव अधिवास में मानब निबास के घर, मकान, आश्रय, भवन, वास्तु सभी सम्मिलित किये जाते हैं। मानव अधिवास में उन सभी प्रकार के आश्रयों या घरों को सम्मिलित किया जाता है, चाहे वह घर कोई झोपड़ी हो या पत्तों तथा लकड़ियों की बनी कुटिया अथवा मिट्टी तथा लकड़ी से मिलकर बना घर या ईंटों और चूने का बना मकान या फिर सीमेन्ट-कंकरीट से बनी कोई

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इमारत अथवा पत्थर लोहे से बना भव्य राजमहल या किला हो। मानव अधिवास में निर्धन और धनी सभी के निवास शामिल किये जाते हैं, चाहे वह निवास के रुप में किसी जंगली व्यक्ति की घास-फूस से बनी छोटी झोपड़ी हो अथवा विशाल नगरों में अरबपतियों की गगनचुम्बी इमारतें मनुष्यों के रहन-सहन के घर, औद्योगिक व्यावसायों के कारखानें, व्यापार गृह, मिलें आदि। सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यों के लिये बनाये गये सभागार, शिक्षालय, कार्यालय आदि भी इसमें सम्मिलित हैं। विभिन्न विद्वानों ने अधिवास को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है -

"Settlements are topographic expressions of their groupings or arrangements." [1]

Like the settlements of simpler societies, those in the commercial world are always dependent on and linked to resource sites, cultivated lands, manufacturing plants and services regardless of their own specialization. A settlement is always part of a complex of such sites and routes, whatever its scale." [2]

---

1. R.L.Singh, meaning, objective and scope of settlement Geography. NGJi. Vol. 7 1961) P. 12.
2. Philip L. Wagner, op. Cit. P. 150-151

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आश्रय मानव जीवन की महत्वपूर्ण और मूल-भूत आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये मनुष्य ने उपलब्ध पदार्थों का प्रयोग करते हुए देश काल-पारिस्थितिकी के अनुसार विविधरूपों के आश्रयों का निर्माण किया और अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय देते हुए मन्दिर, राजमहल, सरकारी भवन तथा अनेक प्रकार की रचनाएँ कीं।

अभी तक पारम्परिक रूप से वास्तुकला सिद्धान्त और इतिहास प्राचीन स्मारकों के अध्ययन से सम्बन्धित प्रतीक होते थे। प्राचीन काल में अनुमानतः छायादार वृक्षों को देखकर मानव ने मकान की संकल्पना की थी तथा वृत्ताकार या छायादार प्रतिरूप में सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए गृह का निर्माण किया, जो वैदिक काल में लम्बवत् तथा वृत्ताकार रूप में परिवर्तित हो गया।

प्राचीन काल में अधिकांश निवास-गृह न केवल व्यावसाय और जाति के अनुरुप नियोजित किये गये बल्कि ग्रहों-नक्षत्रों तथा धार्मिक भावनाओं का भी बराबर ध्यान रखा गया। प्राचीन काल में वास्तुशास्त्र के नियमों को ध्यान में रखकर ही भवन निर्माण किया जाता था। गृह निर्माण के लिये शुभ दिन, शुभ दिशा तथा शुभ मुहूर्त, द्वार स्थापन आदि के चुनाव में आज भी लोगों में जागरूकता पायी जाती है, परन्तु आज जगह का अभाव होने के कारण इन बातों का ज्यादा ध्यान नहीं रखा जाता है। मुख्य रूप से घरों की रूपरेखा में आँगन एक महत्वपूर्ण स्थान उभरकर सामने आता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड जिले में अधिकांश परिवारों का जीवन केन्द्र खुले आँगन हैं। खुले आँगन का अनेक रुपों में मौलिक महत्व रहता है। अधिकांश घरों में आँगन , या तो चौतरफे बने कमरों में घिरे होते हैं, या फिर घर में किसी एक कोने में इनका निर्माण कर दिया जाता है। उच्चवर्गीय परिवारों में आँगन का उपयोग पर्दे अथवा निजता-बोध के लिये तथा निम्न वर्गीय परिवारों में तमाम घरेलू उपकरण भोजन करने या कभी-कभी गर्मियों में भोजन बनने के लिये भी किया जाता है।

वास्तव में आँगन को घर में प्रकाश, हवा, धूप आदि के लिये आवश्यक माना जाता है। वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से भी घर का ब्रह्म स्थान खुला होना ही चाहिये। भिण्ड जिले में अधिकांश ग्रामीण इलाकों में ब्रह्म स्थान में ही आँगन बनाये जाते हैं। नगरीय क्षेत्र में प्राचीन घरों में ब्रह्म स्थान पर ही आँगन बने हुए हैं, जबकि घरों के नवीन निर्माण में आँगन को किसी एक कोने में बनाने का फैशन प्रचलित हो रहा है। इसका प्रमुख कारण लोगों में वास्तुशास्त्र के ज्ञान का अभाव पाया जाना है। इसके साथ ही यहाँ के निवासी इसका दुष्परिणाम झेल रहे हैं।

इस क्षेत्र के घरों की प्रमुख विशेषता के रूप में घर में किसी एक स्थान पर पूजा घर बना होता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार घर में पूजागृह ईशान में ही होना उचित है। इसी तरह घर में अतिथि सत्कार हेतु बैठक का स्थान प्रमुख होता है, परन्तु यहाँ के निवासियों में वास्तुशास्त्रीय ज्ञान का अभाव होने के कारण वे लोग इसका निर्माण उचित स्थान पर न कराकर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जहाँ इच्छा होती है, वहीं निर्माण कराने के कारण इसका अशुभ फल अनुभव करते हैं।

भिण्ड जिले में नगरीय क्षेत्रों के निवासियों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के निवासियों में वास्तुशास्त्र की अल्प जानकारी पायी जाती है। अतः यहाँ के निवासी घरों के निर्माण में कुछ महत्वपूर्ण नियमों का पालन करते हुए देखे गये हैं। जब शोधार्थिनी ने इन घरों का निरीक्षण किया तो पाया पुराने बने कुछ ग्रामीण भवनों में वास्तुशास्त्र के अधिकांश नियमों का पालन किया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड जिले में मानव बस्तियों का इतिहास

डा० के० सिंह की प्रोजेक्ट रिपोर्ट के अनुसार भिण्ड जिले में बसी पुरानी बस्तियों के अवशेषों तथा उनसे जुड़ी धार्मिक कथाओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि भिण्ड जिले के इस क्षेत्र में मानव का इतिहास आर्यों से भी पहले का है। इन लोगों को निषाद कहा जाता था।

एन०एन० द्विवेदी एवं पी०जी० द्विवेदी (१९५६) के अनुसार- 'आर्यान्स के प्रारम्भ में ये लोग पूरे जिले में फैले थे।'

आर०सी० मजूमदार (१९६१) के अनुसार - 'ऐसा माना जाता है कि उन्होनें अपने पूर्ववर्ती ग्रामीण संस्कृति के विरोध में शहरी संस्कृति को प्रचलित किया'।

रूअर एवं अकोड़ा के पास पाये जाने वाले अवशेष आर्यों से पहले के निषादों की बस्तियों के हैं, जो वर्तमान में मल्लाहों, कंजरों, बेरिया, खंगरों आदि की तरह रहे होगें।

लगभग ५००० वर्ष पूर्व गोरे रंग वाले आर्य प्रजाति के लोग सप्त सैन्धव क्षेत्र (सिन्धु का ऊपरी बेसिन) में आये और यहाँ इन्होनें अपनी सत्ता स्थापित की। जब धीरे-धीरे उनकी संख्या बढ़ने लगी तो उन्होनें अपनी शक्ति को बढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। उन्होनें आस-पास के क्षेत्रों में आक्रमण करते हुए भारतीय उप महाद्वीपीय क्षेत्रों में प्रवेश करना प्रारम्भ कर दिया तथा भारतीय उपमहाद्वीप के पूरे उत्तरी-पश्चिमी भाग को अपने कब्जे में कर लिया

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और यहाँ निषाद सभ्यता स्थापित की। थोड़े समय में भिण्ड जिला व इसके चारों ओर का क्षेत्र उत्तर में पांचालय, पश्चिम में शूरसेन, दक्षिण एवं पूर्व में चेदि नाम से जाना जाने लगा। इन लोगों की बेढंगी सन्धि से ये तीन आर्य महाजनपद भिण्ड जिले के अपने असभ्य या मलिन दशाओं और सांकेतिक स्थिति के कारण आच्छादित रहे। आर्य आक्रमणकारियों के भय के कारण आस-पास के क्षेत्रों के निराश निवासी यहाँ बीहड़ी क्षेत्रों में छिपने के स्थानों को देखते हुए यहाँ पर बस गये।

जनश्रुतियों के अनुसार पाण्डव अपनी बनवास की अवधि के दौरान जब भिण्डी ऋषि के आश्रम में आये और क्षेत्र का अवलोकन किया, तो उस समय उन्होनें जिस क्षेत्र को दूर-दूर तक समृद्ध जंगलों से आच्छादित पाया, उसे ही आज भिण्ड नगर के नाम से जाना जाता है।

भिण्ड जिले में मौर्यों के आगमन के साथ यहाँ प्रमुख रूप से बहुसंख्यक बस्तियाँ स्थापित की गयीं। इन्होंने नागों, कुषाणों, गुप्ताओं और हूणों के नेतृत्व में बाद के समय में पर्याप्त प्रगति की। इस अन्तराल में इस भू-भाग ने 'इजाक भुक्ति' जिले के भाग का सृजन किया। मेहराबुजुर्ग, सिरसा, भारौली, अकोड़ा, बरहद और दुलहगन के निकट प्राप्त बस्तियों के अवशेष इस स्वर्णिम युग की समृद्धि की कथाएँ बतलाते हैं।

ए०बी० मुखर्जी (१९६९) के अनुसार - 'इस काल की बसायी गयी बस्तियाँ विकसित और विकासशील दोनों ही रूपों में थीं'। उस काल में आवासीय भवनों को एक मन्दिर या एक तालाब अथवा एक लोकमण्डप के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चारों ओर बनाया जाता था तथा उन्हें सुरक्षा की दृष्टि से चारों ओर दीवारों से घेर दिया जाता था। उस काल में नाली को भी सम्यक रूप में नियन्त्रित किया गया था तथा सड़क मार्ग को भी अच्छी तरह से तैयार किया गया था।

कन्नौज के हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात (६४७ ईसा पूर्व) राजशाही शक्ति का पतन हुआ। इस स्थान के दोआब में रहने वाले प्राचीनतम निवासी अपने गुप्त स्थानों से निकलकर बाहर आये और आर्य उत्तराधिकारियों के विरूद्ध खड़े हो गये तथा उन्होनें अपहरणों अथवा लूट-मार के द्वारा उस भू-भाग को समाप्त कर दिया और इसे पूर्णतः रेगिस्तानी बना दिया। इसके परिणामस्वरूप इस भू-भाग में जो बिखरी प्राचीनतम बस्तियाँ थीं, इन्होंने पुनः समृद्ध जंगलों के आवरण को बसाना प्रारम्भ किया तथा उनके प्रत्येक समूह को वनान्चलों के द्वारा दूसरों से पृथक कर दिया। यहाँ के प्राचीनतम निवासी 'मेव' जिन्होंने इस लम्बे अन्तराल में प्रभूत सम्पदा एकत्र की, इनका अपहरण तथा लूट-मार विशाल पैमाने पर किया गया। अपहरण तथा लूट-मार केवल मेवों का ही नहीं किया गया, वरन समीपवर्ती आस-पास के क्षेत्रों में भी इस तरह की घटनाएँ आम हो गयीं थीं। विशाल पैमाने पर होने वाले अपहरण तथा लूट-मार प्रमुख रूप से मेवों के विनाश का कारण बनीं।

मेवों और उनके सहयोगी संगठन जिनमें मल्लाहों, बेड़ियों, नटों, कंजरों, खंगरों का उदय क्रूरता और गंवारपन के आधार पर अल्प अवधि के लिये हुआ। जैसे ही राजपूतों की अनेक प्रजातियाँ आस-पास के क्षेत्रों में शक्ति के रूप में उभरीं और अपनी बस्तियों को स्थापित करने के लिये जिले

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में प्रवेश करने लगीं, तो संक्रमण के इस परिप्रेक्ष्य में सर्वप्रथम गूजर और प्रतिहार शक्ति और सत्ता प्राप्त करने में सफल हुए। इन्होंने सातवीं शताब्दी के परवर्ती अर्द्धकाल में जिले के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में अपनी बस्तियाँ स्थापित कर लीं। लगभग दो शताब्दियों के पश्चात् चौहानों के द्वारा दिल्ली से भगाये गये कुछ तोमर आये और चम्बल क्षेत्र के पश्चिमी भाग में बस गये। इन्होंने भिण्ड जिले में संगठित होकर अपनी खोई शक्ति को पुनः एकत्रित करना प्रारम्भ किया। इसके बाद इन्होनें ग्वालियर पर युद्ध छेड़ा तथा ग्वालियर को अपने कब्जे में कर लिया और कुशवाहों को पलायन करने के लिए विवश कर दिया।

ग्वालियर से भगाये जाने के बाद कुशवाह जिले के पूर्वी भागों में सिंन्ध तथा पहूज नदियों के दोआब की ओर बढ़े, यद्यपि इन कुशवाहों में से कुछ कुशवाह जिले में ही बस गये। दो शताब्दियों के पश्चात् ११८२ ए०डी० में अपने वीर नायक पृथ्वीराज चौहान के नेतृत्व में दिल्ली के चौहानों ने महोबा के विरूद्ध प्रस्थान किया तथा सिरसा को ध्वस्त करके महोबा के चन्देलों तथा परमारों को पराजित किया। दिल्ली से महोबा के अपने प्रयाण प्रस्थान के दौरान पृथ्वीराज चौहान यहाँ ठहरे और भिण्ड में भगवान शिव में मंदिर की आधार शिला रखी। आज यही बनखण्डेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है। इसी बीच गौरी तालाब को भी खुदवाया। इन चौहानों में से बहुत से चौहान यहीं पर बस गये तथा भिण्ड के चारों ओर के क्षेत्र में इन्होनें नयी बस्तियों की स्थापना की।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुछ समय पश्चात् मुस्लिम आक्रान्ताओं के सामने कन्नौज के गहरवारों के पतन ने उन्हें पश्चिम में राजपूताने की ओर बढ़ने के लिये बाध्य किया। बाद के समय में यही गहरवार यहाँ पर राठौरों के नाम से पहचाने जाने लगे। इन गहरवारों में से कुछ गहरवार भिण्ड जिले के कुछ भागों में बिखरे हुए रूप में बस गये। इस प्रकार उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों से आये गहरवारों ने राजपूतों के साथ मिलकर विनाशकारी युद्ध छेड़ा। इस विनाशकारी युद्ध के क्रिया कलापों के समय भिण्ड जिले के जंगलों ने यहाँ के निवासियों को सुरक्षा प्रदान की। कुछ समय में राजपूतों ने यहाँ श्रेष्ठता स्थापित कर ली। इसी बीच यहाँ के प्राचीन निवासियों ने इन लोगों का बड़े पैमाने पर नरसंहार करना प्रारम्भ कर दिया, इनमें से जिन्होनें आत्मसमर्पण कर दिया, उन्हें सीमा पर बसने की स्वीकृति दे दी या फिर कुछ दूरी पर उनके लिये अलग छोटे-छोटे गाँव या पुरवा बसाये गये। उनमें से जो भी लोग बचे वे जंगलों की ओर भाग गये, जहाँ से वे पहले आये थे। इस प्रकार इस काल में पूरे भाग में बस्तियाँ बसने का कार्य व्यापक रूप से हुआ।

भदौरियों ने अपने हठी स्वभाव के कारण अपनी शक्ति तथा तलवार के बल पर प्रत्यक्ष रूप से यहाँ के भू-भाग पर आधिपत्य जमाना जारी रखा। यद्यपि बाद की शताब्दियों में अंग्रेजी शासन के आने तक उन्हें दिल्ली और आगरा के मुस्लिम शासकों की श्रेष्ठता को स्वीकार करने के लिये बाध्य किया गया। इसी अवधि में गंगा के मैदान तथा विभिन्न भू-भागों से जो राजपूत आये वे युद्ध जैसे ख्याल को बिलकुल छोड़ चुके थे। ये राजपूत उस भू-भाग

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में बिखरे हुए रूप में बस गये। इस प्रक्रिया में बस्तियों की संख्या बढ़ने लगी और पूर्ववर्ती बस्तियों का आकार विस्तृत होने लगा। बस्तियों की संख्या में बृद्धि होना आवश्यक भी था। यहाँ के ग्रामीण निवासियों को खतरे के दिनों में इनकी संख्या शत्रुओं को पर्याप्त अवरोध देने में सक्षम थी। बार-बार आने वाली आपदाओं और लगातार होने वाले आक्रमणों ने बस्तियों को उनकी सीमा से अधिक विकसित नहीं होने दिया।

अंग्रेजी शासन के आगमन के समय सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में भारत में ग्वालियर के सिंधिया के शासन के अन्तर्गत यह भू-भाग सम्मिलित हो गया। यद्यपि फिर भी बस्तियों का प्रत्यक्ष नियंन्त्रण राजपूतों के हाथ में बना रहा। सिंधिया ने मन्त्री दिनकर राव के पर्यवेक्षण में टैक्स बसूलने के लिये भूमि संसाधनों का सर्वे कराया तथा क्षेत्रीय रूप में समझौते स्थायी बना दिये गये। इसी बीच जनसंख्या की तीब्र गति से बृद्धि हुई, लेकिन ठगों, कंजरों, बागियों, पिण्डारियों और बार-बार होने वाली प्राकृतिक आपदाओं तथा अपहरण एवं लूटमार के कारण इनकी शानदार प्रगति न हो सकी, क्योंकि इन क्रियाकलापों से व्यापक विनाश हुआ था।

१९४७ के पश्चात् मुख्य रूप से जमींदारी की प्रथा की समाप्ति के कारण कृषि सम्बन्धी सुधारों, सिंचाई सम्बन्धी सुबिधाओं के विस्तार और यातायात तथा आवागमन, स्वास्थ्य और शैक्षिक सुबिधाओं के कारण शीघ्र परिवर्तन लाने के लिये भूमि व्यवस्था प्रारम्भ हुई। बस्तियों की आनुपातिक बृद्धि में जनसंख्या तीब्र गति से बढ़ी। युगों पुरानी बस्तियाँ पसन्दीदा क्षेत्रों में

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुरानी प्रवृत्ति को छोड़कर फैलना प्रारम्भ हो गयीं और छोटे-छोटे पुरवों या गाँवों में बदलने लगीं तथा कृषि सम्बन्धी भूमि स्वामित्व के मध्य बस्तियाँ बिखर गयीं। इनके अतिरिक्त भय के शासन के कारण बहुत से नकारात्मक परिवर्तन प्रारम्भ हुए, जिनका प्रमुख कारण बार-बार अजेय या असीमित शक्ति रखने वाले गिरोहों के द्वारा किया जाने वाला विनाश तथा वर्तमान प्रजातन्त्रीय चुनाव पद्धति ने अर्न्तजातीय विद्वेश, घृणा और शत्रुता को जन्म दिया। उस समय ईमानदारी और शान्तिपूर्ण ढंग से ग्रामीण बस्तियों में रहना कठिन हो गया। सामुदायिक समरसता और पारस्परिक निर्भरता का अन्त हुआ। संसाधनों से विहीन शिल्पकार और मजदूर तथा शान्तिप्रेमी ग्रामीण सुरक्षा और निर्भीक आश्रय की खोज में नगरी यहाँसे शहरी केन्द्रों की ओर जाने लगे और जो निवासी गाँव में अल्पसंख्यक या अल्पमत में थे, उन्होनें उन गाँवों में बसना प्रारम्भ कर दिया, जिन पर उनकी जाति का आधिपत्य था। इसी प्रकार भिण्ड जिले में जातिगत आधार पर घारों की रचना हुई।

स्रोत - Regional Planning for Socio-Economic Development in District Bhind, M.P. India

A project report, sponsored by Indian Council of Social Science Research, New Delhi.

Dr. Kishori Singh, Department of Geography. Karm Kshettra Post – Graduate – College Etawah (U.P.) 206001, Affiliated to: S.S.J.M. Kanpur University, Kanpur, p.N. 67-70.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

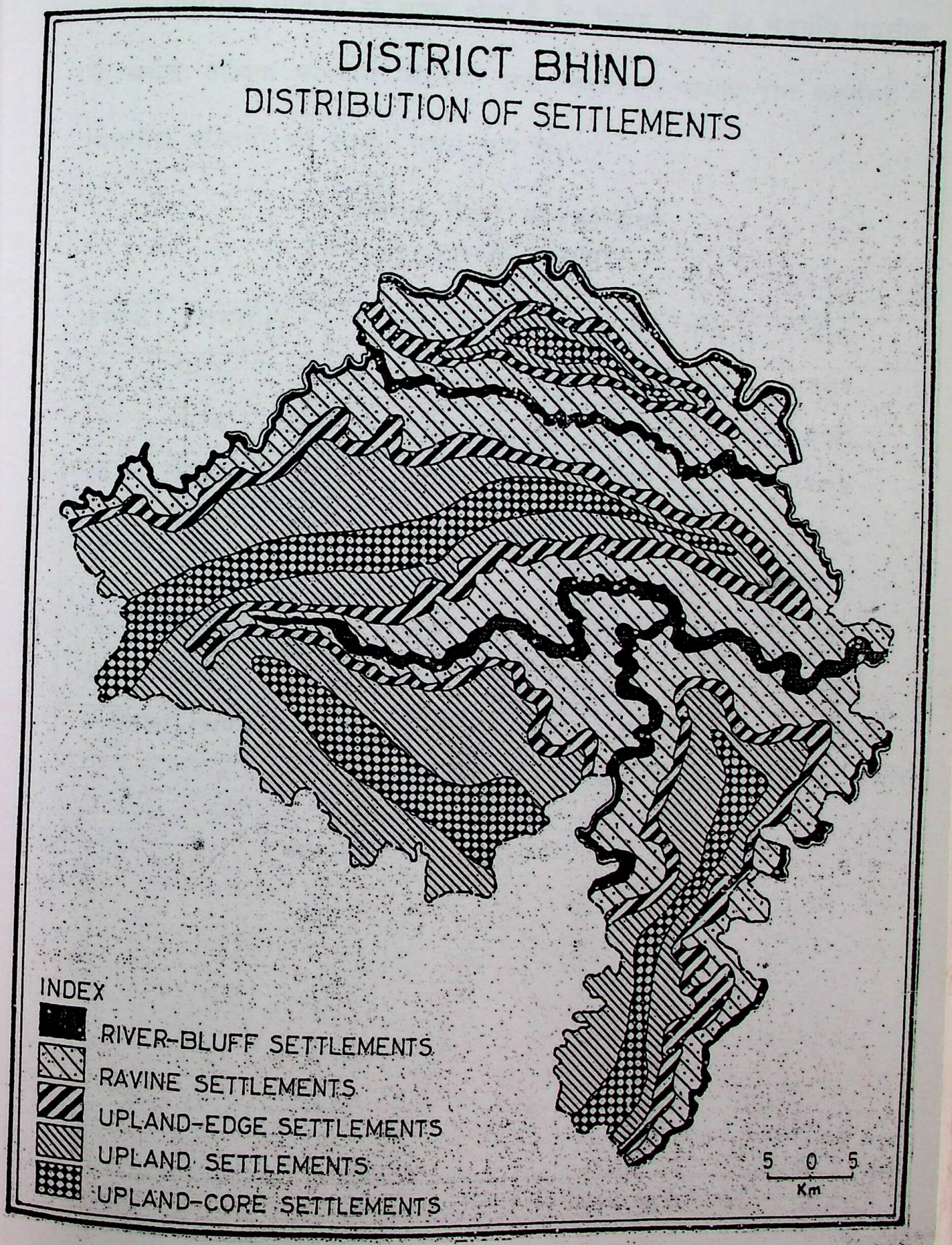

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड जिले के अधिवासों (बस्तियों) का अध्ययन

उपर्युक्त आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि भिण्ड जिले की मेहगाँव तहसील में सबसे अधिक मानवीय बस्तियाँ पायी जातीं हैं। जबकि रौन तहसील में मानवीय बस्तियों की संख्या सबसे कम है।

भिण्ड जिले की बस्तियाँ
१९९१ के अनुसार

क्रमांक	तहसील	बसे गाँव	बिना बसे गाँव	योग
१.	अटेर	१७३	०८	१८१
२.	भिण्ड	१०५	०३	१०८
३.	गोहद	१९३	१२	२०५
४.	मेहगाँव	१९७	०२	१९९
५.	रौन	५९	०७	६६
६.	मिहोना	६१	०४	६५
७.	लहार	१००	१३	११३
जिला भिण्ड		८८८	४९	९३७

पी०डब्ल्यू०डी० ऑफिस से प्राप्त आँकड़ों से साभार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जनसंख्या के आकार के अनुसार भिण्ड जिले की बस्तियों का वितरण
१९९१

क्रमांक	जनसंख्या आकार	बस्तियों की संख्या	कुल बस्तियों का प्रतिशत
१.	०-५००	२५२	२८.३७
२.	५०१-१०००	२८१	३१.६४
३.	१००१-१५००	१५८	१७.७९
४.	१५०१-२०००	७५	८.४४
५.	२००१-२५००	३६	४.०५
६.	२५०१-३०००	३२	३.६०
७.	३००१-३५००	१९	२.१३
८.	३५०१-४०००	०९	१.०१
९.	४००१-४५००	०४	०.४५
१०.	४५०१-५०००	०३	०.३३
११.	५००१-५५००	०३	०.३३
१२.	५५०१-६०००	०५	०.५६
१३.	६००१-६५००	०२	०.२२
१४.	६५०१-७०००	०१	०.११
१५.	७००० से अधिक	१२	१.३५
योग		८८८	१००

पी०डब्ल्यू०डी० ऑफिस से प्राप्त आँकड़ों से साभार

उपर्युक्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि सबसे कम जनसंख्या वाले गाँवों की संख्या सर्वाधिक है। ज्यों-ज्यों जनसंख्या आकार बढ़ता जाता है गाँवों की संख्या घटती जाती है। भिण्ड जिले में अधिक जनसंख्या के बीच बहुत कम मानव निवास करते है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड जिले में बस्तियों के प्रकार

मानव बस्तियों को भू-दृश्य की एक महत्वपूर्ण रचना माना जाता है। इनकी स्थिति, आकार, स्वरूप, प्रतिरूप एवं कार्यों पर न केवल भौतिक वातावरण वरन् जनसंख्या का सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी एवं आर्थिक तथा व्यावसायिक क्रियाओं पर प्रकृति का भी प्रभाव पड़ता है।

भिण्ड जिले की बस्तियों को सामान्य रूप से दो भागों में बाँटा जा सकता है -

(१) सघन बस्तियाँ

(२) विरल बस्तियाँ

सघन बस्तियाँ :

सघन अधिवास वे होते हैं, जिनमें गलियों और मकानों का सम्पर्क निकट का होता है। इनमें मकान एक दूसरे से सटे हुए होते है। इनमें गाँव के मध्य भाग में गलियाँ संकरी होती जाती हैं। सघन अधिवास मनुष्य के संगठित और सामाजिक जीवन के प्रतीक होते हैं।

घनी बस्तियों के विकास के लिये कुछ बीज स्थल अथवा आकर्षण केन्द्र होते हैं, जिनके चारों ओर जनसंख्या बढ़ने लगती है। इस तरह की बस्तियों के बसने के कई कारण हो सकते हैं जैसे बस्तियों का किसी मन्दिर के किनारे-किनारे बस जाना, नदी अथवा सड़क के किनारे-किनारे बस्तियों का

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बसना, किसी तालाब अथवा जमींदार के घर के आस-पास बस्तियों का विकसित होना आदि। भिण्ड जिले में बस्तियों की विकसित होने की विशेषताएँ पायीं गयीं हैं। कालान्तर में यही बस्तियाँ विकसित होते-होते सघन और विशाल बन जातीं हैं।

डा० मामोरिया के अनुसार - "बस्ती का स्वरूप एक मकड़ी के जाल के समान होता है, जिनमें विभिन्न केन्द्रों को मिलाती हुई सड़कें, गलियाँ चली जाती हैं।"

भिण्ड जिले में घने बसे अधिवास पर निम्न कारक प्रभाव डालते हैं, जैसे -

(i) भिण्ड जिले के मध्य में स्थित समतल मैदान के उपजाऊ होने के कारण यहाँ पर बस्तियों का बसाव घना है।

(ii) भिण्ड जिले की नदियों, कुंओं अथवा तालाबों के कारण पीने योग्य जल की प्राप्ति भी बस्तियों के घने बसाव का प्रमुख कारण है।

(iii) आवागमन के मार्गों का प्रसार भी सघन बस्तियों का प्रमुख कारण होता है।

(iv) आकर्षण के केन्द्र बिन्दु के रूप में औद्योगिक, धार्मिक, शिक्षा तथा व्यापार की स्थिति भी उत्तरदायी कारकों के रूप में सम्मिलित की जाती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(v) कृषि सम्बन्धी कार्यों में सहयोग की आवश्यकता के आधार पर घनी बस्तियाँ पायी जाती हैं।

(vi) भिण्ड जिले में चम्बल घाटी के दस्युओं के भय के कारण चम्बल क्वारी नदी की घाटी में सुरक्षा प्राप्त करने की दृष्टि से यहाँ घनी बस्तियाँ पायी जातीं हैं।

भिण्ड जिले में ऊमरी तथा बिलाव गाँव, सघन बस्तियों का अच्छा उदाहरण है।

विरल (बिखरी) बस्तियाँ :

एकाकी बस्तियों को बिखरी हुई या प्रकीर्ण बस्तियाँ भी कहते हैं। इन बस्तियों में अलग-अलग बसे हुए घर या कृषि गृह होते हैं। मकान चाहे पक्के ईंट के बने हो या कच्ची मिट्टी के या घास-फूस से बनी झोपड़ी हो, यदि वे एक दूसरे से पृथक-पृथक बीच में दूरियाँ छोड़-छोड़कर या कृषि भूमि को छोड़कर बसे हुए हैं, तो वे एकाकी बस्तियाँ कहलाती हैं।

भिण्ड जिले की इस प्रकार की बस्तियाँ अत्यन्त प्राचीन मानी गयी हैं। आरम्भ में जब मानव असभ्य था तो वह एकाकी जीवन ही व्यतीत करता था, किन्तु ज्यों-ज्यों वह सभ्य होता गया त्यों-त्यों पारिवारिक भावनाओं और सामाजिक संगठन का विकास होने लगा। इसका प्रमुख कारण यह भी था, कि यहाँ पर कृषि करने के उद्देश्य से मानव ने सामूहिक रूप से रहना शुरू कर दिया। सामूहिक न रहने का सबसे बड़ा कारण यहाँ पर दस्युओं की समस्या

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ने असुरक्षा को जन्म दिया। सामूहिक निवास से इनके भय की समस्या का काफी मात्रा में निराकरण होने से विरल बस्तियों ने सघन बस्तियों का रूप लेना आरम्भ कर दिया।

विरल बस्तियों की विशेषताएँ :

विरल बस्तियों में घर पास-पास सटे हुए न होकर दूर-दूर बने होते हैं। इन बस्तियों के मकानों पर प्रत्येक में कृषि के यन्त्रों को रखने के बाड़े, कृषि उत्पादन को संग्रह करने के कोठार, पशुओं को रखने के बाड़े होते हैं। इन घरों के बाहर छोटी-छोटी बाटिका भी होती है, जिनमें साग-सब्जियाँ बोयी जाती हैं।

भिण्ड जिले की बस्तियों के प्रतिरूप :

भिण्ड जिले की बस्तियों की बसावट में पायी जाने वाली बिभिन्नता के कई प्रकार के प्रतिरूप दिखाई देते हैं -

(i) आयताकार प्रतिरुप :

आयताकार गाँवों का विकास दो मार्गों या सड़कों के चौराहों पर चारों ओर होता है, जिससे गाँव का आकार आयताकार बन जाता है। इन गाँवों में प्रायः गलियाँ भी सीधी होती हैं। ये गलियाँ एक दूसरे को समकोण पर काटती हैं। जिले में प्रायः इस प्रकार का कोई उदाहरण देखने को नहीं मिलता।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ii) पंक्तिनुमा या रैखिक प्रतिरूप :

जब किसी गाँव का विकास किसी सड़क मार्ग, नदी या नहर के किनारे-किनारे होता है तो गाँव का आकार एक रेखा के समान होता है। इन गाँवों में गलियाँ समान्तर होतीं हैं और मकान एक दूसरे से सटे होते हैं। इस प्रकार के मकानों में गलियों के दोनों ओर या एक ओर प्रायः मकानों के द्वार बना लेते हैं। इस प्रकार के प्रतिरूप में मकानों के आगे या पीछे पशुओं के घर बना लिये जाते हैं। कास्बा फूप इसका सबसे अच्छा उदाहरण है।

(iii) त्रिभुजाकार प्रतिरुप :

सड़कों के मिलन स्थल पर, सड़कों के किनारे-किनारे अधिवास विकसित हो जाते हैं अथवा सड़कों के मिलने में बने त्रिभुजाकार भू-खण्ड पर अधिवास विकसित हो जाने पर त्रिभुजाकार गाँव बन जाता है।

(iv) गोलाकार प्रतिरूप :

कभी-कभी किसी तालाब के किनारे-किनारे अथवा मन्दिर या अन्य धार्मिक इमारत के चारों ओर बस्ती बस जाती है। तो इस तरह की बस्ती का आकार गोलाकार दिखाई देने लगता है, इससे गोलाकार गाँव बन जाते हैं।

(v) चौक पट्टी प्रतिरूप :

मैदानों में जहाँ दो मुख्य सड़कें एक दूसरे को लगभग समकोण पर काटतीं हैं, वहाँ पर विकसित गाँव का आकार चौक पट्टीनुमा होता है। गोहद चौराहा इसका सबसे अच्छा उदाहरण है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(vi) अनियमित या अनाकार प्रतिरूप :

इस प्रकार के गाँव वे होते हैं जो किन्हीं मार्गों के निर्माण से पूर्व ही बस गये थे। प्रत्येक घर उस स्थान पर बस गया, जहाँ उसके स्वामी को सुबिधा हुई। बाद में गलियों में और मार्गों के बनने पर गाँव की आंकृति अनियमित रूप की हो गई। इस प्रकार की बस्तियों की कोई विशेष आकृति नहीं होती, इसलिये इनको अनाकार प्रतिरूप बस्तियाँ कहते हैं।

(vii) अन्य प्रतिरूप :

अन्य प्रतिरूप में अर्द्ध वृत्ताकार प्रतिरूप तथा टेढ़ा-मेढ़ा प्रतिरूप की बस्तियाँ भी भिण्ड जिले में देखने को मिलती हैं। कस्बा भिण्ड अर्द्ध वृत्ताकार प्रतिरूप का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है, परन्तु यह नगर अब फैलाव की स्थिति में है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३:१ ग्रामीण अधिवास

ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों के घरों को ग्रामीण अधिवास कहते हैं। गाँवों में निवास करने वाले लोगों के प्रमुख व्यावसाय प्राथमिक स्तर के होते हैं जैसे कृषि करना, पशुपालन, मछली पकड़ना, लकड़ी काटना, कपड़े सिलना-बुनना, मजदूरी करना, लोहार, बढ़ईगीरी करना आदि। इन बस्तियों के निवासी अपनी आजीविका हेतु मुख्य रूप से प्रकृति पर निर्भर रहते हैं। इन अधिवासों में नगरों की अपेक्षा जीवन-यापन की सुविधायें सीमित रहतीं हैं।

ग्रामीण बस्तियों की विशेषतायें :

ग्रामीण बस्तियों की विशेषताएँ निम्न लिखित हैं -

(i) ग्रामीण बस्तियों के निवासियों का सीधा सम्बन्ध भूमि से होता है अर्थात इन लोगों का प्रमुख व्यावसाय कृषि होता है।

(ii) यहाँ के व्यावसायियों का प्रमुख व्यावसाय कृषि होने से भिण्ड जिले के अधिवासों का वितरण उपजाऊ मैदानी भाग में अधिक मिलता है।

(iii) ग्रामीण अधिवासों में मकान या घर स्थानीय सामग्रियों (जिसमें मिट्टी से बनी दीवारें, घास-फूस, बाँस-लकड़ी तथा खपरैल आदि की छतों) से निर्मित होते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(iv) वर्तमान समय में आवागमन की सुविधायें हो जाने से ग्रामीण क्षेत्रों में भी कुछ सम्पन्न और सामान्य लोग पक्के मकानों का निर्माण करा लेते हैं।

(v) ग्रामीण बस्तियों में मकान के दो भाग होते हैं एक भाग परिवार के सदस्यों के रहने का दूसरा भाग पशुओं के लिये होता है।

(vi) ग्रामीण बस्तियों में मकान बनाने की कोई निश्चित योजना नहीं होती है। भूमि की उपलब्धता तथा अन्य सुविधानुसार मकान बना लिये जाते हैं।

(vii) मुख्य व्यक्ति के भवन के आस-पास कृषि पर आधारित सहायक उद्योगों को करने वाले लोगों के पुरवे या छोटी-छोटी बस्तियाँ (टोला) बस जाती हैं।

(viii) ग्रामीण अधिवास के निवासियों में सहयोग की भावना पायी जाती है।

(ix) कोई कोई गाँव कृषि की अनुपयुक्त भूमि पर मिलते हैं ये लोग ऊँचे टीले या करारों को खोदकर मकान बनाने योग्य भूमि बनाकर मकान बना लेते हैं।

भिण्ड जिले की बस्तियों का विन्यास :

भिण्ड जिले की बस्तियों का विन्यास उनके प्रतिरूप के अनुसार है। बस्तियों के विन्यास पर श्रम विभाजन का, आर्थिक व्यावसाय जैसे - कृषक,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कृषकों के अलावा बढ़ई, लुहार, कुम्हार, तेली, धोबी, चर्मकार, शिल्पकार के व्यावसायों के अलावा सामाजिक संगठन की व्यवस्था का अथवा चम्बल के बीहड़ में रहने वाले दस्यु गिरोहों का प्रभाव पड़ा है।

भिण्ड जिले के गाँवों का विन्यास के अनुसार वर्णन निम्न है-

चम्बल नदी के किनारे बसी बस्तियाँ अनियमित आकृति की हैं। ये बस्तियाँ इस प्रकार की व्यवस्थाओं में से मध्य युगीन बस्तियाँ हैं। जब जिले में आक्रमण होता था तो इन बस्तियों के निवासी युद्ध से बच जाते थे, क्योंकि इन गाँवों पर आक्रमण करना कठिन होता था। इस क्षेत्र की भू-आकृति के कारण आक्रमणकारियों का इन तक पहुँच पाना कठिन था।

इन गाँवों का बसाव भरकों के बीच में घुमावदार स्थानों पर है। इस प्रकार की बस्तियों की गलियाँ संकरी है, जिनका उपयोग पैदल यात्रियों के लिये होता है। इन गाँवों के बसने का प्रमुख कारण पानी का पास में नदी द्वारा प्राप्त होना तथा आस-पास के ऊँची-नीची जमीन को खोदकर थोड़ी बहुत कृषि करना। इस प्रकार की बस्तियों में गाँव का मुख्य व्यक्ति अच्छे बने मकान में रहता है। मुखिया का मकान गाँव के केन्द्र में ऊँचे टीले पर स्थित होता है। मुखिया का मकान चारों ओर मजदूरों तथा शिल्पकारों के मकानों से घिरा होता है। इस तरह की बस्तियाँ अटेर, बरही, साँकरी, थाना चम्बल नदी के किनारे स्थित हैं। बेसली नदी के किनारे सालीपुरा, गहरपुरा, अकोड़ा, खिताउली, सिमर तथा टिकरी स्थित हैं। ओहियों, हरीचा, घड़ी, बलरोना, इन्दुरखी खैरिया, श्यामपुरा, ककाहरा, मिहोनी तथा असहना गाँव

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिन्ध-पहूज तथा आसन नदियों के किनारे पर स्थित हैं। इन सभी गाँवों में एक जैसी व्यवस्था देखने को मिलती है। चम्बल के बीहड़ के किनारे स्थित होने के कारण ये गाँव डकैतों के अच्छे शरण-स्थल हैं। इन बस्तियों के निवासी दस्यु गिरोहों के साथ मित्रता पूर्ण सम्बन्ध रखते हैं। इन बस्तियों के लोग दस्यु गिरोहों के लिये भोजन, पानी तथा अन्य सुविधाएँ उपलब्ध कराते हैं तथा इसके बदले में यहाँ के निवासी दस्युओं से भारी रकम वसूलते हैं अथवा इन लोगों से यह कार्य बन्दूक की नोक पर कराया जाता है।

चम्बल नदी के किनारे बीहड़ क्षेत्र की बस्तियों में भिन्नता देखने को मिलती है। ये बस्तियाँ पुरानी बस्तियाँ हैं। इनके बसाव का तरीका नदी के किनारे बसी बस्तियों से भिन्न है। इन बस्तियों की पहचान पुरा, नगला, मडैय्या के नाम से होती है। इस तरह के अधिवास पुराने अधिवास खड्डों की निचली सतह पर बने हुए हैं, जो जर्जर अवस्था में हैं। इन अधिवासों के घरों के मध्य में पतली सड़क होती है। यहाँ पर भी जनसंख्या के बढ़ने के कारण लोगों ने ऊँचे उठे हुए टीलों पर घर बनाना आरम्भ कर दिया है। पुराने बने घरों की अपेक्षा नये बने घर मजबूती की दृष्टि से भी अच्छे हैं तथा इनके मध्य में निकलने वाली सड़कें भी चौड़ी हैं। इस प्रकार के अधिवास की प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ पर एक ही प्रकार की जाति के लोग निवास करते हैं। धनी व्यक्ति गाँव के मध्य में जिनके पास पर्याप्त जमीन के टुकड़े होते हैं। इनके आस-पास जातिगत व्यवस्था के अनुसार घर बने होते हैं। ये व्यक्ति धनी व्यक्ति की जमीन पर कृषि उत्पादन करते हैं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तथा उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा अपने मालिक का चुकाते हैं। यह बस्तियाँ भी दस्यु गिरोहों की शरण स्थली हैं। दस्यु गिरोह इन बस्तियों में आराम से छिपे रहते हैं। इन बस्तियों के निवासी दस्यु गिरोहों को भोजन तथा आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराते हैं। यह सब इनसे दस्यु गिरोहों द्वारा या तो बन्दूक की नोंक पर कराया जाता है या फिर धन का लालच देकर। भिण्ड जिले में इस प्रकार की बस्तियाँ कनेरा, तरसोकर, गुहराम, बिजौरा, केसर की मडैय्या चम्बल बीहड़ क्षेत्र में स्थित है। इनके अलावा बनीका पुरा, ओझे का पुरा, पानसिंह का पुरा, खेड़ा, खदेरी, सांगली, क्वारी सोनाय का पुरा, जिलेदार का पुरा, राकर विरहन्दी, पिलैन्दा, दोनई का पुरा, उद्दी का पुरा, बीजपुर, डबरा, रोहानी, जागीर आदि प्रमुख बस्तियाँ हैं।

भिण्ड जिले के निचले मैदानी भाग में पाये जाने वाले अधिवास सघन हैं। ये बस्तियाँ उम्र में पुरानी हैं तथा आकार में बड़ी हैं। इस मैदान की रचना में नदियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ये मैदान मुलायम मिट्टी की तह से निर्मित हैं। वर्षा ऋतु में वर्षा का जल बस्तियों की गलियों से गुजरता है तो यह अपने साथ मिट्टी बहाकर ले जाता है जिससे वर्षा काल में गलियाँ नालों का रूप धारण कर लेतीं हैं। वर्षा के जल से कृषि योग्य उपजाऊ मिट्टी भी पानी के साथ बह जाती है। अपरदन के कारण उपजाऊ भूमि बंजर भूमि में परिवर्तित होती जा रही है, यहाँ कंकड़ बालू जमा हो जाता है। इस तरह अनवरत अपरदन के कारण यहाँ पर शीघ्रता से फैलाव होता जा रहा है। यहाँ के अधिवास में मुखिया का निवास स्थान गाँव के मध्य में होता हैं,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिसके आस-पास श्रमिकों तथा निम्न जाति के लोगों के घर होते हैं। यहाँ पुराने बने घर कच्ची मिट्टी तथा घास-फूस के बने छप्पर के होते हैं, परन्तु नये प्रकार के साधारण घर भी ईटों से निर्मित होते हैं। भिण्ड जिले में इस प्रकार की व्यवस्था वाले गाँव शुक्लपुरा, बलारपुरा, रौन, समन्ना, बढ़पुरा, गजना, बिलाउ, नुनेटा, गढ़िंया, अतरसूमा, चरथर, बरौना, सुहान, विड़गाँव, बांकसपुरा, नेमन्दा, कितौना, भिण्डवा, सांघुरी, रराऊ, गुमानपुरा, राहवली, चितावली हैं।

भिण्ड जिले में उच्च धरातल पर बसे गाँव आकार में बड़े तथा घनी आबादी वाले हैं। इस तरह की बस्तियाँ कृषि क्षेत्र से घिरी हुई हैं। इनके मध्य में ग्रामीण बस्ती होती है तथा इनके आस-पास इनके कृषि के भू-खण्ड फैले हुए होते हैं। ये मैदान समतल तथा उपजाऊ हैं तथा यह कृषि के लिए उपयुक्त हैं। यहाँ की गलियाँ भी इतनी चौड़ी होती हैं. कि बैलगाड़ी तथा अन्य वाहन भी आसानी से निकल जाता है। इन बस्तियों की छोटी-छोटी सड़कें भी मुख्य मार्गों से जुड़ी रहतीं है। इस प्रकार की बस्तियाँ नगरीय केन्द्रों से अर्न्तक्षेत्रीय सम्बन्धों की शक्ति को बढ़ाती हैं। इन बस्तियों में अच्छे घर होते हैं। इन गाँवों में कई जातियों का निवास होता है। प्रभावशाली जाति केन्द्र बिन्दु में रहती है, जो निचली जातियों तथा सम्प्रदायों से घिरी हुई होती हैं। इन बस्तियों में भी उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग का शोषण किया जाता है। बढ़ती जनसंख्या तथा फैलाव की स्थिति के कारण इन बस्तियों में छोटे-छोटे गाँव अथवा पुरवे आकर मिल गये हैं। इन बस्तियों में सभी प्रकार के सर्विस

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सेन्टर हैं जिनमें स्कूल, पंचायत-घर, पोस्ट आफिस, बाजार आदि दूसरी तरह की सुविधाएँ भी इन बस्तियों में उपलब्ध हैं। अधिक जनसंख्या बृद्धि के कारण अथवा अच्छी कृषि के कारण ये गाँव फैल रहे हैं। गाँव के फैलने का दूसरा प्रमुख कारण यह भी है कि इन गाँव में सुरक्षा व्यवस्था के कारण लोगों में दस्युओं का भय कम है तथा वे अपनी कृषि के नजदीक आकर रहना पसन्द करते हैं, जिससे वे अपने खेतों पर हर समय नजर रख सकें। इन गाँवों का अच्छा विकास हो जाने के कारण ये कस्बे जैसे प्रतीत होते हैं। इनमें प्रमुख गाँव महाराजपुरा, बढ़पुरा, झाउरी, कोतवाल, विशालपुरा, सरूपुरा, विरामपुरा, नायब, चन्दोखर, रनपुरा, धनाउली, पिपरौली, एण्डोरी, अतरसोहा, मेहरा, सयाना, गुहीसर, भरेरा, मानगढ़ महादुआ, मलपुरा, हरपुरा हैं।

गाँव उदौतगढ़, चोमो, दुलहगन, सकराया, भदाखुर, भौनपुरा, इटाहर, पुर, मसूरी, उदौतपुरा, बड़ा कलॉ, ऊमरी, सगरा, अकोड़ा, मालनपुर, साखा, नौनेरा, विरखड़ी, मनहद, दॉग, खन्देरा, बरहद, सोनी, आर्कानली, लौन, नुनहद, मेहगाँव, गोरमी, चितौरा, चमेड़ी, झांकरी, देहगाँव, कॉथर, खण्डेर, गहेली, सायना, अमायन, अंगसोली, गोहद, मऊ, मेंहदा, जैतपुरा, बडोखर, असुवर, बरहा, गौराई, विरखड़ी, लपवाहा, राहवाली, अचलपुरा, अखदेव, देउना, मुरावली, झकौली। इस प्रकार के गाँव सड़क के नजदीक होते हैं। इन बस्तियों की सड़कें पक्की होती हैं। यहाँ की प्रत्येक सड़क मेन सड़क में आकर मिलती है। आबादी तथा एरिया की दृष्टि से ये गाँव बड़े हैं तथा प्रत्येक गाँव की आबादी २५०० से ३००० के बीच की या इससे अधिक होती

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है। इनमें विकास की सभी सुविधाओं के होने के कारण ये कस्बे सदृश्य दिखते हैं। आसन-बेसली नदियों के बीच में यहाँ से होकर रेलवे लाइन भी निकली है। इन गाँवों में कई जातियाँ निवास करती हैं। इसमें स्कूल, पंचायतघर, पोस्ट आफिस, बस-स्टैण्ड, बैंक, पुलिस-चौकी, बाजार तथा अन्य सुविधायें भी उपलब्ध हैं।

इस प्रकार के अधिवास में रेखीय प्रतिरूप, चौक पट्टी प्रतिरूप हैं। ये बस्तियाँ सघन बस्तियाँ हैं, जो अब जनसंख्या के बढ़ते दबाव के कारण तथा दस्यु गिरोहों के आतंक के भय से मुक्त होने के कारण फैल रहीं हैं। अर्न्तजातीय प्रतिन्दिता का कम होना भी बस्तियों के फैलाव का प्रमुख कारण है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तहसील अटेर की जनसंख्या के आकार के अनुसार बस्तियों का वितरण
१९९१

क्रमांक	जनसंख्या आकार	बस्तियों की संख्या	कुल बस्तियों का प्रतिशत
१.	०-५००	५३	३०.६३
२.	५०१-१०००	५६	३२.३६
३.	१००१-१५००	३२	१८.४९
४.	१५०१-२०००	१३	७.५१
५.	२००१-२५००	०६	३.४६
६.	२५०१-३०००	०५	२.८९
७.	३००१-३५००	०३	१.७३
८.	३५०१-४०००	०१	०.५७
९.	४००१-४५००	०१	०.५७
१०.	४५०१-५०००	०१	०.५७
११.	५००१-५५००	०१	०.५७
	योग	१७३	१००

पी०डब्ल्यू०डी० ऑफिस से प्राप्त आँकड़ों से साभार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तहसील भिण्ड की जनसंख्या के आकार के अनुसार बस्तियों का वितरण
१९९१

क्रमांक	जनसंख्या आकार	बस्तियों की संख्या	कुल बस्तियों का प्रतिशत
१.	०-५००	१८	१७.६७
२.	५०१-१०००	२७	२६.४७
३.	१००१-१५००	१७	१६.६६
४.	१५०१-२०००	१४	१३.७२
५.	२००१-२५००	०५	४.९०
६.	२५०१-३०००	०४	३.९२
७.	३००१-३५००	०८	७.८४
८.	३५०१-४०००	०२	१.९६
९.	४००१-४५००	-	-
१०.	४५०१-५०००	०२	१.९६
११.	५००१-५५००	-	-
१२.	५५०१-६०००	०२	१.९६
१३.	६००१-६५००	०२	१.९६
१४.	६५०१-७०००	-	-
१५.	७००१ से अधिक	०१	०.९८
	योग	१०२	१००

पी०डब्लू०डी० ऑफिस से प्राप्त आँकड़ों से साभार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तहसील गोहद की जनसंख्या के आकर के अनुसार बस्तियों का वितरण
१९९१

क्रमांक	जनसंख्या आकार	बस्तियों की संख्या	कुल बस्तियों का प्रतिशत
१.	०-५००	६५	३४.०३
२.	५०१-१०००	६०	३१.४१
३.	१००१-१५००	३३	१७.२७
४.	१५०१-२०००	१७	८.९०
५.	२००१-२५००	०६	३.१४
६.	२५०१-३०००	०६	३.१४
७.	३००१-३५००	०२	१.०४
८.	३५०१-४०००	०१	०.५२
९.	४००१-४५००	–	–
१०.	४५०१-५०००	–	–
११.	५००१-५५००	–	–
१२.	५५०१-६०००	–	–
१३.	६००१-६५००	–	–
१४.	६५०१-७०००	०१	०.५२
योग		१९१	१००

पी०डब्लू०डी० ऑफिस से प्राप्त ऑकड़ों से साभार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तहसील मेहगाँव में जनसंख्या के आकार के अनुसार बस्तियों का वितरण
१९९१

क्रमांक	जनसंख्या आकार	बस्तियों की संख्या	कुल बस्तियों का प्रतिशत
१.	०-५००	५३	२७.१७
२.	५०१-१०००	७१	३६.४१
३.	१००१-१५००	३४	१७.४३
४.	१५०१-२०००	०९	४.६१
५.	२००१-२५००	०८	२.०५
६.	२५०१-३०००	१०	५.१२
७.	३००१-३५००	०३	१.५३
८.	३५०१-४०००	०३	१.५३
९.	४००१-४५००	०१	०.५१
१०.	४५०१-५०००	-	-
११.	५००१-५५००	०१	०.५१
१२.	५५०१-६०००	०२	१.०२
	योग	१९५	१००

पी०डब्लू०डी० ऑफिस से प्राप्त ऑकड़ों से साभार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

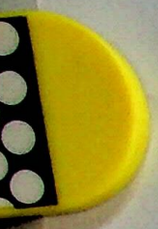

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तहसील रौन में जनसंख्या के आकार के अनुसार बस्तियों का वितरण
१९९१

क्रमांक	जनसंख्या आकार	बस्तियों की संख्या	कुल बस्तियों का प्रतिशत
१.	०-५००	१५	२५.४२
२.	५०१-१०००	१२	२०.३३
३.	१००१-१५००	१३	२२.०३
४.	१५०१-२०००	०७	११.८६
५.	२००१-२५००	०५	८.४७
६.	२५०१-३०००	०४	६.७७
७.	३००१-३५००	०१	१.६९
८.	३५०१-४०००	०१	१.६९
९.	४००१-४५००	-	-
१०.	४५०१-५०००	-	-
११.	५००१-५५००	-	-
१२.	५५०१-६०००	०१	१.६९
	योग	५९	१००

पी०डब्लू०डी० ऑफिस से प्राप्त आँकड़ों से साभार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तहसील मिहोना में जनसंख्या के आकार के अनुसार बस्तियों का वितरण
१९९१

क्रमांक	जनसंख्या आकार	बस्तियों की संख्या	कुल बस्तियों का प्रतिशत
१.	०-५००	१७	२८.३३
२.	५०१-१०००	१८	३०.००
३.	१००१-१५००	१०	१६.६६
४.	१५०१-२०००	०७	११.६६
५.	२००१-२५००	०३	०५.००
६.	२५०१-३०००	०१	१.६६
७.	३००१-३५००	०१	१.६६
८.	३५०१-४०००	०१	१.६६
९.	४००१-४५००	०२	३.३३
	योग	६०	१००

पी०डब्लू०डी० ऑफिस से प्राप्त आँकड़ों से साभार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तहसील लहार में जनसंख्या के आकार के अनुसार बस्तियों का वितरण
१९९१

क्रमांक	जनसंख्या आकार	बस्तियों की संख्या	कुल बस्तियों का प्रतिशत
१.	०-५००	३०	३०.९३
२.	५०१-१०००	३७	३८.१४
३.	१००१-१५००	१५	१५.४६
४.	१५०१-२०००	०८	८.२४
५.	२००१-२५००	०३	३.०९
६.	२५०१-३०००	०२	२.०६
७.	३००१-३५००	०१	१.०३
८.	३५०१-४०००	-	-
९.	४००१-४५००	-	-
१०.	४५०१-५०००	-	-
११.	५००१-५५००	०१	१.०३
	योग	९७	१००

पी०डब्ल्यू०डी० ऑफिस से प्राप्त आँकड़ों से साभार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निष्कर्ष :

उपर्युक्त समस्त आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि भिण्ड जिले की अटेर, भिण्ड, गोहद, मेहगाँव, रौन, मिहोना तथा लहार तहसील में ० से १००० तक जनसंख्या आकार के मध्य मानवीय बस्तियों की संख्या सबसे अधिक पायी जाती है। जैसे-जैसे जनसंख्या का आकार बढ़ता जाता है वैसे-वैसे बस्तियों की सख्या कम होती जाती है। ७००० से अधिक जनसंख्या आकार के मध्य बहुत ही कम मानवीय बस्तियाँ पायीं जातीं हैं। बिना बसी बस्तियों की संख्या तहसील लहार में सबसे अधिक तथा तहसील भिण्ड में सबसे कम है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३:२ नगरीय अधिवास

नगरीय बस्तियाँ द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के व्यावसायों में संलग्न होती हैं अर्थात नगर के निवासी प्राथमिक व्यवसाय जैसे-कृषि, पशुचारण आदि कार्य व्यावसाय के रूप में नहीं करते वरन् वे निर्माण, उद्योग, परिवहन, व्यापार और वाणिज्य, उच्च सेवाओं तथा प्रशासन के कार्यों को अपने व्यावसाय के रूप में अपनाते हैं।

अरुसो के अनुसार : "नगरीय बस्तियों में रहने वाले लोगों को अपना भोजन और वस्त्रों के लिये अनाज और रेशे उत्पन्न करने की आवश्यकता नहीं होती। ये लोग इन वस्तुओं को इधर-उधर से ले जाने, इन वस्तुओं से माल तैयार करने, इनको खरीदने-बेचने और लोगों को लिखाने-पढ़ाने, राज-काज चलाने और इसी तरह के अन्य कार्यों में लगे रहते हैं।"[1]

प्रो० ब्लाश के अनुसार - "नगर एक सामाजिक संगठन होता है, जिसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। यह सभ्यता की उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है जिन तक कुछ क्षेत्र नहीं पहुँच पाये हैं और शायद कभी पहुँच भी न सकें।[2]

---

१. मानव भूगोल : डा० चतुर्भुज मामोरिया : १९९७ : साहित्य भवन पब्लिकेशन : आगरा : पृष्ठ - २१५

२. वही, पृष्ठ - २१५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगरीय बस्तियाँ उद्योग, व्यापार, प्रशासन, सुरक्षा, तकनीक, संस्कृति तथा मनोरंजन का केन्द्र होती हैं, इसका तात्पर्य यह नहीं कि किसी एक नगर में सभी व्यवसाय एवं सुविधाएँ उपलब्ध हों। किसी नगर में कोई एक निर्माण उद्योग ही हो सकता है या कई व्यावसाय भी हो सकते हैं।

नगर का तात्पर्य उस मानव बस्ती से है, जो अपने क्षेत्र में सर्वाधिक विकसित होतीं हैं, जिनमें कोई न कोई उद्योग या व्यापार केन्द्रित होता है और जो अपने क्षेत्र में सर्वाधिक जीवन-यापन की सुविधाओं से सम्पन्न होती हैं जैसे - परिवहन सुविधायें, शिक्षण संस्थाएँ, अस्पताल आदि की सेवायें नगरीय बस्ती में प्राप्त होती हैं। नगरीय बस्ती अपने क्षेत्र की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है।

नगरीय बस्तियों की विशेषतायें : नगरीय बस्तियों की विशेषतायें निम्न लिखित हैं -

(i) नगरीय बस्तियों में अधिकांश लोगों का व्यावसाय निर्माण उद्योगों में काम करना, वाणिज्य व व्यापार में लगे रहना तथा विशिष्ट सेवाएँ करना होता है।

(ii) नगरीय बस्तियों की सबसे प्रमुख विशेषता सघन बस्ती का होना है।

(iii) शिक्षा की उपयुक्त एवं पर्याप्त व्यवस्था तथा चिकित्सा व मनोरंजन के साधनों का होना प्रमुख है।

(iv) नगरीय बस्तियों में परिवहन तथा संचार की उत्तम व्यवस्था होती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(v) प्रशासकीय कार्यों के लिये सरकारी कार्यालयों की व्यवस्था होती है। जैसे थाना, राजस्व कार्यालय, न्यायालय आदि।

भिण्ड जिले के नगरों का कार्य क्षेत्र :

नगरों में होने वाले विभिन्न कार्यों के विकास के लिये अलग-अलग क्षेत्रों की आवश्यकता होती है जिससे एक कार्य दूसरे कार्य में बाधक न हों। भिण्ड जिले की नगरीय बस्ती में अधिकांशतः निम्नलिखित कार्य क्षेत्र पाये जाते हैं -

(i) प्रशासनिक क्षेत्र :

सभी प्रकार के प्रशासनिक कार्य जो सामान्यतः एक-दूसरे के पूरक होते हैं जैसे नगर पालिका कार्यालय, तार-घर, डाक घर, कचहरी, पुलिस स्टेशन आदि कार्यों के लिए यहाँ के नगर में एक अलग क्षेत्र होता है।

(ii) बाजार क्षेत्र :

नगर के निवासियों की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अलग-अलग लघु बाजार पाये जाते हैं, जहाँ सभी प्रकार की आवश्यकता से सम्बन्धित बस्तुएँ निकट ही उपलब्ध हो सकें।

(iii) परिवहन क्षेत्र :

नगर में यातायात सुविधा हेतु खुली जगह में बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन आदि की स्थापना प्रथक स्थान पर की जाती है, परन्तु जिले के नगरीय केन्द्रों में जनाधिक्य के कारण यह सब बीच बस्ती में आ गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(iv) सामाजिक क्षेत्र :

नगरों के कार्य क्षेत्र में कुछ स्थान ऐसे भी होते हैं। जो सामाजिक क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं जैसे धर्मशाला, सरॉय, मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा आदि यह सभी भिण्ड जिले के नगरों में हैं।

(v) मनोरंजन क्षेत्र :

यहाँ के नगरों में नागरिकों के मनोरंजन के लिये विशेष क्षेत्र प्रदान किये गये हैं जैसे यहाँ पर स्थित विभिन्न प्रकार के ऐतिहासिक स्थल सिनेमाघर, भिण्ड की नुमाइश तथा उसके पास स्थित स्टेडियम, विभिन्न मौकों पर होने वाले विशेष कार्यक्रम तथा मेले आदि।

भिण्ड जिले में ११ नगरीय केन्द्र हैं, जिनमें भिण्ड अकेला प्रमुख नगरीय केन्द्र है। इसकी जनसंख्या १०६७५५ है।

भिण्ड नगर में वनखण्डेश्वर मन्दिर तथा गौरी तालाब के किनारे-किनारे प्राचीन बस्ती पायी जाती है। भिण्ड के किले के पास हलवाई खाना, सर्राफा बाजार तथा पड़ाव चौराहे पर पुरानी बस्ती हैं। भिण्ड नगर फ़ैलाव की स्थिति में है। नयी बस्तियों में नुमाइश ग्राउण्ड, सब्जी-मण्डी, अटेर रोड के किनारे फैली बस्ती, चतुर्वेदी नगर, लहार चौराहे (रानी अवन्तीबाई चौराहे) के आस-पास में फैली बस्ती, लश्कर रोड, वाटरवाक्स आदि अनेकों मुहल्ले बसे हुए हैं।

भिण्ड नगर में तीन सिनेमा घर हैं। भिण्ड नगर ग्वालियर रेलमार्ग से जुड़ा हुआ है। इटावा से ग्वालियर जाने वाला सड़क मार्ग भी भिण्ड के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

भिण्ड जिले की नगरीय जनसंख्या

नगर	जनसंख्या									
	१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१	१९५१	१९६१	१९७१	१९८१	१९९१
फूप	–	–	–	–	–	–	–	–	–	७२०२
भिण्ड	८०३२	९१३३	९६१९	१०३४१	१३२४४	१६६१८	२८२०८	४५७९४	७४५१५	१०९७५५
अकोड़ा	–	–	–	–	–	–	–	–	७५९३	९८१८
मेहगाँव	–	–	–	–	–	–	३५८१	५३७८	७६७६	११४१६
गोरमी	–	–	–	–	–	–	–	–	१३०५५	१८१८३
गोहद	५३४३	५१३९	४८४५	५६१८	६७३४	७४४२	१०२८९	१४३०७	२०१७६	३१४५७
मऊ	–	–	–	–	–	–	–	–	१०१८५	१३७४६
लहार	–	–	–	–	–	–	५५७५	७९१८	११५०३	१८७०३
मिहोना	–	–	–	–	–	–	–	–	८६७०	१२२८७
आलमपुर	–	–	–	–	–	–	–	–	६२११	७७२८
दबोह	–	–	–	–	–	–	–	–	६६२८	१०८४८
योग	१३३७५	१४२७२	१४४६४	१५९५९	१९९७८	२४०६०	४७६३३	७३३०७	१६६२१२	२५११४३

1. Regional Planning for Socio-Economic Development in District Bhind, M.P. India, A Project Report, sponsored by Indian Council of Social Science Research, New Delhi, Dr. Kishori Singh, Department of Geography, Karm Kshettra Post Gratuade College , Etawah (U.P.) 206001, Affiliated to : S.S.J.M. Kanpur University, Kanpur, P.N. 78

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

THOUSAND PERSONS

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

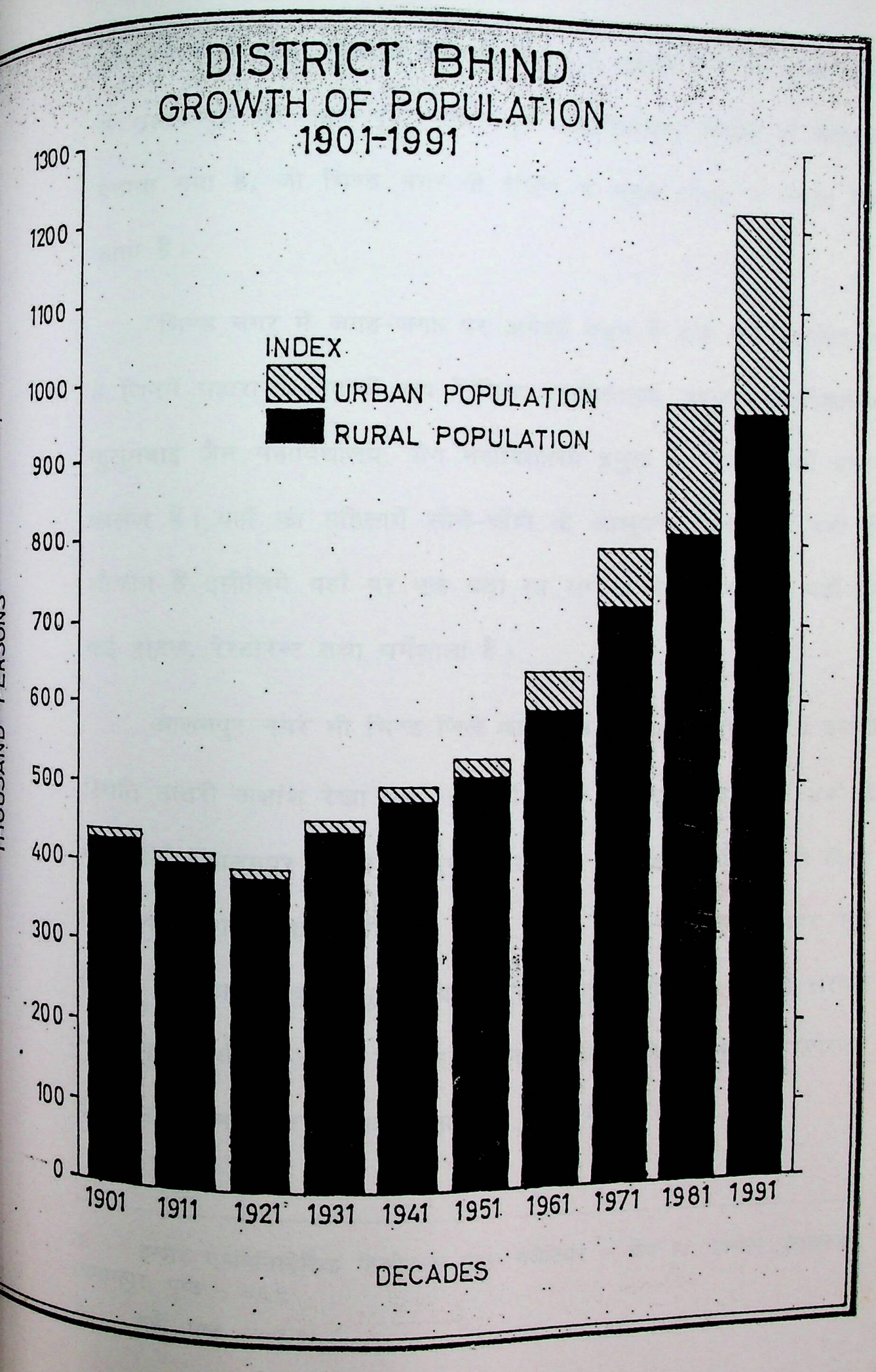

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

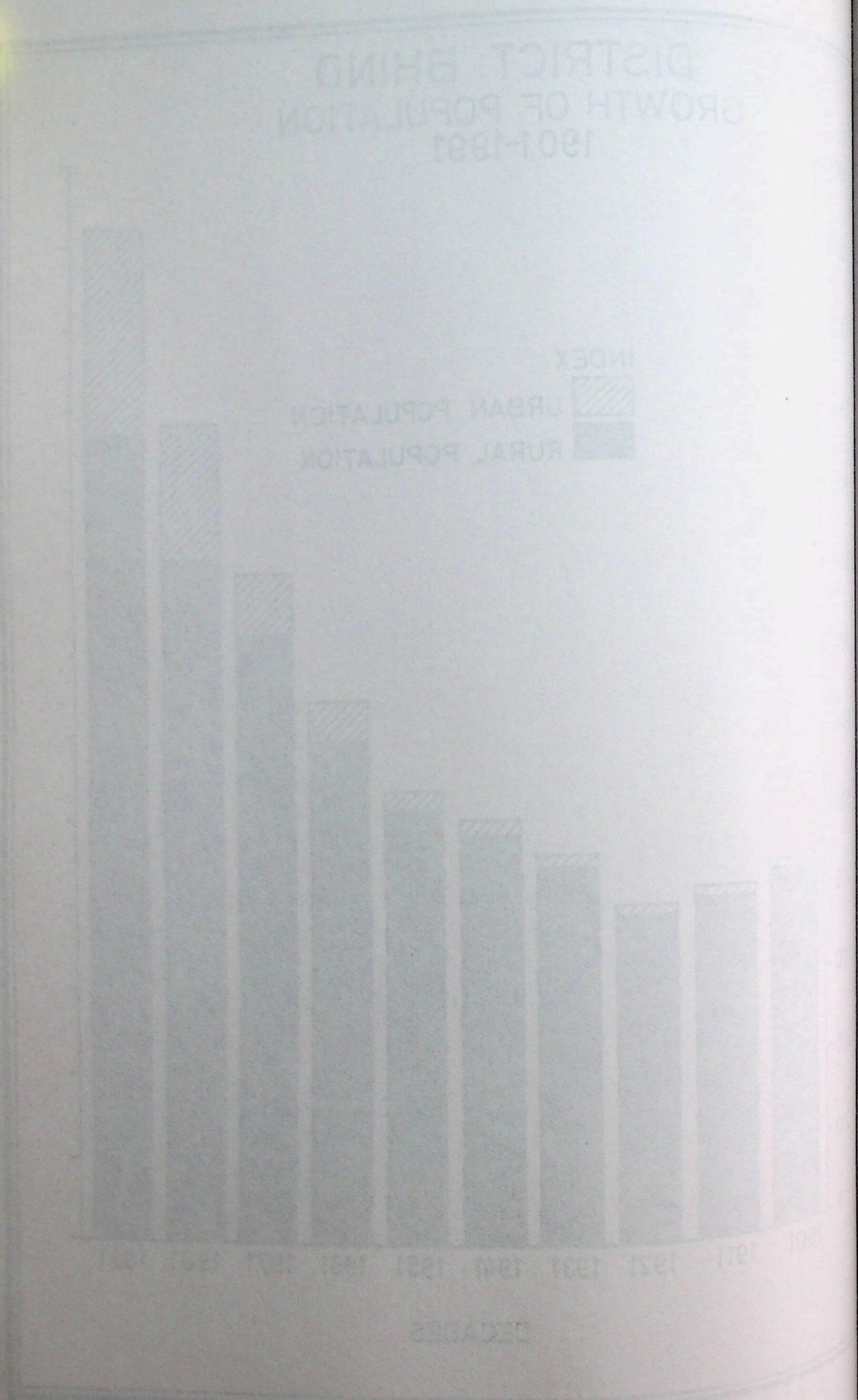

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बीचों-बीच से होकर गुजरता है। अब भिण्ड के उत्तरी सिरे पर मुख्य सड़क से उत्तर-पूर्व की ओर पूर्व, दक्षिण-पूर्व अर्द्धचक्राकार स्थिति में बॉयपास बनाया गया है, जो भिण्ड नगर के दक्षिण में मुख्य सड़क में जाकर मिल जाता है।

भिण्ड नगर में जगह-जगह पर अनेकों स्कूल हैं तथा कई महाविद्यालय हैं जिनमें महाराजा जीवाजी राव सिंधिया महाविद्यालय, यदुनाथ महाविद्यालय, कुसुमबाई जैन महाविद्यालय, जैन महाविद्यालय प्रमुख है तथा अनेकों इण्टर कालेज हैं। यहाँ की महिलायें सोने-चाँदी के आभूषण पहनने की बड़ी ही शौकीन हैं इसीलिये यहाँ पर एक बड़ा सा सर्राफा बाजार भी है। यहाँ पर कई होटल, रेस्टोरेन्ट तथा धर्मशाला हैं।

आलमपुर नगर भी भिण्ड जिले का प्रमुख नगर है। मानचित्र में इसकी स्थिति उत्तरी अक्षांश रेखा २५° ५१' और पूर्वी देशान्तर रेखा ७८° ४२' के मध्य है।[१] "आलमपुर परगने का दुर्भाग्य रहा है, कि वह स्थायी रूप से किसी जिले का अंग बनकर नहीं रह पाया। कभी इसका सम्बन्ध नेमावर सूबे (जिले) से रहा तो कभी मुख्यालय इन्दौर से जुड़ा तो कभी मराठा सरदार नारोशंकर झांसी के अधीन रहा। इसी समय मल्हार राव की मृत्यु के उपरान्त इसे नेमावर, महिदपुर (मालवा) जिलों से जोड़ा गया।"[२]

---

१. इन्दौर एडमिनिस्ट्रेटिव्ह डिव्हीजन्स एण्ड गजेटियर - चेप IV, चन्देल पुस्तकालय आलमपुर, पृष्ठ - ४६६

२. वही, पृष्ठ - ४६६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

"सन् १९४८ में स्वाधीनता प्राप्ति के बाद तहसील टूट गयी और आलमपुर को भिण्ड जिले की लहार तहसील का अंग बनाया गया। २२ मई १९८९ को आलमपुर को उपतहसील का दर्जा मिला।"[1]

आलमपुर एक ऐतिहासिक स्थल है। यह भिण्ड जिले का अन्तिम नगर कभी कस्बे के रूप में था। इन्दौर राज्य के संस्थापक सूबेदार मल्हार राव होलकर का यहाँ विशाल छत्री स्मारक बना है। मल्हार राव की स्मृति को चिरस्थाई बनाने के लिए छत्री स्मारक बनाया गया। आलमपुर नगर में बाजार, स्कूल, कॉलेज, बस स्टैण्ड, होटल, धर्मशाला आदि हैं। यहाँ मल्हार राव होलकर की छत्री स्मारक के अलावा आलमपपुर की गढ़ी, श्री राम मन्दिर, हरि हरेश्वर मन्दिर, रेणुका मन्दिर, सूर्यमन्दिर, नृसिंह मन्दिर, बटुक भैरव गुफा, शिवगिरि मन्दिर, कामाक्षा देवी मन्दिर, सूबा साहब फड़नीस मन्दिर, अन्नपूर्णा मन्दिर तथा लक्ष्मीकान्त मन्दिर काफी प्राचीन हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ कई मन्दिर तथा कई मस्जिदें भी हैं।

जनसंख्या बृद्धि के कारण आलमपुर नगर भी अब फैलाव की स्थिति में हैं। यह नगर मध्य में घना बसा है। अब यहाँ की बस्तियाँ नगर के किनारे अत्यधिक मात्रा में बस रहीं हैं।

---

१. चम्बल के आस-पास : डा० कालीचरण स्नेही : सांस्कृतिक चेतना समिति लहार, (भिण्ड) मध्य प्रदेश अगस्त १९९८, लेख डा० कालीचरण स्नेही, पृष्ठ - ८४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यहाँ की सुरक्षा व्यवस्था मजबूत होने के कारण लोगों के मन से दस्युओं के भय का कम होना भी नगर के फैलाव का प्रमुख कारण है।

भिण्ड जिले के भवन एवं उसके प्रकार :

प्रो० ब्रून्स ने मकान को मानव की दूसरी अनिवार्य आवश्यकता कहा है। मानवों को जंगली पशुओं, डाकुओं एवं शत्रुओं से सुरक्षा के लिये भवन की आवश्यकता होती है। व्यक्ति को दिन भर के श्रम के बाद रात्रि में सोने के लिए सुरक्षित तथा आराम वाला स्थान भवन ही प्रदान करता है। आर्थिक क्रियाओं द्वारा उत्पादित बस्तुओं के संग्रहण तथा अपनी सम्पत्ति की सुरक्षा भवन द्वारा ही प्रदान की जाती है। व्यावसाय चलाने के लिये दुकान, कार्यालय, बैंक, बीमा घर, डाकघर आदि के लिये भवनों की आवश्यकता होती है। सामाजिक तथा सांस्कृतिक, धार्मिक या राजनीतिक गतिविधियाँ चलाने के लिये सभागार, विद्यालय, पूजा स्थल, मनोरंजन के लिये उपयुक्त सभागार या मंच, सरकारी कार्यालय, भवन, पुलिस-चौकी आदि के लिये भवन की आवश्यकता होती है।

भिण्ड जिले के भवनों की प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ प्रत्येक छोटे या बड़े घरों में आँगन अनिवार्य रूप से बना होता है। जिले के भवनों के प्रकारों के अध्ययन के लिये यहाँ के भवनों को निम्न आधार पर विभाजित किया जा सकता है –

(i) दीवारों की निर्माण सामग्री के आधार पर ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ii) छत की बनावट के आधार पर।

(iii) सामान्य आधार पर।

(i) दीवारों की निर्माण सामग्री के आधार पर :

दीवारों की निर्माण सामग्री के आधार पर जिले के भवनों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पूरे जिले के भवनों में भिन्नता देखने को मिलती है। जिले की भिण्ड तहसील के गाँवों के घरों की दीवारों में प्रयुक्त सामग्री के रूप में मिट्टी, ईंट तथा पत्थर का प्रयोग होता है। यहाँ के पुराने मकानों की दीवारें मिट्टी से निर्मित की गयी हैं, जबकि नये घरों की पुरानी पद्धति में बदलाव आया है। अब घरों के निर्माण में कच्ची-पक्की तथा ईंटों की मिश्रित दीवारें बनायी जातीं हैं।

जबकि अटेर तथा गोहद तहसील के ग्रामीण क्षेत्र में घरों की नींव में खण्डे (पत्थर के टुकडे) का प्रयोग होता है उसके ऊपर दीवारें कच्ची तथा पक्की तथा कच्ची-पक्की दोनों प्रकार की बनी मिलती हैं। इसके विपरीत लहार, मिहोना, रौन तथा मेहगाँव में घरों की दीवारों के निर्माण में पत्थर का प्रयोग अधिक मात्रा में होता है। इसका प्रमुख कारण पास की खान से खण्डा सस्ता तथा आसानी से प्राप्त हो जाता है।

दीवारों की निर्माण सामग्री के आधार पर भिन्नता नगरीय क्षेत्रों में भी देखने को मिलती है। कस्बा फूप तथा भिण्ड के मकानों में नींव खण्डों से बनायी जाती है तथा दीवारें ईंटों से बनायी जाती हैं जबकि मऊ, गोहद, लहार, आलमपुर मिहोना में पत्थर का प्रयोग बढ़ता जाता है। मिहोना के कुछ

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घरों में सम्पूर्ण दीवारों का निर्माण भी खण्डों द्वारा ही होता है। इन तहसीलों के घरों में पत्थर का प्रयोग अधिक मात्रा में होता है।

(ii) छत की बनावट के आधार पर:

घर की छतों की बनावट के आधार पर भी भिण्ड जिले के भवनों में भिन्नता देखने को मिलती है। ग्रामीण क्षेत्र में बने पुराने मकानों की छतें मिट्टी से निर्मित होती हैं जिसमें वे मोटे-मोटे लकड़ी के लठ्ठे रखकर (कहीं-कहीं पर लकड़ी के लठ्ठों की जगह पत्थर की पट्टियों का प्रयोग किया गया है) उसे घास-फूस से पाटकर ऊपर से मिट्टी बिछा देते हैं। भिण्ड तथा अटेर तहसील की बस्तियों में घरों के आगे घास-फूस से निर्मित छप्पर डले मिलते हैं। अब इन बस्तियों में कुछ लोगों द्वारा आर०सी०सी० निर्मित छतें बनायी जाने लगीं हैं।

इसके विपरीत तहसील लहार के क्षेत्र में पुराने मकानों की छतें पत्थर से निर्मित होती हैं, नव निर्मित भवन में आर०सी०सी० की छतें बनती हैं। इन घरों में एक प्रकार की भिन्नता और देखने को मिलती है वह यह है कि चम्बल तथा क्वारी नदियों के दोआब में बने घरों के आगे घास तथा फूस से बनाये गये छप्पर रखे जाते हैं जबकि सिन्ध तथा पहूज नदियों के दोआब में बने घरों में खपरैल का छप्पर डाला जाता है।

भिण्ड जिले के नगरीय क्षेत्रों में भी इसी तरह की भिन्नता देखने को मिलती है। कस्बा, भिण्ड, फूप, गोरमी में चौरस तथा सपाट छतें

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आर०सी०सी० की बनी मिलती हैं। आर०सी०सी से निर्मित छतों का प्रयोग तो पूरे जिले में देखा जा सकता है, परन्तु लहार, मिहोना, आलमपुर में बने पुराने भवनों में पत्थरों का प्रयोग अधिकाधिक मात्रा में हुआ मिलता है। आलमपुर में होल्कर की छत्री, गोहद का किला, भिण्ड का किला, अटेर का किला इन ऐतिहासिक इमारतों की छतें पत्थर की ही हैं।

सामान्य आधार पर :

सामान्य आधार पर भी भिण्ड जिले के भवनों को तीन प्रमुख भागों में बाँटा जा सकता है ये आधार निम्न हैं –

(i) घर

(ii) घेर (घेरा)

(iii) मिश्रित

भिण्ड जिले की ग्रामीण बस्तियों में बने घरों में ये तीनों ही प्रकार के घर देखने को मिलते हैं। भिण्ड जिले के ग्रामीण कृषि कार्य अथवा मजदूरी के साथ-साथ पशुपालन भी करते हैं। पशुओं को पालने के लिये उच्च तथा मध्यम वर्गीय ग्रामीण अपने घरों के पीछे घेर बनाते हैं जिसमें वे अपने पशु रखते हैं। इस घेर में एक बड़ा कमरा बना दिया जाता हैं, जिसमें पशुओं के लिये भूसा एकत्रित करने का प्रबन्ध होता है। इसी में कृषि के यन्त्र जैसे हल, बैलगाड़ी, चारा कटाई मशीन इत्यादि रखी होती हैं। इस घेर को स्थानीय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निवासी 'गोंड़ा' कहते हैं। यह इनके अपने निवास गृह के बगल में या घर के आगे या पीछे बना होता है।

गोंड़ा के पास ही इनका अपना निवास गृह होता है जिसमें कमरे, रसोई घर, बड़ा आँगन, अन्न एकत्रित करने के लिये कोठार को सम्पूर्ण घर से अच्छा बनाया जाता है। मिश्रित घर वे हैं जिनमें घर तथा घेर एक में ही होता है इस प्रकार के घर निम्न वर्गीय ग्रामीणों के होते हैं। जिसमें निवास गृह तथा पशुओं का गृह एक ही में होता है। घर के मध्य में या किनारे, खुले स्थान में घास-फूस का छप्पर डालकर इनमें पशुओं को रखा जाता है।

नगरों एवं ग्रामों की पारस्परिक निर्भरता :

भिण्ड जिले के विकास में ग्रामीण एवं नगरी दोनों क्षेत्रों का योगदान महत्वपूर्ण है। ग्रामीण क्षेत्र अपनी विभिन्न आवश्कताओं जैसे निर्मित वस्तुओं, मशीनों अन्य उपकरण तथा परिवहन इत्यादि के लिये नगरों पर आश्रित होते हैं। वही नगर विभिन्न प्रकार के कच्चे पदार्थों जैसे लकड़ी, खनिज में यहाँ पर मिलने वाला खण्डा, दूध इत्यादि के लिये ग्रामों पर आश्रित होते हैं। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं, कि नगर कच्चे माल, खाद्यान्न आदि के लिये ग्रामों पर निर्भर रहते हैं और ग्राम तैयार माल के लिए नगरों पर निर्भर होते हैं। उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि नगर किसी क्षेत्र के आर्थिक तन्त्र के ही एक भाग होते हैं। नगर तथा ग्राम अपने विभिन्न कार्यों तथा आवश्यकताओं के लिये परस्पर निर्भर होते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३:३ पूर्व निर्मित एवं वर्तमान निर्मित अधिवासों की तुलना

भिण्ड जिले में पूर्व निर्मित अधिवासों की तुलना में वर्तमान निर्मित अधिवासों में बहुत अन्तर पाया जाता है। पूर्व निर्मित अधिवास बिना किसी पूर्व निश्चित योजना के तैयार किये जाते थे, जिससे बाद के समय में इस तरह के घर वर्तमान निर्मित बस्तियों के घरों से भिन्न हैं। प्राचीन बने भवन आज की स्थिति में बीहड़ी क्षेत्र के निचली सतह में बने हुए हैं जबकि वर्तमान में बनने वाले घर ऊँची भूमि पर बनते हैं। पूर्व निर्मित भवन में भवनों के निर्माण से पहले सड़क मार्ग नहीं बना होता था और न ही भवन के सामने गलियों का निर्माण किया जाता था, ऐसे बने भवन आज सड़क की सतह से नीचे हो गये हैं। वर्तमान निर्मित भवनों में पहले सड़क का निर्माण किया जाता है बाद में सड़क के किनारे बस्ती विकसित हुई तो इस प्रकार के भवन सड़क की स्थिति से ऊँचे ही बनेंगे। अतः पूर्व निर्मित बस्तियों से सड़क या सड़कों का निर्माण बाद के समय में हुआ है जबकि वर्तमान निर्मित बस्तियों में सड़को का निर्माण पहले का है तथा बस्तियाँ बाद के समय में विकसित हुई।

पूर्व निर्मित अधिवासों के घर कच्चे बने हुए होते हैं जबकि नवीन निर्माण में बनाये जाने वाले घर पक्के, कच्चे-पक्के बने हुए हैं। पूर्व निर्मित बस्तियों में बसे घर कच्चे होने के कारण जर्जर अवस्था में हैं जबकि वर्तमान निर्मित अधिवासों में घर मजबूत बनाये गये हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पूर्व निर्मित अधिवास एक व्यवस्था के तहत बसे हैं। बस्ती के मध्य में प्रभावशाली व्यक्ति का घर या प्रभावशाली जाति का घर होता है उसके बाद जातिगत व्यवस्था के आधार पर घर बने होते हैं, जिसमें निम्न जातियों के घर बस्ती के बाहरी क्षेत्र में होते हैं। पूर्व निर्मित बस्तियों में भिण्ड जिले में पायी जाने वाली कई ऐसी बस्तियाँ हैं जिनमें एक ही जाति के लोग निवास करते हैं। इस प्रकार की बस्तियों में उच्च वर्ग के व्यक्तियों के घर बस्ती के मध्य भाग में तथा ऊँचे स्थानों पर बने हैं। मध्यम वर्गीय व्यक्तियों के घर उच्च वर्गीय व्यक्तियों के घरों के चारों ओर बने हुये हैं, बस्ती के बाहरी हिस्से में निम्न वर्गीय व्यक्तियों के घर होते हैं।

पूर्व निर्मित अधिवासों में एक और विशेषता देखने को मिलती है। प्राचीन बस्तियों के बसने का क्रम किसी नदी या सड़क के किनारे-किनारे, या किसी तालाब या कुएँ के चारों ओर कोई धार्मिक स्थल जैसे मन्दिर के चारों ओर बस्ती का विकसित होना या किसी राजमहल के चारों ओर बस्ती का विकसित होना है, जबकि वर्तमान निर्मित बस्तियों में इस तरह का कोई व्यवस्था क्रम देखने को नहीं मिलता है इसका प्रमुख कारण जनसंख्या वृद्धि है। जिसे जहाँ पर जगह मिलती है वह अपना भवन वहीं निर्मित कर लेता है इसीलिये यहाँ के नगर तथा कई ग्रामीण बस्तियाँ फैल रहीं हैं। लोगों में अर्न्तजातीय प्रतिद्वन्दिता का कम होना भी बस्तियों के फैलाव का प्रमुख कारण है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड जिले की जनसंख्या

क्रमांक	गाँव/नगर का नाम	तहसील	क्षेत्रफल (हैक्टेयर)	जनसंख्या (१९९१)
१	२	३	४	५
१.	कनेरा	अटेर	१७९९.५२	३२०५
२.	काछपुर	अटेर	२८१.९४	३८१
३.	अर्जुनपुर	अटेर	३४७.२८	४०२
४.	उदोतगढ़	अटेर	७०१.०६	२५८९
५.	रोहण्डा	अटेर	३४९.२६	६०४
६.	छोंदा	अटेर	८८.३९	२६४
७.	खेडा	अटेर	२५८.३१	३४५
८.	गन्धोना	अटेर	२९३.५५	५३९
९.	बुधानपुर	अटेर	२०१.८९	५०९
१०.	खादित	अटेर	७१२.३९	१६७२
११.	सुखालपुर	अटेर	६५६.१४	१८८४
१२.	खादेरी	अटेर	३५१.७६	१५३६
१३.	खेरत	अटेर	८५२.०७	१०४६
१४.	अहरोली काली	अटेर	४६२.३९	६०५
१५.	नवाली वृन्दावन	अटेर	७०९.०६	१०७३
१६.	गदर	अटेर	३७४.४१	९०९
१७.	अहरोलीघाट	अटेर	६२३.२३	१२६६
१८.	मोरा	अटेर	४१४.८३	८२४
१९.	चोमा	अटेर	१११९.६७	४१६४
२०.	कदोरा	अटेर	५०४.३१	११२४
२१.	नवाली हार	अटेर	२९५.६०	६७८
२२.	तरसोखर	अटेर	३७९.६३	७०४
२३.	नारीपुर	अटेर	१०५.४९	२६६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
२४.	अटेर	अटेर	१०५७.२६	३६६७
२५.	घिरौंचीा	अटेर	२५७.२६	४१७
२६.	रेपुरा	अटेर	६१३.०१	४६८
२७.	बिन्दवा	अटेर	६३१.८८	११४२
२८.	सनीमपुर	अटेर	३१८.४७	४४५
२६.	रानीपुर	अटेर	२२१.००	२२८
३०.	हुलापुर	अटेर	१३३.६३	५५६
३१.	बलरपुर	अटेर	४१३.३६	१८४८
३२.	जमहोरा	अटेर	७०७.२६	१६१३
३३.	खरका	अटेर	६६६.५४	१४५६
३४.	महाराजपुर	अटेर	१६६.१७	२२
३५.	सौरा	अटेर	३८८.८४	१३८६
३६.	निबारी	अटेर	७१३.६४	१४५५
३७.	बाधपुर	अटेर	४७.३६	५२१
३८.	रमता	अटेर	३७२.६६	७०७
३६.	रिधौली	अटेर	६८१.७५	२०५७
४०.	रतनूपुर	अटेर	४५.८४	२६२
४१.	गोधूपुर	अटेर	२७८.६३	४६७
४२.	परतापपुर	अटेर	३२६.५३	११७२
४३.	बमनपुर	अटेर	३६.४४	२५२
४४.	जालपुरी	अटेर	२८.४३	३१४
४५.	जानपुरा	अटेर	१३२.६७	२६८
४६.	टोरकापुर	अटेर	७३.६६	४५७
४७.	दंग सरकार	अटेर	२१६.५७	बिना बसा गाँव
४८.	हिम्मतपुर	अटेर	२८७..८७	५८६
४६.	खिपौना	अटेर	५५४.१०	१२८२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
५०.	खेरी	अटेर	२३०.६०	६२२
५१.	जमसारा	अटेर	८८८.३२	१५५२
५२.	मघेरा	अटेर	७५५.३२	१०३४
५३.	अकोन	अटेर	८५२.११	१२८५
५४.	नखलौली	अटेर	६०६.५८	७६०
५५.	सूरजपुर	अटेर	६५.४४	३४६
५६.	चितावली	अटेर	४१८.५७	१११३
५७.	जालुआपुर	अटेर	७४.८४	३०८
५८.	सरपुरा	अटेर	३०६.२८	१२०८
५९.	अधूरजपुर	अटेर	३७.४६	२०६
६०.	कल्यानपुर	अटेर	८७.६५	४३५
६१.	किसूपुर	अटेर	२५०.८१	२३७७
६२.	जोरी कोतवाल	अटेर	४०५.६७	१२६५
६३.	छिदियापुर	अटेर	१३६.०१	४३०
६४.	कनकापुर	अटेर	७४.६६	२०२
६५.	बाघपुर	अटेर	१३६.३२	५३३
६६.	अदान्नखेरा	अटेर	३१२.५८	७०१
६७.	अनुरुद्धपुर	अटेर	१७२.२८	३८६
६८.	दाजपुर	अटेर	६८२.३६	१४०७
६९.	भगवन्तपुर	अटेर	१००.८२	४३६
७०.	जेनोरा	अटेर	५०७.५८	८७३
७१.	सोयी	अटेर	५६२.६४	१२६८
७२.	रामपुर	अटेर	१०६.८२	०७
७३.	दुल्हगन	अटेर	८४३.६७	२८६५
७४.	गजना	अटेर	७६१.२४	१४२८
७५.	दतावली	अटेर	१५५.८६	४२१

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
७६.	क्यारीपुर	अटेर	२३८.८०	८३४
७७.	भागतौपुर	अटेर	८३.१४	४५३
७८.	मानीपुर	अटेर	२५४.१७	६३८
७९.	कोसद	अटेर	१४३८.८७	२८८८
८०.	बिजोरा	अटेर	४४१.३४	१५८७
८१.	चिलोजा	अटेर	८४१.४०	११२४
८२.	पारियाना	अटेर	६३३.९०	६५३
८३.	हमीरपुर	अटेर	११८.१२	६००
८४.	मध्यपुर	अटेर	१९३.३९	९१३
८५.	बरकापुर	अटेर	३११.८७	२८८
८६.	रामा	अटेर	१२२९.२२	३१३९
८७.	जोरी अहीर	अटेर	६८९.८९	१२९५
८८.	सकराया	अटेर	६६३.३०	२४६५
८९.	गाधा	अटेर	४३२.४८	८०९
९०.	चाचर	अटेर	३८०.५८	७२२
९१.	बदेरी	अटेर	३२७.१०	५५१
९२.	भिपुरा	अटेर	२००.६३	६३०
९३.	उदानपुर	अटेर	१२०.६३	१७०
९४.	मतधाना	अटेर	४८०.१८	८५४
९५.	अन्धापुर	अटेर	२०३.६१	१८
९६.	कसाहापुर	अटेर	४९.४६	बिना बसा गाँव
९७.	पाली	अटेर	१६०.६५	४२८
९८.	बादापुर	अटेर	१९४.४८	८२२
९९.	नरीउरा	अटेर	११०.८२	७८२
१००.	रानीपुर	अटेर	४३३.९६	१६३१
१०१.	मधूपुर	अटेर	१३.४५	बिना बसा गाँव

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
१०२.	जवासा	अटेर	१६५७.४२	५३६४
१०३.	देहरा	अटेर	४५०.०५	६५७
१०४.	रानीपुर	अटेर	१४३.७८	६२३
१०५.	मिहोनी	अटेर	३४६.२४	१०२३
१०६.	उदोतपुर	अटेर	२८७.२६	१६१३
१०७.	मुदिया खेरा	अटेर	२६७.३४	८८१
१०८.	बक्सीपुर	अटेर	१८२.०३	६८६
१०६.	भुजपुर	अटेर	१७७.६६	१६६१
११०.	सिमराओं	अटेर	६६३.५३	१८५३
१११.	कुरथर	अटेर	४६८.२१	६०१
११२.	धाराई	अटेर	३०५.६६	१२५४
११३.	चौकी	अटेर	१५६.२२	७४५
११४.	बिसालपुर	अटेर	१६८.५७	५६२
११५.	कुसमार	अटेर	२७८.३८	६३५
११६.	नालीपुर	अटेर	११४.३३	४६०
११७.	टिकरी	अटेर	१३०.७४	५४१
११८.	सारपुर	अटेर	१४४.३४	४२०
११६.	जारी	अटेर	२२६.०४	७१६
१२०.	लहरपुर	अटेर	१३८.५०	४२०
१२१.	जगन्नाथपुर	अटेर	८६.७४	बिना बसा गाँव
१२२.	सुल्तानपुर	अटेर	५७.८५	बिना बसा गाँव
१२३.	लखनपुर	अटेर	१११.६२	४८६
१२४.	मूरतपुर	अटेर	७२.५३	५८६
१२५.	अखत्यारपुर	अटेर	१०४.५२	२६८
१२६.	कनकारनपुर	अटेर	१०२.८६	१३८
१२७.	मसूरी	अटेर	६७७.५१	२३०३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
१२८.	कमालपुर	अटेर	१४३.६३	३७७
१२९.	बगुलरी	अटेर	४७१.४४	१११२
१३०.	विजयगढ़	अटेर	४१६.१४	१२०६
१३१.	नरसिंहगढ़	अटेर	३३८.३४	१४१३
१३२.	इंगूरी	अटेर	२७०.६४	५६१
१३३.	सिअबली	अटेर	१६५.३७	८२६
१३४.	बघेड़ी	अटेर	३१४.०६	६४६
१३५.	महेवा	अटेर	३६०.५५	७६३
१३६.	पावई	अटेर	१०३१.०१	२७५५
१३७.	बिरगाबन	अटेर	५०६.४०	१४६१
१३८.	पाली	अटेर	६४५.६६	२०७४
१३९.	कन्हौवापुर	अटेर	८४.६६	३४१
१४०.	सोनपुरा	अटेर	१५६.६८	५६२
१४१.	पचोखरा	अटेर	१६३.६६	३२६
१४२.	पिथनपुरा	अटेर	२६०.८३	१२१३
१४३.	मिरगपुर	अटेर	३००.४५	१४७५
१४४.	गोर खुर्द	अटेर	५२८.२७	१५३१
१४५.	गोर कलाँ	अटेर	१६८.७४	६२१
१४६.	जंजारीपुर	अटेर	३०६.१२	४२६
१४७.	रामपुर	अटेर	१६१.८२	६५६
१४८.	पीपरी	अटेर	५४६.२६	२२७४
१४९.	रौर	अटेर	१६२.१५	३७६
१५०.	बिरामपुर	अटेर	१००.१६	२००
१५१.	बिन्दीपुर	अटेर	१६७.६८	५६५
१५२.	बिचौली	अटेर	५७४.२६	१३४७
१५३.	रायपुर	अटेर	२२४.२४	७४४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
१५४	खिदारपुर	अटेर	१५२.२१	६३०
१५५	जोरी ब्राह्मन	अटेर	४२६.१२	१०८३
१५६	मदनपुर	अटेर	१८२.६७	७४६
१५७	इटाहर	अटेर	६४६.२४	२१३०
१५८	हरराजपुर	अटेर	१८७.०२	२७६
१५६	चकरपुर	अटेर	२०३.३६	४७८
१६०	सिंहापुर	अटेर	७७.६८	बिना बसा गाँव
१६१	पुर	अटेर	८६३.६५	३०८२
१६२	शाहपुर	अटेर	१८०.७०	१२
१६३	बदनपुर	अटेर	३४५.२२	२५
१६४	अमलेहदा	अटेर	२५४.२७	६३०
१६५	पिदोरा	अटेर	४०१.६६	१५७६
१६६	अमलहदी	अटेर	१६६.८८	४६४
१६७	पृथ्वीपुर	अटेर	३१०.६६	३२०
१६८	महापुर	अटेर	३०२.४८	१३३६
१६६	बरोही	अटेर	२५१.७६	१२४८
१७०	दिगही	अटेर	१२३.८०	१
१७१	डांगरपुर	अटेर	३०४.२७	५२०
१७२	साजनपुर	अटेर	६६.६६	४०८
१७३	हीरापुर	अटेर	७६.८५	बिना बसा गाँव
१७४	अमृतपुर	अटेर	८३.१६	१६६
१७५	नयाब	अटेर	३५४.७७	७४२
१७६	खुर्द	अटेर	१५१.७०	६८६
१७७	तुरपुरा	अटेर	१०३.२६	१८६
१७८	गोपालपुर	अटेर	३२६.७६	७७१
१७६	जैसुपुर	अटेर	२८६.२५	६६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
१८०.	चकरवारी	अटेर	२७०.२४	बिना बसा गाँव
१८१.	लावन	अटेर	३६५.६८	२९३४
१८२.	पारा	अटेर	१४२५.४१	४६८८
१८३.	मिहरोली	भिण्ड	३५३.६१	३१६
१८४.	चासद	भिण्ड	३८६.८७	५६०
१८५.	बिरगावा रानी	भिण्ड	१२४०.३३	२५६६
१८६.	संगोली तोर	भिण्ड	२०२.३७	३५४
१८७.	कमाय	भिण्ड	५५६.३६	१०८३
१८८.	हेतपुर	भिण्ड	६५.०२	१६४
१८९.	बरही	भिण्ड	१२८१.५०	२५३०
१९०.	समन्ना	भिण्ड	४२०.६४	६२६
१९१.	सबद	भिण्ड	६५६.३६	११३६
१९२.	कपूरपुर	भिण्ड	६०.६५	२१०
१९३.	जाजीपुर	भिण्ड	८२.६०	६२०
१९४.	भागवासी	भिण्ड	७८२.८७	१३१६
१९५.	अहेली	भिण्ड	६६५.३८	६५६
१९६.	भदाखर	भिण्ड	१३८७.७८	३७३५
१९७.	नाहरा	भिण्ड	२८५.८३	१३५४
१९८.	कुबाबाली	भिण्ड	३१५.२६	बिना बसा गाँव
१९९.	जबाई	भिण्ड	१७२.२८	८६
२००.	सफेंदपुर	भिण्ड	३५.७३	२५४
२०१.	सराय	भिण्ड	१६०८.२१	२१६८
२०२.	ज्ञानपुर	भिण्ड	२२७.६६	७३४
२०३.	भोनपुर	भिण्ड	१०८७.५२	३०६१
२०४.	कुरौली	भिण्ड	१६५.६८	१५६
२०५.	संकरी	भिण्ड	६३३.२६	११५७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
२०६.	कछुई	भिण्ड	४५४.०३	६६२
२०७.	बिन्धुआ	भिण्ड	३०६.११	५४२
२०८.	छोछारी	भिण्ड	६६६.५८	५१०
२०९.	बाघपुर	भिण्ड	२८६.८४	२२८
२१०.	फूफ	भिण्ड	१३६६.००	७२०२
२११.	विजपुरी	भिण्ड	३३८.०४	१७०३
२१२.	चंदूपुर	भिण्ड	४४१.२८	१६२४
२१३.	राहला	भिण्ड	१८६.७७	३५३
२१४.	बिधानपुर	भिण्ड	३०८.११	१५३३
२१५.	सालिगपुर	भिण्ड	२४१.४१	४८४
२१६.	भहमदपुर	भिण्ड	२०७.४२	६३७
२१७.	दबोह	भिण्ड	३३६.६०	१६४४
२१८.	हिवारपुर	भिण्ड	११६.६४	६२०
२१९.	खदरगौहाट	भिण्ड	१६२.४६	७७२
२२०.	लक्ष्मीपुर	भिण्ड	८७.८८	२६६
२२१.	कुम्रौहा	भिण्ड	६२.५६	५१६
२२२.	किरातपुर	भिण्ड	२४६.१३	१५४५
२२३.	चन्दरपुर	भिण्ड	१०८.०४	४११
२२४.	मन्गदपुर	भिण्ड	१२७.३५	३३४
२२५.	मानपुर	भिण्ड	३८८.४८	१०५४
२२६.	जामना	भिण्ड	७८६.६४	२३२१
२२७.	बाबेडी	भिण्ड	२६२०.४५	५६०८
२२८.	नुनहेटा	भिण्ड	२७८२.४७	५८८३
२२९.	बारा खुर्द	भिण्ड	६६६.८०	३३३५
२३०.	सिकहाटा	भिण्ड	१३२७.५३	३०१४
२३१.	सींगपुरा	भिण्ड	१६६.४४	७७४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
२३२.	नाहतोली	भिण्ड	४३७.५६	७६८
२३३.	मीसा	भिण्ड	३६६.८८	१०७५
२३४.	सोहादा	भिण्ड	१७०६.२०	४५८५
२३५.	परसौना	भिण्ड	७१६.१८	१५१६
२३६.	कछौगरा	भिण्ड	८२५.६२	४८६६
२३७.	वारा कलम	भिण्ड	७००.७४	२४३६
२३८.	चाथर	भिण्ड	६६२.००	२६७५
२३६.	रतनपुर	भिण्ड	३१३.४६	७०८
२४०.	विलोहार	भिण्ड	६७४.५२	१४५३
२४१.	रचैडी	भिण्ड	६६४.७६	१६४४
२४२.	डिड़ी	भिण्ड	१६४६.३५	२६६१
२४४.	दीनपुर	भिण्ड	३५५.७८	१४४५
२४५.	जामपुर	भिण्ड	३३५.१६	१५७०
२४६.	अतरसुया	भिण्ड	३५५.११	८६०
२४७.	पीला दानदा	भिण्ड	३१०.५०	७१३
२४८.	छौना	भिण्ड	६६७०	बिना बसा गाँव
२४६.	कनावर	भिण्ड	२३४१.३७	७६१३
१५०.	गोपालगढ	भिण्ड	६३.२७	बिना बसा गाँव
२५१.	बझाई	भिण्ड	१३३६.४२	२३२२
२५२	पनदारी	भिण्ड	१२३४.१५	३६२४
२५३.	पुलावली	भिण्ड	१२७१.४४	३४६५
२५४.	किटी	भिण्ड	२६.८६	६४८
२५५.	ऊमरी	भिण्ड	१५००.३५	६१.१७
२५६.	बिलाव	भिण्ड	२८१४.७४	६०७५
२५७.	खेदा	भिण्ड	६१२.३८	१६८६
२५८.	घोचरा	भिण्ड	११८४.६४	३३५६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
२५९.	पुरा धुमना	भिण्ड	४८२.७७	१२९९
२६०.	अटेरसुमा	भिण्ड	५९६.५५	१३८८
२६१.	लहरौली	भिण्ड	९९४.८३	३४३७
२६२.	खरका	भिण्ड	३६७.३१	१४८९
२६३.	अहाहा	भिण्ड	१८९.५१	६०१
२६४.	मोतीपुरा	भिण्ड	२५५.४५	६९०
२६५.	गुसिंग	भिण्ड	४६२.८९	११४८
२६६.	गोरी सीता	भिण्ड	१६०.६५	३९७
२६७.	गरही सुल्तान	भिण्ड	११३.३०	३३४
२६८.	विशालपुर	भिण्ड	१६६.२८	५८८
२६९.	कोट	भिण्ड	४९०.२५	१७०९
२७०.	पाबई	भिण्ड	२१९.७४	१२६३
२७१.	इश्बारी	भिण्ड	२६९.१२	६०३
२७२.	रामपुर	भिण्ड	८७९.४४	१७३३
२७३.	सरसई	भिण्ड	४९४.०९	१६९८
२७४.	मदरई	भिण्ड	५५०.१५	११३६
२७५.	रोरा	भिण्ड	३७८.२९	६१३
२७६.	हर की जमेब	भिण्ड	२५८.८९	६८१
२७७.	बेहर की जमेब	भिण्ड	४८२.५०	६१४
२७८.	सागरा	भिण्ड	८८४.५६	३२३४
२७९.	ककहरा	भिण्ड	९५४.८४	१६६३
२८०.	मदई	भिण्ड	२७०.४०	३६३
२८१.	नया गाँव	भिण्ड	७९५.६२	३४८३
२८२.	जखमोली	भिण्ड	१३२७.१३	१९६५
२८३.	औझा	भिण्ड	५८९.१५	१०७७
२८४.	तेहानगर	भिण्ड	८३७.५३	२३१४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
२८५.	डोगरपुर	भिण्ड	४८५.६०	६७३
२८६.	सनवाई	भिण्ड	८३७.६२	७३८
२८७.	गुवार	भिण्ड	५७६.४५	१२८१
२८८.	भिण्ड	भिण्ड	१७१८.००	१०६७५५
२८९.	अकोड़ा	भिण्ड	३०३१.००	६८१८
२९०.	बिसवारी	गोहद	४२२.७७	२०८
२९१.	सुनारी	गोहद	२५४.६६	२६०
२९२.	सुहास	गोहद	६१६.६७	१२६०
२९३.	एनो	गोहद	६८५.६५	२६६०
२९४.	पडरई	गोहद	४३०.७८	७१०
२९५.	चाक चन्दोखर	गोहद	२०२.८४	३६६
२९६.	चन्दोखर	गोहद	११८६.६८	२४७८
२९७.	जसरतपुर	गोहद	४६६.६६	११८०
२९८.	राय की पाली	गोहद	४२३.७७	११५६
२९९.	पिफादी	गोहद	५८७.०६	१७७१
३००.	अमरपुरा	गोहद	२८२.६८	१५०
३०१.	जगन्नाथपुरा	गोहद	२३८.४६	६१०
३०२.	टेहरा	गोहद	१६०.५१	४५२
३०३.	फतेहपुर	गोहद	२५२.६२	५०८
३०४.	श्यामपुर	गोहद	३७२.४५	२३५
३०५.	कानीपुरा	गोहद	४२८.४२	११६६
३०६.	लोदी की पाली	गोहद	५७७.६२	११८६
३०७.	खनेता	गोहद	१६४०.४२	२८५४
३०८.	चक खनेता	गोहद	४२३.७७	५६४
३०९.	इंदौरी	गोहद	३१८६.४१	६७२६
३१०.	बिलोनी	गोहद	५६८.३६	६६४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
३११.	भोनपुर	गोहद	१३६६.६८	२३८३
३१२.	अमनपुर	गोहद	१६६.१७	१६३
३१३.	नागौर	गोहद	२६३.६५	७४४
३१४.	नीमदनदा	गोहद	२२१.४५	१८६
३१५.	बरौना	गोहद	४६२.६४	१४६६
३१६.	बकनासा	गोहद	६३५.६६	१४१२
३१७.	बमहोरा	गोहद	५६८.७६	५५५
३१८.	चकबरौना	गोहद	३६१.८२	५०५
३१६.	बारा	गोहद	८३२.३८	१४१७
३२०.	टीटोन	गोहद	६७२.४५	१८२७
३२१.	मानपुर	गोहद	३१०.८०	६०८
३२२.	शेरपुर	गोहद	१५२४.४८	३१५३
३२३.	रायतपुर	गोहद	३५५.८३	६६१
३२४.	शंकरपुर	गोहद	४५६.०५	४७६
३२५.	कंचनपुर	गोहद	८०३.३२	१६६६
३२६.	नौनेरा	गोहद	१४५७.७०	१६८६
३२७.	छनेरता	गोहद	१०५७.०६	२५२७
३२८.	खेरिया रैजू	गोहद	१३८.१५	३६६
३२६.	चक सरीवा	गोहद	१८२.११	४१२
३३०.	सरवा	गोहद	१२५३.००	२४६४
३३१.	चक तुकेदा	गोहद	२८७.८६	४६३
३३२.	तुकेदा	गोहद	६०७.२२	१७८६
३३३.	इकहरा	गोहद	५०४.४५	६४१
३३४.	गुरैखा	गोहद	१००३.७६	२०३४
३३५.	सिंहवारी	गोहद	३७८.६४	१०६२
३३६.	घिरोंगी	गोहद	३३६.५०	६२२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
३३७.	तिलोरी	गोहद	३१३.६३	५२६
३३८.	मालनपुर	गोहद	४८२.२०	३०६२
३३९.	लेहचुरा	गोहद	७७६.६१	१८६१
३४०.	छिमका	गोहद	६६२.३६	१८८०
३४१.	नाबाली	गोहद	२२८.०१	७११
३४२.	बसाहरा	गोहद	१०३.६३	बिना बसा गाँव
३४३.	गोहादी	गोहद	१५६.७४	बिना बसा गाँव
३४४.	सिरसोदा	गोहद	३६५.७८	११५३
३४५.	कीरतपुर	गोहद	२४८.७४	बिना बसा गाँव
३४६.	डाँग	गोहद	५७७.१३	१८३२
३४७.	पाहद	गोहद	१६५.६२	बिना बसा गाँव
३४८.	रुन्ध सरकार	गोहद	२३४.३१	७५०
३४९.	विडखाड़ी	गोहद	१३१२.००	३८५०
३५०.	चादेहरा	गोहद	६१५.६५	१२६१
३५१.	भयानी	गोहद	३७३.८५	६२१
३५२.	जातपुर	गोहद	२८६.८४	४६३
३५३.	भगवासा	गोहद	७३७.६३	१७००
३५४.	धामसा	गोहद	५४१.७२	११६१
३५५.	मदनपुर	गोहद	२०५.०५	८३१
३५६.	हंसेलीपुर	गोहद	२०८.३३	बिना बसा गाँव
३५७.	पलिया	गोहद	१२४.१३	२७५
३५८.	श्यामपुर	गोहद	१६७.३१	२५७
३५९.	चक मधोपुरा	गोहद	३८३.७६	७५५
३६०.	टुन्डिला	गोहद	७०३.२६	१५५८
३६१.	माहो	गोहद	४५४.२३	७६१
३६२.	अलोरी	गोहद	१३२२.२५	१६१६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
३६३.	जयाजीपुर	गोहद	४३५.३८	३८२
३६४.	पिपरोली	गोहद	६४२.४५	१११६
३६५.	कठउआ हाजी	गोहद	८६३.५१	१७६४
३६६.	झावलपुरी	गोहद	२३४.५३	३३६
३६७.	बरथरा	गोहद	६७३.३०	२००३
३६८.	सिसोनिया	गोहद	३७३.१३	२४५
३६९.	खेरिया महानन्द	गोहद	१६६.६४	४१६
३७०.	जनोरा	गोहद	२१४.२५	३०३
३७१.	बघुलरी	गोहद	६३.४४	२४०
३७२.	बानीपुर	गोहद	५१२.५४	१२०८
३७३.	खुर्द	गोहद	२६१.५०	८०५
३७४.	गदरोली	गोहद	४२६.३४	१०८७
३७५.	प्रतापपुर	गोहद	१६७.४१	२१०
३७६.	हनुमन्तपुरा	गोहद	१७०.३१	४१६
३७७.	बघराई	गोहद	४३४.१४	५०१
३७८.	बघोरा	गोहद	१६५.७१	२६०
३७९.	हाबीपुरा	गोहद	५४४.७६	१२८३
३८०.	खितोली	गोहद	७१०.५७	१६२६
३८१.	साध	गोहद	५१२.६१	१२५६
३८२.	कथवा गूजर	गोहद	७८४.५५	१३३७
३८३.	हरपुरा	गोहद	१८५.३७	३४७
३८४.	गोहद	गोहद	१५५७.६२	३६८
३८५.	इतयाली	गोहद	१८३.०३	६३
३८६.	बंकेपुर	गोहद	३०४.४६	६१४
३८७.	बदागर	गोहद	३४४.६१	६६१
३८८.	रमनपुरा	गोहद	१७६.५६	४२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
३८९.	कमलपुरा	गोहद	३७६.०२	६८१
३९०.	खरउआ	गोहद	९४५.५१	१५३९
३९१.	कीरतपुर	गोहद	१२४.०३	६८
३९२.	चहरेता	गोहद	६१७.७३	५३४
३९३.	बरौआ	गोहद	१२७.६४	२०७
३९४.	मधोगढ़	गोहद	१८९.३१	४३१
३९५.	खाँडेर	गोहद	६८८.३५	१०७९
३९६.	बगथरा	गोहद	५६०.९१	६४१
३९७.	पीपरसुरा	गोहद	२२२२.८७	२६६२
३९८.	बडेरा	गोहद	४१२.९५	१०४०
३९९.	रामपुरा	गोहद	५३०.९१	७८०
४००.	दिरमान	गोहद	५५४.१३	६१६
४०१.	बिलपुरा	गोहद	२३३.२२	३६८
४०२.	भायपुरा	गोहद	१७५.९८	२२५
४०३.	पाली	गोहद	११९४.६८	२१४४
४०४.	अन्नायच	गोहद	२३१.१३	३७३
४०५.	कल्यानपुरा	गोहद	१९२.६६	५१२
४०६.	जंगलपुरा	गोहद	१४५.५५	२३८
४०७.	हदिआपुरा	गोहद	११७.६१	२३६
४०८.	चितोरा	गोहद	७६९.५७	१५६४
४०९.	छमहेदी	गोहद	९२१.३९	१२११
४१०.	निबरोल	गोहद	८४४.७३	१४५४
४११.	खेरियागजू	गोहद	१८७.४६	१३८
४१२.	गिरगाँव	गोहद	३५०.०२	८६३
४१३.	रतनपुरा	गोहद	१६०.९५	२९३
४१४.	नीरपुरा	गोहद	३४०.५७	८२०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
४१५.	झाँकरी	गोहद	५३०.५८	७५७
४१६.	मकरेन्ता	गोहद	३१३.५७	६३५
४१७.	इतयन्डा	गोहद	७७७.१७	१२८७
४१८.	पिपहदा	गोहद	४५६.४७	७४४
४१९.	असोची	गोहद	२५०.८९	२९७
४२०.	केसोपुरा	गोहद	२०२.८८	५३२
४२१.	जनकपुरा	गोहद	२८५.०३	२७४
४२२.	सिलोहा	गोहद	४३७.६५	६१७
४२३.	खेरियाबन	गोहद	२१२.५०	१९५
४२४.	निनोली	गोहद	५४३.१९	७९८
४२५.	मन्दरोली	गोहद	३२८.४३	५६२
४२६.	अगसोली	गोहद	३७३.०६	७०३
४२७.	मदुरइ	गोहद	२१७.४६	३५६
४२८.	मुदेना	गोहद	१९७.३०	२२६
४२९.	देहगाँव	गोहद	१२५०.०८	१८९९
४३०.	अन्तुआ	गोहद	२७६.९२	३८१
४३१.	करबास	गोहद	९१६.१२	१२९१
४३२.	छरेला	गोहद	९०३.५९	१७२७
४३३.	मदनपुरा	गोहद	२९१.७८	५६४
४३५.	अतरसोंहा	गोहद	५३३.०२	७०५
४३६.	गुहीसर	गोहद	१२५८.९२	२५९९
४३७.	जलालपुरा	गोहद	२२४.८८	२२२
४३८.	उझावई	गोहद	९८१.०७	१०३०
४३९.	मुखौरी	गोहद	५४९.३२	९३५
४४०.	अडूपुरा	गोहद	२३५.८८	५९८
४४१.	जीतारबाई	गोहद	३०६.०२	७१३
४४२.	पड़रिहा	गोहद	२०४.०९	३६१

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
४४३.	बरारा	गोहद	१०४.७८	२२६
४४४.	बखौली	गोहद	२१४.२६	३८८
४४५.	संगौली	गोहद	१५२.६२	बिना बसा गाँव
४४६.	बमरौली	गोहद	३६६.७२	५३६
४४७.	रसनौल	गोहद	७५७.१६	११७६
४४८.	जमदारा	गोहद	७७६.०७	१०७६
४४६.	सोरा	गोहद	४०६.२०	३६३
४५०.	खेरियाबर	गोहद	२२७.५५	४५६
४५१.	बरोली	गोहद	८३४.०३	११४७
४५२.	तरोली	गोहद	४७३.७२	३४२
४५३.	भडेरा	गोहद	६६२.५२	६४८
४५४.	इत्याली	गोहद	७६४.६५	१३०५
४५५.	बानगंगा	गोहद	६२.४६	१७५
४५६.	करौली	गोहद	२२३.०२	३१७
४५७.	घमारी	गोहद	७६४.५४	११२६
४५८.	सिनौर	गोहद	३०१.४६	४७५
४५६.	चेनकुरी	गोहद	६६४.८३	१३७७
४६०.	डांग छेनकुरी	गोहद	५०३.३४	६१६
४६१.	निबारी	गोहद	१३६.८४	२६०
४६२.	कान्हेपुरा	गोहद	३७६.२१	बिना बसा गाँव
४६३.	खेरिया जालू	गोहद	५०४.२८	६६१
४६४.	देगावन	गोहद	४४६.६१	५५४
४६५.	अंधियारी खुर्द	गोहद	३३६.१८	६७२
४६६.	कीती	गोहद	२७३.६३	७७२
४६७.	जारेत	गोहद	३०३.१२	५०४
४६८.	अंधियारी कलाँ	गोहद	३६८.६३	८५०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
४६९.	असोहना	गोहद	४९७.०९	११६४
४७०.	मोहद्दीपुरा	गोहद	१०८.७५	२२५
४७१.	बहेरा	गोहद	१२६.७९	१४७
४७२.	बदरा	गोहद	२९८.२२	७४२
४७३.	रूपाबाई	गोहद	२७५.६८	५५५
४७४.	शेखूपुरा	गोहद	१७५.३५	३३८
४७५.	किटाइहिना	गोहद	२३४.७६	४८२
४७६.	टीकर	गोहद	४९.५४	बिना बसा गाँव
४७७.	दलेलपुरा	गोहद	११३.२८	बिना बसा गाँव
४७८.	नूरमपुरा	गोहद	१२२.२२	१८७
४७९.	मघाँ	गोहद	२८५.६०	६०१
४८०.	सिमिरिया	गोहद	१८४.२२	२६०
४८१.	डाँगकुर कुइया	गोहद	३३.२८	बिना बसा गाँव
४८२.	खेरियाचंदन	गोहद	३८९.१३	५७५
४८३.	डांगनरुआ	गोहद	७९.७०	२४९
४८४.	पखहोजिया	गोहद	१९५.९५	३३७
४८५.	श्यारीपुर	गोहद	८६.६४	१८९
४८६.	सहरोली	गोहद	२५१.१२	५५८
४८७.	गुरियंची	गोहद	५५२.९३	६८४
४८८.	डांक दसालपुरा	गोहद	३७२.३३	बिना बसा गाँव
४८९.	भदरौली	गोहद	३६९.४८	३६०
४९०.	गुमारा	गोहद	४४९.२५	५४८
४९१.	दांग गुमारा	गोहद	३५२.४७	बिना बसा गाँव
४९२.	रतबा	गोहद	१६२४.४०	२७६६
४९३.	गोहद	गोहद	१४९१.००	३१४५७
४९४.	मौ	गोहद	२३७५.००	१३७४६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
४९५.	सुखान्द	मेहगाँव	२४८८.६८	५७४४
४९६.	अरोली	मेहगाँव	१०१५.१३	२०६६
४९७.	खेरा	मेहगाँव	५५१.५०	८४५
४९८.	किशनपुरा	मेहगाँव	३८६.७६	५७०
४९९.	कुतरोली	मेहगाँव	८९९.९४	२२१०
५००.	बाजूपुरा	मेहगाँव	१५५.६२	७२२
५०१.	काछनाव कलाँ	मेहगाँव	९२८.५९	२४१२
५०२.	हंसपुरा	मेहगाँव	३३४.६७	१२०९
५०३.	काछनाव खुर्द	मेहगाँव	८६४.३१	१३७३
५०४.	सुचहापुरा	मेहगाँव	१८०.७७	४४७
५०६.	चांदनी	मेहगाँव	३७४.९९	६५०
५०७.	डिडोना	मेहगाँव	५०७.२९	९८०
५०८.	पछैरा	मेहगाँव	४८८.९०	१९४८
५०९.	खोकीपुर	मेहगाँव	३८७.७१	१११६
५१०.	इंगौसा	मेहगाँव	४९०.९७	१४७७
५११.	नानहद	मेहगाँव	७३४.३१	२४८४
५१२.	अचहाई	मेहगाँव	३१३.२३	८३८
५१३.	अशोखर	मेहगाँव	३०१.७६	१३१५
५१४.	शेपुरा	मेहगाँव	२७६.५५	६४६
५१५.	अकलोनी	मेहगाँव	८०९.५०	२९९४
५१६.	गोपालपुरा	मेहगाँव	१३०.९७	४८
५१७.	धिलोबा	मेहगाँव	५५९.१९	९०३
५१८.	परतापपुर	मेहगाँव	२११.७९	९८९
५१९.	पृथ्वीपुर	मेहगाँव	२६१.१४	१५९२
५२०.	बहेरा	मेहगाँव	३०१.०५	५८७
५२१.	साजनपुर	मेहगाँव	१५२.८६	५९९

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
५२२.	कोट	मेहगाँव	४०८.२७	१०४३
५२३	परोसा	मेहगाँव	१०१३.३०	३३०३
५२४.	टिकरी	मेहगाँव	८००.४६	१३६०
५२५.	सिकरोदा	मेहगाँव	६५३.६८	२३४७
५२६.	तेजपुर	मेहगाँव	२००.३०	७०८
५२७.	रौपुरा	मेहगाँव	२३१.८२	१३०२
५२८.	महदोली	मेहगाँव	१०७०.६६	२७४५
५२९.	सुजारपुर	मेहगाँव	२७६.२७	१३१७
५३०.	हीरपुरा	मेहगाँव	३५८.०८	६२२
५३१.	मनहद	मेहगाँव	१५०१.१६	५०७२
५३२.	लालपुर	मेहगाँव	५४६.२२	१०६६
५३३.	क्रिपे का पुरा	मेहगाँव	२६५.६७	१०३१
५३४.	चपरा	मेहगाँव	३५७.०८	१०१७
५३५.	विजयगढ़	मेहगाँव	२७४.११	६२५
५३६.	डोंगरपुर	मेहगाँव	२५५.६६	७४१
५३७.	हारीछा	मेहगाँव	६८०.८१	२५६४
५३८.	लिलोली	मेहगाँव	८३१.५५	७२७
५३९.	श्यामपुर	मेहगाँव	४३८.७६	६६४
५४०.	इमानपुर	मेहगाँव	१५०.६०	२४३
५४१.	लावन	मेहगाँव	१०६८.१६	३५०५
५४२.	श्री का पुरा	मेहगाँव	१२३.६०	५७
५४३.	अर्ले का पुर	मेहगाँव	३०७.३७	१०४२
५४४.	चन्दरपुर	मेहगाँव	२६१.०५	५५६
५४५.	मानपुरा	मेहगाँव	३६६.८०	६६४
५४६.	सोन्धा	मेहगाँव	६६८.६७	२४५६
५४७.	जैतपुरा	मेहगाँव	२७१.३८	६७०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
५४८.	दोंदरी	मेहगाँव	३५५.५२	१३८६
५४६.	पनौआ	मेहगाँव	१५७.५८	४७१
५५०.	पीपरपुरा	मेहगाँव	१६२.७३	३७६
५५१.	जिगारखी	मेहगाँव	४१६.४६	१२६५
५५२.	मानिकपुर	मेहगाँव	२३०.११	१६५
५५३.	अमृतपुर	मेहगाँव	१७६.३७	४३०
५५४.	बहुआ	मेहगाँव	५३०.६१	१११८
५५५.	जलहारीपुर	मेहगाँव	१६४.०२	३८३
५५६.	महाराजपुर	मेहगाँव	२१४.४६	५३७
५५७.	सेंथरी	मेहगाँव	६०६.८०	१७३३
५५८.	सोनी	मेहगाँव	१३२३.२८	३६१६
५५६.	अजनोधा	मेहगाँव	५०१.०४	१६५३
५६०.	आलमपुरा	मेहगाँव	१६१.३६	४३१
५६१.	किशनपुर	मेहगाँव	११७.२५	२७२
५६२.	जारपुरा	मेहगाँव	१०७.६०	६२६
५६३.	खेरै तापक	मेहगाँव	२०४.०१	८१४
५६४.	गरही	मेहगाँव	५५०.४०	१०८१
५६५.	भूपतपुर	मेहगाँव	१२२.२६	४०६
५६६.	खारीपुर	मेहगाँव	१२४.४६	२११
५६७.	गिजुररा	मेहगाँव	२५७.६५	१०२६
५६८.	बिजारीपुर	मेहगाँव	१६१.६२	६२२
५६६.	लदामपुर	मेहगाँव	१४०.०७	५६४
५७०.	हंसपुर	मेहगाँव	१४४.८१	५१६
५७१.	कनहरी	मेहगाँव	३६४.८२	१२१०
५७२.	देबरी	मेहगाँव	३००.०८	८६८
५७३.	सुरजपुर	मेहगाँव	६२.८६	१७५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
५७३.	जागेपुर	मेहगाँव	१२०.५२	१४६
५७४.	नारायनपुर	मेहगाँव	१४२.८७	२४६
५७५.	परतापपुर	मेहगाँव	१५६.३५	३३३
५७६.	मेघपुर	मेहगाँव	१५०.६६	४६०
५७७.	मोरोली	मेहगाँव	२७३.६०	६०८
५७८.	रामपुर	मेहगाँव	२१८.४२	२२१
५७६.	बरहद	मेहगाँव	१६४६.२५	३७४७
५८०.	पचेरा	मेहगाँव	६१०.४४	२५२३
५८१.	बहारपुर	मेहगाँव	१५६.३३	३३३
५८२.	मेहगोन	मेहगाँव	१०५६.००	५१५
५८३.	गंगावली	मेहगाँव	३०२.००	५५६
५८४.	जीसकपुर	मेहगाँव	१४१.७४	६५३
५८५.	जोधपुर	मेहगाँव	२०१.३६	४२२
५८६.	रैनका	मेहगाँव	२६५.४४	६६१
५८७.	इमलिया	मेहगाँव	३२३.६८	७७४
५८८.	पिपरोली	मेहगाँव	६८५.६५	१११९
५८६.	बघेरा	मेहगाँव	३८८.६५	१०८०
५६०.	मुश्तरा	मेहगाँव	२६५.६४	८०६
५६१.	मुश्तराई	मेहगाँव	२७५.३४	६३७
५६२.	गोना हरदासपुर	मेहगाँव	६८२.५४	१६४०
५६३.	रैपुरा	मेहगाँव	२६०.७६	५३४
५६४.	सिलोली	मेहगाँव	४०२.३७	११२६
५६५.	बिरगाबन	मेहगाँव	१५५७.८२	३२१२
५६६.	कोंहन	मेहगाँव	६२६.३७	२१०६
५६७.	कुथोडा	मेहगाँव	३८६.०४	१२३८
५६८.	हरसिंहपुर	मेहगाँव	२१७.२६	४०३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
५९९.	हीरपुर	मेहगाँव	२४४.०८	१८४
६००.	धनोली	मेहगाँव	५६५.३२	११०३
६०१.	पर्राबन	मेहगाँव	४२०.६६	१२०७
६०२.	रबियापुर	मेहगाँव	२०२.७३	५६२
६०३.	देबरी	मेहगाँव	४८८.८८	८८३
६०४.	पामरपुर	मेहगाँव	२३८.४५	४३३
६०५.	गेटोर	मेहगाँव	१४५३.९९	२६३५
६०६.	सरसेंद	मेहगाँव	६१४.९३	५६१
६०७.	सुनारपुर	मेहगाँव	२५३.६८	३५३
६०८.	खिदरपुर	मेहगाँव	४२०.४८	६४६
६०९.	डगर	मेहगाँव	५०३.१३	९९२
६१०.	नीमगाँव	मेहगाँव	५५१.००	१२००
६११.	बरसों	मेहगाँव	१००६.७७	१७९२
६१२.	गाधपुरा	मेहगाँव	९८५.६२	२०४४
६१३.	सुराबली	मेहगाँव	४७४.५७	१३३६
६१४.	गोउरा	मेहगाँव	१९५२.२५	३२९७
६१५.	देबरी लावन	मेहगाँव	१३४.०२	४९
६१६.	छजूपुर	मेहगाँव	३६३.१०	८०१
६१७.	पटलोखरी	मेहगाँव	५१७.३३	९२८
६१८.	खेरिया	मेहगाँव	१४६.२९	२६८१
६१९.	तोंर	मेहगाँव	६१.६६	५३८
६२०.	सेउडा	मेहगाँव	६६.६२	०२
६२१.	मेहगाँव	मेहगाँव	१६६.००	११४१६
६२२.	गोरमी	मेहगाँव	३३२४.००	१८१८३
६२३.	केथोडा	मेहगाँव	३५२.२०	४१२
६२४.	रजपुरा	मेहगाँव	३५८.०२	६१९

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
६२५.	कटरौल	मेहगाँव	१३३४.०७	१६५२
६२६.	मानिकपुरा	मेहगाँव	१२३.६६	५०७
६२७.	चिरौल	मेहगाँव	३१३.६३	७६०
६२८.	ददरोंआ	मेहगाँव	३५६.०७	५६४
६२९.	संथारी	मेहगाँव	२०६.७०	२५०
६३०.	केरोरा	मेहगाँव	५४५.४५	८७१
६३१.	पदकोली	मेहगाँव	८०८.८२	११४५
६३२.	इकोरी	मेहगाँव	२७०.८३	३८८
६३३.	गाता	मेहगाँव	५००.३३	११६८
६३४.	गुदावली	मेहगाँव	३२५.३४	६६६
६३५.	अजनोल	मेहगाँव	५६५.६१	७७१
६३६.	केमोखरी	मेहगाँव	२५५.०५	५१६
६३७.	गिजूररा	मेहगाँव	२४०.३६	४८५
६३८.	सिमार	मेहगाँव	७६२.११	१३७४
६३९.	सेनदूरी	मेहगाँव	३०४.१४	३६१
६४०.	भरोली	मेहगाँव	१८६४.०३	२७६८
६४१.	भरोली कलाँ	मेहगाँव	१२००.४५	२६३०
६४२.	मुसाबली	मेहगाँव	७६६.३३	७१५
६४३.	गोरमन	मेहगाँव	१०२७.६४	१५०६
६४४.	छुताबली	मेहगाँव	२४३.७६	४३७
६४५.	देपुरा	मेहगाँव	३२३.६१	४७६
६४६.	सायापुरा	मेहगाँव	५४२.३३	७८७
६४७.	नोरासाई	मेहगाँव	१७८.६०	४१३
६४८.	जरसेना	मेहगाँव	२०३.६६	५७३
६४९.	जियासों	मेहगाँव	३८८.६६	५६१
६५०.	रानूपुरा	मेहगाँव	७६७.२८	११०५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
६५१.	सयाना	मेहगाँव	१०५६.००	२५७७
६५२.	कनथार	मेहगाँव	१२५४.२६	२८७६
६५३.	गहेली	मेहगाँव	२०८२.१६	४४२६
६५४.	तिकरी कलाँ	मेहगाँव	३६४.८५	२७१
६५५.	तिकरी खुर्द	मेहगाँव	४२४.५८	७१७
६५६.	धोरखा	मेहगाँव	५५२.४६	६५६
६५७.	सिलाउपुरा	मेहगाँव	३४२.४५	३६१
६५८.	सुरूरा	मेहगाँव	१८२.५३	१०६७
६५६.	अनतोन	मेहगाँव	८०७.६६	६६८
६६०.	सदासीपुरा	मेहगाँव	१६७.६५	बिना बसा गाँव
६६१.	अदोखर	मेहगाँव	२२८.३५	६०३
६६२.	तकपुरा	मेहगाँव	१७३.०१	७२२
६६३.	बसपुरा	मेहगाँव	६१.४२	बिना बसा गाँव
६६४.	लहरा	मेहगाँव	१६८.५६	७६७
६६५.	कुपावली	मेहगाँव	३८२.०१	२६६
६६६.	बुजुर्ग	मेहगाँव	२०१.००	४४२
६६७.	सोधा	मेहगाँव	४६१.७७	६६६
६६८.	अजीता	मेहगाँव	३२६.३४	४६२
६६६.	खेरोली	मेहगाँव	७१८.२३	११६१
६७०.	कछार	मेहगाँव	१६७.१२	७५६
६७१.	खेरिया सिन्ध	मेहगाँव	५६८.४६	६६६
६७२.	वरेथीराज	मेहगाँव	२४६.२६	२८३
६७३.	पुरा	मेहगाँव	२१८.०६	४६१
६७४.	बदरा	मेहगाँव	३१३.३३	४७३
६७५.	बच्छरेता	मेहगाँव	३१६.८७	३६७
६७६.	बारेथी खुर्द	मेहगाँव	२७६.८४	२६६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
६७७.	बोच्हरोली	मेहगाँव	२६१.६६	२७५
६७८.	सनदूरी अमायन	मेहगाँव	३११.३६	५४१
६७९.	सिंहपुरा	मेहगाँव	२४५.४५	६७८
६८०.	सेमरा	मेहगाँव	१९३.६२	५९१
६८१.	कमानपुरा	मेहगाँव	१०५.८५	१८५
६८२.	गोकलपुरा	मेहगाँव	२३१.७२	३६३
६८३.	चन्दरपुर	मेहगाँव	११३.०६	१७०
६८४.	दानीपुरा	मेहगाँव	१०१.३९	२३७
६८५.	मदनपुरा	मेहगाँव	१५६.०८	३५८
६८६.	अमायन	मेहगाँव	१८५२.७४	५९१२
६८७.	पिपरौआ	मेहगाँव	२०७.८८	५०८
६८८.	सिरसी	मेहगाँव	३८५.३५	९१५
६८९.	कमानपुरा	मेहगाँव	१५९.६२	५१०
६९०.	परघना	मेहगाँव	५९६.४०	१२३७
६९१.	पिपरोली	मेहगाँव	२९२.२१	९७
६९२.	लालपुरा	मेहगाँव	१५७.००	२७२
६९३.	मेहरा	मेहगाँव	८४७.४६	१७३२
६९४	बहादुरपुरा बधेली	रौन	८७६.५३	५२१
६९५	मेंहदा	रौन	१७७३.१५	३६०९
६९६	कनुआ पुरा	रौन	६०२.१९	१४४
६९७	दहेमा	रौन	२२७.८२	बिना बसा गाँव
६९८	महायार	रौन	५६५.७१	३६८
६९९	रेवाजा	रौन	३४८.२२	१४९१
७००	निबसाई	रौन	१२७७.४३	२८९१
७०१	कोंधा	रौन	२०७.५७	६१७
७०२	पिपरैच	रौन	९२.२६	बिना बसा गाँव

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	
७०३.	पुराभीम नगर	रौन	४२१.१६	१०४४
७०४.	मेहरा खुर्द	रौन	५७५.२६	७५१
७०५.	परतापपुरा	रौन	३४७.४१	२७४
७०६.	मांग गढ़	रौन	३८६.३३	२७२७
७०७.	गोराई	रौन	४५७.६६	२३६६
७०८.	जसवंतपुरा	रौन	१६१.६६	१३५
७०६.	इदुरखी	रौन	१६०८.७८	२६७८
७१०.	चांदवाल नं० १	रौन	३५३.०३	१०६५
७११.	मेहदा	रौन	६६१.७१	१६२३
७१२.	रौन	रौन	१०३२.३६	५७३७
७१३.	अंधियारी नं० १	रौन	३४७.६६	१८२
७१४.	विडखरी	रौन	७१७.०७	२६८०
७१५.	रुरुआ	रौन	१८६४.६८	२४१३
७१६.	कोट	रौन	३६०.६०	५७३
७१७.	पडेरा	रौन	४४८.५७	१३८६
७१८.	परसला	रौन	८६८.४६	३४००
७१६.	नदना	रौन	२६४.६०	१३१४
७२०.	नवलपुरा	रौन	२४८.७३	३४७
७२१.	बसन्तपुरा	रौन	६६१.१२	१७४६
७२२.	राई	रौन	५४४.७६	६५८
७२३.	दरियापुरा	रौन	६३.१२	१७८
७२४.	नोधा	रौन	६६६.६५	२४५६
७२५.	शाहपुरा नं० २	रौन	१०१.६१	बिना बसा गाँव
७२६.	गंध बहोराजपुरा	रौन	२८०.३५	७६८
७२७.	पचोखरा	रौन	७८८.५३	२११६
७२८.	गधैइया	रौन	१५६.६८	बिना बसा गाँव

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
७२९.	मूरतपुर	रौन	५३५.८९	१५६३
७३०.	लरोल	रौन	८४५.७७	१४५५
७३१.	दोहाई	रौन	५२५.२९	१०८०
७३२.	रायपुर	रौन	४५३.५८	१२२१
७३३.	हिलगांव	रौन	३७७.११	४७७
७३४.	बगइयापुर	रौन	३३९.५८	११९५
७३५.	बोनापुरा	रौन	४५३.६५	११९०
७३६.	मंधैया	रौन	२५६.१५	५००
७३७.	लोहचर	रौन	४७८.११	६६९
७३८.	थानुपुर	रौन	२१६.६९	४५१
७३९.	बिसवारी	रौन	१२६५.१५	१७३३
७४०.	मछण्ड	रौन	१३५०.९२	६३२
७४१.	अहरोली जागीर	रौन	९२.५४	२७०
७४२.	जुगनपुर	रौन	१२९.०३	४१७
७४३.	बनुआपुर	रौन	११२.०७	बिना बसा गाँव
७४४.	मोरखी	रौन	५२१.५२	१६४३
७४५.	सुरघम	रौन	४४२.१२	१४२०
७४६.	गुढ़ा	रौन	४७०.४२	१०३४
७४७.	भकोटी	रौन	४२९.५३	४८७
७४८.	रानापुर	रौन	७९.३९	बिना बसा गाँव
७४९.	लिधौरा	रौन	६६४.९२	७०२
७५०.	असनेहत	रौन	८४२.८१	२००७
७५१.	खुर्द	रौन	४८०.८६	९७१
७५२.	कुंवर पुर न० १	रौन	४१७.६२	८३९
७५३.	चकलें	रौन	३५.०२	बिना बसा गाँव
७५४.	चंदोख	रौन	५६३.०८	१८७८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
७५५.	जैतपुर	रौन	५६८.५५	१५७५
७५६.	दौलतपुर	रौन	१२३.२७	४५३
७५७.	इमलहा	रौन	३०५.५५	११००
७५८.	चचाई	रौन	२२६.७४	३६४
७५६.	मछरिया	रौन	२४०.४८	८६६
७६०.	हमीरपुर	रौन	२०६.७०	४०६
७६१.	जगन्नाथपुर	रौन	१५८.०६	७१६
७६२.	मरही	मिहोना	४६८.६८	३१६८
७६३.	बौहारा	मिहोना	५३६.४१	२२०८
७६४.	सिंहपुर	मिहोना	२४७.५४	३५०
७६५.	अचलपुर	मिहोना	८३२.५१	३५४२
७६६.	खुर्दुवा	मिहोना	३१५.०३	बिना बसा गाँव
७६७.	चाचीपुर	मिहोना	३२६.०२	६३८
७६८.	दुबेका	मिहोना	६५८.२४	४१७
७७६.	मरियाबाली खुर्द	मिहोना	३३६.१४	४१६
७७०.	मटियाबाली बुजुर्ग	मिहोना	७६०.१०	१२५२
७७१.	गुरिरा	मिहोना	३११.८३	३०४
७७२.	दौलतपुर न० १	मिहोना	१३७.०४	बिना बसा गाँव
७७३.	धोहर	मिहोना	५३८.१२	६८१
७७४.	परायच	मिहोना	४६७.२७	७०३
७७५.	बडेतर	मिहोना	४७०.११	६२३
७७६.	सिजरोली	मिहोना	२८३.०१	२०५
७७७.	राहबाली बेहड़	मिहोना	१११५.२०	१३५३
७७८.	रावतपुर सानी	मिहोना	३६०.०६	७४१
७७६.	राहबली उबरई	मिहोना	८८६.४६	४१२०
७८०.	कटघरा	मिहोना	१०६.४५	१७७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
७८१.	मेहरी	मिहोना	३५६.३७	८५३
७८२.	लालपुर	मिहोना	२४०.६७	११३६
७८३.	श्यामपुर	मिहोना	२३७.०१	१०३२
७८४.	धोनपुर	मिहोना	३२०.७१	६७४
७८५.	शिक़ारी जागीर	मिहोना	२६४.६०	१६०६
७८६.	हीरापुर	मिहोना	२६६.२७	८५६
७८७.	डबरहा खालसा	मिहोना	०.६४	बिना बसा गाँव
७८८.	डबरहा जागीर	मिहोना	२५४.१६	१३६४
७८६.	नकारा	मिहोना	१८४.६६	४३६
७६०.	मालपुर	मिहोना	२५५.६७	६५५
७६१.	कथा	मिहोना	१२१८.७६	४२४२
७६२.	रारी शिकारपुर	मिहोना	७२६.१२	२७६७
७६३.	जगनपुर	मिहोना	४२०.८१	१५२३
७६४.	बरेहत	मिहोना	४४०.८०	१४१५
७६५.	छिड़ी	मिहोना	१६८.६६	५२१
७६६.	बहादुरपुर	मिहोना	६३.१०	बिना बसा गाँव
७६७.	लपवहा	मिहोना	४६३.६५	१८२६
७६८.	सिजारीपुर	मिहोना	१७०.६५	११८
७६६.	ककोरा	मिहोना	४४४.५६	४५२
८००.	बदोखरी	मिहोना	४६४.१०	१६६७
८०१.	सुन्दरपुर	मिहोना	१२१.७५	१४८४
८०२.	बडगाँव न० १	मिहोना	६५७.८६	४५२
८०३.	बाजीपुर	मिहोना	३०८.०५	१०२०
८०४.	रुरी	मिहोना	१६२.७६	४६६
८०५.	करिला	मिहोना	२०४.२५	५७३
८०६.	पृथ्वीपुर	मिहोना	५६६.५४	१११४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
८०७.	भीकमपुर	मिहोना	३१६.८४	६२६
८०८.	अदलीसपुर	मिहोना	५८.६७	१८
८०६.	कीलमपुर	मिहोना	११८.६६	०४
८१०.	चिरोली	मिहोना	१४७.२१	६०६
८११.	भातपुर	मिहोना	५८५.४४	१७८५
८१२.	शाहपुर नं० १	मिहोना	२०२.५६	२६७
८१३.	छिबाबली नं० १	मिहोना	१३६.७६	४६१
८१४.	तेजपुर	मिहोना	१६६.२१	७८७
८१५.	नानपुर	मिहोना	१६६.७१	४५६
८१६.	वेशपुर	मिहोना	१६३.८५	७०५
८१७.	चांदवाली न० २	मिहोना	३२६.७५	७१५
८१८.	मेहरा बुजुर्ग	मिहोना	६७७.१२	१८६७
८१६.	रोहानी सिंहपुर	मिहोना	४४६.३०	७७६
८२०.	अजनेर	मिहोना	१०४८.३६	२३४२
८२१.	मडोरी	मिहोना	१२१६.३७	१४६७
८२२.	रोहानी जागीर	मिहोना	११८७.६४	१७५४
८२३.	मिहोना	मिहोना	१६११.००	१२२८७
८२४.	गिरवसा	मिहोना	८४७.३६	२१७७
८२५.	बनवीरपुर	लहार	६०.०१	बिना बसा गाँव
८२६.	लगदुआ	लहार	१२२.०६	३५८
८२७.	ललवारी	लहार	३४४.११	१०१८
८२८.	बरहा	लहार	६८४.२७	२४७१
८२६.	सेंमरा	लहार	१५०.७३	१५७
८३०.	हारपुर	लहार	१६४.६४	६५१
८३१.	जमुहाँ	लहार	७७८.१६	५३४२
८३२.	हलुआपुर	लहार	३१६.३६	५५२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

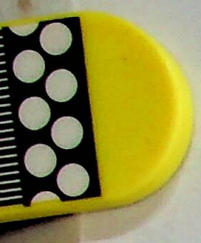

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
८३३.	दरगांव	लहार	१९७.७९	बिना बसा गाँव
८३४.	मधुवा	लहार	४०८.२०	९४२
८३५.	मसेरन	लहार	५७१.५७	१५२२
८३६.	जैतपुर असवार	लहार	४०५.०७	१८०२
८३७.	दुंदा	लहार	२५२.१९	६७८
८३८.	बघावली	लहार	१९६.३७	३७३
८३९.	सुजानपुर	लहार	२२८.८६	१९०
८४०.	जलालपुर	लहार	२८१.०५	८६५
८४१.	इगुई	लहार	३८७.२९	६५५
८४२.	रसूलपुर	लहार	६०.६२	५६०
८४३.	असवार	लहार	११४६.७२	५१८६
८४४.	इकमाली	लहार	२८९.९१	९५९
८४५.	चिरूली	लहार	५५९.९७	१४६६
८४६.	चोराई	लहार	४७७.३५	९१४
८४७.	देबरा	लहार	१४१.८७	३२५
८४८.	अखदेबा	लहार	३७९.५४	१४३०
८४९.	कैथा	लहार	४१६.७९	७६८
८५०.	बराई	लहार	४५९.१८	८६३
८५१.	सोंसरा	लहार	५२८.२३	११२०
८५२.	टोला	लहार	५१५.१४	१९१०
८५३.	बिजोरा	लहार	४४८.६६	४७२
८५४.	रावतपुर कला	लहार	३०२.७३	३९६
८५५.	खजुरी	लहार	२३७.६२	७६४
८५६.	बरूआ	लहार	३८०.७६	१३३९
८५७.	बेहटा	लहार	४४०.५५	३८५
८५८.	मिहोनी	लहार	४९५.११	८८४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
८५६.	रामपुर	लहार	३८६.५१	८६५
८६०.	सलामपुर	लहार	२२०.०६	३२६
८६१.	कुम्हरोल	लहार	२३४.६७	३२२
८६२.	खिल्ली	लहार	३८८.८४	३२८
८६३.	चिरबली	लहार	३०२.६०	३५७
८६४.	धरमपुर	लहार	१६०.१६	७४६
८६५.	डभरा	लहार	२६१.००	.७०६
८६६.	नरोल	लहार	४०१.७१	११६७
८६७.	परेछा	लहार	७४८.४५	१०८४
८६८.	उदनपुर	लहार	८८.६१	बिना बसा गाँव
८६६.	दुभानी	लहार	२१२.५३	४७८
८७०.	दुर्गापुर	लहार	१७८.६८	६७६
८७१.	धनारा	लहार	१३५.६४	२०३
८७२.	विसनपुर	लहार	२६०.४५	१०४०
८७३.	रोनी	लहार	१३०.६०	६३७
८७४.	मुराबली	लहार	६०४.५०	१८६४
८७५.	सजैया	लहार	२६६.३५	५६६
८७६.	देबरी कला	लहार	१४७८.६७	२५१२
८७७.	रावतपुर खुर्द	लहार	२०६.२३	५६२
८७८.	करियाबाली	लहार	२८१.१०	८१८
८७६.	निसार	लहार	२३७.८८	६४७
८८०.	सिगरी दबोह	लहार	६६.६१	३३३
८८१.	टिगरा खुर्द	लहार	७२.७८	७३
८८२.	रुराई	लहार	८२३.२५	१६६५
८८३.	अरुसेई	लहार	७८१.४२	१६६२
८८४.	खड़गपुर	लहार	३४.१५	बिना बसा गाँव

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
८८५.	तिमाबली	लहार	१०८.६०	१८०
८८६.	नागिनपुर	लहार	७०.५६	बिना बसा गाँव
८८७.	रुआ नं० १	लहार	२६६.६०	५१४
८८८.	लारसा	लहार	२६८.४६	१४८
८८६.	कांकसी	लहार	२१०.१२	१७
८६०.	छिवावली न० २	लहार	४७६.६२	१३१०
८६१.	फरदुबा	लहार	६२२.४५	१२२८
८६२.	रुर	लहार	३७२.३६	६१२
८६३.	गंगपुर	लहार	११५८.७६	२०३०
८६४.	बिडरा	लहार	१६१.६०	४८३
८६५.	भदेंरी	लहार	१६५.१४	३८२
८६६.	शाहपुर नं० २	लहार	२३२.८३	५३०
८६७.	कुरथर	लहार	४५६.१७	१०४६
८६८.	खुर्द	लहार	२२२.२०	६८५
८६६.	खुजा	लहार	३१३.६२	१२८७
६००.	भानपुर	लहार	१८२.४५	४७३
६०१.	गन्थारी	लहार	६५०.३१	११७५
६०२.	बलमा	लहार	४६५.०२	७५४
६०३.	चंधरोआ	लहार	२०७.६७	५४७
६०४.	बसथारा	लहार	६८१.६४	१७६१
६०५.	गुरा	लहार	३६३.२४	७२३
६०६.	बड़गांव न० २	लहार	४३४.६७	१०४६
६०७.	भबथारा	लहार	३६५.५६	बिना बसा गाँव
६०८.	अमाहा	लहार	३६७.३८	२२६८
६०६.	कुअंरपुर न० २	लहार	४१२.२१	६६२
६१०.	बघेड़ी	लहार	२५३.८३	७००

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	२	३	४	५
६११.	बीजपुर	लहार	१६१६.२६	१७५६
६१२.	इतोरा	लहार	१६५.२०	बिना बसा गाँव
६१३.	ज्ञानपुर	लहार	४५७.५३	७१३
६१४.	म्यानपुर	लहार	१०५.६४	बिना बसा गाँव
६१५.	लदोली	लहार	१५१.५६	बिना बसा गाँव
६१६.	सिगोसा	लहार	२६७.२६	५३२
६१७.	अंधियारी न० २	लहार	३८१.६६	११८२
६१८.	किशनपुर	लहार	३६.०१	बिना बसा गाँव
६१६.	छिरेला	लहार	१७०.६४	बिना बसा गाँव
६२०.	ददुआ	लहार	२४७.६५	८७७
६२१.	पीपरी	लहार	३६७.५३	६३६
६२२.	मारपुर	लहार	२०४.१५	५६४
६२३.	अदूपुर	लहार	४४.३६	बिना बसा गाँव
६२४.	कसल	लहार	३६४.८८	८२६
६२५.	गदरोली	लहार	१३०.६२	बिना बसा गाँव
६२६.	पड़री खुर्द	लहार	१३७.२३	१८४
६२७.	छांन	लहार	२५४.४३	३८१
६२८.	पारा	लहार	१८५.४६	३४०
६२६.	रतनपुर	लहार	२८७.३८	३६४
६३०.	रिनिया	लहार	२२५.३३	४२८
६३१.	सजाबलपुर	लहार	१८२.०६	२५६
६३२.	जखोली	लहार	१२३५.०२	२८०६
६३३.	धोरखा	लहार	३५६.७१	३४६
६३४.	बामनपुर	लहार	२२६.७०	४६७
६३५.	लहार	लहार	१६०४.००	१८७०३
६३६.	आलमपुर	लहार	१२११.००	७७२८
६३७.	दबोह	लहार	१२७०.००	१०८४८
योग	६३७	०७	४४६३५५०.७०	१२१६००

* प्रोवीजनल पॉपुलेशन टेबिल्स, सेंसस ऑफ इण्डिया, डिस्ट्रिक भिण्ड (मध्य-प्रदेश) १६६१

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊँ धौः शान्तिरन्तरक्षि ऊँ शान्ति।
पृथिवी शान्तिरपः शान्तिरोषधयः शान्तिः।।
वनस्पतयः शान्तिक्षिदेवाः शान्ति ब्रम्हाशान्ति।
सर्व ऊँ शान्ति शान्दिरेवा शान्ति सामा शान्तिरेधि।।

यजुर्वेद

स्वर्ग लोक अन्तरिक्ष लोक तथा पृथ्वी लोक हमें शान्ति प्रदान करें जल शांति प्रदायक हो।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वास्तुशास्त्र का संक्षिप्त परिचय

रोटी, कपड़ा और मकान ये मनुष्य की तीन मूल-भूत अनिवार्य आवश्कताएँ हैं। रोटी का तात्पर्य व्यवसाय या रोजगार से होता है जबकि कपड़ा सुख-सुविधा का प्रतीक होता है एवं मकान का तात्पर्य दोनों सुखों को समन्वयात्मक रुप से भोगते हुए समाज में सम्मानजनक तथा प्रतिष्ठाजनित जीवन जीते हुए स्थायी रुप से निवास करना है।

संसार का प्रत्येक प्राणी आवास के लिये ऐसे स्थान की खोज करता है जहाँ पर उसे सुख तथा शान्ति मिले। वास्तुशास्त्र का सिद्धान्त प्राकृतिक तत्वों के अनुरुप भवन रचना करना और उसका पूरा लाभ उठकार सुख-शान्तिपूर्ण जीवन जीना है। सूर्योदय होने पर हम भले ही अपना कमरा बन्द कर दें तथा चारों तरफ पर्दे डाल दें तो भी हम सूर्य की शक्ति को कमरे में आने से नहीं रोक सकते क्योंकि सूर्य की शक्ति का सम्बन्ध किसी धर्म से नहीं अपितु प्रकृति से है और प्रकृति को आज तक कोई नहीं बाँध सका।

अभी तक पृथ्वी के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रह पर जीवन नही मिल पाया है। कारण स्पष्ट है कि पृथ्वी का पर्यावरण ही जीवन की उत्पत्ति के लिए उपयुक्त है। ब्रह्मांण्डीय, विद्युत चुम्बकीय एवं पृथ्वीय ऊर्जा जीवन के अस्तित्व के लिए जिम्मेदार है। मनुष्य, प्रकृति, भवन तथा भूमि के मध्य तारतम्य स्थापित कर जीवन को खुशहाल बनाने के लिए बाहरी व आन्तरिक ऊर्जाओं में समन्वय आवश्यक है। वास्तु भवन बनाने का विज्ञान तथा मानव

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निर्मित पर्यावरण एवं पंचतत्वों - पृथ्वी, वायु, प्रकाश (सूर्य तथा अग्नि), जल एवं आकाश द्वारा उत्सर्जित ऊर्जाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने की कला है ताकि मनुष्य को अधिक से अधिक लाभ प्राप्त हो सके।

वास्तुशास्त्र का तात्पर्य :

'वास्तु' शब्द की उत्पत्ति 'वस्तु' से मानी गयी है। वस्तु का तात्पर्य 'जो है' से है अथवा 'जिसकी सत्ता विश्व में है' वस्तु कहलाती है। वस्तु अथवा वास्तु का ज्ञान देने वाला शास्त्र ही वास्तुशास्त्र है। अनेक विद्वानों ने वास्तुशास्त्र को मात्र भवन निर्माण सिखाने वाला शास्त्र ही माना है, लेकिन वास्तु भवन निर्माण के साथ-साथ भवन में रखी जाने वाली वस्तुओं के स्थान व दिशा की भी जानकारी देता है।

वास्तु का उद्‌भव एवं रूप :

वास्तुकला या स्थापत्य कला को ललित कला के रुप में भी वर्णित किया गया है। भारतीय मनीषियों ने वास्तु को वेदांङ्ग से समुद्रभूत माना है। इसका सम्बन्ध ज्योतिष एवं कल्प से भी जोड़ा गया है। मूलतः स्थापत्य वास्तु भवन निर्माण की कला है। प्राचीन काल से ही मानव को जीवन की रक्षा हेतु किसी आश्रय की आवश्यकता पड़ी। आरम्भ में मानव पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर था। मानव समाज के विकास के साथ उसके निवास में भी परिवर्तन हुआ। कन्दराओं व गुफाओं से निकलकर मानव समतल भूमि पर आकर बसने लगा। अपने रहने के लिये उसने पत्थर, मिट्टी और लकड़ी के सहयोग

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से मकान बनाये। तभी से संगठित जीवन की परम्परा की शुरुआत हुई। जिससे पुरवों, पुरों, नगरों और ग्रामों की रचना की। धीरे-धीरे भवन निर्माण कला विकसित सभ्यता का एक अंग बनती चली गयी।

प्राचीन मानव अपने आस-पास की वस्तुओं, वातावरण तथा उसके पृथ्वी के सम्बन्धों के प्रति जागरुक था। मानव ने आदिकाल से ही प्रकृति का सूक्ष्म अध्ययन करके उसमें छिपे गूढ़ रहस्यों को खोजा तथा अपनी उन्नति के लिये उनका प्रयोग करना आरम्भ किया।

वास्तु का इतिहास :

प्राचीन भवनों की निर्माण कला (वास्तु कला) का केन्द्र वेदों में है, जो हजारों वर्ष प्राचीन है। इसका स्रोत हमारे ऋषि मुनियों की आध्यात्मिकता तथा महानतम् वास्तुविद 'विश्वकर्मा' द्वारा स्थापित सिद्धान्तों के आधार पर है। हमारे देश का भवन निर्माण कार्य धार्मिक कृत्य के रुप में परिकल्पित किया जाता था। प्राचीन काल से ही भारत में भवन निर्माण कला विकसित हो चुकी थी उस समय इसे स्थापत्य वेद के नाम से जाना जाता था।

भारतीय साहित्य में सभी वेदों में ऋग्वेद सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। इसमें वास्तु या स्थापत्य सम्बन्धी अनेकों उल्लेख दिये गये हैं। इनसे यह ज्ञात होता है कि द्वितीय सहस्त्राब्दी के पूर्व भारतीयों को भवन निर्माण कला का सर्वाधिक ज्ञान था। चारों वेदों तथा परिवर्ती वैदिक साहित्य में से ऐसे उल्लेख मिलते हैं जो स्थापत्य व वास्तु के विभिन्न प्रकार के अंगो पर प्रकाश ड़ालते

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हैं। ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में भवन विन्यास के बारे में जो जानकारियाँ उपलब्ध हैं उसकी परम्परा भारत में निरन्तर बनी रही।

वैदिक साहित्य से इस ज्ञान की प्राप्ति होती है कि यहाँ पर भवन निर्माण कला में सादगी थी। यहाँ के निवासियों का जीवन सादा था इसलिये यहाँ के निवासगृहों में आडम्बर नहीं था। ऋग्वेद में कई स्थलों पर 'वास्तोस्पति' [१] नामक देवता का उल्लेख मिलता है। भवन निर्माण से पूर्व इस देवता का आवाहन करना आवश्यक समझा जाता था। एक स्थान पर वास्तोस्पति [२] तथा इन्द्र को अन्यन्त्र [३] वास्तोस्पति तथा त्वष्ट्रा को एक माना गया है। परिवर्ती वास्तु साहित्य में त्वष्टा को एक कुशल कारीगर के रुप में माना जाता है।

विश्वकर्मा को वास्तुशास्त्र का प्रथम प्रवर्तक एवं आचार्य कहा गया है। दक्षिण भारत में लोक-प्रचलित समरांगण सूत्रधार में एक कथा प्रसिद्ध है जिसका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है।

---

१. ऋग्वेद ७/५४, ७/५५, ८/१७/१४ आदि

२. ऋग्वेद ८/१७/१४

३. ऋग्वेद ५/४१/८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना करने के बाद संसार बनाने के लिये योजना का प्रारुप तैयार करने के लिए इस कार्य का भार महाराजा पृथु को सौंप दिया था, परन्तु महाराज पृथु राजा होने के कारण स्थापत्य की रचना कैसे करते? वे पितामाह के पास पहुँचे। उधर से माँ पृथ्वी भी ब्रह्मा जी के पास जा पहुँची। दोनों की बातें सुनकर ब्रह्मा जी ने विश्वकर्मा को बुलाया और संसार का निर्माण कार्य विश्वकर्मा जी को सौंप दिया गया। विश्वकर्मा ने देवपुरियों का निर्माण किया था। संसार के निर्माण के लिए ही उन्होने वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। उन्होनें कहा - "वास्तुविद को सामुद्रिक, गणित, ज्योतिष और छन्द का ज्ञान अवश्य होना चाहिये।" विश्वकर्मा देवताओं के वास्तुविद थे, जो बाद में पृथ्वीवासियों के लिये प्रथम वास्तु प्रवर्तक बने।

भारतीय वास्तुविद्या का जन्म वैदिक काल में ही हुआ था, परन्तु इसका रुप वेदान्तों के समय में ही प्रकाश में आ पाया। पुराणों में इसका विकास हुआ है। बाद के समय में वास्तुविदों ने इसे एक अलग शास्त्र का रुप दिया। वैदिक काल से १३वीं शताब्दी तक भारतीय वास्तुशास्त्र की अच्छी पहचान रही, परन्तु बाद के समय में शास्त्र भटकता चला गया।

प्राचीन मनुष्य अपनी आस-पास की वस्तुओं, वातावरण तथा पृथ्वी के साथ सम्बन्ध के प्रति सजग तथा जागरूक था। प्राचीन मानव ने आदि काल से ही प्रकृति का सूक्ष्म अध्ययन करके उसके रहस्यों को उसी के अनुसार प्रयोग कर अपनी उन्नति के लिये प्रयोग किया है। यह प्रक्रिया आज के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आधुनिक युग तक धार्मिक रुप में विद्यमान है। धार्मिक सम्बद्धता प्रक्रति के क्रिया कलापों का वर्णन है। इतिहास ने सिद्ध किया है कि जब-जब मानव ने प्रकृति के नियमों के अनुसार भवन निर्माण एवं उसकी आन्तरिक-साज सज्जा की है तब-तब उसमें निवास करने वालों की उन्नति हो सकी है। मन्दिरों पिरामिड तथा ग्रीक मन्दिरों की सुन्दरता उनकी आधार शिलायें है, जो प्राकृतिक नियमों पर आधारित हैं यदि आज भी उन सिद्धान्तों के आधार पर वास्तु का निर्माण किया जाये तो प्रकृति निश्चित रुप से सुख-सम्पन्नता प्रदान करेगी।

वास्तु पंच तत्वों का एक साथ संयुक्त करने का कार्य करता है। यह व्यक्ति को चतुर्दिक पर्यावरण से सम्बन्धित कर प्रकृति के प्रति संवेदित करता है। व्यक्ति अपने पर्यावरण को सन्तुलित कर अपने मष्तिष्क, शरीर एवं आत्मा में शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। वह व्यक्ति व्यक्तिगत उन्नति चक्र का निर्माण कर सकता है। वास्तु ऊर्जा चक्रों में आवश्यक परिवर्तन करने में सहायक सिद्ध होता है।

हमारे देश की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि हमने स्थापत्य में भी निराकार ब्रह्म को साकार रुप में प्रतिष्ठित किया है अर्थात वास्तुपुरुष को स्थापत्य से भौतिक विज्ञान में परिवर्तित क़र दिया है तथा भारतीय संस्कृति में दर्शन को समाहित कर लिया है। यह जितनी भी सृष्टि है वह एक प्रकार से वास्तु ही है। भारतीय स्थापत्यवेद के अनुसार वास्तु विनियोजना पूरे विश्व को लेकर बनायी गयी है। सौर मण्डल के विभिन्न ग्रह एक दूसरे को प्रभावित

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

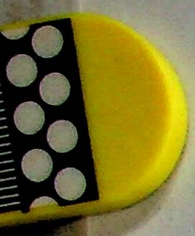

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करते रहते हैं। समरांगण सूत्रधार के अनुसार "वास्तुशास्त्र में भूमिचयन अथवा भूमि-संगृह, भूमि-परीक्षा आदि प्रसंगों का जो वर्णन किया गया है उनमें नगरोचित, पुरोचित तथा ग्रामोचित उन प्रदेशों का वर्णन है जिनमें जल की अधिकता है तथा कृषि, शाक, पुष्प, फलादि के प्रचुर साधन हैं।" भवन निर्माण की पहली प्रक्रिया पुरनिवेश है जिसमें भू-भाग का चयन आवश्यक माना गया है।

विश्वकर्मा पुराण में वास्तुदेव की गाथा :

आज वास्तुशास्त्र विषय अधिक लोकप्रिय है एवं प्रायः प्रत्येक व्यक्ति अपने मकान की रचना वास्तुशास्त्र के अनुसार कराने के लिये इच्छुक है एवं वास्तु विषय पर लोग जानकारी करने के लिये उत्सुक रहते हैं। वास्तु कौन है? इनकी उत्पत्ति कैसे हुई? और भगवान विश्वकर्मा ने वास्तु को कौन-कौन से कार्य सौंपे? इसके समाधान का विस्तृत विवरण 'विश्वकर्मा पुराण' में मिलता है। 'विश्वकर्मा पुराण' के 'वंशोत्पत्ति वर्णन एवं वास्तु प्रतिष्ठा' अध्याय में वास्तु की उत्पत्ति एवं वास्तुदेव को क्या-क्या कार्य सौंपे गये इन बातों का बड़ा ही रोचक वर्णन मिलता है। संक्षेप में कथासार इस प्रकार है -

दानवों को पाताल लोक कभी भी अच्छा नहीं लगता था। उन्हें स्वर्ग की सुख-सुविधा प्राप्त करने की इच्छा हमेशा रहती थी। इसीलिए स्वर्ग का सुख पाने के लिये वे बार-बार देवताओं के साथ युद्ध करते रहे। स्वर्ग पाने के लिये दानवों ने जब देवताओं से युद्ध आरम्भ किया तो दानव बुरी तरह परास्त हो गये, परन्तु दानवों के पुरोहित शुक्राचार्य जी 'मृत संजीवनी' विद्या

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वास्तु पुरुष

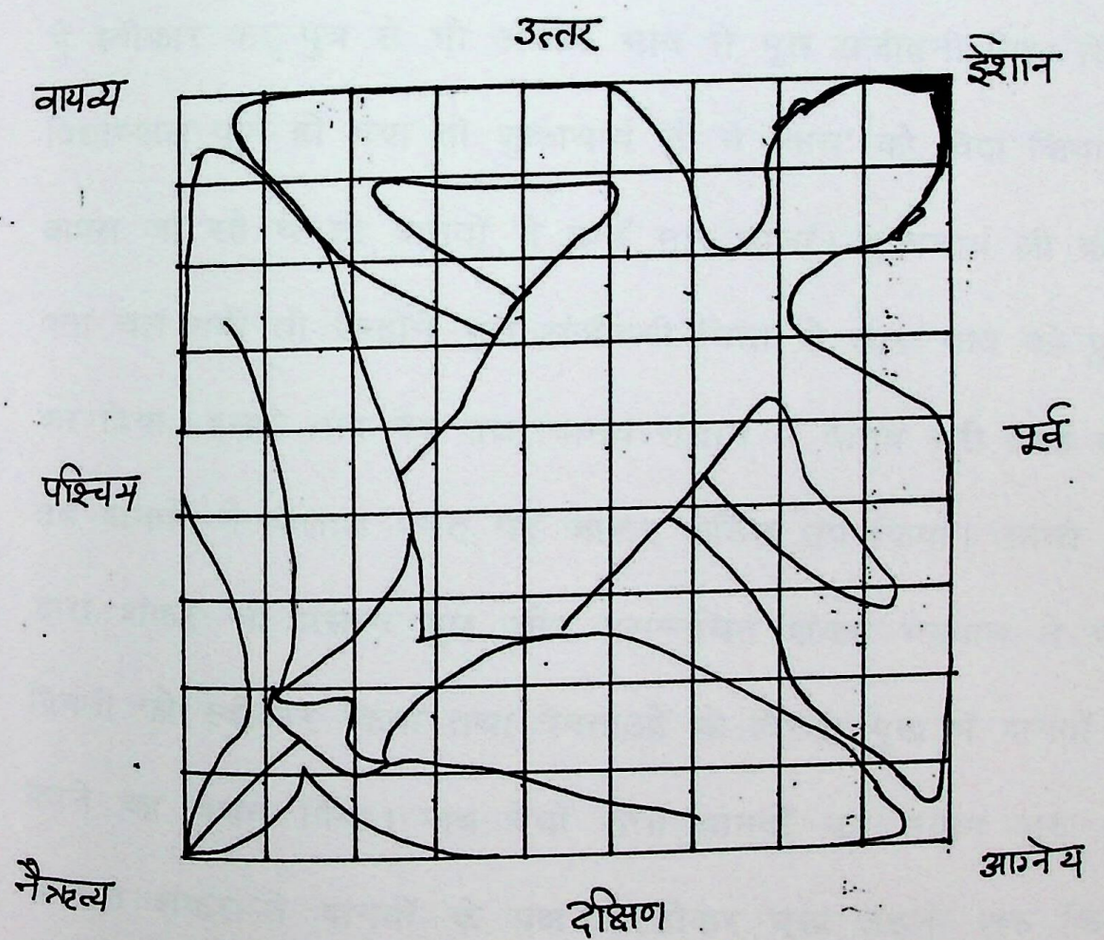

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

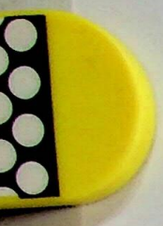

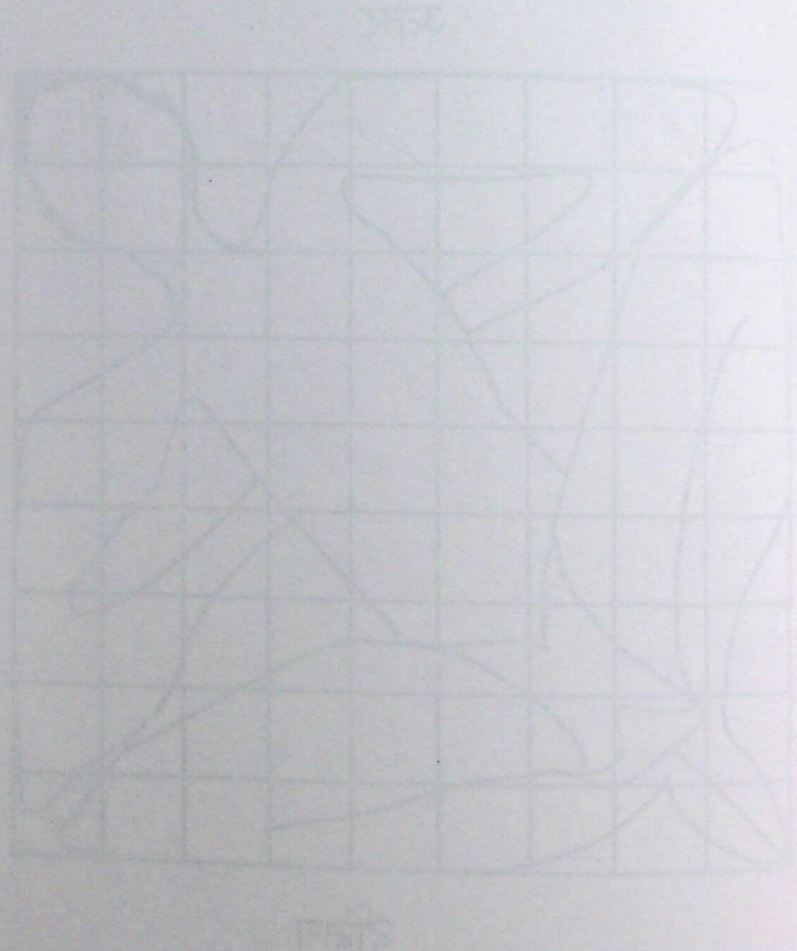

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से दानवों को जीवित कर देते थे। इससे देवताओं के बल में दिन पर दिन कमी आने लगी। सभी देवता आखिर में देवताओं के गुरु बृहस्पति जी के पास पहुँचे और अपनी व्यथा सुनाई।

गुरु बृहस्पति जी ने अपने पुत्र 'कच' को शुक्राचार्य जी के पास "मृत संजीवनी' विद्या सीखने के लिये भेजा शुक्रचार्य जी ने कच को शिष्य के रुप में स्वीकार कर पुत्र से भी अधिक भाव से मृत संजीवनी विद्या सिखाई। जब विद्याभ्यास पूर्ण हो गया तो शुक्राचार्य जी ने 'कच' को विदा किया। जब कच वापस जा रहे थे तो दानवों ने उन्हें मार डाला। शुक्राचार्य जी को यह बात पता चल गयी तो उन्होनें मृत संजीवनी विद्या के द्वारा कच को पुनः जीवित कर दिया। इसके बाद देव तथा दानव संग्राम में दानव बुरी तरह हारने लगे। तब दानवों ने कैलाश पर्वत पर जाकर कठिन तप किया। उनकी तपस्या के द्वारा शंकर जी प्रसन्न हुए और प्रसन्नचित शंकर भगवान ने दानवों की विनती को स्वीकार किया तथा देवताओं के विरुद्ध युद्ध में दानवों की मदद करने का वचन दिया। जब देवों तथा दानवों का संग्राम शुरु हुआ तब भगवान शंकर ने दानवों के पक्ष में होकर युद्ध लड़ना शुरु किया इससे देवताओं की बुरी तरह पराजय होनें लगी। सभी देवता घवराकर भगवान विश्वकर्मा के पास पहुँचे तथा सारा वृतान्त सुनाकर भगवान विश्वकर्मा से सहायता माँगी। तब विश्वकर्मा जी ने अपनी सेवा में रह रहे 'अंधक' की ओर देखा और कहा – 'हे अन्धक, मैं तुझे अत्यन्त पुष्ट और बज्र के समान बनाता हूँ और आज्ञा देता हूँ कि तू देवताओं का सहायक बन। अंधक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भगवान विश्वकर्मा की आज्ञा पालन करने के लिये उस जगह पर पहुँचा जहाँ पर देवों और दानवों का युद्ध छिड़ा हुआ था। अंधक ने दानवों को मारना प्रारम्भ कर दिया तभी दानवों में भगदड़ मच गयी। अंधक दानवों का मारते हुए भगवान शंकर के सामने आ गये जिससे अंधक एवं भगवान शंकर के बीच युद्ध प्रारम्भ हो गया।

कठोर युद्ध के कारण भगवान शंकर एवं अंधक पसीने से लथपथ हो गये तब उन दोनों के शरीर से पसीने की बूँदें टपकने लगीं और पृथ्वी पर एक जगह एकत्रित हो गयीं। उन पसीने की बूँदों से एक पुरुष उत्पन्न हुआ। पुरुष के शरीर एवं बल को देखकर सभी घबरा गये जिसे देखकर शंकर जी और अंधक के बीच चल रहा युद्ध भी बन्द हो गया। तब भगवान विश्वकर्मा ने पुरुष की उत्पत्ति का कारण बताया और उसे 'वास्तु' नाम से सम्बोधित करके 'वास्तु' को अपना पुत्र बनाया। भगवान विश्वकर्मा जब वास्तु को लेकर जाने लगे तो समस्त देवताओं ने भगवान विश्वकर्मा से प्रार्थना करते हुए कहा कि आज आपने हमें भयमुक्त करके हमारी रक्षा की है। कृपया आप हमें अति उत्तम और दृढ़ निवास स्थान बनाकर दें जिससे हमें किसी प्रकार का भय न रहे।

भगवान विश्वकर्मा ने मुख्य तीन देवताओं के निवास की रचना की। सर्वप्रथम भगवान शंकर के निवास स्थान 'कैलाश' का निर्माण किया, उसके बाद भगवान विष्णु के निवास 'बैकुण्ठ' की रचना की, फिर ब्रह्मा जी के निवास 'ब्रह्म लोक' का निर्माण किया। अन्त में विश्वकर्मा जी ने भगवान

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनन्त के निवास स्थान की रचना की। इसके बाद भगवान विश्वकर्मा ने पृथ्वी की आठ दिशाओं में रहने वाले इन्द्र, अग्नि, यम, निऋति, वरुण, वायु, कुबेर और ईशान दिशा के अधिपतियों के आवास बनाये, किन्तु ये आवास क्षण भर में तहस-नहस हो गये। इसके बाद ये आवास पुनः बनाये गये पर फिर से ये आवास नष्ट हो गये। विश्वकर्मा ने इस बात का पता लगाने के लिए कि ये आवास क्यों नष्ट हुए? वास्तु को नियुक्त किया। वास्तु ने भगवान विश्वकर्मा की आराधना की तथा मन्त्र प्रभाव से भिन्न-भिन्न आठ स्वरुप धारण करके जिस भूमि में आठ दिकपालों के निवास की रचना करनी थी उस भूमि में प्रवेश किया। लम्बा मार्ग तय करने के बाद उन्होंने भव्य निवास देखा।

इस भव्य निवास के द्वार को तोड़कर अन्दर प्रवेश किया तो उसमें उन्होनें एक कुरुप पुरुष को सोते हुए पाया। जब वह पुरुष जगाने पर भी नहीं जागा तो वास्तु ने उस पुरुष की छाती पर जोर से घूंसा मारा। घूंसे के प्रहार से निन्द्रा भंग होने के कारण उसने वास्तु के साथ युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया, लेकिन वास्तु की शाक्ति के सामने शीध्र ही उस पुरुष ने हार मान ली। ऐसा ही आठों स्थानों पर हुआ। वास्तु ने उन आठों राक्षसों को बन्दी बनाया और भगवान विश्वकर्मा के पास लेकर आये। ये आठों राक्षस भगवान विश्वकर्मा के चरणों पर गिर पड़े। देखते ही देखते ये आठों राक्षस देवताओं के समान हो गये। ये आठों राक्षस गन्धर्व थे जो बृह्मा जी के शाप के कारण राक्षस योनी में थे। तब भगवान विश्वकर्मा ने देवताओं के आवासों की पुनः

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रचना की। उसके बाद भगवान विश्वकर्मा ने सभी देवताओं से कहा - हे देवताओं, किसी नव निर्मित भवन या जीर्णोद्धार भवन में सर्वप्रथम वास्तु की पूजा होनी चाहिए। नव निर्मित भवन में वास्तु का निवास कराना चाहिए। ऐसा करने से अष्ट महाशल्य सहित पृथ्वी के दोष नष्ट होगें। नवनिर्माण में होने वाले छोटे-बड़े दोषों के निवारण के लिये जो व्यक्ति ढ़ंग से वास्तु पूजन करायेगा तो वहाँ देवता निवास करेंगे। जिस घर में वास्तु पूजन नही किया जायेगा वे लोग अमंगल से नित्य भयभीत रहेगें, जिस घर में वास्तु पूजन होगा वहाँ अनेक प्रकार के सुख देने वाले मांगलिक प्रसंग या उत्सव होगें। उस घर में लक्ष्मी का वास होगा तथा घर धन-धान्य से भरा होगा। विश्वकर्मा ने कहा वास्तुपूजन करा लेने से मनुष्य कष्टों से दूर रहकर सुख-समृद्धि को प्राप्त करेगा।

वास्तुशास्त्र का वैज्ञानिक रुप :

वास्तुशास्त्र कला ही नहीं, एक विज्ञान है क्योंकि इसके नियम प्रकृति के नियमों पर आधारित हैं। उदाहरण के लिये-जिस भवन में वायु स्वच्छंद विचरण न करे या जहाँ सूर्य की किरणें प्रवेश ही न कर पाती हों ऐसे भवन में रहने वाले लोग सदा तरह-तरह के रोगों के शिकार बने रहते हैं। वास्तुशास्त्र के व्यावहारिक सिद्धान्तों से हम केवल पैसा ही नहीं, अपितु सुख, शान्ति व समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं। इसकी मदद से कठिन से कठिन कार्यों को आसानी से किया जा सकता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आज के वैज्ञानिक युग में कई लोग इसे एक अन्ध विश्वास व ढोंग मानते हैं लेकिन वास्तुशास्त्र के सही जानकार से विचार-विमर्श कर, घर में मामूली सा परिवर्तन करके या वस्तुओं का स्थान बदलकर कोई भी इसके फायदे को अनुभव कर सकता है। अर्थात् यह एक विज्ञान है जो हमें कार्य अर्थात कर्म करने की तरफ प्रेरित करता है।

पृथ्वी में विभिन्न ऊर्जा का संयोजन है। इनमें स्थानीय भौगोलिक गुण उपलब्ध हैं। इन स्थानीय संयोजनों में पृथ्वी का चुम्बकीय गुण अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। यह चुम्बकीय क्षेत्र अंतरिक्षीय ऊर्जा को विभिन्न केन्द्रों पर निर्देशित करता है। सौरमण्डल (सूर्य, चन्द्रमा आदि) एवं विभिन्न ग्रहों से प्रसारित ऊर्जा पृथ्वी पर अपना प्रभाव डालती है। पृथ्वी विकिरण इस पर्यावरण में होता रहता है जो पृथ्वी के अन्दर के जल प्रवाह के ऊपर उत्पन्न होता है। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि यहा ब्रह्मांडीय ऊर्जा का द्वितीय स्तरीय विकर्षण है, जो पृथ्वी के अन्दर के जल प्रवाह से टकराकर उत्पन्न होता है। जबकि अन्य का मानना है कि यह पृथ्वी के अन्दर सुमुच्च के रूप में उत्पन्न होता है और अन्दरूनी जलधाराओं द्वारा ऊपर की ओर ढकेल दिया जाता है। पृथ्वी से निकलने वाले इस विकर्षण का मानव शरीर पर हानिप्रद प्रभाव पड़ता है।

बहुत कम लोग विद्युत चुम्बकीय विकर्षण के बारे में जानते हैं चूँकि इसे जानने का कोई सीधा-साधा तरीका नहीं है। हम यह तो जानते हैं कि हमारा शरीर इस विकर्षण के प्रति काफी संवेदनशील है चूँकि हमारे शरीर के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अधिकतर अंग (दिमाग, नर्वस सिस्टम, शारीरिक क्रियाएँ) विद्युत संप्रेषण से चालित हैं। मानव शरीर एक कंडक्टर है जो चुम्बकीय क्षेत्र विशेष से प्रभावित हो जाता है। मानव शरीर में पृथ्वी से कुछ अधिक ही बोल्टेज होता है और जहाँ भी इस स्तर में बढ़त होती है मानव शरीर प्रभावित होने लगता है।

वास्तु द्वारा मानव ऊर्जा धुरी का ऊर्जा भण्डार की दिशाओं सें सम्बन्ध स्थापित किया गया है। यह शरीर की धुरी, ऊर्जा भण्डार, जैसे सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा आदि ग्रहों की ऊर्जा की स्थिति के अनुसार अपने को ढालने एवं उनसे ऊर्जा ग्रहण करने व छोड़ने का कार्य करती है। वर्तमान में वैज्ञानिक तरीके बताते हैं कि मानव शरीर के चारों ओर धनात्मक ऊर्जा का घेरा है। इस ऊर्जा की शक्ति उसके प्रभाव आदि को विभिन्न वैज्ञानिक यन्त्रों से मापा जा सकता है। 'लेकर एंटीना' उन यन्त्रों में से एक महत्वपूर्ण यन्त्र है। इस यन्त्र का अविष्कार वास्तुशात्रियों के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण साबित हुआ है, यह भूमि चयन एवं निर्मित पर्यावरण की परख में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन करता है।

प्रकृति द्वारा पर्यावरण एवं मानव के मध्य सन्तुलन स्थापित किया गया है। समय के साथ मनुष्य, विज्ञान तथा तकनीकी के सहारे इस सन्तुलन के साथ खिलवाड़ करता रहा है, जिसके कारण पर्यावरण भी असन्तुलित हो गया है। इसके परिणामस्वरुप मानव जीवन में विभिन्न प्रकार की परेशानियाँ उत्पन्न हो गयी हैं इस असन्तुलन के कारण विभिन्न प्रकार की बीमारियों, दुःखों, जीवन का पिछड़ापन तथा असामयिक मृत्यु का जन्म हुआ है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वास्तुशास्त्र का आधार 'दिशा ज्ञान' :

वास्तुशास्त्र को समझने के लिए सर्वप्रथम दिशा ज्ञान होना परम आवश्यक है। प्रायः लोग प्रातः काल सूर्योदय को देखकर पूर्व दिशा का निर्धारण कर लेते हैं जिसके आधार पर पश्चिम दिशा भी निर्धारित हो जाती है। इसी तरह उत्तर व दक्षिण दिशा का निर्धारण कर लिया जाता है जबकि यह तरीका गलत है। सूर्योदय का स्थान और समय उसके उत्तरायण और दक्षिणायन में होनें के कारण कुछ परिवर्तन होता है। इसके लिये सबसे अच्छा व आसान साधन है 'दिशा सूचक यन्त्र' (मेग्नेटिक कम्पास)। इसकी सहायता से हम सही दिशा का ज्ञान किसी भी समय कर सकते हैं। इसमें एक चुम्बकीय सुई होती है जिसके एक तरफ लाल या अन्य किसी रंग का निशान बना होता है जो उत्तर दिशा की ओर संकेत करती है। आप चाहे इस यन्त्र को किसी भी तरह रखें, सुई का निशान वाला हिस्सा उत्तर दिशा की तरफ ही जायेगा। इस यन्त्र के आधार पर चारों दिशाओं के बारे में पता लगाया जा सकता है। पूर्व, पश्चिम, उत्तर व दक्षिण - ये चारों मुख्य दिशाएँ हैं परन्तु वास्तुशास्त्र में प्रमुख आठ दिशायें बतायीं गयीं हैं ये हैं -

i. उत्तर पूर्व (ईशान)।
ii. पूर्व।
iii. दक्षिण-पूर्व (आग्नेय)।
iv. दक्षिण।
v. दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य)।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

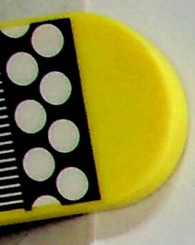

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वास्तुशास्त्र में दिशा ज्ञान

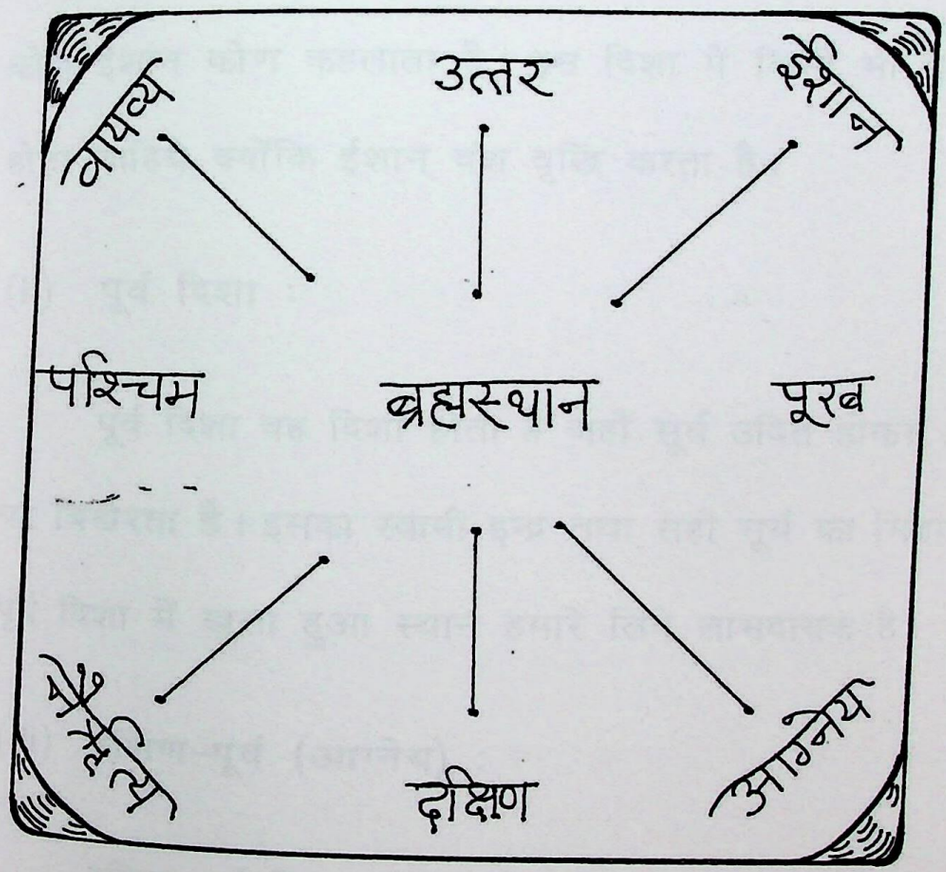

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

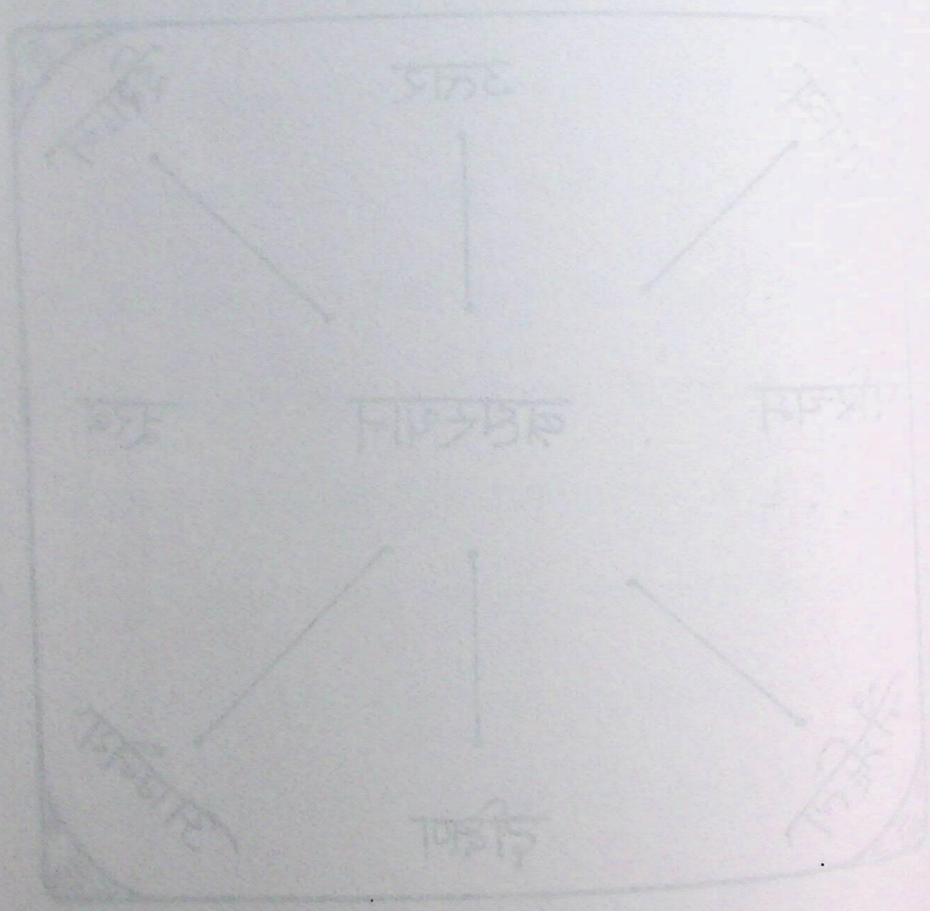

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

vi. पश्चिम।

vii. उत्तर-पश्चिम (वायव्य)।

viii. उत्तर।

(i) उत्तर पूर्व (ईशान) :

यह दिशा सबसे सुन्दर व ईश्वर के स्थान की दिशा है। उत्तर-पूर्व का कोण ईशान कोण कहलाता है। इस दिशा में किसी भी प्रकार का दोष नहीं होना चाहिये क्योंकि ईशान वंश वृद्धि करता है।

(ii) पूर्व दिशा :

पूर्व दिशा वह दिशा होती है जहाँ सूर्य उदित होकर अपनी ऊर्जा धरती पर बिखेरता है। इसका स्वामी इन्द्र तथा सही सूर्य का निवास स्थान है। अतः पूर्व दिशा में खुला हुआ स्थान हमारे लिये लाभदायक है।

(iii) दक्षिण-पूर्व (आग्नेय) :

दक्षिण पूर्व दिशा को आग्नेय दिशा कहा जाता है। इस दिशा में अग्नि के सभी संसाधन रखने चाहिये। यह मानव जीवन की स्वास्थ्य दाता है।

(iv) दक्षिण :

यह दिशा धन-धान्य, समृद्धि एवं प्रसन्नता की दिशा मानी गयी है। इस दिशा का स्वामी 'यम' अर्थात यमराज हैं, जो मृत्यु के देवता हैं। यह मुक्ति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कारक दिशा है। इस दिशा की तरफ किसी भी प्रकार का गढ्ढा नहीं होना चाहियें। इस दिशा में अधिक से अधिक निर्माण करके भारी रखना चाहिये।

(v) दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य) :

दक्षिण-पश्चिम की दिशा को (नैऋत्य) कहा जाता है, इसका स्वामी नैऋत्य (राक्षस) है। इसका प्रभाव सबसे ज्यादा गृह स्वामी पर पड़ता है।

(vi) पश्चिम :

यह दिशा सफलता, कीर्ति व ऐश्वर्य देने वाली है। इस दिशा में सूर्य अस्त होता है। इस दिशा का स्वामी वरुण है जो सुख-समृद्धि एवं शान्तिदायक है।

(vii) उत्तर-पश्चिम (वायव्य) :

उत्तरी तथा पश्चिमी दिशा वायव्य दिशा कहलाती है। इस दिशा में वायु तत्व विद्यमान होता है, जिससे जीवन का संचार होता है। अतः इस दिशा को भी पूरी तरह बन्द नही करना चाहिये।

(viii) उत्तर :

इस दिशा का स्वामी कुबेर है। अंतः उत्तर में खाली स्थान न छोड़ने पर घर में पैतृक पक्ष की हानि हो सकती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वैसे तो वास्तुशास्त्र का क्षेत्र बहुत व्यापक है परन्तु यहाँ पर वास्तुशास्त्र का अति संक्षिप्त रुप प्रस्तुत किया गया है। इसके अन्तर्गत वास्तुशास्त्र का तात्पर्य, वास्तु का उद्‌भव एवं रूप, वास्तु का इतिहास, विश्वकर्मा पुराण में वास्तुवेद की गाथा का वर्णन किया गया है। इसी के साथ यह भी स्पष्ट किया गया है कि वास्तुशास्त्र एक कला ही नहीं बल्कि एक विज्ञान है। वास्तुशास्त्र प्रकृति के नियमों पर आधारित है। वास्तुशास्त्र के अनुसार निर्माण किया गया भवन चाहे वह मन्दिर हो, किला हो, व्यापारिक प्रतिष्ठान हो या निवास करने वाला भवन, वह प्राचीन समय से लेकर आधुनिक समय तक अपनी सुन्दरता को बरकरार रखने में सक्षम रहा है तथा उसमें रहने अथवा काम करने वालों को सुख-शान्ति देने में सफल रहा है। वास्तुशास्त्र के संक्षिप्त परिचय के अन्तर्गत प्रमुख दिशाओं तथा उनके प्रभावों का भी वर्णन किया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय - चार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड जिले की ऐतिहासिक इमारतों का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड जिले की ऐतिहासिक इमारतों का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन

भिण्ड जिले के अधिकांश भू-भाग में मुगलों तथा हिन्दू राजाओं का शासन रहा है। इस पूरे जिले पर मुगलों, राजपूतों तथा मराठों ने अपनी छाप छोड़ी है। यहाँ के भवनों में प्राचीनता के साथ-साथ नवीनता के भी दर्शन होते हैं। प्राचीन भवनों में प्राचीन किले, गढ़ियाँ, मन्दिर तथा कुछ आवासीय भवन भी हैं। प्राचीन भवन निर्माण कला में हिन्दू मुस्लिम शिल्पकला के दर्शन होते हैं। प्राचीन भवनों को देखने से ज्ञात होता है कि इनके निर्माण के समय सुरक्षा का ही विशेष ध्यान दिया गया है। इनका निर्माण ककइया ईंट और लाल पत्थर से किया गया है, यह पत्थर राजस्थान से मंगाया गया है। भिण्ड के किले और अटेर के किले में लाल पत्थर की जालीनुमा तराशी गयी डिजाइन मुगल शिल्पकला की उत्कृष्ट पहचान है।

यहाँ के प्राचीन भवनों को देखने से स्पष्ट होता है कि इनके निर्माण में भारतीय वास्तुशास्त्र का भी ध्यान रखा गया है। इससे सिद्ध होता है कि उस समय वास्तुशास्त्रियों का विशेष सम्मान था और भवन निर्माण उनके मार्ग निर्देशन में हुआ करते थे। कहीं-कहीं पर इसका अपवाद भी मिलता है जैसे-भिण्ड का किला। भिण्ड के किले का प्रवेश द्वार पश्चिम की ओर है, जो उस समय की सामरिक दृष्टि से तो उचित है, लेकिन वास्तुशास्त्र की दृष्टि से उचित नहीं है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्राचीन भवनों में कुओं का निर्माण कहीं-कहीं पर उचित स्थान पर मिलता है तथा अधिकांश प्राचीन वृक्ष भी भवनों और मन्दिरों के पास वास्तुशास्त्रीय निर्देशानुसार ही लगे मिलते हैं।

वैदिक वास्तुशास्त्र ही स्थापत्य वेद कहलाता है। इसका वर्णन हमें मत्स्य पुराण, वृहद् संहिता, उपनिषद आदि अनेक ग्रन्थों में मिलता है। सर मोनियर विलियम्स वास्तु के विषय में लिखते हैं -

"वास्तु का अर्थ है घर, घर की स्थापना, मकान, स्थल या रहने का स्थान।"[1] अतः हम कह सकते हैं कि वास्तुशास्त्र हमें वह ज्ञान देता है जिसके माध्यम से हम यह जान सकते हैं कि किस तरह से इस प्रकार के घर का निर्माण किया जाय जिससे उस घर में रहने वाले सभी सदस्य सुखी एवं समृद्ध हों।

ऐसा माना जाता है कि सूर्य और पृथ्वी के कारण ही वास्तुशास्त्र का उदय हुआ है। सूर्य और पृथ्वी समस्त पृथ्वीवासियों के लिये समान फल देते हैं। वास्तुशास्त्र के नियम भी सूर्य और पृथ्वी तत्वों पर आधारित हैं।

---

१. वास्तुशास्त्र : पवन अग्रवाल व दीपक अग्रवाल : १९९९ : शिवा प्रकाशन ४२३, खजूरी बाजार, इन्दौर (म०प्र०) पृष्ठ - ६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मानव जीवन में रहने के लिये घर, जीने के लिये चिकित्सा, मनोरंजन के लिये संगीत तथा व्यावसाय, व्यवहार, शासन तथा समाज संगठन के लिये अलग-अलग वेद कल्पित हुए थे। उस समय ऋगवेद का आयुर्वेद, यजुर्वेद का धनुर्वेद, सामवेद का गन्धर्ववेद तथा अथर्ववेद का स्थापत्यवेद एवं अथर्वेद - ये पाँच उपवेद भी माने गये थे। वेदों पर लोगों को आज भी उतनी ही श्रृद्धा व विश्वास है जितना पहले हुआ करता था।

संसार में प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी धर्म व जाति का हों वह श्रेष्ठ घर की कामना करता है। प्राचीन पुस्तक 'भविष्योत्तर पुराण' निवास हेतु स्वयं के भवन की आवश्यकता पर जोर डालती है -

परगेहे कृता सर्वाः श्रोतस्मार्त क्रिया शुभाः ।
निष्फला स्युर्यतस्तासां भूमीशः फलमश्नुते ।।

अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति के पास निवास हेतु स्वयं का मकान होना चाहिये। किसी दूसरे के या किराये के मकान में किये गये धार्मिक उत्सव व कर्म इच्छित फल नहीं देते हैं। इसी प्रकार -

सुख धनानि बुद्धिश्च सन्तति सर्वदानृणाम् ।
प्रियान्येषां च संसिद्धः सर्वस्यात् शुभ लक्षणम् ।।
यात्राानिन्दत लक्ष्यत्र तर्हितेषां विधातकृत ।
अथ सर्वमुपादेयं यद्भवेत् शुभ लक्षणम् ।।

- समरांगण सूत्रधार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वास्तुशास्त्र पर आधारित भवन में निवास मनुष्य के लिये उसी प्रकार सर्वसुख, समृद्धि, सद्बुद्धि एवं सन्तति प्रदायक होता है जिस प्रकार शुभलक्षण सम्पन्न यात्रा-मुहूर्त सफलता एवं सिद्धदायक होती है। भवन के शुभ व अशुभ फलों का ज्ञान हमें वास्तुशास्त्र देता है कि जिस घर में व्यक्ति रह रहा है उस घर का उस घर के प्रत्येक सदस्यों पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ रहा है।

जिस प्रकार से घरों पर तथा उसमें निवास करने वाले व्यक्तियों पर वास्तुशास्त्र के शुभ व अशुभ तत्वों का सीधा प्रभाव पड़ता है ठीक उसी प्रकार से धार्मिक स्थल, मठ आदि पर वास्तुशास्त्रीय लक्षणों का सीधा प्रभाव पड़ता है। वैसे तो सम्पूर्ण धरती हमारे लिये पूज्य है। मानव जाति के लिबे यह प्रकृति का अमूल्य उपहार है। जब भी हम कोई मन्दिर बनाते हैं तो वह भूमि और वास्तुरचना हमारा केवल उपासना स्थल नहीं होता, वह समग्र ब्रह्माण्ड का प्रतिरुप और परात्पर ब्रह्म का स्वरूप हो जाता है। वह स्थल जहाँ मन्दिर स्थित होता है वह साधना का स्थल हो जाता है, जहाँ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की दैवी शक्तियाँ अपने सूक्ष्म प्रतिरूप में विद्यमान रहती हैं। वास्तु परात्पर ब्रह्म के सूक्ष्म रूप वास्तुपुरुष की विद्यमानता का प्रमाण स्तम्भ होता है।

वास्तुशास्त्र किसी धर्म विशेष से सम्बन्ध नहीं रखता। धार्मिक केन्द्र किसी भी धर्म से सम्बन्धित हों चाहे वह हिन्दू धर्म से सम्बन्धित कोई मन्दिर या जैन धर्म से सम्बन्धित जैन मन्दिर हो या मुस्लिम धर्म की मस्जिद या फिर सिक्ख धर्म से सम्बन्धित गुरुद्वारा हो। वास्तुशास्त्र का प्रभाव सभी पर समान रूप से पड़ता है। यदि धार्मिक स्थल वास्तुशास्त्र के अनुरूप निर्मित हैं तो वह

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लोगों के दिलों में प्रमुख श्रद्धा का केन्द्र बन जायेगा तथा वह लोगों को शान्ति देने वाला तथा श्रद्धालुओं की इच्छा पूर्ति करने वाला होगा। इसी के साथ-साथ प्राचीन काल से लेकर लम्बे समय तक वह वैसा ही दिखेगा जैसा बनने के तुरन्त बाद दिखता था। इसका प्रमाण उज्जैन का महाकाल मन्दिर, बद्रीनाथ मन्दिर, तिरुपति नाथ का मन्दिर, नाथद्वारा मन्दिर आज भी अपनी बुलन्दियों पर हैं। ये मन्दिर वास्तुशास्त्र के नियमों के अनुसार बने होने के कारण आज भी उतनी ही प्रसिद्धि पा रहे हैं। जो मन्दिर वास्तुशास्त्र के अनुरूप नहीं बनाये गये वे जीर्ण-शीर्ण हो चुके हैं।

उसी प्रकार किले तथा गढ़ियाँ वास्तुशास्त्र के अनुरुप बनी होगीं वे उसी तरह से भव्य तथा सुन्दर दिखती रहेंगीं जिस तरह वे निर्माण के समय भव्य बनी होंगी तथा इसमें निवास करने वाले राजा को भी शक्ति प्रदायक होंगी। इसके विपरीत यदि यह वास्तुशास्त्र के अनुरूप नहीं होगा तो इसका परिणाम ठीक विपरीत हो जायेगा। राजा का जीवन भी कष्टदायक होने के साथ-साथ गढ़ी या किला भी शीघ्र ही टूट-फूट जायेगा।

मैंने वास्तुशास्त्र के अधिकांश तथ्यों को ध्यान में रखते हुए भिण्ड जिले के किले, गढ़ी, छत्री, मठ, मन्दिर, जैन मन्दिर आदि को शोध की दृष्टि से अध्ययन का प्रमुख विषय बनाया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिला - भिण्ड

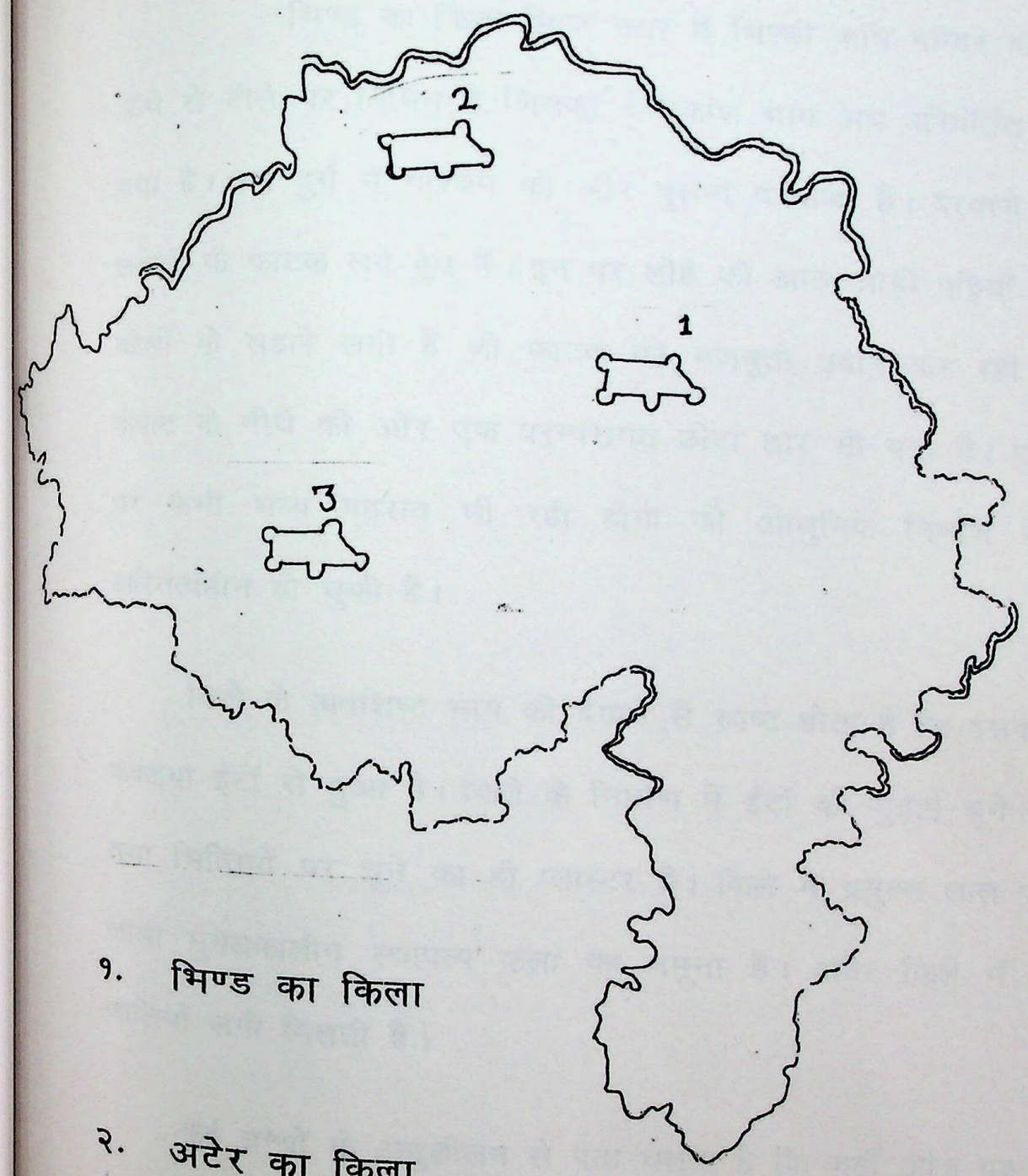

१. भिण्ड का किला

२. अटेर का किला

३. गोहद का किला

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४:१:१ भिण्ड का किला

भिण्ड का किला भिण्ड नगर में भिण्डी ऋषि मन्दिर के पास एक ऊँचे से टीले पर निर्मित है जिसका अधिकांश भाग अब परिवर्तित कर दिया गया है। इस दुर्ग में पश्चिम की ओर बुलन्द दरवाजा है। दरवाजे पर मोटी लकड़ी के फाटक लगे हुए हैं। इन पर लोहे की आठ आड़ी पट्टियाँ बड़ी-बड़ी कीलों के सहारे लगी हैं जो फाटक को मजबूती प्रदान कर रहीं हैं। बायें कपाट के नीचे की ओर एक परम्परागत छोटा द्वार भी बना है। बुलन्द द्वार पर कभी भव्य महराव भी रही होगी जो आधुनिक निर्माण के कारण अस्तित्वंहीन हो चुकी है।

किले के अवशिष्ट भाग को देखने से स्पष्ट होता है कि इसका निर्माण ककइया ईंटों से हुआ है। किले के निर्माण में ईंटों की जुड़ाई चूने से हुई है तथा भित्तियों पर चूने का ही प्लास्टर है। किले में प्रयुक्त लाल पत्थर की जाली मुगलकालीन स्थापत्य कला का नमूना है। अटेर किले में ऐसी ही जालियाँ लगी मिलती हैं।

कई ग्रन्थों के अनुशीलन से पता चलता है कि जहाँ आज यह किला है वहां पूर्व में एक मिट्टी का टीला बनाया गया था फिर इस पर किले का निर्माण किया गया।

"इस दुर्ग का निर्माण सम्भवतः राजपूत युग में हुआ दिखाई देता है। कहा जाता है कि प्रसिद्ध चौहान शासक पृथ्वीराज महोबा के चन्देल सेनापति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मलखान वनाफर का पीछा करते हुए भिण्ड आया था। उसका लक्ष्य सिरसागढ़ था, जो मलखान की राजधानी थी। पृथ्वीराज ने यहाँ अपना सैनिक पड़ाव डाला और अपने इष्टदेव शिव (वनखण्डेश्वर) की स्थापना की। डा० श्रीमती आदर्श मिश्रा अपने शोधग्रन्थ के आधार पर उपरोक्त तथ्य की पुष्टि करतीं हैं। सैनिक पड़ाव डालने के पीछे एक कारण यह दिखाई देता है कि 'गोरी सरोवर' एक लघु जल स्रोत के रूप में अवस्थित था। दूसरा कारण यह सामरिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण था। अतः पृथ्वीराज ने गौरी की मिट्टी खुदवाकर एक कृतिम टीले का निर्माण कर उस पर सैनिक चौकी बनवायी थी। यह किले का आरम्भिक रूप था।"[1]

कई वर्षों तक यह चौकी उसी रूप में बनी रही। भदौरिया राजाओं ने अपने शासन काल में गौरी सरोवर को पुनः बृहद रूप प्रदान करना शुरू कर दिया। गौरी सरोवर से निकलने वाली मिट्टी को इसी टीले पर डलवाया गया तथा उसके ऊपर सुन्दर किले का निर्माण किया गया।

"डा० एम०डी० मिश्रा का विचार है कि इसका निर्माण भदौरिया शासनकाल में उनके प्रमुख नरेश महासिंह के द्वारा हुआ। इस मत का आधार

---

१. त्रैमासिक योग ज्योति : डा० श्याम सनेही लाल शर्मा : योगीराज श्री कृष्णदेव ऋषीश्वर सिद्ध ध्यान योग (लोक न्यास) संस्थान ११०, हाउसिंग कालोनी, भिण्ड (म०प्र०) वर्ष - १, अंक - ४ : मार्च-मई १९९९ : भिण्ड जिले की धरोहर, भिण्ड का ऐतिहासिक दुर्ग : डा० नरेन्द्र कटारे : पृष्ठ - ५३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

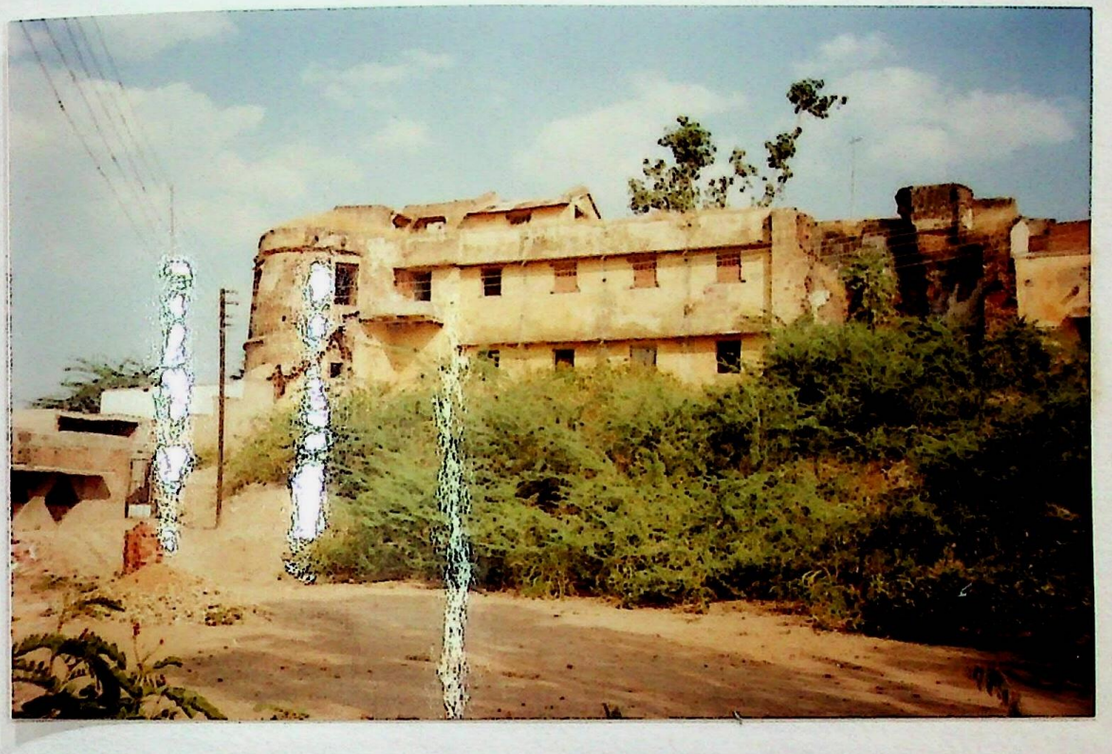

भिण्ड का किला

किले का टूटा-फूटा हिस्सा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह हो सकता है कि अटेर दुर्ग का निर्माण भी महाराज बदनसिंह और उनके उत्तराधिकारी महासिंह ने कराया था। किन्तु कुछ प्रमाणों के परिप्रेक्ष्य में यह सम्भावना अधिक दिखाई देती है कि भिण्ड जिले के निर्माता प्रसिद्ध भवनों के शौकीन महाराजा पालसिंह थे। प्रथमतः वास्तुकला की दृष्टि से भिण्ड की गढ़ी, अटेर दुर्ग के बाद की अर्थात् महासिंह के बाद की बनी दिखाई देती है। दूसरे बख्तसिंह को अपने प्रबल शत्रु गोहद के भाटों की गतिविधियों पर समीप से दृष्टि रखने के लिये इसके निर्माण की आवश्यकता थी।"[1]

अतः स्पष्ट होता है कि इस किले का निर्माण महाराजा बदनसिंह के सुपुत्र महाराजा महासिंह ने कराया। इनका शासनकाल १६५४ ई० से १६८४ ई० था। इसके खण्डहर भिण्ड में यत्र-तत्र विद्यमान हैं जो सभी ककइया ईंट से निर्मित हैं। इस किले के निर्माण में मुगल-हिन्दू शिल्पकला के साथ-साथ भदावर कालीन वास्तुकला के दर्शन होते हैं।

किले की उत्तरी दिशा में गोपाल कृष्ण का मन्दिर है, जिसमें स्थापित मूर्तियाँ सफेद संगमरमर की हैं वैसे तो मन्दिर का द्वार पूर्व की ओर है लेकिन मन्दिर में दर्शनार्थ दक्षिण की ओर से ही जाना पड़ता है। मार्ग के बीच में पूर्वमुखी काली माँ की स्थापना है। किले के वायव्य में भिण्डी ऋषि मन्दिर है।

---

१. त्रैमासिक योग ज्योति : डा० श्याम सनेही लाल शर्मा : योगीराज श्री कृष्णदेव ऋषीश्वर सिद्ध ध्यान योग (लोक न्यास) संस्थान ११०, हाउसिंग कालोनी, भिण्ड (म०प्र०) वर्ष - १, अंक : ४ : मार्च-मई १९९९ : भिण्ड जिले की धरोहर, भिण्ड का ऐतिहासिक दुर्ग : डा० नरेन्द्र कटारे : पृष्ठ - ५३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड के किले का अधिकांश भाग जीर्णशीर्ण अवस्था में है, कुछ मरम्मत कार्य भी कराया गया है। इसमें कई शासकीय ऑफिस हैं तथा एक शासकीय कन्या महाविद्यालय भी चल रहा है। शासकीय कन्या महाविद्यालय भी कोई विशेष उन्नति नहीं कर पाया है तथा इसके कुछ शासकीय कार्यालय नये कलेक्ट्रेट में चले गये हैं।

इस किले का निर्माण अटेर के किले के बाद का है फिर भी यह किला अटेर के किले के पहले ही टूट-फूट रहा है जबकि भिण्ड के किले में मरम्मत का काम भी करा दिया जाता है। भिण्ड किले का मुख्य द्वार पश्चिम की ओर है तथा किले में जाने के लिये रास्ता दक्षिण से आता है जिससे न तो यह किला ही सफल रहा और न ही इसमें लगने वाले कार्यालयों के सहकर्मियों में भाईचारा और सामन्जस्य रहा। इन कार्यालयों में आये दिन लड़ाई-झगड़े व मारपीट के उदाहरण मिलते रहते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४:१:२ अटेर का किला

भिण्ड जिला मुख्यालय से तीस किलोमीटर की दूरी पर बायव्य दिशा में अटेर नगर में अटेर का किला स्थित है। किले के उत्तर में कुछ दूरी पर चम्बल नदी निर्वाध गति से प्रवाहित है। वास्तुशास्त्र की दृष्टि से यह नदी किले के लिये शुभ है।

इस दुर्ग का निर्माण राजा बदनसिंह ने १६४४-४५ ई० में कराया था। इसे देवगिरि दुर्ग के नाम से भी जाना जाता है इसका आकार जलपोत जैसा है। किले की लम्बाई १७०० फुट और चौड़ाई लगभग ३२५ फुट है। यह किला भदावर कालीन ककईया ईंट तथा लाल पत्थर का बना है। इसमें कहीं-कहीं पर सफेद पत्थर का भी प्रयोग किया गया है। जो उस काल में धौलपुर की खदानों से लाया गया था। यह पत्थर सम्भवतः नदी यातायात द्वारा लाया गया होगा क्योंकि उस समय यह क्षेत्र परिवहन की सुविधाओं से वंचित था।

चम्बल की परिखा से आवेष्टित इस प्राचीन दुर्ग में सात बुलन्द द्वार थे, जिनमें से अब मात्र चार के ही अवशेष देखे जा सकते हैं। दुर्ग की दुहरी चहार दीवारी से परिक्रमा पथ से इसमें अन्दर प्रवेश करना होता था। द्वार इतने ऊँचे हैं कि राजा का हाथी पर सवार होकर भी इनमें से बड़ी सरलता से आना-जाना हो सकता है। इन विशाल द्वारों पर लकड़ी के स्लीपरों के कीलों से जड़े बहुत सुदृढ़ फाटक लगे थे, जिन पर बाहर की ओर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

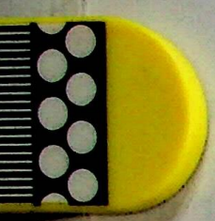

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

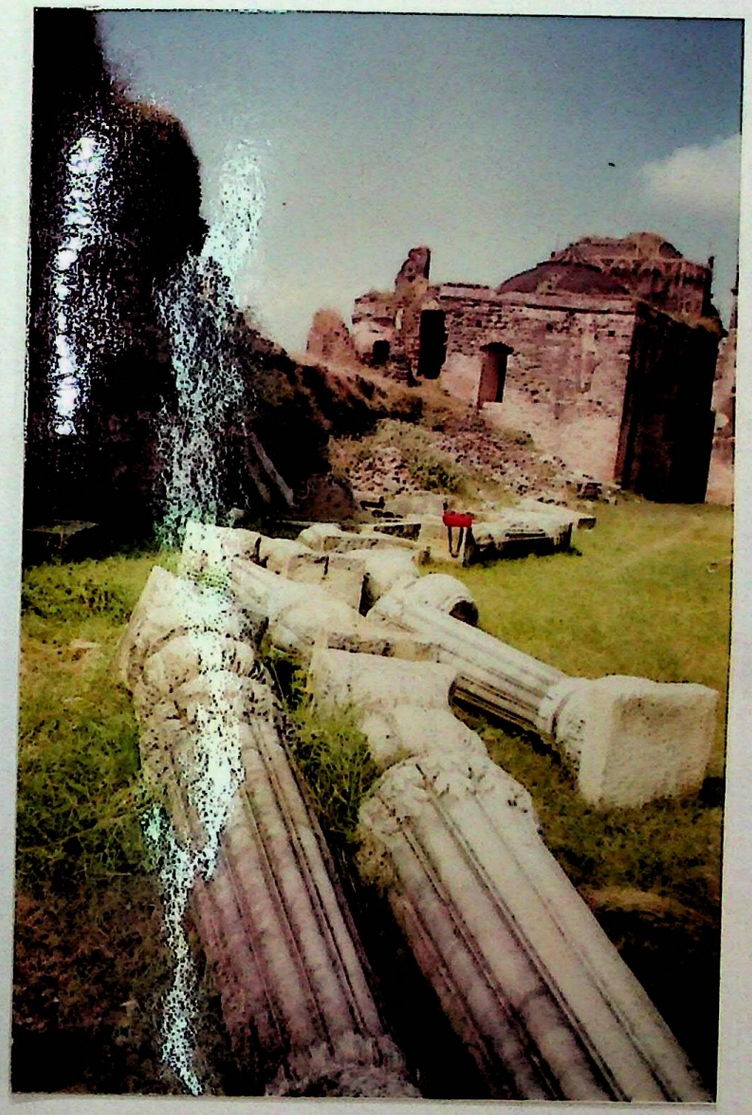

अटेर के किले में यत्र-तत्र बिखरे खम्भे

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाले सी नुकीली निकली हुई कीलें थीं, जो गजमस्तक को भी विदीर्ण करने वालीं थीं। इन द्वारों को प्रवेश के समय ही खोला जाता था। द्वार बन्द हो जाने पर किले में प्रवेश असम्भव था। इसी कारण राणो जी सिंधिया ने इस पर आक्रमण करते समय दुर्ग की पूर्वी प्राचीर को तोपों से ध्वस्त कर दिया था।

इस सम्पूर्ण किले के निर्माण में हिन्दू-मुगल शिल्पकला का मिश्रित प्रयोग किया गया है। प्रवेश द्वार पर अस्पष्ट हाथियों के चित्रण से इसे हिन्दू शिल्पकला का एक रूप समझा जा सकता है।

बुलन्द दरवाजों से प्रवेश करने के बाद राजा की कचहरी में पहुँचते हैं, इसके टूटे-फूटे हिस्से, उसके आस-पास बिखरे स्तम्भ, राजगद्दी की छतरी, चारों ओर मन्त्रियों, राजदरवारियों, सभासदों और क्षेत्र की प्रजा के बैठने का स्थान आज भी उस समय की भव्यता को दर्शाता है। राजगद्दी के स्थान को देखने से स्पष्ट होता है कि दरबार के समय सिंहासन पर बैठने पर राजा का मुख पश्चिम दिशा को रहता था जो वास्तुशास्त्र की दृष्टि से शुभ फलदायी नहीं था।

राजगद्दी के सामने ही मीनार का रुप लिये हुए सतखण्डा बना है। यह सात मन्जिल की मीनार एक प्रकार का वॉचिंग टावर है, जो दूर से आने वाले दुश्मनों पर निगरानी रखने के लिये बनवाया गया था। इसके सातवें खण्ड से चम्बल की धारा व प्राकृतिक दृष्य स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सातवें खण्ड में पत्थर पर तराशी हुई जालियाँ (जो मुगल शिल्पकला का

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

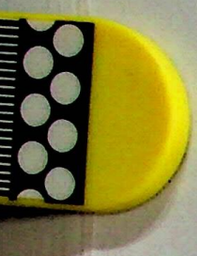

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

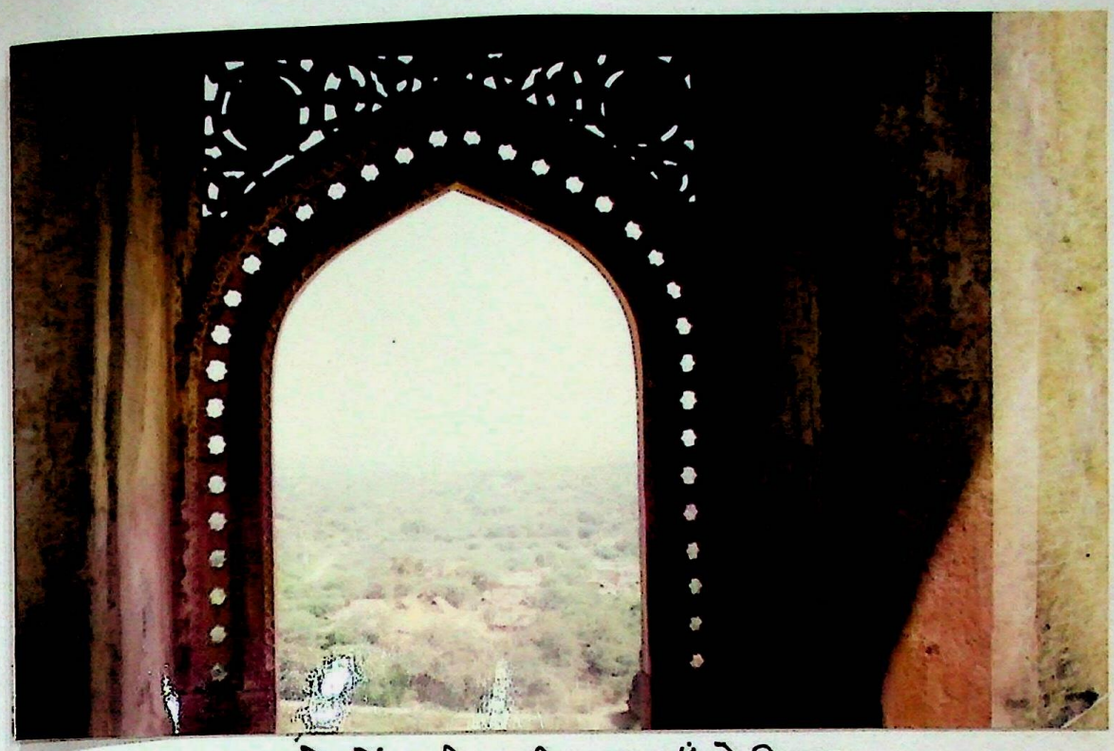

सतखण्डे में लगी जाली तथा यहाँ से दिखता बाहर का दृश्य

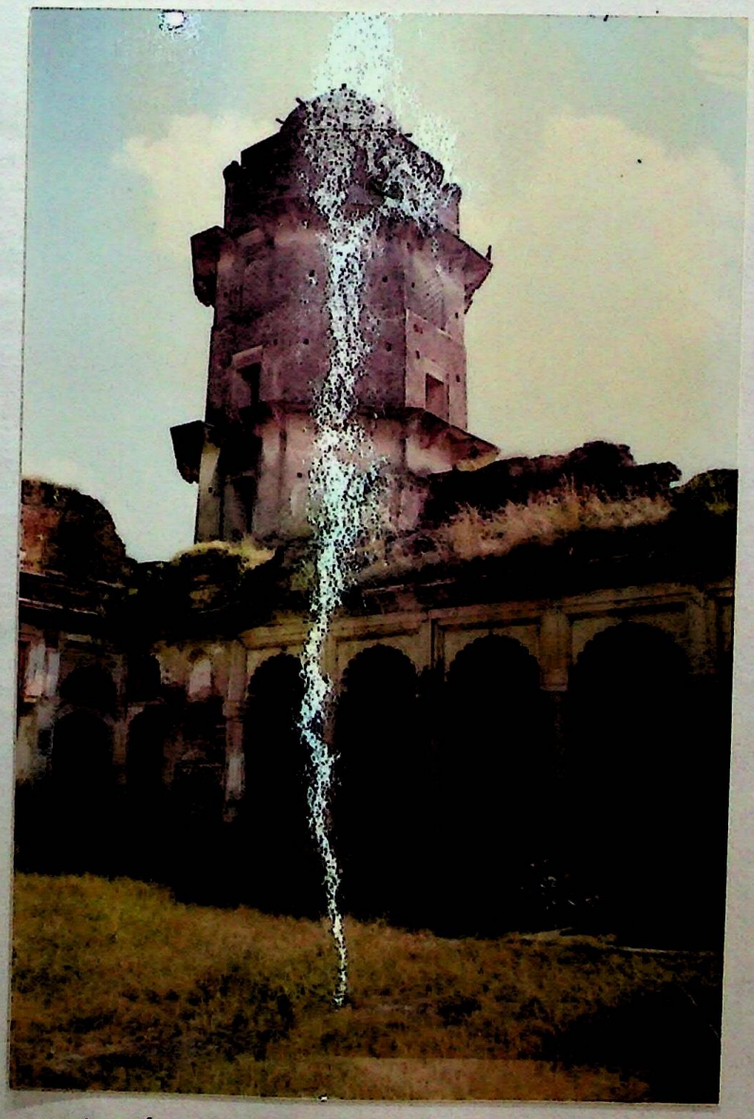

अटेर के किले में निर्मित सतखण्डा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwàvidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्कृष्ट नमूना है) लगी हैं। यहाँ पर बड़े-बडे आले बने हैं जिससे यहीं पर बैठकर दुश्मनों पर हमला किया जा सके। सतखण्डे की प्रत्येक मन्जिल पर जाने के लिये सीढ़ियों की संख्या तेरह है जो विषम है परन्तु सीढ़ियों का घुमाव विपरीत दिशा में होने के कारण अशुभ फलदायी है।

इसी के पास राजा का महल तथा रानी का महल बना है, जिसका निर्माण यहाँ लगे शिलालेख के अनुसार बखतसिंह ने १७६५ में तथा अपनी रानी सिसोदिन के लिए रानी महल सन् १७७६ में कराया। ये दोनों महल आज भी अपने अतीत की कहानी कह रहे हैं। राजा का महल तथा रानी के महल के बीच में सतखण्डे से सटा हुआ राम जानकी का मन्दिर है जो पूर्व दिशा की ओर है। यहाँ की मूर्तियाँ लोग चुरा ले गये हैं।

जलापूर्ति के लिये किले के अन्दर अनेक कुएं तथा बावड़ी हैं। जनश्रुति के अनुसार किले के अन्दर फब्बारों से झरता शीतल पानी तथा ऊपरी मन्जिल पर लुढ़कते गोलों से उत्पन्न शब्द मेघ मन्दिर का आभास देते थे। ग्रीष्म ऋतु में सावन-भादों के बरसाती मौसम की तरह मेघ गर्जन आभास उस समय के भदावर राजाओं की शान और शौकत का एक नमूना था।

किले के स्तम्भों पर की गयी विशिष्ट प्रकार की नक्काशी हिन्दू शिल्पकला के उत्कृष्ट नमूने हैं। राजा और रानी के महलों में लगी सफेद और लाल पत्थर की जालियाँ तथा दीवारों पर चूने का प्लास्टर आज भी अपनी भव्यता को दर्शा रहा है। यह चूना इसी किले के अन्दर पत्थर को विशेष प्रकार की चक्की से पीसकर तैयार किया जाता था। इस चक्की के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अवशेष इस दुर्ग के अन्दर आज भी मौजूद हैं। देवगिरि दुर्ग के ही अन्दर तोपें तथा बारूद भी तैयार की जाती थी।

किले के दक्षिण में भदावर नरेश ने चामुण्डा देवी के मन्दिर का निर्माण कराया है, जिसमें आज भी माता की कला जग रही है। वास्तुशास्त्र की दृष्टि से किले के लिये यह मन्दिर उचित स्थान पर नहीं है इसे उत्तर या पूर्व में होना चाहिये था।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि किले में अनेक वास्तुशास्त्रीय दोष हैं, जिसके कारण यहाँ के राजाओं तथा इनकी प्रजा को अनेकों कष्ट सहने पड़े तथा किले पर हमेशा आक्रमण का भय बना रहा, जिसमें राणोजी सिंधिया का आक्रमण प्रमुख था।

किले के वास्तुशास्त्रीय शुभ लक्षणों में चम्बल नदी प्रमुख है। किले के कुछ वास्तुशास्त्रीय शुभ लक्षण होने के कारण राणोजी सिंधिया के आक्रमण के समय भदावर नरेश की जान बच सकी और वे किले के गुप्त रास्ते से होते हुए नौ गाँव की गढ़ी में सुरक्षित पहुँच गये।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४:१:३ गोहद का किला

भिण्ड जिला मुख्यालय से चालीस किलोमीटर की दूरी पर गोहद तहसील है। यहाँ पर दक्षिण में बेसली नदी के किनारे गोहद का किला स्थित है। यह किला भग्नावस्था में जाट राजवंश के पुरावैभव की स्मृति दिला रहा है। यह ग्वालियर-भिण्ड राजमार्ग से जुड़ा है।

गोहद में जाटों के राज्य की स्थापना सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में सिंहनदेव राणा ने की थी। इस किले का निर्माण सत्रहवीं-अठारहवीं सदी के मध्य जाट शासकों ने कराया था। यह किला चारों ओर से एक गहरी खाईं से घिरा हुआ है। यहाँ पर पुराना महल तथा नया महल अपनी स्थापत्य कला के लिये प्रसिद्ध है। किले में बाग और पानी के लिये कुआँ स्थित है। शिलालेख के अनुसार १७८२ ई० में इसका निर्माण राजा चत्तर सिंह के द्वारा कराया गया था।

"अठारहवीं सदी के प्रारम्भ में १७०३ ई० में जब गोहद का जाट शासक राणाभीमसिंह गद्दी पर बैठा तो सामरिक सुरक्षा की दृष्टि से उसने किले का परकोटा खिंचवाया तथा कई महल और गुर्जे बनवायीं, किन्तु यह कार्य अधिक न हो सका क्योंकि उसी समय भदावर राजा से सीमा विवाद हो गया। जिसके परिणाम स्वरुप पचौरा युद्ध प्रारम्भ हो गया। इस युद्ध में कूटनीतिज्ञ राणा भीमसिंह के सामने अति महत्वाकांक्षी भदावर नरेश की एक न चली। भदावर राज्य का सेनापति गद्दार निकला और राणा भीमसिंह से

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

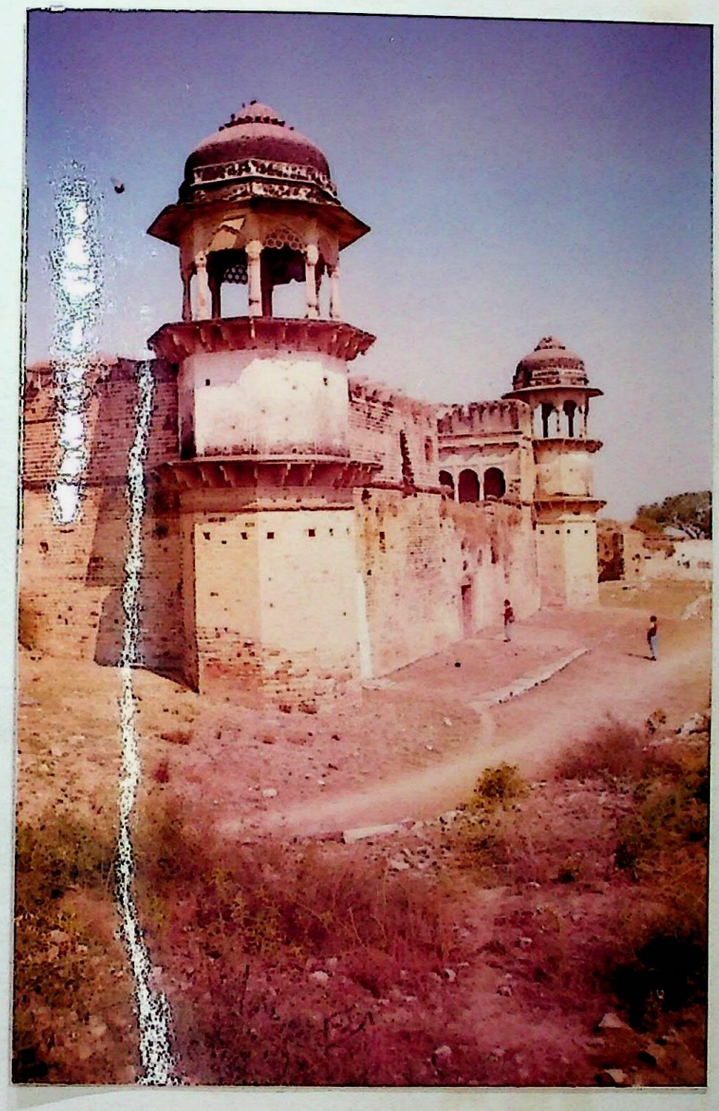

गोहद का किला

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जा मिला। इस युद्ध में भदावर नरेश बुरी तरह पराजित हुआ और गोहद का राज्य भदावर राज्य की सुदूर सीमा तक जा पहुँचा।"[1] भदावर नरेश भी हार मानने वाले नहीं थे। उन्होंने गोहद पर आक्रमण कर गोहद को पुनः अपने कब्जे में ले लिया।

यह किला मुख्य रूप से दो भागों में बना हुआ है। प्राचीन भाग राणा भीमसिंह ने बनवाया था तथा उसके बाद वाला भाग राणा चत्तर सिंह ने बनवाया। घुमावदार मार्ग से प्राचीन किले में दक्षिण की ओर से प्रवेश करते हैं। किले का अधिकांश भाग टूट गया है कुछ भाग अवशेष रूप में भी दर्शनीय है।

राजा की कचहरी में प्रवेश करते समय दरवाजों के ऊपर मयूरों की केलिक्रीड़ा की पत्थरों पर नक्काशी की गयी है। दरवाजों के दायीं तथा बायीं ओर सुन्दर कलाकृतियों की खुदाई की गयी है जो अभी पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं। यह सब उस समय के शिल्पकारों की प्रवीणता को दर्शाती है तथा तत्कालीन राणा के प्रकृति प्रेम की कहानी कहती है। आगे पहुँचनें पर राजा की कचहरी में प्रवेश करते हैं। कचहरी का अधिकांश भाग टूटा पड़ा है राज

---

१. चम्बल के आस-पास : डा० कालीचरन स्नेही : सांस्कृतिक चेतना समिति लहार (भिण्ड) मध्य प्रदेश : अगस्त १९९८ : गोहद का किला और जार राजवंश : जीवाराम सिंह 'अथक' : पृष्ठ - ३९

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

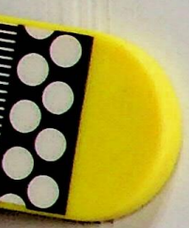

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिंहासन तथा आम जनता के बैठने के स्थान के बारे में अनुमान लगाना भी मुश्किल है। कचहरी के खम्भे तथा प्रस्तर खण्ड यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं।

कचहरी से लगा हुआ ही रंगमहल है। इसे देखने से सहज ही यह ज्ञात होता है कि उस समय के महाराजा गायन तथा नृत्यकला के शौकीन रहे होगें क्योंकि यहाँ पर नृत्य के लिये तथा गायन व वादन का आनन्द लेने के लिये तथा नृत्य दर्शन के लिये अलग-अलग स्थान बने हुए हैं।

रंगमहल के पास में रानी का स्नान कुण्ड है। स्नान कुण्ड में पानी की आपूर्ति के लिये वायव्य में कुआँ है। पानी इसी कुएँ से खींचकर लोहे के पाइपों द्वारा कुण्ड तक भेजा जाता था। ये पाइप उन दीवारों के मध्य से होकर गुजरे हैं जहाँ पर लकड़ी जलाने के लिये बड़ी-बड़ी भट्टी में आग जलाई जाती थी जिससे ये पाइप गर्म हो जाते थे। इन गर्म पाइपों से गुजरने वाला पानी भी गर्म होकर स्नान कुण्ड में पहुँचता था। रानी उसमें कूद-कूद कर जलक्रीड़ा किया करती थीं। पानी का उपयोग होने के बाद पानी पाइपों द्वारा ही बेसली नदी में निकाल दिया जाता था अर्थात कुण्ड में प्रतिदिन नया जल भरा जाता था।

स्नान कुण्ड से लगा हुआ श्रंगार महल है। श्रंगार महल में रानी के बैठने का स्थान तथा छोटे बड़े सभी तरह के शीशों के खाँचे स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। यहाँ दीवारों पर कोड़ी का प्लास्टर है। पेंटिग के कुछ नमूने आज भी दर्शनीय हैं। श्रंगार महल की छत अधिक ऊँची नहीं है। छत पर भी चित्रकारी की गयी है। श्रंगार महल से लगा हुआ जीना श्रंगार महल

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

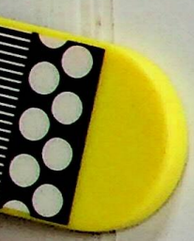

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किले की दीवारों में की गयी नक्काशी

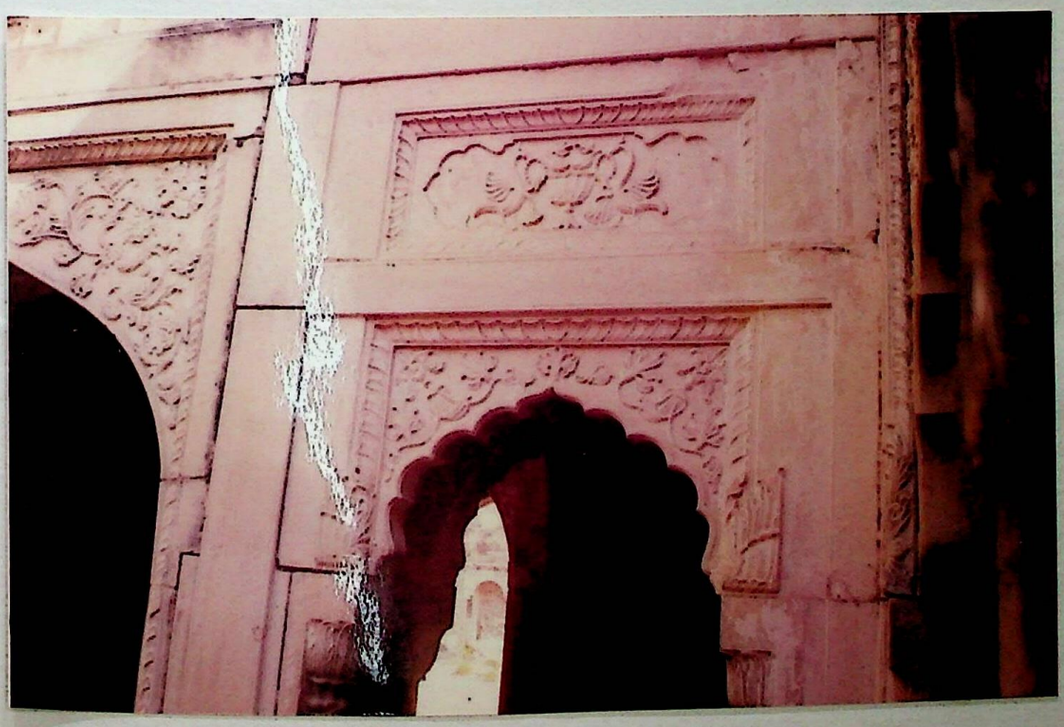

हिन्दू शिल्प कला का उत्कृष्ट नमूना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की छत से होता हुआ रंग महल की छत को जोड़ता है, यहाँ की दूसरी मंजिल से बेसली नदी तथा दूर तक का वातावरण सुरम्य तथा मनोरम दिखाई देता है।

स्नानगृह के ठीक सामने पश्चिममुखी राधाकृष्ण का मन्दिर है जिसकी मूर्तियाँ भारत सरकार द्वारा निकलवा ली गयीं हैं। भारत सरकार ने मन्दिर में तथा अन्य कई स्थानों पर खजाने की तलाश में खुदाई करायी है; इसमें जहां सम्भावना मिली वहाँ पर कई स्थानों को तोड़ा-फोड़ा गया है, परन्तु खजाने की प्राप्ति नहीं हो पायी है। मन्दिर के चारों तरफ स्तम्भ हैं तथा परिक्रमा मार्ग भी है। मन्दिर की दीवारों में छोटे-छोटे छिद्र हैं जिनसे बाहर का दृश्य दिखाई देता है।

पुराने महल से दक्षिणी दिशा में नया महल बना हुआ है जिसकी दीवारों के पत्थरों पर छोटी-छोटी खुदाई द्वारा कलाकृतियाँ बनायी गयीं हैं। यह महल रानियों के रहने के लिये बनवाया गया था। महल बहुत सुन्दर तथा भव्य बना हुआ है परन्तु इसको बनाने में वास्तुशास्त्रीय तथ्यों का ध्यान बिलकुल भी नहीं रखा गया है। वर्तमान में यहाँ कचहरी लग रही है तथा इसी के अन्दर जेल भी बना दी गयी है। इसमें एक बैंक भी खुली है।

पूरे किले का निरीक्षण करने के उपरान्त स्पष्ट होता है कि इसके निर्माण में सुरक्षा का पूरा का पूरा ध्यान रखा गया है लेकिन वास्तुशास्त्र का नहीं। प्रवेश द्वार से लेकर किले के सभी भागों में वास्तुशास्त्रीय दोष मिलते

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हैं। किले के लिये केवल बेसली नदी तथा किले में अन्दर रसोई घर को छोड़कर सभी जगह वास्तुशास्त्रीय दोषों से भरी पड़ी हैं।

यही कारण है कि इस किले का निर्माण कराने के बाद भी यहाँ का नरेश कभी भी सुखी नहीं रहा और न ही इस किले में निवास करने वाले लोगों को कभी सुख-शान्ति का अनुभव हुआ। इस किले को कई आक्रमणों की मार भी झेलनी पड़ी।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिला – भिण्ड

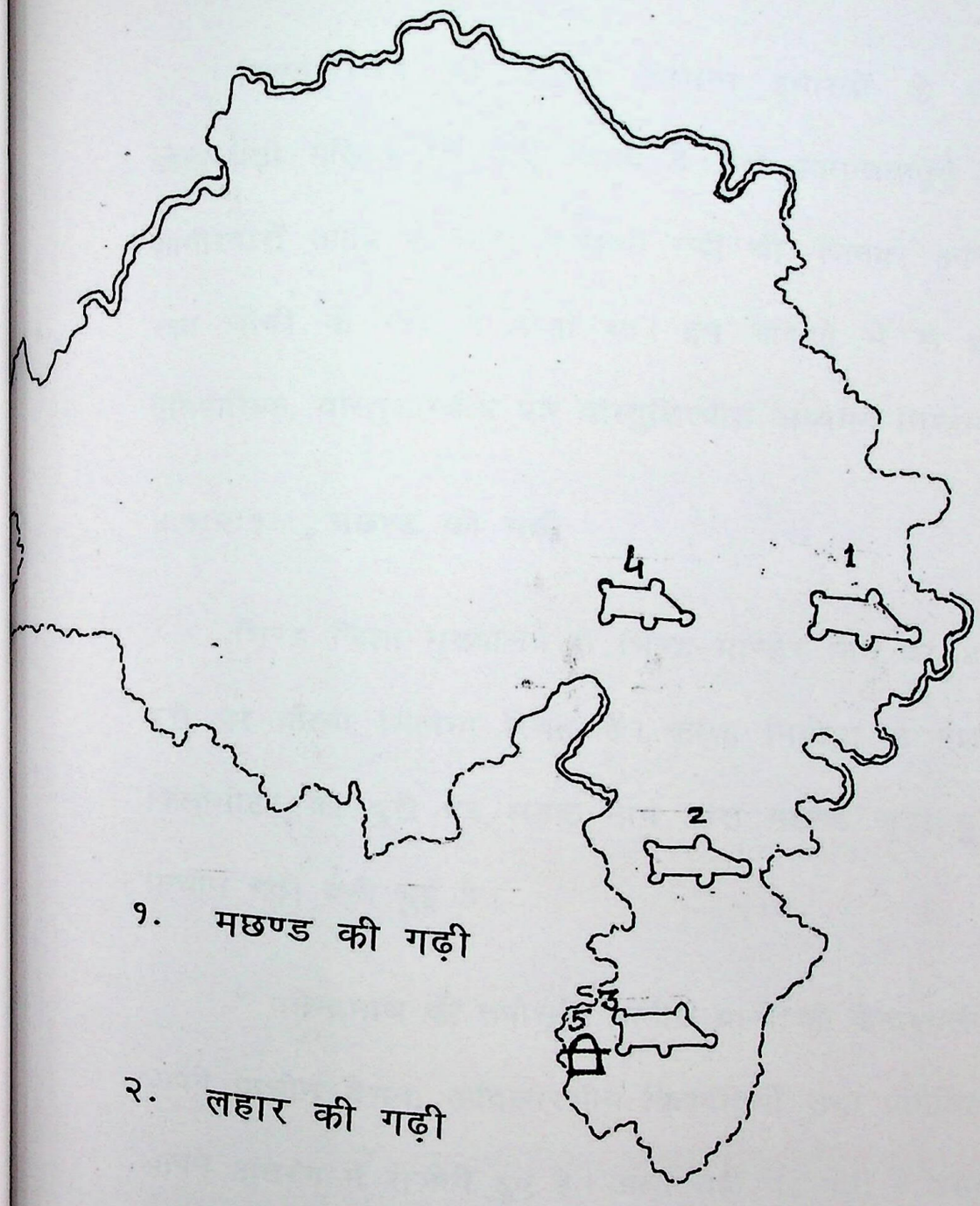

१. मछण्ड की गढ़ी

२. लहार की गढ़ी

३. आलमपुर की गढ़ी

४. इन्दुरखी की गढ़ी

५. मल्हार राव होल्कर छत्री स्मारक, आलमुपर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४:१:२ भिण्ड जिले की गढ़ियाँ

भिण्ड जिले की प्राचीन विभिन्न इमारतों के साथ कई प्राचीन छोटी-बड़ी गढ़ियाँ भी पायी जाती हैं। जो स्वतन्त्रतापूर्व विभिन्न राजाओं, जागीरदारों आदि के द्वारा बनवायी गयीं थीं, जिनका उपयोग आवास और रक्षा चौकी के रूप में होता था। इन गढ़ियों में से प्रमुख गढ़ियों का ऐतिहासिक, वास्तुशास्त्रीय एवं वास्तुशिल्पीय अध्ययन निम्नानुसार है -

४:१:२:१ मछण्ड की गढ़ी :

भिण्ड जिला मुख्यालय से भिण्ड-भाण्डेर मार्ग पर ४५ किलोमीटर की दूरी पर कस्बा मिहोना स्थित है। कस्बा मिहोना से ईशान दिशा में दस किलोमीटर की दूरी पर सड़क मार्ग द्वारा मछण्ड जुड़ा हुआ है। यहाँ एक प्राचीन गढ़ी बनी हुई है।

" मछेन्द्रनाथ की तपोभूमि बत्तीस ग्रामों की केन्द्रस्थली, मछण्ड की गढ़ी अपने प्राचीन वैभव, अविस्मरणीय किवदंतियों तथा प्रागैतिहासिक गरिमा को अपने अंतरंग में संजोये हुए है। आज जहाँ पर गढ़ी है उसके पश्चिमोत्तर में चौकरा ताल है। इसके चारों ओर ऊँची पार (चहारदीवारी) एवं पीछे गहरी खाईं थीं। इस तालाब में चारों ओर से नीचे तक जाने के लिये पन्द्रह सीढ़ियाँ तथा सबसे नीचे बावड़ी थी। चौकरा तालाब का पुर्ननिर्माण राजा गंधर्व सिंह की माँ रानी वैशनी ने करवाया था। जनश्रुति के अनुसार इसी चौकरा ताल की मोरी के पास गुरू गोरखनाथ के शिष्य मच्छेन्द्रनाथ की कुटी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एवं गुफा थी, जो समय के थपेड़ों में काल कलवित हो गई। यहीं पर मछेन्द्रनाथ ने तपस्या की थी। इन्हीं के नाम से इसका नाम मछण्ड पड़ा।"[1]

संवत १६६७ में[2] मछण्ड की गढ़ी का निर्माण तत्कालीन राजा धुरन्दर सिंह कद्दवाहे ने करवाया था। यह गढ़ी अनेकों बार युद्ध की त्रासदी झेलती रही। गढ़ी के चारों ओर बुर्ज बने हुए हैं। गढ़ी के चारों ओर मुख्य दरवाजा छोड़कर गहरी खाइयाँ खुदी हुई थी जिनमें हमेशा पानी भरा रहता था ताकि शत्रुओं से रक्षा की जा सके। उस समय ऐसा सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा होगा। आज खाईं की जगह पर लोगों ने घर बनाना शुरू कर दिया है।

गढ़ी का मुख्य दरवाजा उत्तर की ओर है तथा काफी घुमावदार रास्ते से अन्दर जाना पड़ता है। गढ़ी का द्वार चक्रब्यूह की रचना के अनुसार बना हुआ है। बाहर बहुत विशाल लकड़ी के फाटक लगे हैं जिनमें भाले जैसी नुकीली कीलें लगी हुई हैं। गढ़ी का निर्माण ककइया ईंट से हुआ है। गढ़ी की

---

१. दैनिक उदगार : भिण्ड जिला विकास विशेषांक : बाबू राम राठौर द्वारा लिखित लेख मछण्ड की गढ़ी : पृष्ठ - २४

२. फनकार काजी तनवीर अभिनन्दन : सम्पादक पं० सुरेश नीरव, डा० सुखदेव सिंह सेंगर : १५ अगस्त २००० : भिण्ड जिले की गढ़ियाँ : जीवाराम सिंह नरवरिया : पृष्ठ - ६७५

* इसका नामोल्लेख जिले के पर्यटन स्थलों में सन्दर्भ १६८२ म०प्र० प्रधान सम्पादक डा० रनवीर सक्सेना, पृष्ठ - २६५ में किया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दीवारें बहुत मोटी-मोटी हैं। इन दीवारों का निर्माण आगे-पीछे ईटों से तथा बीच में मिट्टी भरकर किया गया है ताकि तोपों के गोलों से ये दीवारें गिरे नहीं, बल्कि इन दीवारों में तोपों के गोले लगने से छेद हो जाया करते थे।

मछण्ड राज्य की सुरक्षा व्यवस्था के लिये निजी सेना का प्रबन्ध था जिसमें हाथी, घुड़सवार तथा पैदल सिपाही तैनात रहते थे। सेना में सिपाही ग्रामीण तथा क्षेत्रीय हुआ करते थे, जिनको ग्वालियर रियासत से प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षक नियुक्त रहते थे। इनके पास राज्य की परम्परागत पोशाक एवं हथियार रहते थे। हथियारों में बन्दूक, कृपाल, ढ़ाल, तलवार, बरछी, भाले, बल्लम आदि का प्रयोग किया जाता था। आक्रमण एवं सुरक्षा के लिये बड़ी-बड़ी तोपें तैयार रखी रहती थीं और इनके लिये तोप़ची हमेशा तैनात रहते थे। मछण्ड स्टेट का ताँबे का सिक्का भी चलता था जिसका प्रचलन स्टेट के अन्तर्गत गाँवों में भी था। प्रशासन अलग-अलग भागों में बँटा हुआ था, जिसमें सुरक्षा, राजस्व, अर्थव्यवस्था, राज्यव्यवस्था आदि थे।

गढ़ी के अन्दर शीश महल है जिसके अधिकांश शीशे टूट चुके हैं। गढ़ी का ढाल दक्षिण को जाता है, तथा ईशान क्षेत्र तो सबसे ऊँचा है। ईशान में एक बड़ा सा कमरा है जिसमें लगभग पचास किलो पीतल का बड़ा सा गोल घण्टा टंगा रहता था जिसमें पहरेदार उसको बजाकर हर घण्टे लोगों को समय बताते थे, यह घण्टा राजघराने में अभी भी सुरक्षित रखा है।

गढ़ी के ईशान में अस्त्र-शस्त्र रखने के लिये शस्त्रागार था जिसमें अस्त्र-शस्त्र रखे रहते थे। गढ़ी के पूर्वी दिशा में बगीचा था जिसमें कुछ पेड़

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

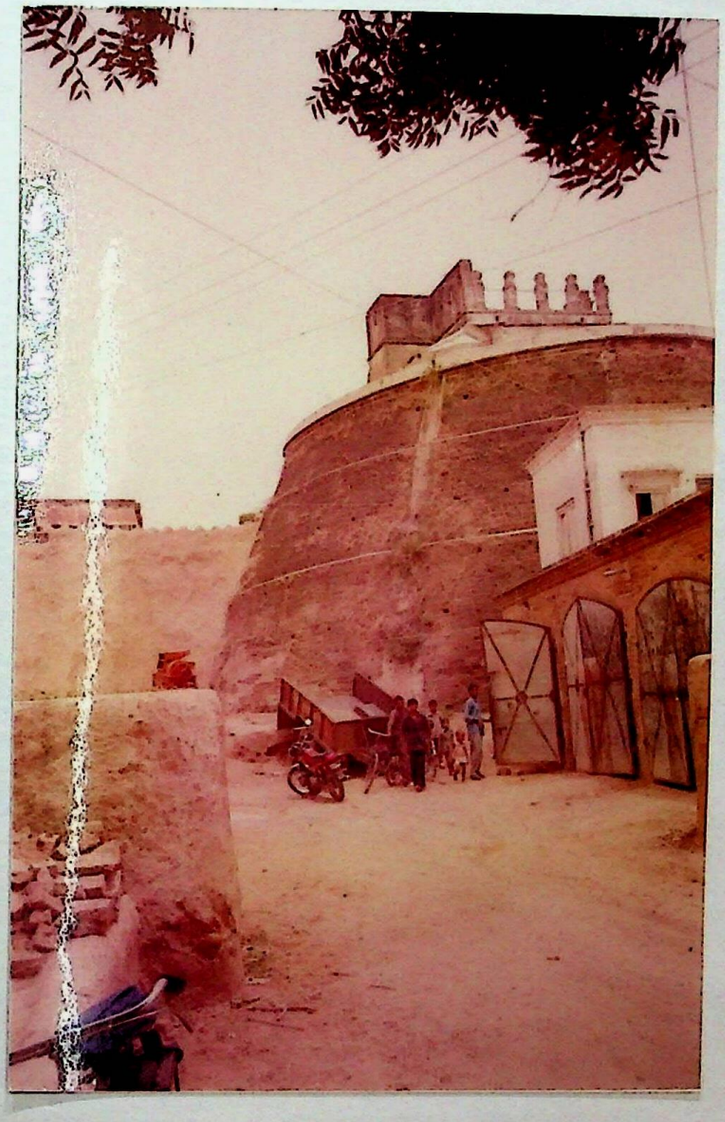

मद्दण्ड की गद्दी का कुछ भाग

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अभी भी हैं। गढ़ी के पश्चिमी दिशा में घुड़साल बना हुआ है। गढ़ी की वायव्य दिशा में रामजानकी का उत्तरमुखी मन्दिर है तथा पास में ही शिव मन्दिर है। इसी दिशा में पुराना कुआँ बना हुआ है। जिसका प्रयोग राजा साहब आज भी जलापूर्ति के लिये करते हैं। गढ़ी का काफी हिस्सा "कुँअर सुरेन्द्रसिंह" ने तुड़वाकर बनवा लिया है।

१८ वीं सदी में मछण्ड की गढ़ी में राजा चतुरसिंह मछण्ड-मिहोना के शासक थे। इनके समय में मछण्ड की गढ़ी पर मुसलमानों ने तथा इन्दुरखी के गौरों ने आक्रमण किया था तथा गढ़ी इन लोगों की रियासत बन गयी थी। राज़ा चतुरसिंह ने पुनः कई बार आक्रमण करके गढ़ी को अपने कब्जे में ले लिया था। राजा चतुर सिंह के बिक्रम एवं विजय बहादुर दो लड़के हुए जिनमें विजय बहादुर मछण्ड-मिहोना के संवत् १८७६[1] में राजा बने। संवत् १९०३[1] में विजयबहादुर के लड़के गन्धर्व सिंह गद्दी पर आसीन हुए। संवत् १९४६[1] में गन्धर्वसिंह के पुत्र नरेन्द्रसिंह राजा बने। संवत् १९७७[1] में राजा नरेन्द्रसिंह के मरने के बाद मछण्ड गढ़ी का प्रबन्ध ग्वालियर रियासत के अन्तर्गत आ गया। संवत् १९७८[1] में भूमि बन्दोबस्त हुआ तथा संवत् १९९३[1] में रघुवीर सिंह मछण्ड का विवाह कोठी स्टेट (सतना) रानी बघेलिन से हुआ। संवत् १९९४[1] में इन्हें राजगद्दी पर बिठाया गया। आप राजनैतिक क्षेत्र में

---

१. दैनिक उदगार : भिण्ड जिला विकास विशेषांक : बाबू राम राठौर द्वारा लिखित लेख : मछण्ड की गढ़ी : पृष्ठ - २४।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

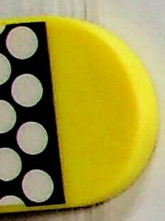

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सक्रिय होकर विधायक बने। वही आज इस गढ़ी में रह रहे हैं तथा अत्यधिक बृद्धावस्था होने के कारण अस्वस्थ रहते हैं।

गढ़ी का निर्माण सुरक्षा की दृष्टि से बड़ी ही चतुराई से किया गया है। जलापूर्ति तथा हवा के आवागमन का भी उचित ध्यान रखा गया है लेकिन फिर भी इस गढ़ी को अनेकों त्रासदियों का सामना करना पड़ा है इसमें निवास करने वाले लोगों का जीवन हमेशा कष्टों से भरा रहा है।

इस गढ़ी का वास्तुशास्त्रीय अवलोकन करने पर पाया कि गढ़ी के फर्श का ढाल दक्षिण की ओर है पूर्व तथा उत्तर का भाग बहुत ऊँचा है। पुराने समय का निर्मित कुआँ ठीक वायव्य दिशा में है जिसको पूर्व में होना चाहिये था। इसके अलावा भी इस गढ़ी में अन्य अनेकों दोष हैं। जैसे पुराने समय का ईशान दिशा में बना शस्त्रागार।

यदि गढ़ी के अन्दर वास्तुशास्त्रीय दोषों का निवारण हो जाय तो आज भी इसमें निवास करने वाले लोगों का जीवन सुखमय हो सकता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार ईशान का क्षेत्र खुला तथा अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा नीचा होना चाहिये। थोड़े से प्रयास से ही यह कार्य सम्भव हो सकता है। गढ़ी के द्वार पर गणेश जी की प्रतिमा स्थापित कर दी जाय, इससे भी गढ़ी के अन्दर मौजूद वास्तुशास्त्रीय दोषों का निवारण हो जायेगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४:१:२:२ लहार गढ़ी :

भिण्ड जिला मुख्यालय से ५५ किलोमीटर दूर भिण्ड भाण्डेर मार्ग पर लहार तहसील मुख्यालय है। "लहार नगर में पाण्डव कालीन गढ़ी के अवशेष हैं, जिसे लाक्षागृह भी कहा जाता है।"[१]

यह गढ़ी महाभारत काल के समय का वही स्थान है, जहाँ पर कौरवों ने पाण्डवों को मारने के लिये लाक्षाग्रह (लाख का घर) का निर्माण किया था। निर्दोष पाण्डव महात्मा विदुर की सूझ-बूझ एवं प्रयासों से निर्मित करायी गयी सुरंग मार्ग से बाहर निकल गये थे।[२]

लाक्षाभवन के बारे में गीता प्रेस से प्रकाशित महाभारत में यह सन्दर्भ आता है जो निम्न प्रकार से है -

"वैशम्पायन जी कहते हैं - जनमेजय! जब धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को वरणावत जाने की आज्ञा दे दी, तब दुरात्मा दुर्योधन को बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने अपने मन्त्री पुरोचन को एकान्त में बुलाया और उसका दाहिना हाथ पकड़कर कहा, भाई पुरोचन इस पृथ्वी का भोगने का जैसा मेरा अधिकार है

---

१. फनकार काजी तनवीर अभिनन्दन ग्रन्थ : सम्पादक पं० सुरेश नीरव, डा० सुखदेव सिंह सेंगर : १५ अगस्त २००० : भिण्ड जिले की गढियाँ : जीवाराम सिंह नरवरिया : पृष्ठ - ६७५

२. जनश्रुति एवं गढ़ी के अवशेष मात्र टीले पर विखरे लाख के टुकड़ों के आधार पर।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

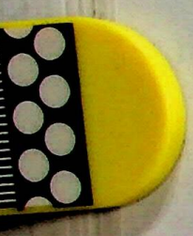

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वैसा ही तुम्हारा भी है। तुम्हारे सिवा मेरा ऐसा कोई विश्वासपात्र और सहायक नहीं है जिसके साथ मैं इतनी गुप्त सलाह कर सकूँ। मैं तुम्हें यह काम सौंपता हूँ कि मेरे शत्रुओं की जड़ उखाड़ फेंको। होशियारी से काम करना, किसी को मालूम न हो। पिता जी की आज्ञानुसार पाण्डव कुछ दिन तक वरणावत में रहेंगे। तुम पहले से ही वहाँ चले जाओ वहाँ नगर के किनारे पर सन् सर्जरस (राल) और लकड़ी आदि से ऐसा भवन बनाओ जो आग से भड़क उठे। उसकी भीतों पर घी, तेल, चर्बी और लाख लगी हुई मिट्टी का लेप कर देना। पाण्डवों को परीक्षा करने पर भी इस बात का पता न चले। उसी में कुन्ती, पाण्डव और उनके मित्रों को रखना। वहाँ दिव्य आसन, वाहन और शैय्या सजा देना फिर वे विश्वासपूर्वक निश्चिन्त होकर सो जायें तो दरवाजे पर आग लगा देना। इस प्रकार जब वे रहने के घर में ही जल जायेगें तो हमारी निन्दा भी न होगी। पुरोचन ने वैसा ही करने की प्रतिज्ञा की और एक खच्चर जुती हुई गाड़ी से वहाँ को चल दिया। वहाँ जाकर उसने दुर्योधन के कहने के अनुसार महल तैयार किया।"[1]

इतना तो सभी प्रबुद्ध वर्ग के व्यक्तियों को पता ही है कि कुरूराज्य की एक योजना के अनुसार पाण्डवों को एक समारोह में भेजा गया था तथा

---

१. संक्षिप्त महाभारत {प्रथम खण्ड} गीता प्रेस, गोरखपुर : सम्पादक तथा संशोधक जयदयाल गोयन्दका : प्रकाशक : गोविन्द भवन कार्यालय गीता प्रेस, कार्यालय गोरखपुर : पृष्ठ - ७६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दुर्योधन ने उनके रहने के लिये एक भव्य भवन भी निर्मित कराया था। लाख अति प्रज्जवलनशील पदार्थ होता है जिसमें एक बार अग्नि लग जाने पर उसे बुझाना सम्भव नहीं होता। इतना तो स्पष्ट ही है कि इस तरह का जघन्य कार्य पाण्डवों का अस्तित्व मिटाने के लिये ही किया गया था। गढ़ी के स्थान पर पाये जाने वाले लाख के छोटे-बड़े टुकड़े महाभारत कालीन लाक्षाग्रह का अवशेष सिद्ध करने के लिये पर्याप्त हैं।

पुरातत्व विभाग द्वारा अपने अध्ययन एवं परीक्षण के आधार पर लहार की गढ़ी को २५०० वर्ष प्राचीन माना गया है। इस गढ़ी पर अन्य कोई निर्माण कार्य नहीं है क्योंकि इसे अभिशप्त माना गया है।

भारत वर्ष में बिखरे हुए उस युग के सैकड़ों राज्यों की ही तरह यह क्षेत्र भी एक स्वतन्त्र प्रभुत्व सम्पन्न राज्य था। लहार के राजा कछवाहा मण्डल के सबसे बड़े राजा-महाराजा थे। कछवाहा घार की सीमा भिण्ड जिले के पूर्वी छोर से प्रारम्भ होकर लहार के अन्तिम सिरे तक तथा उत्तर प्रदेश के जालौन के बान्धवों गाँवों तक इसका विस्तार पाया जाता है। यह क्षेत्र कछवाह शासकों के अधीन होने पर उन्होंने गढ़ी पर निर्माण न करके समीप में अपना निवास स्थान बनाया है जिस का द्वार पश्चिम की ओर है। जनश्रुति है कि कछवाहों के राजघराने में कभी भी पुत्र का जन्म नहीं हुआ।

जैसा कि सभी लोगों को मालूम है कि लाक्षागृह में रात्रि के विश्राम के वक्त आग लगा दी गयी थी। थोड़ी ही देर में लाक्षगृह धूँ-धूँ करके जलने लगा था। लाख के जलने से चारों तरफ तीखी दुर्गन्ध फैल रही थी। जहाँ से

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह दुर्गन्ध आ रही थी उस स्थान को 'लहार' नाम से सम्बोधित किया गया। इस क्षेत्र के लोग आज भी दुर्गन्ध के लिए 'लहार' शब्द का प्रयोग करते हैं।

पाण्डव गढ़ी में तीन किलोमीटर लम्बी बनी सुरंग से सुरक्षित बाहर निकले तो ग्रामीण जनों से पानी मांगा। ग्रामीणों ने पाण्डवों का दूध पिलाकर स्वागत किया। चूँकि इस जगह पाण्डवों को दूध की भिक्षा दी गयी अतः इसीलिए इस गाँव का नाम "भीखपुरा" पड़ा। किंवदन्ती है पाण्डवों ने इस गाँव को सदैव दूध से परिपूर्ण रहने का आशीर्वाद दिया आज भी इस गाँव में कभी भी दूध की कमी नहीं रहती है।

सुरंग की प्रमाणिकता इस बात से होती है कि आज से लगभग आठ वर्ष पूर्व इस गढ़ी से ५०० मीटर की दूरी पर लहार के ही एक सम्भ्रान्त नागरिक "श्री रामेश्वर दयाल विलैया" के मकान की दीवार अधिक बरसात के कारण गिर गयी जब उसका मलवा साफ करवाया गया तो उसके अन्दर एक सुरंग निकली जिसकी दिशा ठीक उसी गाँव की ओर थी जिसे भीखपुरा कहते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि गढ़ी से तीन किलोमीटर की दूरी तक बनायी गयी सुरंग यही थी जिससे होकर पाण्डवों ने अपने प्राणों की रक्षा की थी।

लहार की गढ़ी का उल्लेख कई पुस्तकों में हुआ है लेकिन वर्तमान समय में कोई भी प्राचीन निर्माण शेष नहीं बचा है। जब शोधार्थिनी वहाँ पहुँची तो पाया कि पूर्वकालीन गढ़ी आज मिट्टी का एक टीला मात्र है तथा कहीं-कहीं लाख के टुकड़े भी पड़े मिलते हैं। शोधार्थिनी ने अनुमान लगाया कि यह गढ़ी अपना अस्तित्व अधिक समय तक न रख सकी। इसका तात्पर्य

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह हुआ कि गढ़ी का निर्माण केवल सुरक्षा की दृष्टि से कराया गया होगा जिसके निर्माण में वास्तुशास्त्र की सहायता नहीं ली गयी होगी।

कछवाह शासकों के वंशजों ने अपने निवास के लिये जो भवन निर्माण कराया है उसमें भी अनेकों वास्तुशास्त्रीय दोष हैं यदि वे वास्तुशास्त्रीय दोषों का निवारण करें तो उनकी सुख सम्पन्नता स्थायी रूप से बनी रहेगी।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४:१:२:३ आलमपुर की गढ़ी :

भिण्ड जिला मुख्यालय से दक्षिण में लगभग सौ किलोमीटर की दूरी पर आलमपुर स्थित है। आलमपुर एक ऐतिहासिक स्थल है। यहाँ पर एक पक्की गढ़ी बनी है।

"इसका निर्माण बेरछा सेवढ़ा के प्रभार राजा सुजान रॉय द्वारा किया गया था। इसकी निर्माण अवधि सन् १६०० से १५ ई० की ठहरती हैं। उसने अपने राज्य काल में राज्य की सीमा सुरक्षा हेतु इस गढ़ी का सैनिक महत्व समझकर निर्माण कराया।" [१] "परन्तु काजी तनवीर अभिनन्दन ग्रन्थ में जीवाराम सिंह नरवरिया द्वारा उक्त तिथि से भिन्न उल्लेख है उन्होनें आलेख भिण्ड जिले की गढ़ियाँ में लिखा है इस ऐतिहासिक गढ़ी का निर्माण श्री जसमन्त सिंह पवार 'आलमशाह' ने सन् १६१६ के लगभग करवाया था। सन् १७६६ में यह मल्हार राव होल्कर के अधिपत्य में था।" [२]

ईंट, चूने से निर्मित यह गढ़ी लगभग ७०,००० वर्ग फीट क्षेत्र में फैली है। इसकी सुरक्षा के लिये सौ फीट चौड़ी तथा दस फीट गहरी खाई बनवायी गयी थी। अब यहाँ पर बस्ती होती जा रही है। यह गढ़ी गोलाकार रूप में बनी हुई है। गढ़ी में दो प्रवेश द्वार बनाये गये थे जिनमें पूर्व की तरफ वाला द्वार टूट गया है अतः गढ़ी में प्रवेश उत्तर वाले द्वार की तरफ से ही होता है।

गढ़ी को गोल आकार देकर आठ बुर्ज बनाये गये हैं। इन बुर्जों को जोड़ती हुई चारों तरफ दीवारें हैं। इन दीवारों की मोटाई लगभग दस फीट हैं। यहाँ की दीवारों में दोनों तरफ से ईंट तथा चूने से बनी दीवारें हैं जिनमें अन्दर मिट्टी भरी हुई है।

गढ़ी में पूर्व दिशा में शस्त्रागार था जो लगभग २३ x २३ फीट के आकार में बना हुआ है। यहाँ दो बड़ी तोपें जहूर बख्स तथा फतेह मंसूर

---

१. होलकर राजवंश और आलमपुर : वीरेन्द्र सिंह चन्देल, चन्देल भवन, आलमपुर (भिण्ड) मध्य-प्रदेश : प्रकाशक नरेन्द्र सिंह चन्देल चन्देल भवन आलमपुर, प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ - १६३

२. फनकार काजी तनवीर अभिनन्दन ग्रन्थ : सम्पादक पं० सुरेश नीख, डा० सुखदेव सिंह सेंगर : १५ अगस्त २००० : भिण्ड जिले की गढियाँ : जीवाराम सिंह नखरिया : पृष्ठ - ६७५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रखी जाती थी जो किसी खास अवसर पर ही दागी जाती थीं। इन तोपों में से एक तोप पीतल की है तथा दूसरी अष्टधातु की। आजकल ये तोपें डी०आर०पी० लाइन भिण्ड में पहुँच गयी हैं।

पूर्व द्वार के दोनों बुर्जों में दो बंगले बने थे, जिनमें एक डाक बंगला था। दूसरा परगना अधिकारी तथा दण्डाधिकारी का निवास स्थान था अब ये बंगले खण्डहर हो गये हैं। गढ़ी के अन्दर जेल व्यवस्था भी थी।

वर्तमान में गढ़ी के अन्दर क्षत्रिय ट्रस्ट आलमपुर का कार्यालय है। इसमें एक स्कूल भी चल रहा है। गढ़ी के अन्दर दो कुएँ भी हैं। एक कुआँ उत्तर दिशा में है तो दूसरा पश्चिम दिशा में। गढ़ी के दक्षिण दिशा में रामजानकी मन्दिर तथा हनुमान मन्दिर हैं। इसी के पास बतख घर, शिकार खाना, शिलाखाना आदि हैं। गढ़ी के चारों तरफ मकान बन जाने के कारण इसकी शोभा नष्ट हो गयी है।

यद्यपि यह गढ़ी सैनिक छावनी के लिये बनवायी गयी थी फिर भी इसमें वास्तुशास्त्रीय तथ्यों को जोड़ना आवश्यक था क्योंकि किसी स्थान के निवासी का वहाँ के निवास स्थान से घनिष्ट सम्बन्ध होता है। गढ़ी के लिये दक्षिण दिशा में निर्मित तालाब जिसमें बतख खाना, शिकार खाना तथा इसी दिशा में निर्मित राम-जानकी व हनुमान मन्दिर उपयुक्त नहीं हैं। इसमें निर्मित शस्त्रागार पूर्व दिशा में तथा एक कुआँ पश्चिम दिशा में है जो अपने उपयुक्त स्थान पर नहीं है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गढ़ी के पूर्वमुखी व उत्तरमुखी होने से काफी दोष कम हो जाते हैं। गढ़ी के निर्माण और उसके उपयोग को देखते हुए ऐसा लगता है कि गढ़ी में केवल सुरक्षा का ध्यान रखा गया था सुख-सम्पन्नता का नहीं। यदि वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों का ध्यान रखा गया होता तो निश्चित रूप से यह गढ़ी पूर्ण उन्नति को प्राप्त होती और यहाँ के शासकों को भी कष्टों का सामना नहीं करना पड़ा होता।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४:१:२:४ इन्दुरखी गढ़ी :

भिण्ड जिला मुख्यालय से लगभग ४० किलोमीटर की दूरी पर लहार मार्ग पर ग्राम रौन गौराई पड़ता है। इसी ग्राम से एक पक्की सड़क इन्दुरखी तक जाती है। यहीं पर इन्दुरखी की गढ़ी स्थित है। इस गढ़ी का निर्माण राजा इन्द्रदेव सिंह कुशवाह ने कराया था।

गढ़ी लगभग डेढ़ किलोमीटर लम्बी तथा एक किलोमीटर चौड़ी है। इस गढ़ी का निर्माण ऊँचे से टीले पर किया गया था। यह गढ़ी अब पूर्णतः खण्डहर हो चुकी है। गढ़ी में अब मात्र दीवारें ही शेष रह गयीं हैं। इस गढ़ी का द्वार पूर्व की ओर है। गढ़ी की पश्चिमी दिशा में सिंध नदी बह रही है। इस नदी का बहाव पश्चिम से उत्तर की ओर हो गया है। जो लगभग एक किलोमीटर तक है। नदी गढ़ी की पश्चिमी दीवार से सटकर बह रही है। जमीन की सतह से लगभग यह गढ़ी दो सौ फीट ऊँचे टीले पर स्थित है।

गढ़ी के पूर्व में कुआँ है। गढ़ी के ईशान दिशा में मन्दिर है। यह मन्दिर शिव मन्दिर है। जो पूर्वमुखी है। गढ़ी की दीवारें टूटती-फूटती जा रहीं हैं। यह गढ़ी खण्डहर हो जाने से एक विशाल टीले का रूप गृहण कर चुकी है। स्थानीय निवासियों से जानकारी लेते समय पता चला कि इस गढ़ी से एक सुरंग नदी के नीचे से निकलकर पश्चिम की ओर गयी है जो कई किलोमीटर आगे बीहड़ी भरकों तक बनी हुई है तथा यह सुरंग बीहड़ी भरकों से होती हुई अमायन तक गयी है।

लोगों ने बताया कि गढ़ी के पूर्वी और पश्चिमी हिस्से की प्राचीन दीवाल वर्षा में ढह जाने के कारण लोहे तथा पत्थर के बड़े-बड़े गोले निकले थे जिन्हें कुछ लोग उठाकर घर ले गये थे। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि इनका शस्त्रागार यहीं पर रहा होगा।

इन्दुरखी ग्राम का क्षेत्र बारह कोस का बताया जाता है। बताते हैं राजा भगवन्त सिंह यहाँ के राजा थे, राजा भगवन्त सिंह दतिया नरेश वृसिंह देव बुन्देला के समकालीन थे। इन दोनों राजाओं का वजन नौ-नौ मन था। पहले इन्दुरखी राज्य स्टेट था। बाद में यह जिला बन गया। इस जिले की सील ग्राम मछरिया में एक लेख पर लगी आज भी देखी जा सकती है।

---

* मध्य प्रदेश सन्देश भोपाल स्वाधीनता आन्दोलन विशेषांक १५ अगस्त १९८५ : पृष्ठ - ६० पर प्रकाशित श्री मिलिन्द के लेख में इन्दुरखी गढ़ी का वर्णन।

* डा० श्याम बिहारी श्रीवास्तव : दतिया उद्भव और विकास पृष्ठ - १७३ पर प्रकाशित लेख में इन्दुरखी गढ़ी का वर्णन।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन्दुरखी गढ़ी कई शासकों के हाथ में रही। इस गढ़ी को कई युद्धों का सामना करना पड़ा। इस गढ़ी के बारे में समय-समय पर कई पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

गढ़ी की वर्तमान स्थिति के अनुसार इसका वास्तुशास्त्रीय अवलोकन करने पर निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि यह गढ़ी वास्तुशास्त्र के नियमों के अनुरूप निर्मित नहीं की गई होगी। यदि यह गढ़ी वास्तुशास्त्र को ध्यान में रखकर बनायी गयी होती तो यह गढ़ी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में न होती तथा इसके साथ ही इसमें निवास करने वाले राजाओं के लिये कष्ट का कारण न बनती तथा इन्दुरखी गढ़ी को भी कई युद्धों की मार न झेलनी पड़ती।

गढ़ी में स्थित प्रमुख वास्तुशास्त्रीय दोष के रूप में सिन्ध नदी का गढ़ी से पश्चिमी दिशा में होना तथा गढ़ी का ढाल विपरीत दिशा में होना तथा गढ़ी के अन्दर मिले लोहे के गोलों से स्पष्ट होता है कि गढ़ी में शस्त्रागार पश्चिमी दिशा में था जिसे आग्नेय दिशा में होना चाहिये था। यही कारण है कि आज गढ़ी खण्डहर का रूप धारण करती चली जा रही है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४:१:२:५ जमुहाँ गढ़ी :

भिण्ड जिला मुख्यालय से पचपन किलोमीटर की दूरी पर लहार परगना स्थित है। लहार परगना से पश्चिम दिशा की ओर दो-तीन किलोमीटर की दूरी पर कुशवाह राजवंश की गढ़ी 'जमुहाँ गढ़ी' प्रसिद्ध है।

जनश्रुति के आधार पर महाराजा श्लेराव दोसा के पुत्र वीकल देव तथा वीकलदेव के पुत्र इन्द्रपाल जयपुर छोड़कर अपने मामा जी के यहाँ कनावर आकर बस गये थे। इन्होनें भदौरिया की सहायता से ऊमरी की गढ़ी पर कब्जा कर लिया। कुछ समय यहाँ रहने के पश्चात् इन्होनें इन्दुरखी के राजा भगवान सिंह गौड़ को परास्त करके अपना राज्य कायम किया।

"इन्दुरखी राजवंश की परम्परा में दलसिंह को लहार गद्दी दी गयी। इनके पुत्र विक्रमाजित सिंह को गद्दी लहार दी गई। विक्रमाजित सिंह के पुत्र मानदाता के पाँच पुत्र हुए थे। जो क्रमशः उदोतसिंह, देशराजसिंह, लक्ष्मणसिंह, अमृतसिंह और अधीर सिंह । जिनमें अमृतसिंह ने गूजरों को परास्त करके १७८८ ई० में जमुहाँ गढ़ी पर कब्जा किया था।"[१]

"राजवंशीय जमुहाँ गढ़ी पर मेवातियों का आधिपत्य रहा। इसके बाद सत्रहवीं शताब्दी में गूजरों ने मेवातियों को परास्त कर अपना अधिकार जमा लिया था। कुशवाहों ने गूजरों को परास्त कर गढ़ी को अपने कब्जे में कर लिया था।"[२] ऐतिहासिक दृष्टि से जमुहां गढ़ी अतीत से ही आक्रमणकारियों की युद्धस्थली रही, जिस पर अनेक राजवंशों का आधिपत्य रहा।

---

१. दैनिक उद्गार : भिण्ड जिला विकास विशेषांक : २६ जनवरी ६३ : जमुहाँ गढ़ी - एक सांस्कृतिक विरासत : डा० आर०पी०, पी०एन० श्रीवास्तव : पृष्ठ - २०

२. वही, पृष्ठ - २०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYV,V), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

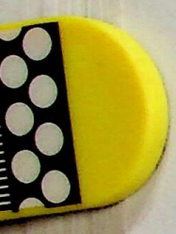

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह गढ़ी जमुहाँ गाँव के बीचो-बीच लगभग ५०० फीट जगह में ऊँची मिट्टी का ढ़ेर है। शोधार्थिनी को गढ़ी जैसी कोई चीज नहीं दिखाई दी। स्थानीय निवासियों के अनुसार गढ़ी का मुख्य दरवाजा पूर्व तथा दक्षिण दिशा में स्थित था। चारों कोनों पर चार बुर्ज बने थे, जिनमें प्रत्येक की ऊँचाई लगभग पचास फीट की रही होगी। यह गढ़ी पतली ईंटों तथा चूने व मिट्टी से निर्मित थी।

गढ़ी वाले स्थान पर राजवंशीय परिवार के लोगों ने जगह बाँटकर निवास के लिये घर बना लिये हैं। इन घरों के सामने गढ़ी के अवशेष के रूप में ऊँचा मिट्टी का ढेर है। गढ़ी की नैऋत्य दिशा में एक प्राचीन मन्दिर बना हुआ है। गढ़ी से करीब सौ फीट की दूरी पर लगभग ३० x ५० फीट की जगह पर खण्डहर रूप में प्राचीन रामजानकी का मन्दिर है।

इन सब बातों से स्पष्ट होता है कि यहाँ की गढ़ी वास्तुशास्त्रीय दोषों से परिपूर्ण रही होगी। यदि इस गढ़ी का निर्माण वास्तुशास्त्र के अनुसार हुआ होता तो आज यह गढ़ी उसी अवस्था में होती।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४:१:३ मल्हार राव होलकर छत्री (स्मारक)

भिण्ड जिला मुख्यालय से एक सौ किलोमीटर की दूरी पर आलमपुर नगर स्थित है। भारत के मानचित्र में इस स्थान की स्थिति भूमध्य रेखा के उत्तरी अक्षांश २६.६० डिग्री और पूर्वी देशान्तर ७८.५४ डिग्री पर स्थित है। इसके पश्चिम में विन्ध्य पर्वत श्रेणियों के दृश्यांश तथा काली सिन्ध तथा पूर्व में पहूज नदी प्रवाहित है।

'होलकर राज्य के संस्थापक सूबेदार मल्हार राव होलकर एक वीर पुरूष तथा मराठा कान्फीडिरेसी के अभिन्न अंग थे। अपनी वीरता तथा प्रभुत्व के कारण वे उसके भीष्म पितामह माने जाते थे। मराठा सत्ता के स्थापन में उन्होंने आजीवन अपूर्व योगदान दिया और उन्हीं के योगदान से मराठा संगठन दक्षिण तथा उत्तर भारत में अपना आधिपत्य जमाने में सफल हो सका। उनका देहावसान वैसाख सुदी एकादशी सम्वत् १८२३ वि० दिनांक २० मई १७६६ ई० को आलमपुर में हुआ।'[1]

सूबेदार मल्हार राव होलकर का अन्तिम संस्कार पूर्ण धार्मिक रीति से हिन्दू संस्कृति के आधार पर सोन नदी के किनारे सम्पन्न किया गया। "सूबेदार मल्हार राव साहब की पुत्रवधू देवी अहिल्याबाई होलकर ने अपने

---

१. दैनिक उद्‌गार : गणतन्त्र दिवस एवं भिण्ड जिला विकास विशेषांक १९९३ : २६ जनवरी १९९३ : पृष्ठ - १९

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजस्व काल में मल्हार राव के अन्त्येष्टि स्थल पर भव्य छत्री स्मारक का निर्माण कराया। इसके लिये भूमि हजारी लाल कुर्मी से प्राप्त हुई थी, जो उस समय यहाँ, के जमींदार नियुक्त थे।"[1] इस इमारत की रचना के लिये जयपुर-इन्दौर से कुशल शिल्पी बुलाये गये थे। यहाँ के लिये लाल तथा सफेद पत्थर राजस्थान की खदानों से मंगवाया गया था। "इस भवन का निर्माण सन् १७६७ से १७७५ तक चलता रहा। जिसकी लागत १८ लाख रूपये थी।"[2]

यह छत्री लगभग ५० × ५० फीट की लम्बाई × चौड़ाई में बनी है जिसकी ऊँचाई लगभग ७५ फीट है। यह छत्री बलुआ पत्थर से बनी है। यह तीन मंजिला इमारत है। पहली मंजिल की छत पर लगभग १० फीट चौड़ा छज्जा बाहर जगत के ऊपर निकाला गया है, जो चारों ओर आधार हीन ढालू है। छज्जे के तल भाग में पत्थरों पर वेजोड़ कलाकारी की गई है। चारों दिशाओं के छज्जे के मध्य भाग के पत्थरों पर क्रमशः सूर्य भगवान रथारुढ़, चन्द्रमुख, मत्स्य आकार तथा कच्छप आकृतियाँ बनी हुई हैं। यह छज्जा छतरी की शोभा में चार चाँद लगा रहा है। इस तरह का छज्जा शायद ही कहीं देखने को मिले।

---

१. चम्बल के आस-पास : डा० कालीचरण स्नेही : सांस्कृतिक चेतना समिति लहार (भिण्ड), मध्य प्रदेश : अगस्त १९९८ : पृष्ठ - ८२

२. दतिया उद्भव और विकास आलेख लेखक बाबू लाल गोस्वामी दतिया वाचनालय सेंवढ़ा पृष्ठ - २६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

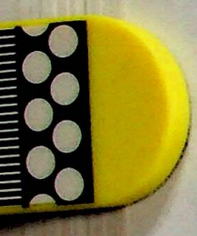

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छत्री में आगे की ओर तीन फब्बारे लगे हैं। यह फब्बारे आगरा के ताजमहल के फब्बारे जैसे ही हैं। उसके बाद नृत्य मंच बना हुआ है। छत्री में भीतर स्वर्णलिप्त गद्दी पर सूबेदार मल्हार राव होलकर उनकी धर्मपत्नी गौतमाबाई तथा दो उपपत्नी जो उन्हीं के साथ सती हुई थीं हरकूबाई तथा बनाबाई की संगमरमर की प्रस्तर की सुन्दर मूर्तियाँ स्थापित हैं।

छत्री में तीनों तरफ से सीढ़ियाँ बनी हैं। ये सीढ़ियाँ विषम संख्या में हैं। छत्री मध्य भाग में बनी है। छत्री के चारों दिशाओं में चार आधार स्तम्भ हैं, ये स्तम्भ पत्थर के हैं। छत्री की दूसरी मंजिल में चढ़ने के लिये ईशान दिशा में सफेद पत्थर की सीढ़ियाँ हैं। इन सीढ़ियों की संख्या १० है, ये सीढ़ियाँ सम संख्या में हैं। तीसरी मंजिल पर पहुँचने के लिये आग्नेय में सीढ़ियों की संख्या ७ है यह सीढ़ियाँ बेहद संकरी हैं।

छत्री के सम्मुख नृत्य मण्डप बना हुआ हैं। उस पर गणिकायें मल्हार राव के सम्मान में सिजरा पेश करतीं हैं। छत्री से पूर्वी दिशा में हनुमान मन्दिर तथा पूर्व में ही होलकर का मन्दिर है।

छत्री से पूर्वी दिशा की ओर कुआँ है। छत्री के पश्चिम में बाउड़ी है। जो बहुत गहरी है। "पेशवा तथा बुन्देलखण्ड के नरेशों ने आलमपुर में उनकी छत्री बनवाने तथा इसके रख-रखाव के लिये पच्चीस गाँव का महल परगना होलकरों को दिया था। जिसकी भू-राजस्व आय ७० हजार रूपये वार्षिक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

थी।"[1] स्वतन्त्रता के पश्चात आलमपुर को भिण्ड जिले में मिला दिया गया। इन्दौर के तत्कालीन महाराजा यशवंत राव ने आलमपुर ट्रस्ट के नाम से एक ट्रस्ट बनाया, आज इसी ट्रस्ट को भारत शासन तथा मध्य प्रदेश शासन से आय प्राप्त होती है वर्तमान में इसी आय से छत्री की व्यवस्था चल रही है। डा० दिवोलिया वर्तमान में ट्रस्ट के सचिव है। डा० दिवोलिया के अनुसार - छत्री के निर्माण के लिये जयपुर के कुशल कारीगर बुलाये गये थे। छत्री के निर्माण में उस समय में लगभग १८ लाख रूपये की लागत आई थी तथा इसका निर्माण कार्य ६ वर्षों तक चलता रहा।

वर्तमान में छत्री की देख-रेख के लिये एक मैनेजर, एक क्लर्क, आठ सिपाही, दो पुजारी, रसोईया, दो माली, चपरासी तथा जमादार रहता हैं ये लोग छत्री की देख-रेख करते हैं। यहाँ पर नियमित पूजा अर्चना के बाद भोजन का भोग लगाया जाता है। छत्री ट्रस्ट का हैड ऑफिस मासिक बाग पैलेस इन्दौर में तथा स्थानीय ऑफिस यहाँ की गढ़ी में है।

यह छत्री भिण्ड जिले का ही नहीं वरन मध्य प्रदेश का सुन्दरतम् दर्शनीय स्थल है। छत्री का उल्लेख समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होता रहता है। छत्री बनने के पश्चात् आलमपुर नगर का नाम 'मल्हार नगर' रखा गया लेकिन इसका नाम लोगों की जबान पर न उतरने के कारण मल्हार

---

१. दैनिक उद्‌गार : भिण्ड जिला विकास विशेषांक : २६ जनवरी १९९३ : मल्हार राव होलकर - छत्री : डा० ना०दा० कमलेश : पृष्ठ - १९

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगर केवल कागजों तक ही सीमित होकर रह गया। गजेटियर में आलमपुर का नाम मल्हार नगर ही लिखा मिलता है।

छत्री का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन करने पर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इसमें बहुत से ऐसे वास्तुशास्त्रीय शुभ लक्षण होने के कारण ही दो सौ पच्चीस वर्षों के बाद भी यह इमारत आज भी उतनी ही भव्य दिखाई दे रही है तथा इसके रख-रखाव की व्यवस्था भी उचित है।

यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य मन को मोह लेने वाला है। इतना सब कुछ होते हुए भी यह छत्री दर्शनीय स्थल होने के बावजूद दर्शनीय स्थल नहीं बना पाया है। इसको दर्शनीय स्थल बनाने के लिये बहुत से ऐसे सामाजिक संगठन प्रयास में लगे रहे हैं परन्तु इसकी उतनी मान्यता नहीं हो पायी है। इसका प्रमुख कारण छत्री में स्थित वास्तुशास्त्रीय दोष हैं। प्रमुख वास्तुशास्त्रीय दोषों में पश्चिम दिशा में नदी तथा बाउंड्री का होना, ईशान तथा आग्नेय दिशा में जीना का निकाला जाना तथा यहाँ की सीढ़ियों का सम संख्या में होना शामिल है।

यदि छत्री के अन्दर के वास्तुशास्त्रीय दोषों को दूर किया जाय तो निश्चित ही यह छत्री स्मारक की गणना मध्य प्रदेश की ही नहीं वरन् भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में की जायेगी। थोड़े से प्रयास से ही यह छत्री स्मारक भारत का पर्यटन केन्द्र बन जायेगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

---

* संस्था में एवं शालेय शिक्षा जिला भिण्ड (जिला शिक्षा अधिकारी भिण्ड) सन् १९८२-८३ पृष्ठ - ६ पर इसका उल्लेख है।

* भूगोल जिला भिण्ड (मध्य प्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम भोपाल) पृष्ठ - ३२ पर इसका उल्लेख है।

* १९८२ म०प्र० प्रधान सम्पादक डा० रनवीर सक्सेना प्रकाशन इन्दौर पृष्ठ २६५ में इसका उल्लेख है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

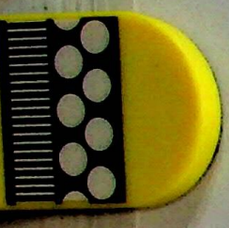

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय - पाँच

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

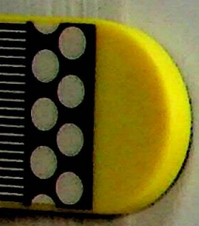

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्रृगरत्रिर्वशिष्ठश्र विश्वकर्मा मयस्तथा।
नारदो र्ननजिच्चैव विशालाक्षः पुरन्दर।।
ब्रह्मा कुमारो नन्दीशः रौनको गर्ग एवं च।
वासुदेवोडनिरूद्धश्र तथा शुक्र वृहस्पति।
अवतदशैते विख्याताः वास्तुशास्त्रोपदेशकाः।
संक्षपेणोपादिष्टं यन्समनवे मत्स्यरूपिणा।।

इन अष्टाश वास्तु शास्त्रोपदेशक ऋषियों, महर्षियों एवं देवों के चरणों में जिनके द्वारा स्थापत्य वेद के प्राचीन स्त्रोत से वास्तुशास्त्र की प्रतिष्ठा हुई।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५. प्राचीन धार्मिक मन्दिरों का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन

मन्दिर प्राचीन समय से ही असीम शान्ति के केन्द्र रहे हैं। मानव की अन्य कलाकृतियों की ही भाँति मन्दिर भी समय के साथ परिवर्तित होते रहे हैं। जो मन्दिर किसी समय यहाँ के निवासियों की श्रद्धा के प्रमुख केन्द्र थे, वे या तो नष्ट हो गये हैं या फिर टूटी-फूटी अवस्था में अपनी प्राचीनता की कहानी कह रहे हैं।

भिण्ड जिले के लगभग प्रत्येक गाँव में कोई न कोई मन्दिर है तथा नगरों में भी एक से बढ़कर एक मन्दिर हैं। इनमें अनेक मन्दिर तो ऐसे हैं, जिसमें कभी कोई पूजा करने तक नहीं आता जबकि इसके विपरीत दूसरे मन्दिरों में दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहता है। यह सब यहाँ के निवासियों की श्रद्धा का ही प्रतिफल है। इन सभी मन्दिरों में अवश्य ही कोई न कोई वास्तुशास्त्रीय दोष हैं। अन्तर बस इतना है, कि किसी मन्दिर के वास्तुशास्त्रीय दोष का निवारण हो गया है और किसी के दोषों का नहीं।

मन्दिरों के विकास को देखते हुए उनके निर्माण एवं जनश्रृद्धा को आधार मानकर भिण्ड जिले के प्रमुख प्राचीन मन्दिरों का वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से शोधपरक अध्ययन किया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५.१ भिण्ड जिले के जैन सिद्धक्षेत्रीय मन्दिर :

भिण्ड जिले में बहुत से प्राचीन जैन मन्दिर हैं। जिनमें से तीन जैन सिद्ध क्षेत्रीय मन्दिर, जो वास्तव में अतिशय क्षेत्र हैं। इनमें से प्रमुख रूप से बरही, बरासों तथा पावई हैं। इन मन्दिरों में बरही जैन मन्दिर की देख-रेख अच्छी हो रही है।

जैन धर्म के मानने वाले लोगों के ये श्रद्धा के केन्द्र हैं। ये तीनों ही अतिशय क्षेत्र अपना-अपना अलग प्रभाव रखते हैं तथा इनकी बनावट भी अलग-अलग है। इन मन्दिरों का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन करने पर इनके मध्य अनेक समानताएँ - असमानताएँ देखने को मिलीं। यद्यपि ये मन्दिर बहुत सुन्दर बने हैं, फिर भी मन्दिर निर्माण समिति के लोग तन, मन एवं धन से मन्दिर की सेवा में लगे हैं। इन सबके उपरान्त भी इनका उतना विकास नहीं हो पा रहा है जितना होना चाहिये था। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इन मन्दिरों का शोधपरक दृष्टि से अध्ययन किया।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिला - भिण्ड

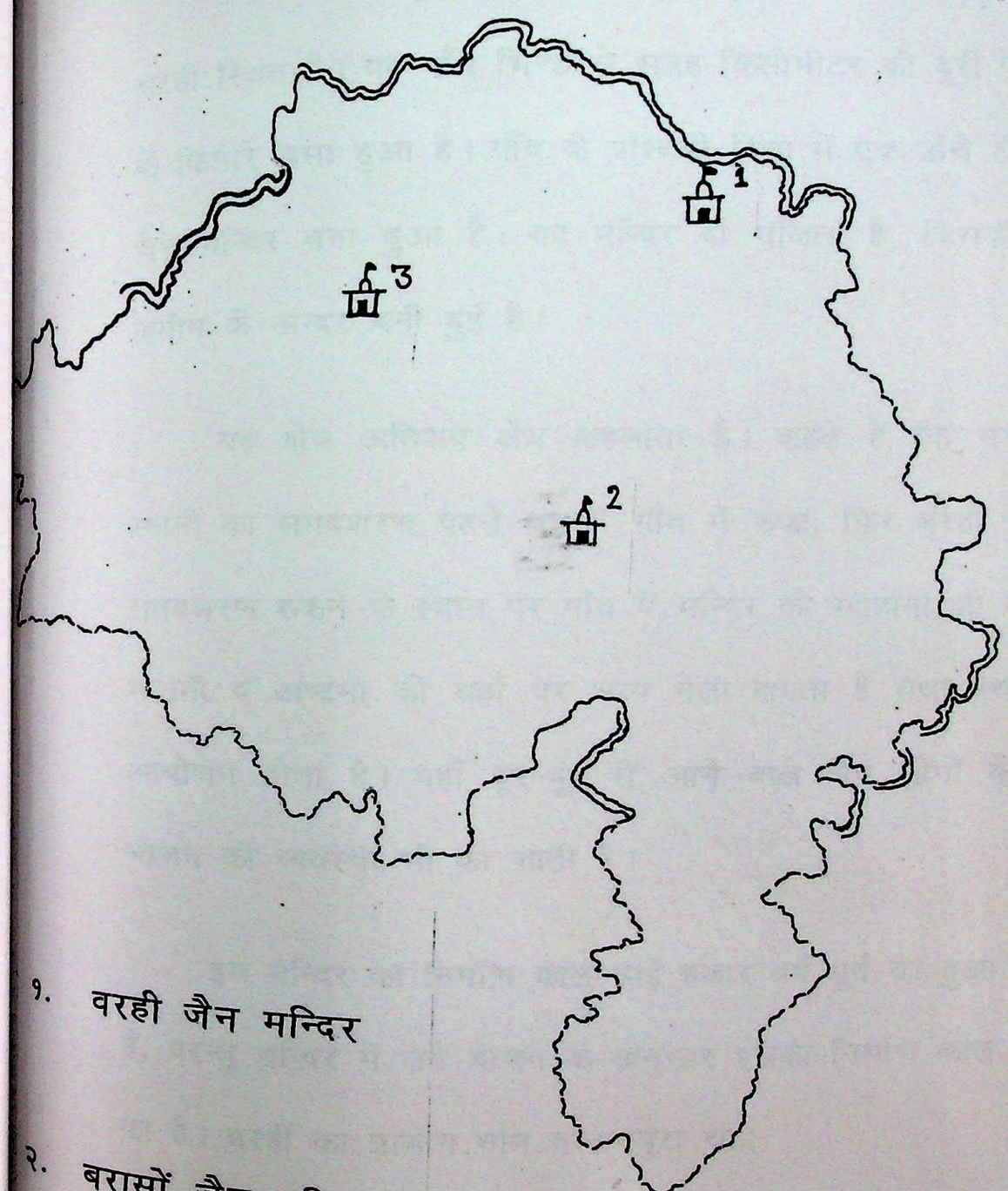

१. वरही जैन मन्दिर

२. बरासों जैन मन्दिर

३. पावई जैन मन्दिर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV),*Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:१:१ बरही मन्दिर

भिण्ड जिला मुख्यालय से उत्तर दिशा में ग्वालियर-इटावा राजमार्ग पर बरही स्थित है। यह गाँव भिण्ड से सत्रह किलोमीटर की दूरी पर चम्बल नदी के किनारे बसा हुआ है। गाँव के पश्चिमी दिशा में एक ऊँचे टीले पर प्राचीन जैन मन्दिर बना हुआ है। यह मन्दिर दो मंजिला है, जिसकी एक मन्जिल जमीन के अन्दर बनी हुई है।

यह क्षेत्र अतिशय क्षेत्र कहलाता है। कहते हैं कि भगवान महावीर स्वामी का समवशरण पहले बरासों गाँव में रुका, फिर बरही गाँव में रुका। समवशरण रुकने के स्थान पर गाँव में मन्दिर की स्थापना की गई। क्वार की सप्तमी व अष्टमी को यहाँ पर भव्य मेला लगता है तथा रथयात्रा का भी आयोजन होता है। यहाँ दूर-दूर से आने वाले जैन लोगों के रुकने तथा भोजन की व्यवस्था भी की जाती है।

इस मन्दिर का निर्माण काल ढ़ाई हजार वर्ष पूर्व का हुआ बताया जाता है, परन्तु मन्दिर में लगे बीजन के अनुसार इसका निर्माण काल सम्वत् ८२५ का है। बरही का प्राचीन नाम बल्लभपुरा था।

मन्दिर की सतह पृथ्वी तल से लगभग पन्द्रह फीट ऊँची है, जिसमें पूर्व से पश्चिम इक्कीस सीढ़ियाँ हैं। यह मन्दिर पूर्वमुखी है। पश्चिममुखी बड़े से छतदार कमरे के अन्दर मुख्य मन्दिर उत्तरमुखी है। छोटे से मन्दिर के अन्दर मूर्ति के चारों ओर परिक्रमा मार्ग भी है। मन्दिर के चारों कोनों पर बुर्ज बने

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

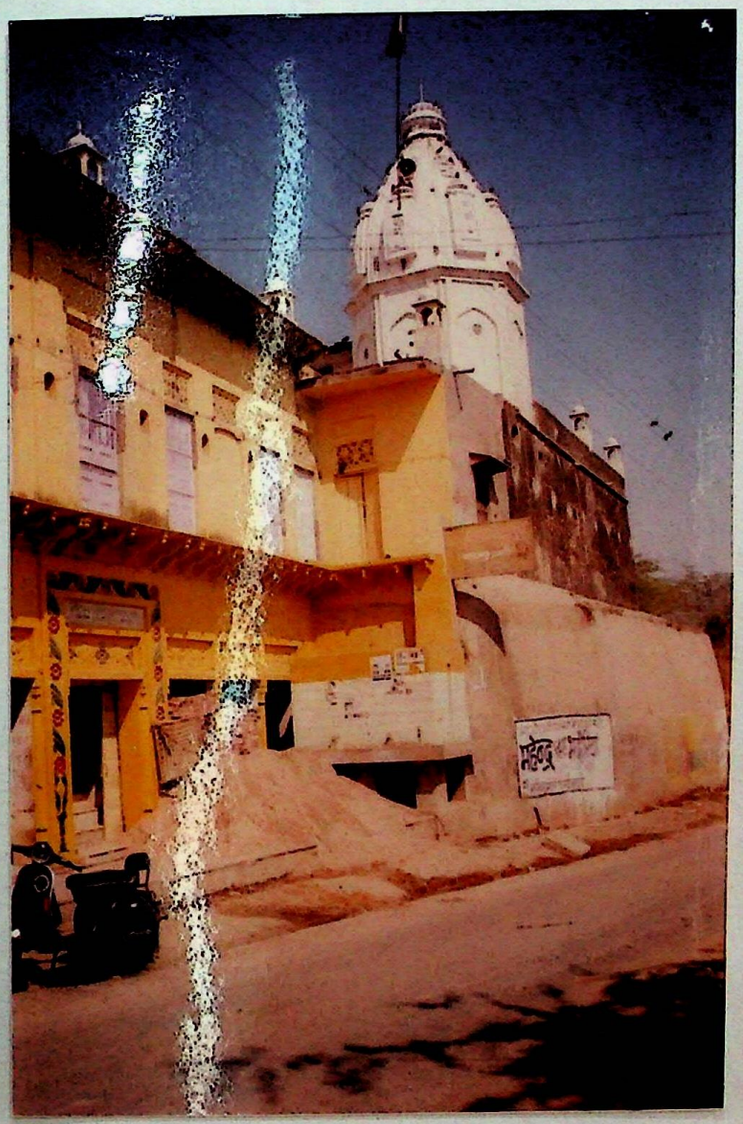

बरही मन्दिर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

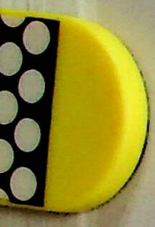

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हैं। मन्दिर की पश्चिम दिशा में दर्शनार्थियों के लिये कमरों का निर्माण किया गया है। मन्दिर में शौचालय की व्यवस्था मन्दिर परिसर के दक्षिणी भाग में है। पूर्वी दिशा में पेयजल की व्यवस्था के लिये टंकी बनी है।

यह मन्दिर बाहर से देखने पर बहुत ही सुन्दर लगता है, लेकिन जैसे ही मन्दिर में प्रवेश करते हैं ऐसा लगता ही नहीं कि यह मन्दिर है, क्योंकि भगवान की मूर्ति की स्थापना उत्तर पूर्वी कोने पर है, जहाँ घूमकर जाना पड़ता है।

यदि भगवान नैमिनाथ की मूर्ति की स्थापना मुख्य प्रवेश द्वार के सामने की गयी होती तो आज यह मन्दिर अधिक विकसित अवस्था में होता।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:१:२ बरासों मन्दिर :

भिण्ड जिला मुख्यालय से नैऋत्य दिशा में लगभग पच्चीस किलोमीटर की दूरी पर बरासों गाँव स्थित है। इसी गाँव में दो प्राचीन जैन मन्दिर बने हुए हैं, जिन्हें क्रमशः नवीन जैन मन्दिर तथा प्राचीन जैन मन्दिरों के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व भगवान महावीर स्वामी का समवशरण यहाँ पर कुछ समय के लिये रुका था। जिस स्थान पर समवशरण रुका, उसी स्थान पर बेसली नदी के किनारे यह मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर में भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा स्थापित है। काले पत्थर पर उत्कीर्ण भगवान महावीर स्वामी की यह प्रतिमा भव्याकर्षक है। मन्दिर की सतह से चार फीट की ऊँचाई पर पद्मासन मुद्रा में यह प्रतिमा स्थापित है। इस प्रतिमा के दायीं तथा बायीं ओर दो अन्य प्रतिमा भी रखी हुईं हैं। इनमें से एक प्रतिमा ग्यारहवीं शदी के मध्य की है। इन प्रतिमाओं पर छोटे-छोटे लेख तथा तिथियाँ भी लिखी हुई हैं।

ऊँचे से पठारनुमा टीले पर किले जैसा दिखनें वाला यह मन्दिर गाँव की दक्षिणी दिशा में स्थित है। यह मन्दिर पृथ्वी तल से लगभग बीस से बाइस फीट की ऊँचाई पर बना हुआ है जिस पर सीढ़ियों द्वारा ऊपर चढ़कर लगभग ४० × २० फीट के मैदानी स्थान में पहुँचते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्दिर पर पहुचनें के लिये बनी सीढ़ियाँ घड़ी की सुई की दिशा में घूमती हुई जाती हैं तथा सीढ़ियों की संख्या भी ४१ है, जो विषम संख्या में है। सीढ़ियों के बाद छोटा सा मैदान, मैदान के बाद मन्दिर परिसर आ जाता है। मन्दिर का मुख्य द्वार पूर्व की ओर है। मन्दिर में बीच का स्थान खुला हुआ है, जिसका फर्श पक्का बना हुआ है। बीच में आँगन तथा चारों ओर बरान्डे बने हुए हैं। आँगन पार कर सामने वाले बरान्डे में ऊँची वेदी पर भगवान महावीर की पूर्वमुखी प्रतिमा स्थापित है।

मन्दिर के निर्माण के बारे में जनश्रुति यह है कि यह मन्दिर देवों ने बनवाया है। क्वारवदी दौज को प्रतिवर्ष यहाँ विशाल मेला लगता है, जिसमें दूर-दूर से जैन श्रद्धालु सम्मिलित होने के लिये आते हैं।

यह मन्दिर वास्तुशास्त्र के अनुसार बिलकुल उचित बना हुआ है। सीढ़ियों की संख्या तथा उनका घुमाव वास्तुशास्त्र की दृष्टि से बिलकुल उचित है। यह मन्दिर खूब हवादार भी है।

यह मन्दिर जैन धर्म के अनुयायियें का प्रमुख धार्मिक केन्द्र है। यह दिगम्बर जैन मन्दिर है। बरासों गाँव से यह मन्दिर दक्षिण दिशा में पड़ता है तथा सड़क से भी बहुत दूर है। मन्दिर से पूर्व तथा उत्तर दिशा में कई वृक्ष लगा दिये जायें और मन्दिर का मार्ग सहित पुनर्रोद्धार कराया जाये तो यह क्षेत्र केवल जैन मतानुयायियों के लिये ही नहीं अपितु सर्वधर्मानुयायियों के लिये पर्यटन का केन्द्र बन सकता है, मन्दिर के बाहर का दृश्य अत्यन्त सुन्दर है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पावई जैन मन्दिर

पावई ग्राम में मिली ढेरों खण्डित महावीर स्वामी की मूर्तियाँ

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

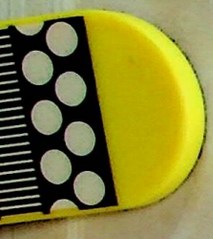

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पाया है, फिर भी ऐसा अनुमान लगता है कि विशेष कोण से सूर्य के प्रकाश से प्रभावित होकर ही यह प्रतिमा रंग-बिरंगी दिखाई देती है।

ग्रामीणों के अनुसार पावई में कई हजार वर्ष पूर्व की भगवान महावीर स्वामी की मूर्तियाँ तथा भगवान नैमिनाथ की मूर्तियाँ अभी भी मिल रहीं हैं। ये मूर्तियाँ अभी भी जमीन में दबी पड़ी हैं। यह गाँव जैन मूर्तियों का गढ़ है। किसी ने घर बनवाने के लिये जमीन खोदी तो उसमें से मूर्तियों का निकलना शुरू हो गया, तो कहीं पर बारिश के कारण मिट्टी के टीले की मिट्टी खिसकी वहाँ से मूर्तियाँ प्राप्त हुई। अभी तक जितनी मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, उनमें से ज्यादातर मूर्तियाँ खण्डित हैं। इनमें से प्रत्येक दुर्लभ प्रतिमायें हैं।

इस मन्दिर के बाहर प्रकृति का अनूठा सौन्दर्य है। मन्दिर में अन्दर पहुँचने पर अजीब सी घुटन महसूस होने लगती है। यदि इस मन्दिर को हवादार बनाने के लिये खिड़की, रोशनदान बनवा दिये जायें तथा मन्दिर में पहुँचने के लिये प्रयोग की जाने वाली सीढ़ियों में एक और सीढ़ी निर्मित करा दी जाय तो इसका वास्तुशास्त्रीय दोष मिटाया जा सकता है।

मन्दिर के परिसर में अनेक खण्डित मूर्तियों का होना बहुत बड़ा वास्तुशास्त्रीय दोष है, यदि उन खण्डित मूर्तियों को एक दूसरी इमारत बनाकर उसमें संग्रहित किया जाय तो इसका विकास हो जायेगा और यह श्रद्धा के केन्द्र के साथ-साथ एक दर्शनीय स्थल बन जायेगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिला - भिण्ड

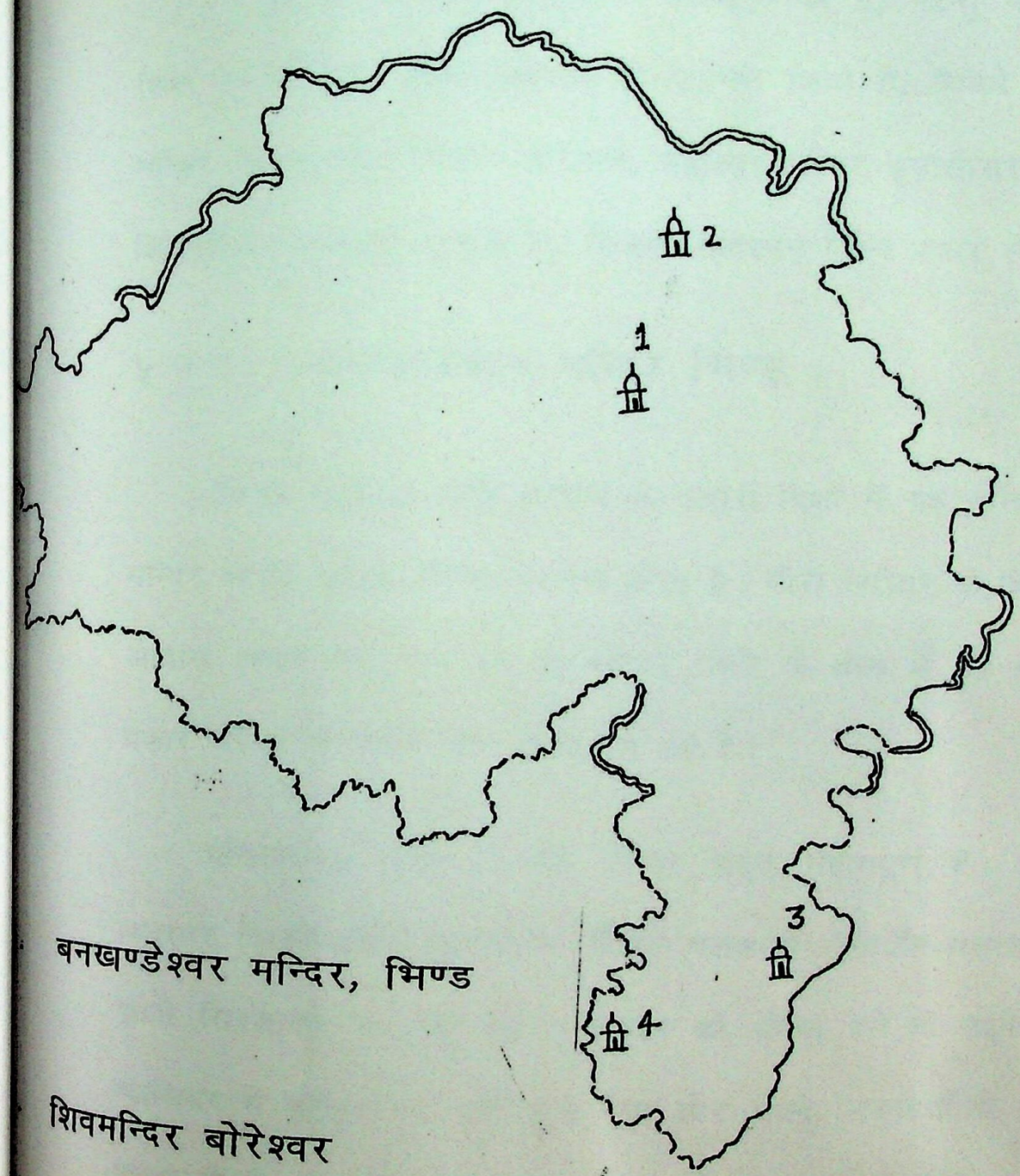

बनखण्डेश्वर मन्दिर, भिण्ड

शिवमन्दिर बोरेश्वर

नन्दीश्वर मन्दिर बूढ़ासोंसरा

हरिहरेश्वर शिव मन्दिर, आलमपुर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:२ भिण्ड जिले के प्राचीन शिव मन्दिर :

यूँ तो भिण्ड जिले में अनेकों शिव मन्दिर हैं, परन्तु मैने निम्नांकित शिव मन्दिरों को अपने अध्ययन में शामिल किया है, जिनमें बनखण्डेश्वर मन्दिर भिण्ड, शिव मन्दिर बोरेश्वर, नंदीश्वर मन्दिर बूढ़ासोंसरा, हरिहरेश्वर शिवमन्दिर आलमपुर प्रमुख हैं। जिनका अध्ययन निम्न प्रकार से है।

५:२:१ वनखण्डेश्वर मन्दिर भिण्ड :

भिण्ड नगर में गौरी सरोवर के उत्तरी दिशा में यह मन्दिर स्थित है। मन्दिर से ही पुराना भिण्ड आरम्भ होता है। गौरी सरोवर के किनारे-किनारे आवास स्थान बन जाने से यह मन्दिर बस्ती के बीच में आ गया है। इस प्रकार मन्दिर के चारों ओर बस्ती हो गई है।

ऐतिहासिक दृष्टि से यह मन्दिर बहुत महत्वपूर्ण है। जनश्रुति के अनुसार दिल्ली सम्राट पृथ्वीराज चौहान बलशाली सेनापति मलखान से युद्ध करने सिरसागढ़ जा रहा था। मलखान को धोखा देने के उद्देश्य से वह ग्वालियर से बटेश्वर की ओर मुड़ गया और अपने सिपाहियों से यह घोषणा करवा दी कि वह बटेश्वर जा रहा हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि पृथ्वीराज चौहान शिव भक्त था। बटेश्वर से सीधा वह भिण्ड पहुँचा और इस नगर में उसने वहाँ पड़ाव डाला जहाँ आज बनखण्डेश्वर मन्दिर है। शिव भक्त होने के कारण वहाँ शिवलिंग की स्थापना व पूजा अर्चना की।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्दिर में अन्दर रखे प्राचीन कालीन नगाड़े इससे लोगों को मन्दिर के खुलने तथा बन्द होने की सूचना दी जाती थी।

वन खण्डेश्वर मन्दिर तथा मन्दिर के अन्दर जलती अखण्ड ज्योति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उसकी सेना का काफिला बहुत बड़ा था। उसमें हाथी, घोड़े और खच्चरों की बहुतायत थी। उसकी जलापूर्ति के लिये उसने बड़ा सा तालाब खुदवाया, जिसमें पर्याप्त जलराशि पाकर वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने इस तालाब का नाम "गौरी-सरोवर" रखा तथा गौरी-सरोवर के खुद जाने के बाद शिवलिंग के आस-पास खड़े घने वृक्षों के कारण इस शिव भक्त ने शिव जी को वनखण्डेश्वर नाम दिया। तब से लगातार बनखण्डेश्वर के नाम से इनकी अखण्ड ज्योति जल रही है।

जनश्रुति के अनुसार आरम्भ में यहाँ केवल एक छोटी सी कोठरी थी; उसी में शिवलिंग की स्थापना की गयी थी। धीरे-धीरे मन्दिर में निर्माण कार्य होता गया और आज यह एक भव्य और विशाल मन्दिर के रूप में दर्शनीय है। मन्दिर के निर्माण में शनैः शनैः भदौरिया तथा सिंधिया आदि शासकों का सहयोग सराहनीय रहा है।

मन्दिर में लगे शिलालेख के अनुसार उस समय तैनात सूबा शंकर पाण्डेय ने बनखण्डेश्वर मन्दिर के पुर्ननिर्माण में अच्छी भूमिका निभाई थी। उन्हीं ने इस मन्दिर के निर्माण में सुन्दरता में चार चाँद लगाये। जिसमें नक्काशीदार और कलात्मक चित्र दर्शनीय है।

मुख्य मन्दिर के ईशान तथा आग्नेय दिशा में अन्य मन्दिर बने हैं। आग्नेय दिशा में बना मन्दिर जिसका अधिकांश भाग अब भी प्राचीन है, उसकी गुम्बद पर देवी-देवताओं की विशेष प्रकार से कलाकारी की गयी है, जिसमें दक्षिण भारत के मन्दिरों की झलक पायी गयी है। ईशान कोण वाले

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

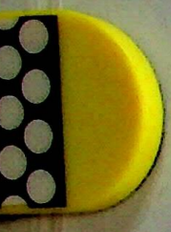

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्दिर से सटा यहाँ पर पीपल का प्राचीन वृक्ष है, जिसकी आश्चर्यजनक बात यह है कि इसका तना मन्दिर की छत पर है। यह वृक्ष बहुत विशाल है। श्रद्धालु मन्दिर में पूजा करने के बाद पीपल के वृक्ष की पूजा अवश्य करते हैं। इस वृक्ष को देखने से अनुमान लगता है कि यहाँ पहले ऊँचा टीला रहा होगा जिस पर वृक्ष है तथा मन्दिर के स्थान पर गहरी खाईनुमा जगह होगी।

मन्दिर में शिवलिंग की शोभा अद्‌भुत है, जिसके ऊपर नाग अपना फन फैलाये हुए हैं। मन्दिर की छत पर दो बडे-बडे नगाड़े रखे हुए हैं जो सौ साल से भी अधिक पुराने हैं। ऐसा कहा जाता है कि इन नगाड़ों को बजाकर ही नगर निवासियों को मन्दिर के खुलने की सूचना दी जाती थी। अब ये नगाड़े बजने की स्थिति में नहीं हैं।

वास्तुशास्त्र की दृष्टि से मन्दिर की स्थिति उत्तम है। यह मन्दिर पूर्वमुखी है तथा शिवलिंग की स्थापना मुख्य द्वार के एकदम सामने है। मन्दिर परिसर में बैठने से अजीब सी शान्ति का आभास होता है। यही कारण है कि यहां अनेक लोग ध्यानमग्न बैठे देखे जा सकते हैं। सुबह तथा शाम को भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ती है।

मन्दिर की वास्तुशास्त्रीय स्थिति अच्छी होते हुए भी मन्दिर के आस-पास के क्षेत्र को अधिगृहीत करके यहाँ वृक्षारोपण तथा सौन्दर्यीकरण कराया जाय तो यह मन्दिर भिण्ड नगर एवं जिले का ही नहीं अपितु अधिक से अधिक दूर तक के लोगों का श्रद्धा का केन्द्र बन सकता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:२:२ शिवमन्दिर, बोरेश्वर :

भिण्ड-फूप-अटेर मार्ग पर इक्कीस किलोमीटर की दूरी पर मुख्य मार्ग से दक्षिण की ओर तीन किलोमीटर की दूरी पर बोरेश्वर गाँव स्थित है। "यहाँ पर नवीं व दसवीं ईस्वी का गुर्जर प्रतिहार कालीन शिव मन्दिर गुप्तकालीन मन्दिर के भग्नावशेषों पर स्थित है।"[1] मन्दिर चार फीट ऊँचे चबूतरे पर निर्मित है। मन्दिर के मुख्य द्वार के सम्मुख चबूतरे की ऊँचाई दो फीट है। मन्दिर के ग्रह में बड़े आकार का शिवलिंग व नन्दी स्थापित है।

नागर शैली में बने इस मन्दिर की बनावट अपने आपमें एक विशिष्टता लिये हुए है। पंचरथी आधार पर बने इस मन्दिर की दीवारें झुकती चली गई हैं। रथ के कोणों में शिखर तक किसी भी प्रकार का अवरोध नहीं है। मन्दिर के शिखर पर कलश स्थापित हैं।

मन्दिर में सर्दल के मध्य गरूणासीन विष्णु की आकृति को देखने से अनुमान लगाया जा सकता है कि यह मन्दिर भगवान विष्णु का होना चाहिए था। या फिर ऐसा भी हो सकता है, कि किसी विष्णु मन्दिर के अवशेषों को इस शिवमन्दिर निर्माण के समय लोगों ने धार्मिक श्रद्धावश यहाँ जोड़ दिया हो। सम्भतवः इस स्थान पर शिव मन्दिर से पहले विष्णु मन्दिर ही रहा होगा क्योंकि साधारण रूप से ऐसा होता है कि हर मन्दिर की ललार बिन्दु में उसी देवता की प्रतिमा का अंकन होता है जिस देवता या कुल देव हेतु मन्दिर का निर्माण होता है। यह शिवमन्दिर एक गुप्तकालीन मन्दिर के भग्नावशेषों पर

---

१. दैनिक उदगार : गणतन्त्र दिवस एवं भिण्ड जिला विकास विशेषांक १९९३ : त्रियुगी नारायण शर्मा : पृष्ठ २६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निर्मित है और यह गुप्तकालीन मन्दिर विष्णु भगवान का मन्दिर होना चाहिये था।

मन्दिर के मुख्य द्वार के दायीं तथा बायीं तरफ़ परिचारकों सहित गंगा तथा यमुना की सुन्दर नारी रूप में प्रतिमायें अकिंत हैं। इसके बाद दोनों ओर दण्डधारी द्वारपाल अंकित हैं। इनके ऊपर भरवाहकों की प्रतिमाओं का अंकन है तथा उसके बाद बेल-बूटे बने हुए हैं, जो ऊपर से पेन्ट कर दिये जाने के कारण धुंधले हो गये हैं। मन्दिर के द्वार के मध्य में गरूण आसीन भगवान विष्णु की आकृति तथा आस-पास गन्धर्वों का अंकन है।

यह ऐतिहासिक मन्दिर सम्पूर्ण क्षेत्र के लोगों के दिलों में असीम आस्था का केन्द्र बना हुआ है। शिवरात्रि के अवसर पर यहाँ हजारों की संख्या में काँवरें चढ़ाई जाती हैं। इस अवसर पर यहाँ विशाल मेला भी लगता है। इस मन्दिर में चावल चढ़ाने की प्राचीन प्रथा है।

मन्दिर का प्रवेश द्वार पूर्व की ओर है तथा इसमें स्थापित मूर्तियों का मुख भी पूर्व की ओर है, जो स्थापत्यवेद की दृष्टि से शुभ है। ऊँचे चबूतरे पर बने इस मन्दिर पर तीन ओर से चढ़ने के लिये पाँच-पाँच सीढ़ियाँ हैं, यह सीढ़ियाँ विषम संख्या में हैं। जो शुभ हैं।

पूरे मन्दिर का निरीक्षण करने पर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि यह मन्दिर वास्तुशास्त्र की दृष्टि से एकदम उचित है, शुभ है। यही कारण है कि नवीं तथा दसवीं ईस्वी का बना यह शिव मन्दिर आज भी श्रद्धालुओं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के दिलों में आस्था का केन्द्र बना हुआ है तथा यह शिवमन्दिर प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक अपनी सुन्दरता तथा भव्यता का प्रतीक माना जाता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:२:३ नन्दीश्वर मन्दिर बूढ़ासोंसरा :

भिण्ड जिला मुख्यालय से भिण्ड-भाण्डेर मार्ग पर पचपन किमी० दूर कस्बा लहार पड़ता है। लहार तहसील से भिण्ड-झांसी रोड पर देवरी बस स्टैण्ड पड़ता है। देवरी बस स्टैण्ड से तीन किलोमीटर दूर पैदल मार्ग द्वारा मन्दिर तक पहुँचते हैं। यहाँ पर नन्दीश्वर का विशाल प्राचीन मन्दिर बना हुआ है। इस जगह महाशिवरात्रि के अवसर पर विशाल मेला लगता है तथा काँवरें भी चढ़ाई जाती हैं।

बूढ़ासोंसरा ग्राम लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व आबाद ग्राम था, मगर आज यह वीरान पड़ा है। वर्षा काल में मिट्टी के टीलों से प्राप्त होने वाले बर्तन तथा ईंट व अन्य सामग्री यहाँ पर गाँव होने का संकेत देती हैं। यहाँ से प्राप्त होने वाली ईंटे १२ × ६ × ३ इंच के आकार की हैं।

कहा जाता है कि इस मन्दिर का निर्माण 'वीर सिंह बुन्देला' ने करवाया था। वीर सिंह बुन्देला अकबर के समकालीन था। जहाँगीर की मित्रता से उसने अपने को बुन्देल खण्ड का प्रबल शासक बना लिया। यह मन्दिर लगभग ५० × ५० × १५ फीट के आकार के पक्के अहाते में बना हुआ है।

मन्दिर का द्वार पूर्व दिशा में है। मन्दिर की दीवारें बहुत मोटी हैं। गर्भग्रह में तल पर भगवान शंकर का दो फुट ऊँचा तथा दो फुट मोटा शिवलिंग अवस्थित है। द्वार पर बाहर की ओर नन्दी बना है। जनश्रुति के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुसार एक बार पुजारी जी ने सफाई करने की दृष्टि से किसी नुकीली चीज से नन्दी को खरोंच दिया उसी स्थान पर घाव हो गया तथा उसमें से रक्त प्रवाहित होने लगा था। घाव तथा रक्त के निशान आज भी नन्दी के शरीर पर मौजूद हैं।

मन्दिर के अन्दर हनुमान भगवान दोनों बाजुओं पर तथा सिरे पर गणपति जी की मूर्ति है। मन्दिर में पूजा-अर्चना हेतु उसी काल से पच्चीस बीघा जमीन लगी चली आ रही है।

यहाँ के लोगों में इस मन्दिर की सामान्य प्रतिष्ठा है। मन्दिर के बाहर भी कोई विशेष चहल-पहल नहीं है। मन्दिर के दक्षिण में कुआँ का होना दोषपूर्ण है परन्तु इसके सिरे पर हनुमान व गणेश भगवान की प्रतिमा स्थापित होने के कारण इस दोष का निवारण हो जाता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:२:४ हरिहरेश्वर शिव मन्दिर आलमपुर :

भिण्ड जिला मुख्यालय से लगभग सौ किलोमीटर की दूरी पर आलमपुर स्थित है। आलमपुर में हरिहरेश्वर मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण अहिल्याबाई के द्वारा ही कराया गया है।

हरिहरेश्वर मन्दिर उस स्थान पर स्थित है, जहां से थोड़ी सी ही दूरी पर मल्हार राव होलकर की जीवन लीला समाप्त हो गयी थी। आलमपुर की प्राचीन बस्ती जिसे 'बेरूनाखेरा' कहा जाता है।

मन्दिर का मुख्य द्वार पूर्व की ओर है तथा पूर्व दिशा में ही नदी बह रही है। यह मन्दिर छत्री से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मन्दिर के अन्दर गर्भग्रह में शिवलिंग प्रतिस्थापित है। चारों तरफ आलों में अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियाँ प्रतिस्थापित हैं, जिनमें बटुक भैरव की मूर्ति, गणेश-गौरी तथा विश्वनाथ जी की मूर्ति, विष्णु-लक्ष्मी जी की मूर्ति तथा गणेश जी की मुख्य मूर्ति हैं। इसमें सुन्दर परिक्रमा मार्ग है।

मुख्य मन्दिर की नैश्रृत्य दिशा में माता जगदम्बा का मन्दिर है। यह मन्दिर पूर्वमुखी है जिसमें माता जगदम्बा की अष्ट भुजा वाली प्रतिमा प्रस्तर पर उत्कीर्ण है। यह मन्दिर बाद का बना बताया जाता है। इस मन्दिर में अन्य मूर्तियां देवी माता की ही हैं। इन्हें खो-खो मइया के नाम से पुकारा जाता है। इसकी तली में छोटा सा खांचा बना है जिसमें चरणामृत भरा रहता

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है। किवदंती है कि खाँसी के मरीज इस जल को एक सप्ताह तक लगातार ग्रहण करें तो वह ठीक हो जाता है।

इस मन्दिर के पश्चिम में कुआँ है तथा पश्चिमी दिशा में ही समाधि स्थल बना हुआ है। इस मन्दिर में हिन्दू शिल्पकला का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। वर्तमान में मातृभूमि सेवा समिति के सहयोग से नवरात्रि काल में आयोजन होते हैं तथा मेंला भी लगता है।

इस मन्दिर के उचित रख रखाव एवं पूजा-अर्चना के लिये ८ बीघा जमीन होलकर शासन काल से लगी चली आ रही है। अब उस भूमि को पुजारी जी ने बेच डाला जिसका प्रकरण अदालत में चल रहा है।

यहाँ का निरीक्षण करने के बाद स्पष्ट होता है कि इसमें कई वास्तुशास्त्रीय दोष हैं, जैसे पश्चिम में समाधि और कुआँ होना। समाधि का मन्दिर पर पूरा दुष्प्रभाव पड़ रहा है। प्रवेश द्वार पूर्वमुखी होते हुए भी सुन्दर नहीं है, जो आने वाले दर्शनार्थियों में प्रसन्नता का संचार करनें में समर्थ नही है। इसके आस-पास वृक्षों का अभाव सा है। यहाँ पर यज्ञ मण्डप की भी समुचित ब्यवस्था नहीं है।

मन्दिर के अन्दर व बाहर के सभी वास्तुशास्त्रीय दोषों का निवारण असम्भव है, परन्तु अधिकांश दोषों का निवारण हो सकता है, जिनमें मन्दिर के ईशान में कुआँ या तालाब का निर्माण कराया जाय जो वृक्षों से घिरा हो तथा मन्दिर के मुख्य द्वार पर गणेश जी की प्रतिमा स्थापित कर दी जाय।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिला - भिण्ड

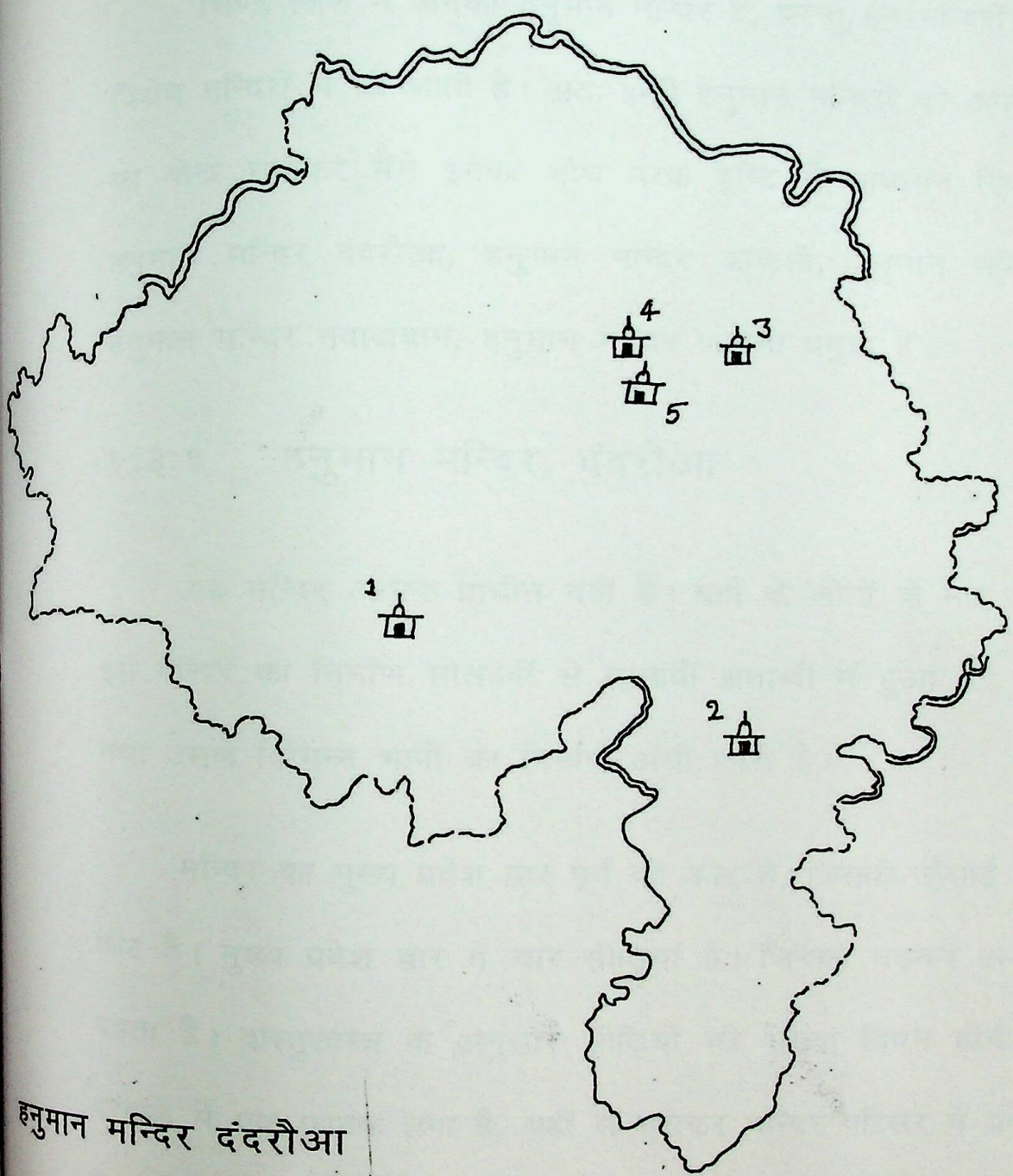

1. हनुमान मन्दिर दंदरौआ
2. हनुमान मन्दिर कांकसी
3. हनुमान मन्दिर डिड़ी
4. हनुमान मन्दिर नवादाबाग
5. हनुमान मन्दिर जामना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:३ भिण्ड जिले के प्राचीन हनुमान मन्दिर :

भिण्ड जिले में अनेकों हनुमान मन्दिर हैं, परन्तु इन मन्दिरों की गिनती विशेष मन्दिरों में की जाती है। अतः इन्ही हनुमान मन्दिरों को अपने अध्ययन का केन्द्र मानकर मैंने इनका शोध परक दृष्टि से अध्ययन किया, जिनमें हनुमान मन्दिर दंदरौआ, हनुमान मन्दिर कॉकसी, हनुमान मन्दिर डिड़ी, हनुमान मन्दिर नवादाबाग, हनुमान मन्दिर जामना प्रमुख हैं।

५:३:१ हनुमान मन्दिर, दंदरौआ :

यह मन्दिर अधिक प्राचीन नहीं है। यहाँ के लोगों के मत के अनुसार इस मन्दिर का निर्माण सोलहवीं से सत्रहवीं शताब्दी में हुआ है। पूरे मन्दिर तथा उसके विभिन्न भागों का निर्माण अभी जारी है।

मन्दिर का मुख्य प्रवेश द्वार पूर्व की ओर है, जिसकी ऊँचाई लगभग ६ फीट है। मुख्य प्रवेश द्वार में चार सीढ़ियां है। जिनको चढ़कर अन्दर जाना पड़ता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार सीढ़ियों की संख्या विषम होनी चाहिये। दरवाजे में एक फाटक लगा है, यहीं से घुसकर मन्दिर परिसर में प्रवेश करते हैं। परिसर के बीच में प्रमुख मन्दिर है, जिसमें रामभक्त हनुमान जी की प्रतिमा सादर स्थापित है। यह प्रतिमा दक्षिणमुखी है तथा यह अपने आप में अनोखी है, क्योंकि यह सखी रूप में है, जो नृत्य करते हुए प्रसन्न मुद्रा में हैं। विभिन्न विद्वानों का मत है कि इस प्रकार की प्रतिमा अन्यत्र कहीं भी देखने को नहीं मिलती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्दिर के वर्तमान महन्त[1] के अनुसार "इस मन्दिर की मूर्ति की स्थापना १५३२ ई० में हुई है।" जनश्रुति के अनुसार प्राचीन काल में यह मन्दिर चारों ओर से तालाब से घिरा हुआ था। मुख्य मन्दिर के चारों ओर परिक्रमा के लिये स्थान छोड़ा गया है। जहाँ श्रद्धालु लोग परिक्रमा करते हैं। यहाँ पर चने और खीलदाने को प्रसाद के रूप में चढ़ाने की प्रथा है।

मुख्य मन्दिर के चारों ओर छोटे-छोटे और भी मन्दिर हैं, जो देखने से नवीनतम बने हुए प्रतीत होते हैं। उसी परिसर में दक्षिण की ओर भगवान श्री राम जानकी का मन्दिर है। यह मन्दिर उत्तरमुखी है, इसमें राम, लक्ष्मण तथा सीता की प्रतिमायें स्थापित हैं। इस मन्दिर के द्वार पर श्री श्री १००८ हनुमान जी के सेवक बाबा पुरूषोत्तम दास जी लिखा हुआ है, जो मन्दिर के तत्कालीन महन्त थे। हनुमान मन्दिर के बगल में शंकर भगवान का मन्दिर भी है, जिसका मुख पूर्व की ओर है। मुख्य मन्दिर के आग्नेय दिशा में पीपल का वृक्ष है, जो वृहदवास्तुमाला[2] के अनुसार अशुभ फलदायी है। इस वृक्ष के चारों ओर चबूतरा बना हुआ है। चबूतरे के चारों ओर पक्का फर्श है। इसी वृक्ष के नीचे यात्रियों के ठहरने के लिये कुछ कमरे हैं।

---

१. श्री श्री महन्त रामदास जी महाराज, एम०ए० (संस्कृत) आचार्य (ब्याकरण तथा ज्योतिष)

२. चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला -१२ "बृहद्धास्तुमाला" सम्पादक-डा० ब्रह्मानन्द त्रिपाठीः स्व० पं० राममनोहर द्विवेदीः चौखम्बा सुरभारती प्रकाशनः वाराणसीः पंचम संस्करणः १९९५ः पृष्ठ-१५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महादेव मन्दिर के ठीक सामने संगमरमर के पत्थरों से संकटाब्यूह चक्र बना हुआ है। ऐसा बताया जाता है कि जो व्यक्ति बिना सोचे समझे बिना उलझे एक ही प्रयास में इस ब्यूह रचना को पार कर जाता है वह कभी संकट में नहीं पड़ता, ऐसा हनुमान जी का वरदान हैं। मुख्य मन्दिर के थोड़ी दूरी पर महर्षि जी विराजते हैं तथा उपासना काल के बाद यहीं पर विश्राम करते हैं। भक्तजनों में आर्शीवाद लेने की होड़ लगी रहती है, जो मुख्य मन्दिर के उत्तर की दिशा में है। सन्त निवास से पूर्व की ओर मैदान में पूर्व महन्त श्री श्री १००८ पुरूषोत्तम दास जी की समाधि है यह एक चबूतरा के रूप में है जो संगमरमर का बना हुआ है। इस चबूतरें पर ब्रह्मलीन सन्त की खड़ाऊँ रखी है। यह समाधि स्थल वास्तुशास्त्र की दृष्टि से अशुभ फलदायी है। मन्दिर परिसर के अन्दर कोई समाधि या कब्र या पशुओं के अवशेष नहीं होनें चाहिये। मन्दिर के पश्चिम में गौशाला है, जिसमें लगभग ५० गायें हैं, जो वास्तुशास्त्र की दृष्टि से शुभ फलदायी है। मुख्य मन्दिर के उत्तर की दिशा में नवीनयज्ञ शाला बन रही है। इसके चारों ओर काफी मैदान है, इसके बगल में बगीचा भी लगाया जा रहा है, यह बगीचा और यज्ञशाला दोनों ही मन्दिर के लिये शुभफलदायी हैं। मन्दिर परिसर के बाहर उत्तर दिशा में १००' × १००' का तालाब है, जिसे हनुमान कुण्ड कहा जाता है। इस तालाब को पक्का किया जा रहा है। यह हनुमान कुण्ड इस मन्दिर के लिये वास्तुशास्त्र की दृष्टि से शुभ फलदायी है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दंदरौआ सरकार का यश दूर-दूर तक फैल रहा है तथा मन्दिर का निर्माण भी सतत् जारी है। प्रति मंगलवार को श्रद्धालु उमड़ पड़ते हैं तथा समय-समय पर कीर्तन आदि का आयोजन होता रहता है। यहाँ की संस्कृत पाठशाला में विद्यार्थी दूर-दूर से विद्या अध्ययन के लिये आते हैं। इतना सब होते हुए भी मन्दिर का उतना विकास नहीं हो रहा है, जितना होना चाहिए था। कहीं न कहीं इस मन्दिर में श्रद्धालुओं को एक सूनापन सा महसूस होता रहता है, जबकि उन्हें अति प्रसन्नता होनी चाहिये। यदि यहाँ पर वास्तुशास्त्रीय दोषों का निवारण करने का प्रयत्न किया जाय तो इस मन्दिर का और भी द्रुत गति से विकास होगा तथा श्रद्धालुओं को अति प्रसन्नता तथा शान्ति का अनुभव होने लगेगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:३:२ हनुमान मन्दिर काँकसी :

भिण्ड जिला मुख्यालय से लगभग ७० किलोमीटर की दूरी पर यह मन्दिर लहार तहसील में बिलकुल निर्जन रमणीक स्थान पर स्थित है। भिण्ड जिले के चमत्कृत हनुमान मन्दिरों में काँकसी मन्दिर का स्थान प्रथम है। अपने भक्तों या श्रद्धालुओं की आकांक्षा पूर्ण करने के कारण ही यह चमत्कारी सिद्ध मूर्ति कांक्षी या काँकसी हनुमान के नाम से विख्यात हुई।

"इस मूर्ति की स्थापना दिल्लीश्वर पृथ्वीराज चौहान ने सन् ११८२ ई० में चन्देल नरेश परिमर्दिदेव द्वितीय के सामन्त सिरसागढ़ के मलखान को विजित करने की कामना से कराई थी।"[१] दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान की विजय आकांक्षा को पूर्ण करने के लिये उनके कुल पुरोहित श्री गुरूराम ने इस काँक्षी (काँकसी) हनुमान की मूर्ति की प्रतिस्थापना कराई। यद्यपि इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिये कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है, फिर भी जनश्रुति के सहारे भी महत्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी हो ही जाती है।

मूर्ति की स्थापना के बाद इस क्षेत्र में घने जंगल के कारण सैकड़ों वर्षों तक यह क्षेत्र विस्मृत और उपेक्षित बना रहा। यहाँ की जानकारी जब चरवाहों ने फरदुआ ग्राम के एक व्यक्ति को दी, तो उन्होने स्थानीय लोगों की सहायता से इस स्थान को स्वच्छ तथा सुगम बनाया।

---

१. चम्बल के आस पासः डा० कालीचरण स्नेही : रघुवीर सहाय श्रीवास्तव द्वारा लिखित लेख कांक्षी हनुमान मन्दिर पृ० २११

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आज इस स्थान पर लगभग ६५ फीट ऊँचा भव्य मन्दिर बना हुआ है। आस-पास के ही नहीं वरन् दूर-दराज के इलाकों से सैकड़ों श्रद्धालु प्रत्येक मंगलवार तथा शनिवार को अपनी मनोकामना पूर्ति हेतु आते हैं। अतः यहाँ पर शनिवार तथा मंगलवार के दिन मेले जैसा माहौल बन जाता है। प्रतिवर्ष बड़े मंगल को यहाँ पर विशाल मेला लगता है।

मन्दिर का मुख्य द्वार उत्तर दिशा में है। मन्दिर से पूर्व दिशा में मृगा नदी बह रही है। मन्दिर में पहुँचनें के लिये तीन सीढ़ियाँ चढ़कर जाना पड़ता है। हनुमान भगवान की प्रतिमा का मुँह नैऋत्य दिशा में है। जलापूर्ति हेतु मन्दिर में दो कुएँ है जिनमें एक मन्दिर की उत्तरी दिशा में तथा दूसरा पश्चिमी दिशा में है। मन्दिर की निर्माण शैली नागर है। मन्दिर के निर्माण में बलुआ पत्थर का प्रयोग अधिक मात्रा में हुआ है। मन्दिर की दीवारों में टाइल्स चिपकाये गये हैं।

सम्पूर्ण मन्दिर का वास्तुशास्त्रीय निरीक्षण करने के उपरान्त निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि पूरा मन्दिर एक कमी को छोड़कर वास्तुशास्त्र के अनुरूप ही बनाया गया है वास्तुशास्त्रीय दोष के रूप में मन्दिर की पश्चिम दिशा में स्थित कुँआ है जिसका कुछ हद तक निराकरण दूसरे कुएं से हो जाता है। मन्दिर में उपस्थित मुख्य वास्तुशास्त्रीय शुभलक्षणों में नदी का पूर्व दिशा में होना, मन्दिर का ढ़ाल उत्तर की ओर होना, भगवान की प्रतिमा का मुँह नैऋत्य दिशा में होना है। यही कारण है कि यह मन्दिर प्राचीन काल से आज तक लोगों में श्रद्धा का केन्द्र बना हुआ है। आस-पास के ही नहीं वरन्

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभिन्न स्थलों से यहाँ पर लोग अपनी मंशा लेकर आते हैं तथा उनके पूर्ण होने की कामना हनुमान मूर्ति से करते हैं। इसीलिये इस मन्दिर की गणना चमत्कारिक मूर्ति के रूप में की जाती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:३:३ हनुमान मन्दिर डिड़ी :

भिण्ड जिला मुख्यालय से उत्तर दिशा में लगभग ७ किलोमीटर की दूरी पर सड़क के किनारे यह मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर की प्राचीनता के बारे में यहाँ के पुजारी जी बताते हैं कि भगवान हनुमान की मूर्ति श्रृंगी ऋषि के जमाने की है।

मन्दिर दक्षिणमुखी है, जबकि हनुमान भगवान की मूर्ति का मुख नैऋत्य दिशा में है। मन्दिर को देखने से अनुमान लगता है कि प्राचीन समय में इसको ऊँचे से टीले पर बनाया गया होगा। आज की स्थिति में मुख्य मन्दिर में पहुँचने के लिये पश्चिमी दिशा में तेईस सीढ़ियाँ चढ़कर जाना पड़ता है। इस मन्दिर की मुख्य विशेषता यह है कि यहाँ की मूर्ति में भगवान हनुमान जी शनि देव को पैरों तले दबाये हैं। इस तरह की प्रतिमा शायद की कहीं अन्य देखने को मिले।

मन्दिर में नवीन निर्माण के रूप में मुख्य मन्दिर की दक्षिणी दिशा में देवी माँ का नवीन मन्दिर बनाया गया है। इस मन्दिर में अष्टभुजा वाली माँ दुर्गा देवी की पूर्व मुखी प्रतिमा स्थापित की गयी है तथा चारों तरफ सुन्दर परिक्रमा मार्ग भी है। यह मन्दिर नीचे बने हुए कमरे की छत पर बना हुआ है।

जलस्रोत के रूप में दक्षिण दिशा में एक पुराना कुआँ है। दक्षिणी दिशा में ही अर्द्धनिर्मित कमरे हैं। मन्दिर से पूर्वी दिशा में पीपल का वृक्ष है। प्रति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हनुमान मन्दिर डिड़ी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मंगलवार को यहाँ भीड़-भाड़ रहती है तथा बड़े मंगल को विशाल मेला लगता है।

काफी ऊँचाई पर स्थित यह मन्दिर काफी सुन्दर है। मन्दिर परिसर एकदम हवादार है। फर्श भी बड़ा सुन्दर तथा नक्काशीदार बनाया गया है। यहाँ का परिक्रमा स्थल भी दर्शनीय है।

इतना सब होते हुए भी यह मन्दिर जनमानस में अधिक श्रद्धा का केन्द्र नहीं बन पाया है। जिसका कारण इसमें पाये जाने वाले वास्तुशास्त्रीय दोष ही हैं। इसमें मुख्य दोष स्वर्गीय श्री विशम्भर दास जी की समाधि का है तथा दूसरे प्रमुख दोष के रुप में देवी माँ के मन्दिर में नीचे कमरा का बना होना है, जिसमें पुजारी जी का निवास स्थान है। पूरे मन्दिर का ढ़ाल दक्षिण की ओर है तथा पेयजल की व्यवस्था भी दक्षिण में है। इसके कुछ वास्तुशास्त्रीय दोषों का निवारण बड़ी सरलता से कराया जा सकता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:३:४ हनुमान मन्दिर नवादा बाग :

भिण्ड जिले के नवादाबाग में यह मन्दिर स्थित है। इसका निर्माण भदौरिया राजपूतों ने करवाया। मन्दिर उत्तरमुखी है। मन्दिर में निर्माण दक्षिणी दिशा में हुआ है। यह मन्दिर काफी प्राचीन है।

मन्दिर की पूर्वी दिशा में पुराना तालाब है तथा ईशान कोण पर पानी की टंकी बनी है। ईशान कोण में ही पीपल का प्राचीन वृक्ष है। मुख्य मन्दिर, मन्दिर-परिसर के दक्षिणी भाग में है, जिसमें हनुमान भगवान की उत्तरमुखी भव्याकर्षक प्रतिमा स्थापित है। यहाँ के पुजारी इस प्रतिमा को सदैव सजाकर रखते है तथा सुबह-शाम भजन-पूजन करते हैं।

मुख्य मन्दिर की पश्चिमी दिशा में विष्णु मन्दिर है। यह मन्दिर पूर्वमुखी है, जिसमें पूर्वमुखी भगवान विष्णु तथा माता लक्ष्मी की सुन्दर प्रतिमायें विराजित हैं। इसी मन्दिर के सामने मन्दिर के पुजारी जी के लिये स्थान है यहीं पर पुजारी जी विश्राम करते हैं।

मन्दिर के वास्तुशास्त्रीय शुभ लक्षणों में ईशान दिशा में पानी की टंकी का होना तथा पूर्वी दिशा में पीपल का वृक्ष तथा पानी का तालाब जो पूर्व में है, शुभ है। इन्ही वास्तुशास्त्रीय शुभ लक्षणों के कारण ही यह मन्दिर आज भी लोगों की श्रद्धा का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है। मंगलवार तथा शनिवार को यहाँ काफी भीड़ हो जाती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi; Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

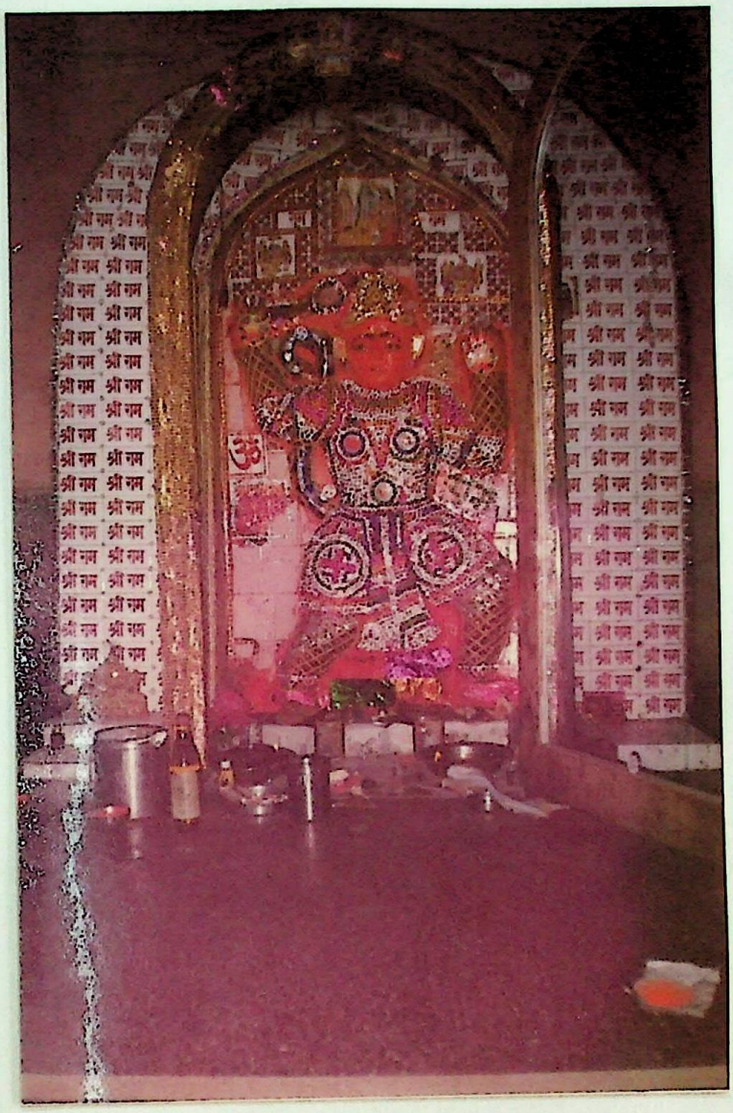

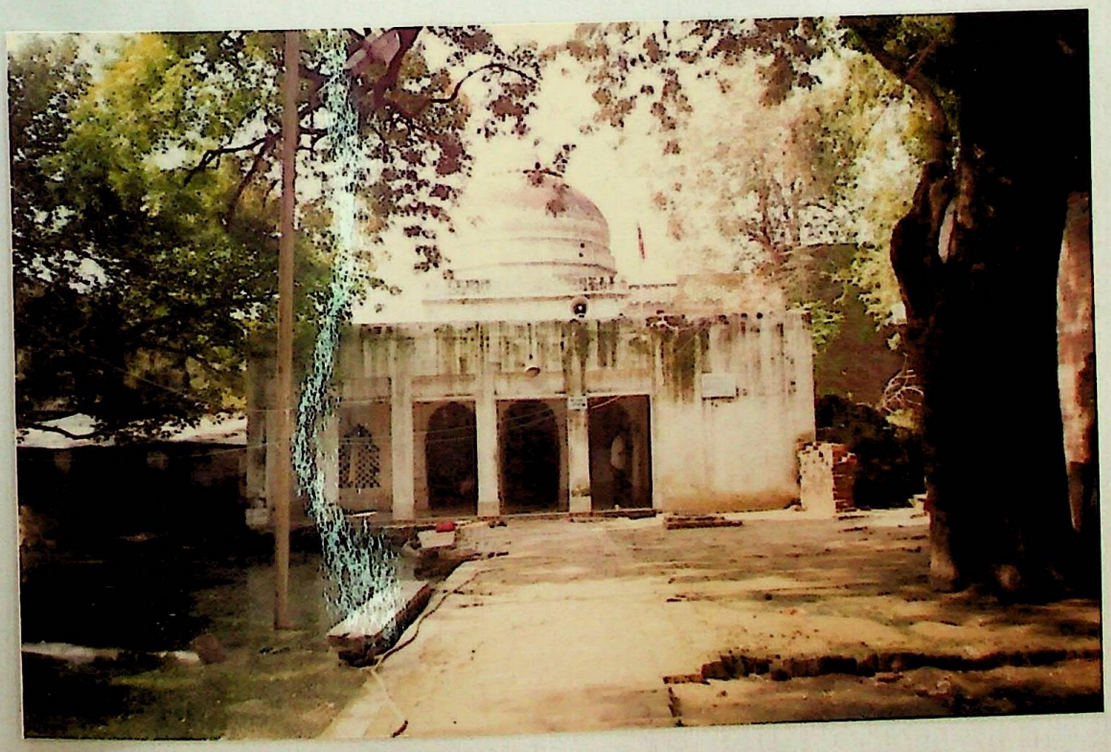

हनुमान मन्दिर नवाडा बाग

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्राचीनता के साथ-साथ इस मन्दिर में नवीनता की क़मी है। मन्दिर में सुन्दरता का अभाव है। यदि मन्दिर के मुख्य द्वार को सुन्दर तथा बड़ा बना दिया जाये, जिस पर गणेश प्रतिमा के साथ-साथ फूल-पत्ती की आकृतियों से सुन्दर बनाया जाये तथा मन्दिर परिसर स्वच्छ बनाया जाय तथा इसके साथ गन्दे पानी के तालाब को बन्द कर दिया जाये। तो निश्चित ही यह मन्दिर अधिक से अधिक श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करेगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:३:५ जामना का हनुमान मन्दिर :

भिण्ड नगर से दक्षिणी-पूवी दिशा की ओर लहार चौराहे के पास कलेक्ट्रेट कार्यालय का नवनिर्मित विशाल भवन है। यहां से होकर वॉयपास रोड़ निकलता है, जो भिण्ड से इटावा एवं ग्वालियर नगरों को जाता है। लहार चौराहे के पास स्थित पुलिस लाइन वॉयपास के थोड़ा सा आगे जामना ग्राम के लिये लगभग दो किमी० पक्की सड़क बनी हुई है। इसी मार्ग पर जामना ग्राम के पश्चिमोत्तर दिशा में हनुमान जी का मन्दिर है। यह मन्दिर "जामना का हनुमान मन्दिर" के नाम से प्रसिद्ध है। नवीन कलेक्ट्रेट भवन से पैदल मार्ग द्वारा लगभग एक किमी० की दूरी पर यह मन्दिर स्थित है।

प्रत्येक मंगलवार एवं शनिवार को यहाँ श्रद्धालुओं की काफी भीड़ होती है और एक छोटा मेला जैसा दृश्य दृष्टिगोचर होता है। अब इस मन्दिर के आस-पास बस्ती भी बस गयी है। प्रमुख रूप से यह स्थान हनुमान मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है, लेकिन यहाँ पर अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियाँ भी मन्दिर परिसर में स्थापित हैं।

श्री पुरोहित जी[1] से प्राप्त जानकारी के अनुसार "यह बात प्राचीन काल की है, जिस समय यातायात का साधन बैलगाड़ी हुआ करती थी। उस समय जामना ग्राम के एक पंण्डित जी अपने गाँव में मन्दिर बनवाने की दृष्टि से हनुमान भगवान की मूर्ति बैलगाड़ी पर लादे हुए आ रहे थे। रास्ते में यह

---

१. श्री रामेन्द्र कुमार पुरोहित उम्र - ५६ वर्ष

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

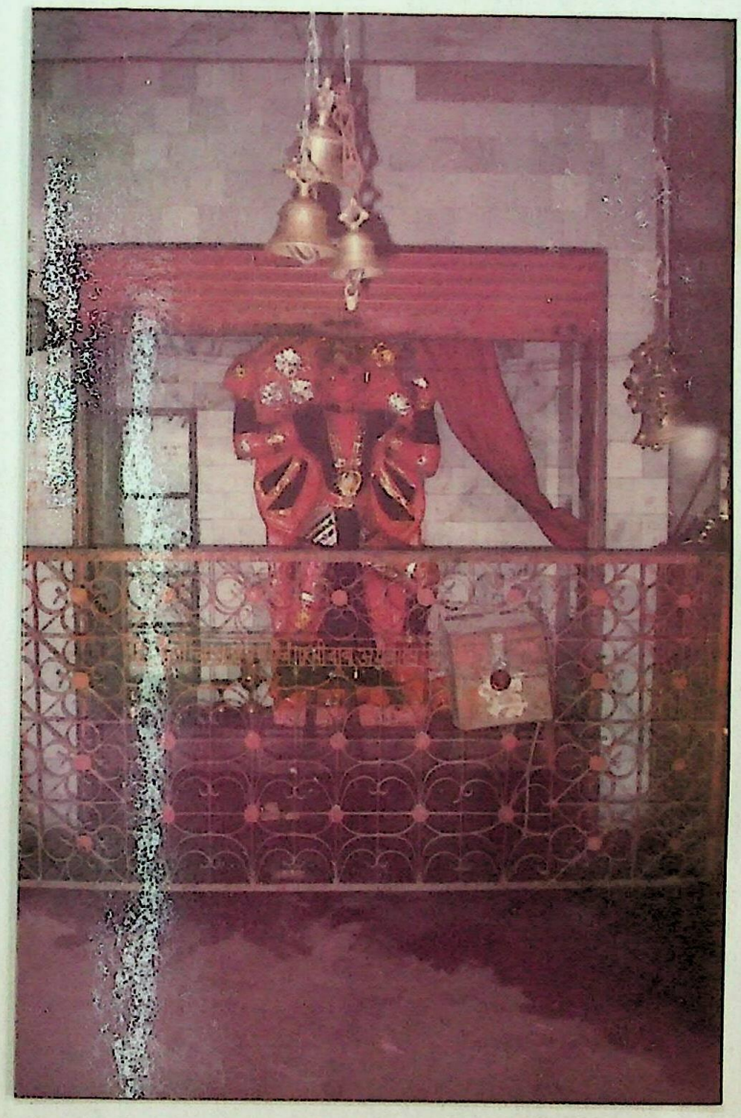

हनुमान जी जामना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थान मिला, यहाँ पर एक छोटा सा शिवमन्दिर था, पास में ही कुआँ था। विश्राम के लिये यह जगह उचित समझकर पण्डित जी ने अपनी गाड़ी को रोककर यहां पर विश्राम किया और अपने साथ लाये हुए भोजन को करने के उपरान्त पण्डित जी ने अपने गाँव की ओर चलने की इच्छा से बैलों को अपनी गाड़ी में लगाया। परन्तु यह क्या ? गाड़ी आगे बढ़ने का नाम ही नहीं ले रही थी। पण्डित जी ने आस-पास के लोगों से मदद माँगी। बहुत से लोग गाड़ी को आगे बढ़ाना तो दूर हिलाने में भी सफल नहीं हो सके, क्योंकि हनुमान भगवान को तो यही स्थान अच्छा लगा था। उसके बाद हनुमान जी की यह प्रतिमा विधि-विधान के अनुसार इसी जगह पर स्थापित कर दी गई, तब से आज तक हनुमान भगवान इसी जगह पर विराजमान हैं।

अवधेश कुमार (उम्र-५५ वर्ष, निवासी भिण्ड) से प्राप्त जानकारी के अनुसार - "यह जगह जामना सेंथियन जी की बगिया के नाम से प्रसिद्ध थी।" आज शोधार्थिनी को बगिया के नाम पर दो-चार पेड़ ही दिखाई दिये। जानकारी करने पर पता चला कि बगिया वाली भूमि बेच दी गयी है, जिसका हनुमान मन्दिर परिसर सुरक्षित है।

इस मन्दिर का प्रवेश द्वार दक्षिण की ओर है। चारों तरफ छोटी सी परिधा के अन्दर घुसने पर मन्दिर में प्रवेश के लिये तीन सीढ़ियां बनी है, जो जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं। सीढ़ियों के बाद एक बहुत बड़े हाल में हनुमान जी की विशाल मूर्ति स्थापित है। इस मूर्ति की ऊँचाई लगभग आठ फीट होगी। इस बड़े हाल के अन्दर हनुमान जी का छोटा सा मन्दिर बना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्दिर के ईशान में निर्मित प्राचीन कुआँ

CC0. Maḥarishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हुआ है। यह प्रतिमा दक्षिणमुखी है। हनुमान मन्दिर के पीछे एक चबूतरे के (जो लगभग १०' × १०' का होगा) मध्य में शिवलिंग तथा पास में नन्दी महाराज स्थापित हैं। जो स्थापत्यवेद की दृष्टि से ठीक हैं। शिवलिंग के पूर्व में सिंहारुढ़ दुर्गा माँ एवं पश्चिम में माँ पार्वती, दायीं ओर ब्रह्मा जी, बायीं ओर गणेश जी सफेद संगमरमर से निर्मित हैं, जो स्थापत्य वेद की दृष्टि से उपयुक्त है। हॉल का एक दरवाजा पूर्व की ओर खुलता है। पूर्व में पीपल का एक विशाल वृक्ष है, जिसका चबूतरा पक्का है। यह वृक्ष स्थापत्य वेद की दृष्टि से बिल्कुल उचित है। जैसा कि वृहदाक्तुमाला[1] में लिखा है –

"अश्वत्थः पूर्वतोधन्यो दक्षिणास्यामुदुम्बरः ।
न्यग्रोधः पि ये श्रेष्ठः प्लाक्षोऽप्युत्तरतः शुभः ।। ७१
न्यग्रोधः पूर्वतोवर्ज्यो दक्षिणे प्लक्ष एव च ।
अ च्थः पश्चिमे भागे ह्यत्तरे चाप्युदुम्बरः ।। ७२

पूर्व में पीपल का वृक्ष, दक्षिण में गूलर, पश्चिम में बरगद और उत्तर में पर्कटी (पाकड़) का वृक्ष उत्तम रहता है। इसके विपरीत पूर्व में बरगद, दक्षिण में पाकड़, पश्चिम में पीपल और उत्तर में गूलर का वृक्ष वर्जित है। ७१-७२।"

---

१. चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला १२ "बृहद्धास्तुमाला" सम्पादक डा० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी : स्व० रामनिहोर द्विवेदी : चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन : वाराणसी : पंचम संस्करण : १९९५ : पृष्ठ – १५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्दिर के उत्तरी कोने में मन्दिर के प्रमुख पुजारी का निवास है। आग्नेय कोण पर एक कमरा है जिसका निर्माण उल्फतराय शिवहरे (गल्लामण्डी, भिण्ड) ने संवत् २०४८ में कराया है। इस मन्दिर के पश्चिम में बहुत पुराना कुआँ है, जिस पर चढ़ने के लिये दो तरफ से पाँच-पाँच सीढ़ियाँ हैं, जो विषम संख्या में हैं। इस कुएं की ईंट ककइया है। यह कुआँ टूट-फूट रहा है, परन्तु प्राचीन काल से आज तक इस कुएं का जल शीतल और मीठा है।

अतः इस पूरे मन्दिर पर अध्ययन करने से पता लगता है कि स्थापत्य वेद के अनुसार प्राचीन समय में इस मन्दिर में कुआँ पश्चिम दिशा के स्थान पर ईशान दिशा में होना चाहिये था। ऐसा अनुमान लगता है कि केवल कुएं की गलत दिशा में होने के कारण प्राचीन मन्दिर जीर्ण-शीर्ण होता गया। पर अब वर्तमान समय में प्राचीन मन्दिर के स्वरूप को एकदम परिवर्तित कर दिये जाने के कारण प्राचीन मन्दिर की स्थिति का अनुमान लगाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव भी हो गया है। पर वर्तमान समय में लोगों को स्थापत्य वेद की जानकारी न होने के कारण इसके निर्माण में बहुत सी कमियाँ रहना स्वाभाविक है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिला - भिण्ड

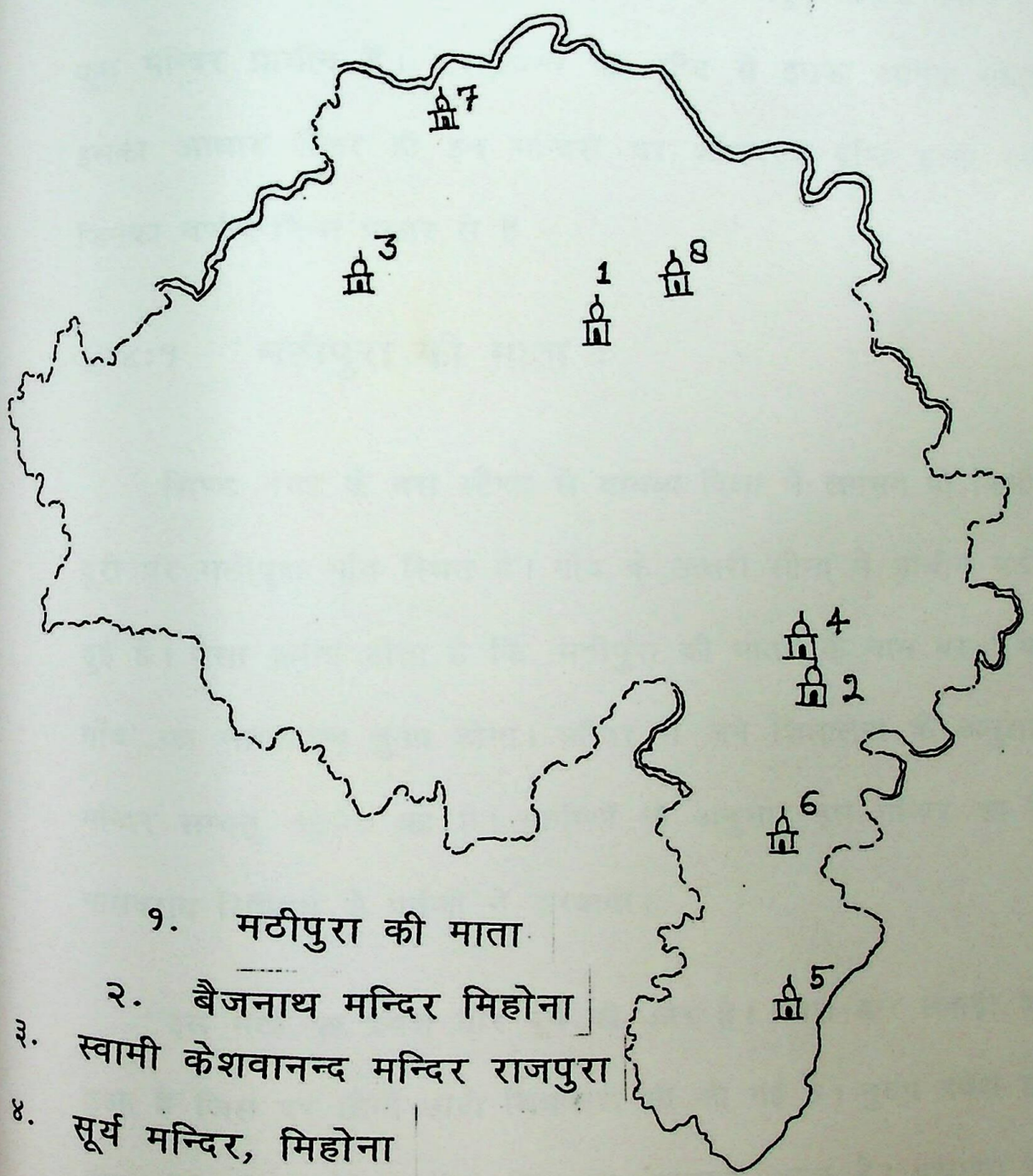

१. मठीपुरा की माता

२. बैजनाथ मन्दिर मिहोना

३. स्वामी केशवानन्द मन्दिर राजपुरा

४. सूर्य मन्दिर, मिहोना

५. मलखान का मन्दिर रेंहकुलादेवी

६. मंगलादेवी मन्दिर लहार

७. चामुण्डादेवी मन्दिर अटेर

८. रामजानकी मन्दिर एस०ए०एफ०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:४ अन्य मन्दिर

भिण्ड जिले में इन मन्दिरों के अतिरिक्त और भी ऐसे अनेकों मन्दिर हैं, जो लोगों की श्रद्धा का प्रमुख केन्द्र हैं। इनमें कुछ मन्दिर नवीन हैं तथा कुछ मन्दिर प्राचीन हैं। वास्तुशास्त्र की दृष्टि से इनका अधिक महत्व है। इसका आधार लेकर ही इन मन्दिरों पर शोधपरक दृष्टि ड़ाली गयी है, जिनका वर्णन निम्न प्रकार से है -

५:४:१ मठीपुरा की माता :

भिण्ड नगर के बस स्टैण्ड से वायव्य दिशा में लगभग दो किमी० की दूरी पर मठीपुरा गाँव स्थित है। गाँव के उत्तरी सीमा में प्राचीन मठी बनी हुई है। ऐसा प्रतीत होता है कि 'मठीपुरा की माता' के नाम पर ' मठीपुरा गाँव' का नामकरण हुआ होगा। मन्दिर में लगे शिलालेख के अनुसार यह मन्दिर सम्वत् १६२० का है। ग्रामीणों के अनुसार इस मन्दिर का निर्माण माधवराव सिंधिया के पूर्वजों ने करवाया।

इस मठी का प्रवेश द्वार पूर्व की ओर है। प्रवेश द्वार लकड़ी का बना हुआ है जिस पर छोटी-छोटी चित्रकारी भी की गई है। मुख्य प्रवेश द्वार पर तीन सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद छोटा सा बरामदा आता है। बरामदा के बाद नन्दी महाराज पश्चिम को मुख किये हुए विराजमान हैं। पत्थर के शिला खण्ड से बना यह नादिया चार फीट लम्बा और डेढ़ फीट ऊँचा तथा डेढ़ फीट मोटा होगा। नन्दी महाराज का भी छोटा सा मन्दिर बना हुआ है, जिस पर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मठीपुरा की माता का मन्दिर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

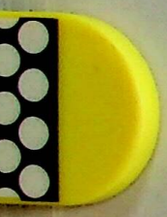

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुन्दर कलाकृति निर्मित है। नन्दी महाराज का मन्दिर एक छोटी सी छतरी के आकार में है। छतरी में स्थापित इस नादिया का बजन लगभग एक कुन्टल का होगा।

मन्दिर के ब्रह्म स्थान में गौरा-पार्वती का मन्दिर है। पूरे मन्दिर. की लम्बाई तथा चौड़ाई लगभग १०० × १०० फीट होगी, जिसमें पचास फीट तथा इतनी ही चौड़ाई में मठी बनी हुई है, जिसमें चारों ओर से लगभग तीन फीट की ऊँचाई लिये छतदार बराण्डा रूपी परिक्रमा मार्ग बना हुआ है। जिसमें चारों दिशाओं में तीन-तीन द्वार बनाये गये हैं, जिन पर फूल-पत्ती की कलाकृति निर्मित है। इसके चारों ओर लगभग दस से बारह फीट खुली जगह है। उसके बाद ऊँची चहारदीवारी है।

लगभग तीस से पैंतीस फीट चतुराकार में बनी मन्दिर की छत गुम्बदाकार है, जिसकी मन्दिर के अन्दर से ऊँचाई लगभग तीस फीट और बाहर से पचास फीट होगी। इस मन्दिर का निर्माण छोटी-छोटी ईंटों से हुआ है, जिसके बाहर और भीतर चूने का प्लास्टर है। इस मन्दिर के निर्माण में अधिकांशतः लाल पत्थर का प्रयोग किया गया है।

मन्दिर में पूर्व की ओर मुख किये हुए माता पार्वती की भव्याकर्षक प्रतिमा है, जो अपनी गोद में गणेश जी को लिये हुए हैं। गणेश जी पार्वती की गोद में उत्तर की ओर सिर और दक्षिण को पैर किये हुए लेटे हैं। इस प्रकार की अद्‌भुत प्रतिमायें अन्यत्र शायद ही कहीं देखी जा सकती हैं। मन्दिर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

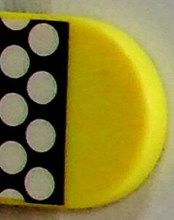

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के ब्रह्म स्थान में शिवलिंग स्थापित है। यह मन्दिर हिन्दू शिल्पकला का उत्कृष्ट नमूना है।

मन्दिर की पूर्व दिशा में दायीं तथा बायीं ओर दो छोटे-छोटे कमरे बने हुए हैं। चहार दीवारी के अन्दर मुख्य मन्दिर के ईशान में बेल का वृक्ष है। मठी का छज्जा पतले-पतले पत्थरों से बनाया गया है। शिखर (गुम्बद) में सुन्दर चित्रकारी की गयी है तथा इसमें रंग विरंगे रंग भरे हुए हैं। मन्दिर के पूर्व में बरगद का तथा पीपल का प्राचीन वृक्ष है, जिसके पास चबूतरे के रूप में दो समाधि बनी हुई हैं। जलापूर्ति के लिये ईशान में हैण्डपम्प है। मन्दिर के सामने ही दक्षिणमुखी छोटा सा हनुमान मन्दिर बना हुआ है। देखने से यह मन्दिर नवीन प्रतीत होता है।

मन्दिर की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए इसकी स्थिति ठीक नहीं है, क्योंकि इसका सड़क से सम्पर्क मार्ग कच्चा तथा ऊबड़-खावड़ है। वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से इसका परिक्रमा मार्ग बहुत संकरा है, जो मन्दिर की उन्नति में बाधा पहुँचा रहा है। मन्दिर का परिसर साफ सुथरा है लेकिन मन्दिर से चहार दीवारी निकट ही है जो भौगोलिक दृष्टि से उत्तम नहीं है, क्योंकि मन्दिर में शुद्ध हवा का आवागमन नहीं है। दर्शनार्थी मन्दिर में पहुचँकर अजीब सी घुटन का अनुभव करते हैं।

मन्दिर में उपस्थित वास्तुशास्त्रीय दोष होने के कारण यह मन्दिर इतना प्राचीन होते हुए भी लोगों की श्रद्धा का केन्द्र नहीं बन पाया है। मन्दिर में प्रवेश करने पर दर्शनार्थियों को किसी भी ऋतु में शांति का अनुभव नहीं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होता। परिक्रमा मार्ग भी हवादार नहीं है। एक दो परिक्रमा के बाद ही दर्शनार्थियों को परिक्रमा बन्द करने की इच्छा होने लगती है। मन्दिर के बाहर बनी हुई दो समाधियाँ मन्दिर के विकास के लिये अशुभ फलदायी हैं।

यही कारण है कि भिण्ड शहर के पास होते हुए भी यह अविकसित अवस्था में है। यहाँ तक कि इस मन्दिर के लिये अभी तक उचित मार्ग नहीं बना है। चूँकि इस मन्दिर के आस-पास पर्याप्त भूमि है, इसलिये इन दोषों का निवारण करना और भी आसान हो सकता है। यदि इन दोषों का निवारण कर दिया जाय तो वह दिन दूर नहीं जब यह मन्दिर भिण्ड नगर तथा ज़िले का ही नहीं वरन् बहुत दूर-दूर के लोगों का श्रद्धा और मान्यता का केन्द्र बन जायेगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:४:२ बैजनाथ मन्दिर मिहोना :

भिण्ड जिला मुख्यालय से दक्षिणी-पूर्वी दिशा में पैंतालीस किलोमीटर की दूरी पर कस्बा मिहोना स्थित है। यहाँ से दक्षिणी दिशा में दो किलोमीटर पैदल सड़क मार्ग लहार से पसेल ररी ग्राम पड़ता है, यहाँ से पूर्व दिशा की ओर लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर बैजनाथ मन्दिर स्थित है।

"किवदन्ती है कि स्योढ़ा जिला दतिया में सिंध नदी की चट्टानों वाली जलधार और उसके किनारे देवों ने रात्रि में मन्दिर का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया। निर्माण कार्य के दौरान ही रात्रि के अन्तिम प्रहर में किसी पिसनहारी ने आटा चक्की का हत्था ठोंककर अनाज पीसना प्रारम्भ किया। हत्था ठोंकने की आवाज सुनकर देवगण इस मन्दिर को अधूरा बना छोड़ गये। फिर इन्हीं देवों ने बैजनाथ मन्दिर का निर्माण करना प्रारम्भ किया। निर्माण कार्य के दौरान किसी पिसनहारी द्वारा आटा चक्की का हत्था ठोंकने पर वह यहाँ से भी लोप हो गये। ये प्राचीन मन्दिर उसी समय से उतने ही बने हैं।"[1]

यह मन्दिर लगभग छः सौ वर्ग फीट के क्षेत्र में बनाया गया है। मन्दिर का मुख्य द्वार उत्तर की ओर है। मुख्य मन्दिर की पश्चिमी-उत्तरी दिशा में रामजानकी का सुन्दर मन्दिर बना हुआ है, जिसका द्वार पूर्व दिशा में है। इस

---

१. दैनिक उद्‌गार : भिण्ड जिला विकास विशेषांक : २६ जनवरी १९९३ : काज़ी तनवीर द्वारा लिखित लेख बैजनाथ मन्दिर मिहोना : पृष्ठ - ३५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्दिर के सामने की ओर एक कमरा बना हुआ है। मन्दिर का निर्माण हिन्दू शैली में हुआ है। यह मन्दिर निर्माणाधीन है। नवीन निर्माण के कारण इसमें प्राचीनता विलुप्त सी हो गयी है।

मुख्य मन्दिर की उत्तरी दिशा तथा पश्चिमी दिशा में आधे-अधूरे चार मन्दिर बने हुए हैं तथा इसके आस-पास काले, लाल, सफेद तथा मटमैले आदि विभिन्न आकृति वाले आदमकद विशाल शिलाखण्ड पड़े हुए हैं। इतने बड़े-बड़े शिलाखण्ड यहाँ पर कहाँ से और कैसे आये? यह बात रहस्य पूर्ण है, जबकि यहाँ का क्षेत्र मैदानी है। मन्दिर में पड़े बड़े-बड़े शिलाखण्ड अलौकिक शक्तियों द्वारा मन्दिर के निर्माण की जनश्रुति को प्रमाणित करने में सहायक होते है।

दीपावली की द्विज पर प्रतिवर्ष यहाँ बड़ा मेला लगता है। विशेष बात यह है कि इस मेले में लड़के और लड़कियों के शादी सम्बन्ध उसी समय से तय होते आ रहे हैं जिसकी परम्परा आज भी चली आ रही है। मन्दिर की पश्चिमी दिशा में तालाब है तथा मन्दिर में जलापूर्ति हेतु मन्दिर की उत्तरी दिशा में कुआँ है।

मन्दिर का वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से निरीक्षण करने पर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्राचीन काल का बना मन्दिर वास्तुशास्त्र के अनुरुप रहा होगा, परन्तु यहाँ के लोगों के अन्दर वास्तुशास्त्र के ज्ञान का अभाव होने के कारण इसके निर्माण में वास्तुशास्त्रीय दोषों का होना स्वभाविक है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

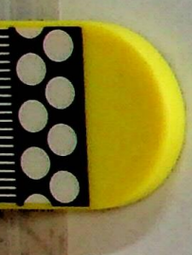

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्दिर में सबसे बड़े वास्तुशास्त्रीय दोष के रूप में पश्चिम में तालाब का स्थित होना है।

यदि यहाँ के वास्तुशास्त्रीय दोषों का निवारण किया जाय तो वह दिन दूर नहीं जब यहाँ पर दूर दराज के तथा आस-पास के लोगों से मन्दिर परिसर हर समय भरा रहेगा तथा यह मन्दिर अपने श्रद्धालुओं में श्रद्धा व आस्था का केन्द्र बन जायेगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:४:३ स्वामी केशवानन्द मन्दिर, रजपुरा :

भिण्ड जिला मुख्यालय से सुनारपुरा होकर गोरमी के लिये पक्की सड़क गयी है। इस सड़क पर भिण्ड से इक्कीस किलोमीटर की दूरी पर पिथुनपुरा चौराहा मिलता है। पिथुनपुरा चौराहे से लगभग तीन किलोमीटर पूर्व की ओर ग्राम मिरगपुरा का मजरा रजपुरा है। इसी ग्राम में १२८ फीट ऊँचाई का विशाल गुम्बदों वाला देव प्रतिमा विहिन मन्दिर है, जिसमें निर्माण कार्य अभी चल रहा है।

भला बिना देवी देवताओं की प्रतिमा वाले किसी भवन को मन्दिर बनाकर उसके प्रति व्यापक जन समुदाय को श्रद्धानत व आस्थावान किया जा सकता है तो सामान्य तौर से जवाब होगा नहीं परन्तु यहाँ पर भिण्ड जिले व आस-पास के कस्बों के विशेष रूप से नरवरिया पिछड़ी जाति के लोग हर वर्ष महाशिवरात्रि पर पूर्ण श्रद्धा भाव से एकत्र होकर अपनी काँवरों का गंगाजल लोधी राजपूत समाज के ही एक संत स्वामी केशवानन्द की प्रतिमा पर अर्पित करते हैं। देव प्रतिमा विहीन यह मन्दिर नरवरिया ही नहीं बल्कि हिन्दू समाज के काछी, बघेल, गूजर, अहीर आदि पिछड़ी व छोटी जातियों के लोगों में सामाजिक परिवर्तन का भाव जगाने की प्रेरणास्थली है।

लगभग एक बीघा भू-भाग में साठ फीट की लम्बाई और साठ फीट की ही चौड़ाई में मन्दिर का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ है। वैसे तो मन्दिर में प्रवेश के लिये चारों दिशाओं में दरवाजे हैं परन्तु मुख्य दरवाजा पूर्व की ओर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वामी केशवानन्द मन्दिर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ही है। जमीन की सतह से मन्दिर की सतह ऊँची है, जिस पर चढ़ने के लिये चारों दरवाजों पर पाँच-पाँच सीढ़ियों बनी हुई हैं। इन सीढ़ियों की संख्या विषम है तथा दरवाजे भी ठीक स्थिति में वास्तुशास्त्र के अनुसाार ही बने हैं। महरावदार बना मन्दिर का मुख्य दरवाजा मन्दिर की सतह से आठ फीट ऊँचा है।

मन्दिर के चारों ओर कोनों पर बुर्ज बने हैं जिनमें से होकर दो तरफ से ऊपरी मंजिल पर जाने के लिये जीने हैं। बुर्जों के नीचे दस फीट चौड़े तथा बीस फीट लम्बाई के तलघर बने हुए हैं। मन्दिर के ब्रह्म स्थान में एक हाल है, जिसमें स्वामी केशवानन्द जी की मूर्ति स्थापित है, यह मूर्ति सफेद संगमरमर पत्थर पर उत्कीर्ण है। जो तीन फीट ऊँची और दो फीट चौड़ी पद्मासन मुद्रा में है। यह मूर्ति जयपुर से मंगाई गयी है। मन्दिर के चारों दीवारों पर काँच लगाये गये हैं। जमीन पर मारबल का फर्श है तथा दीवारों पर टुकड़ियाँ लगायी गयीं हैं। मुख्य मन्दिर के कपाट लकड़ी के बने हैं जिन पर अद्वितीय नक्काशी की गयी है। कपाटों पर "श्री केशवानन्द जी परमहंस रजपुरा टेम्पल १-५-१९८८" अंकित है।

यह मन्दिर चार मंन्जिला है, जो पूरा बन चुका है तथा अभी इसमें नक्काशी का काम चल रहा है। ईंट, सीमेन्ट, लोहा, कंकरीट आदि से निर्मित हो रही इस मन्दिर की छतें गोलाकार रूप लिये हुए हैं, जो प्रायः आर०सी०सी० से निर्मित हैं। मन्दिर पर ऊपर जाने के लिये दो दिशाओं में जीने हैं, ये जीने ईशान तथा वायव्य दिशा में हैं। नैऋत्य तथा वायव्य दिशा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'स्वामी केशवानन्द जी महाराज'

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में दर्शनार्थियों के रुकने के लिये गोलाकार रूप में नीचे से ऊपर की मंजिल तक कमरे बनाये गये हैं।

पहली मंजिल पर चढ़ने के लिये बारह सीढ़ियाँ तथा दूसरी मंजिल पर पहुँचने के लिये सीढ़ियों की संख्या पन्द्रह है। तीसरी मन्जिल पर पहुँचने के लिये तेईस सीढ़ियाँ तथा चौथी मंजिल में पहुँचने के लिये उन्नीस सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। तीसरी मंजिल के ब्रह्म स्थान में आर्शीवाद मुद्रा में स्वामी केशवानन्द जी महाराज की दूसरी प्रतिमा प्रतिस्थापित है। मन्दिर का स्वरूप ठीक हिन्दू देव मन्दिर जैसा ही है। पहली मंजिल के मध्य में नागर शैली की कुछ झलक स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। लगभग बत्तीस खम्भों पर यह पूरा का पूरा मन्दिर निर्मित है। उनके ऊपर चार ऊँचे गुम्बद हैं तथा मध्य भाग में भी एक गुम्बद है, जिसकी ऊँचाई १२८ फीट जो ग्वालियर चम्बल सम्भाग में सबसे ज्यादा है।

स्वामी केशवानन्द जी लावन (भिण्ड) के लोधी राजपूत समाज में जन्में थे। बाईस वर्ष की आयु में उन्होनें सन्यास ग्रहण किया। स्वामी केशवानन्द जी महराज स्वामी विधादास एवं गोपालदास के शिष्य रहे। अमेरिका, चीन, श्री लंका, रूस आदि देशों का भ्रमण कर स्वदेश लौट आये। आपने पंजाब में एक मन्दिर का निर्माण भी करवाया था। जीवन के अन्तिम दिनों में आप रजपुरा गाँव पधारे तथा ग्रामीणों से मन्दिर बनाने की इच्छा जतायी। अतः मन्दिर का निर्माण कार्य आपकी मौजूदगी में ही शुरू हो गया था। आपके ही सामनें मन्दिर के गर्भग्रह में तीन फीट ऊँची संगमरमर की प्रतिमा की

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रतिस्थापना हुई। स्थापना के बाद तीन सालों तक केशवानन्द के सामने ही उन्हीं की प्रतिमा की पूजा अर्चना होती रही। फिर एक सौ दो वर्ष की आयु में संवत् २०४४ में स्वर्गवासी हो गये तो मन्दिर परिसर में महाशिवरात्रि पर्व पर भव्य मेला लगने लगा।

स्वामी केशवानन्द जी महाराज की प्रस्तर प्रतिमा का ही यह चमत्कार है कि यह एक साथ सोलह सौ काँवरों का गंगा जल मूर्ति के नीचे ढरककर नहीं आता। महाशिवरात्रि पर भिण्ड जिले के ही नहीं अपितु दूर-दूर के जिलों से भक्तगण आते हैं व उनकी प्रतिमा पर जलाभिषेक करते हैं।

यह मन्दिर नरवरिया समाज के लिये सम्भवतः देश का पहला ऐसा स्थान है जहाँ बहु-जातीय हिन्दू धर्मावलम्बी प्राचीन देवता की पूजा करने नहीं, मानव से देवता बना दिये गये सन्त केशवानन्द के प्रति नतमस्तक होने एवं अपने पाप नाश की दुआ माँगनें आते हैं। अभी तक मन्दिर के निर्माण पर ग्रामीणों के अनुसार पच्चीस लाख रूपये व्यय हो चुके हैं। काम पूर्ण होते- होते लगभग इतनी ही धनराशि और व्यय हो जायेगी। मन्दिर के निर्माण हेतु एक समिति बना दी गई है, जो निर्माण कार्य पर हुए खर्च का हिसाब-किताब रखती है।

यह मन्दिर बहुत ही भव्य है। गर्मियों में ठंण्डी हवा के झोंके दर्शनार्थियों के मन को मोह लेते हैं। इसकी भौगोलिक स्थिति उत्तम है। इतना सब होते हुए भी स्वामी केशवानन्द मन्दिर पूरे भिण्ड जिले के लिये सुख-सम्पन्नता का केन्द्र नहीं बन सका है। उसका कारण है कि इस मन्दिर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में कई वास्तुशास्त्रीय दोष हैं। इन्ही दोषों के कारण मन्दिर के ऊपरी मंजिल में लगे हुए अधिकांश टाइल्स चटख रहे हैं।

इस मन्दिर में प्रमुख दोष मन्दिर से लगी हुई समाधि का है। मन्दिर की ऊपरी मंजिलों के लिये जाती हुई सीढ़ियाँ दोषपूर्ण हैं। इनका घुमाव विपरीत दिशा में है तथा कहीं-कहीं पर सीढ़ियों की संख्या भी सम है। मन्दिर में जलापूर्ति के लिये मन्दिर से नैर्ऋत्य दिशा में बड़ा सा कुआँ है तथा पानी की टंकी भी दक्षिण दिशा में है।

मन्दिर के दोष निवारण के लिये मन्दिर के पास सटकर बनी समाधि को मन्दिर से हटाकर बहुत दूरी पर बना दिया जाय तथा मन्दिर के चारों दिशाओं में देव मन्दिरों का निर्माण कराया जाय तथा उन मन्दिरों के सामने हवन कुण्ड बनाये जाँय। पानी की टंकी दक्षिण से हटाकर ईशान में बनवायी जाय।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:४:४ सूर्य मन्दिर, मिहोना :

भिण्ड जिला मुख्यालय से ४४ किलोमीटर से दूर भिण्ड-भाण्डेर रोड के ही किनारे अत्यन्त प्राचीन सूर्य मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर के भिण्ड-भाण्डेर मार्ग के किनारे ही स्थित होने के कारण दर्शनार्थी किसी भी प्रकार की परेशानी का अनुभव नहीं करते। यह मन्दिर मिहोना नगर से एक किलोमीटर पहले ही पड़ता है। यह प्राचीन मन्दिर मराठाओं के शौर्य पराक्रम की स्मृति हृदय में संजोये आज भी अपने स्थान पर अडिग खड़ा है।

प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार डाउसन के अनुसार मराठा पेशवा बाजीराव प्रथम ने सन् १६३७ में इसी स्थान पर अपना डेरा जमाया था। यहीं से उसने भिण्ड के राजा पर आक्रमण करके परास्त किया था। इसी विजय के उपलक्ष्य में पेशवा नरेश ने बाला जी में अपने कुल के आराध्य देव भगवान भास्कर तथा अपने वंश के प्रतीक नाग देवता की प्राण-प्रतिष्ठा करवाकर भव्य मन्दिर का निर्माण करवाया।

जनश्रुति के अनुसार महारानी लक्ष्मीबाई ने कालपी से ग्वालियर जाते समय मन्दिर में सूर्य भगवान की पूजा-अर्चना की तथा 'बालाजी' नामकरण किया।

मन्दिर के बाहर लगे बीजक के अनुसार मन्दिर का निर्माण संवत् १११० का है तथा बाद में संवत १७५७ में मन्दिर का पुर्ननिर्माण कराया गया। काफी समय के बाद इस भव्य मन्दिर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

का जीर्णोद्धार परम् स्मरणीय श्री श्री १००८ हरिदास जी महाराज परमहंस ने संवत् १८५७ विक्रमी में करवाया। हरिदास महाराज सन् १९६० को ब्रह्मलीन हो गये।

मन्दिर के मुख्यद्वार के ठीक सामने हरिदास महाराज की चरणपीठ ब्रनी हुई है। यहाँ पर प्रतिवर्ष चैतवदी पंचमी (रंगपंचमी) से अमावस्या तक विशाल मेला लगता है तथा प्रतिवर्ष १४,१५,१६ जनवरी को त्रिदिवसीय मानस प्रवचन का कार्यक्रम होता है। यहाँ पर प्रत्येक रविवार को भी मेला लगता है जिसमें दूर-दूर के तथा आस-पास के हजारों व्यक्ति दर्शन करने को आते हैं। यहाँ यात्रियों एवं दर्शनार्थियों के ठहरने एवं रात्रि विश्राम के लिये सभी प्रकार के उचित प्रबन्ध हैं। मिहोना नगर की समीपता भी यहाँ की सुविधाओं में चार चाँद लगा देती है।

मन्दिर के ईशान में एक बहुत विशाल कुआँ था जो अब पूर्णतः बन्द हो चुका है। यह कुआँ इतना विशाल था कि इस कुएं की जगत पर सैकड़ों लोग़ बैठ सकते थे। कुछ वर्ष पहले यह पूरा का पूरा कुआँ जमीन के अन्दर समा गया। ऊपर से लोगों ने मिट्टी भरवाकर समतल जगह बना दी। अब इसी जगह पर एक दो पेड़ भी लगा दिये गये हैं।

इस मन्दिर का प्रवेश द्वार उत्तर की ओर है। ब्रहम स्थान में मुख्य मन्दिर बना हुआ हैं मन्दिर चहार दीवारी से घिरा हुआ है। मन्दिर में घुसते ही विशाल घण्टे टँगे हुए हैं। मुख्य मन्दिर के प्रवेश द्वार पर दोनों ओर द्वारपालों की खुदाई है। मन्दिर में अन्दर बेदी पर लोग प्रसाद चढ़ाते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूर्य मन्दिर, मिहोना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यहाँ पर पत्थर पर सूर्य भगवान की खुदाई की गयी है। दीवारों पर चारों तरफ रंग तथा काँच से प्लास्टर होने के कारण यह दर्शनार्थियों का मन मोह लेती है।

ईशान तथा वायव्य में दो छोटे-छोटे मन्दिर अन्य देवी देवताओं के बने हैं। मन्दिर के ऊपरी गोलाकार भाग के बाद बने झरोखों में विभिन्न सन्तों की विशाल मूर्तियाँ बनी हैं। यहाँ पर बनी विशाल बेदी पर सूर्य भगवान को प्रसाद चढ़ाकर लोग परिक्रमा करते हैं। बाहरी परिक्रमा का परिसर एकदम साफ स्वच्छ रहता है।

परीक्षा में पास होने के विश्वास से छात्र यहाँ की दीवारों पर अपना रोल न० अंकित कर जाते हैं, इच्छापूर्ति के पश्चात लोग यहाँ पर घण्टा भी चढ़ाते हैं। यहाँ पर एक घण्टा तो एक कुन्तल से भी अधिक वजन का है। यह मन्दिर शुद्ध हिन्दू शिल्पकला का उत्कृष्ट नमूना है। इस शिल्पकला के दर्शन मन्दिर में बने बेल-बूटों एवं फूल-पत्तियों की नक्काशी से स्पष्ट होते हैं।

यहाँ की जनता में सूर्य मन्दिर के प्रति बहुत श्रद्धा है। चाहे सुख समृद्धि की कामना हो या परीक्षा में पास होने की लालसा। सभी लोग यहाँ मनौती माँगनें आते हैं और उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण भी होती हैं।

यह मन्दिर वास्तुशास्त्र की दृष्टि से उचित बना हुआ है। इसके विकास के लिये जो प्रयास किये जा रहे हैं वे सराहनीय हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:४:५ मलखान का मन्दिर रेंहकुला देवी :

भिण्ड जिला मुख्यालय से भिण्ड-भाण्डेर रोड पर लगभग ८५ किमी० दूर कस्बा दबोह पड़ता है। यहींसेपूर्व दिशा की ओर कोंच के लिये सड़क जाती है। इसी सड़क के किनारे अमाहा ग्राम पड़ता है। अमाहा ग्राम के पास एक देवी स्थान है, इन्हें रेंहकुला देवी के नाम से भी जानते हैं। यह स्थान अति साधारण है परन्तु ऐतिहासिकता लिये हुए है।

यह मन्दिर ६०×५० फुट जो जमीन लेबल से लगभग 1½ फीट ऊँचाई पर बना हैं। यह मन्दिर पूर्वमुखी है। मन्दिर का फर्श पत्थर का बना हुआ है। यह मन्दिर मठिया आकार में ककइया ईंट का बना हुआ है। इस मन्दिर में देवी की प्रतिमा भी पूर्वमुखी है। वस्तुतः ये रक्तपाणि देवी की मूर्ति है।

यह मन्दिर बाहर से देखने पर बहुत बड़ा लगता है तथा भीतर से देखने पर बहुत छोटा लगता है। इसका मुख्य कारण मन्दिर की दीवारों का अत्यधिक मोटा होना है। जलस्रोत के रूप में मन्दिर के पूर्व में तालाब अवस्थित है। इस मन्दिर के अन्दर परिक्रमा स्थल नहीं है मन्दिर की परिक्रमा चबूतरे पर से ही करनी पड़ती है। मन्दिर के ठीक सामने पूर्व दिशा में हनुमान मन्दिर है।

मन्दिर से उत्तरी दिशा में एक सुरंग दिखाई देती है जो लगभग आठ से दस फीट नीचे पक्की बनी दिखाई देती है। इस सुरंग की लम्बाई पूर्व से

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पश्चिम दिशा में है। जनश्रुति है कि मलखान सिरसा से इसी सुरंग द्वारा देवी माँ के दर्शनों के लिये आता था।

इस मन्दिर में विशेष बात यह है कि परिवार में बच्चे के जन्म के बाद लोग यहाँ पर पालना चढ़ाने आते हैं। मन्दिर के पास ही टीन शैड बना हुआ है जिसमें श्रद्धालुओं द्वारा चढ़ाए हुए अनेकों पालना देखे जा सकते है।

डा० सीता किशोर खरे के लेख के अनुसाार यहाँ ग्यारह पीढ़ियों से मंसे नाम का व्यक्ति मन्दिर का माली है। इस मन्दिर में दसवीं तथा ग्यारहवीं सदी की अन्य मूर्तियाँ भी विद्यमान हैं। इनमें रानी गजमोतिन का स्थान प्रमुख है। मंसेवाली के अनुसार रानी गजमोतिन आज भी रेंहकुला के मन्दिर में दीपक जलाने आती हैं एवं दीवाली व दशहरा को मलखान की सवारी पूजन के लिये आती है। इस स्थान पर प्रतिवर्ष नवदुर्गा में विशाल मेला लगता है।

जनश्रुति है कि चंदेल राजा परिमाल की सेना के महान योद्धा वीर मलखान ने सम्वत् १२२० के आप-पास आल्हा ऊदल के साथ माडौ के राजा करिया जम्बे को परास्त करने की खुशी में अपनी कुलदेवी माता भगवती की यहाँ प्राणप्रतिष्ठा करवा कर इस स्थान का नाम रेंहकुला रखा। मलखान चार भाई थे, जिनमें सबसे बडे मलखान ही थे। वे आदि शाक्ति भगवती के अनन्य भक्त थे। कहते हैं कि वे भगवती की पूजा में अपना सिर अपने हाथ से काटकर चढ़ा दिया करते थे।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह मन्दिर बहुत प्राचीन है। लोगों में इस मन्दिर के प्रति अपार श्रद्धा है। परिवार में पुत्र का जन्म होने पर देवी माँ के प्रति श्रद्धा में मन्दिर में पालना चढ़ाना इसका जीता जागता उदाहरण है। मन्दिर की प्राचीनता के साथ-साथ नवीनता का न होना भी मन्दिर के विकास में बाधा पहुँचा रहा है तथा मन्दिर में परिक्रमा मार्ग का न होना भी मन्दिर के विकास में बाधक है तथा यह वास्तुशास्त्रीय दोष भी है।

यदि मन्दिर में विशाल परिक्रमा मार्ग का निर्माण करा दिया जाय तथा मन्दिर में स्थित तालाब का सौन्दर्यीकरण करा दिया जाय तो यह मन्दिर अपने उन्नति के शिखर पर पहुँच जायेगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:४:६ मंगलादेवी मन्दिर, लहार :

भिण्ड-भाण्डेर मार्ग पर भिण्ड जिला मुख्यालय से ५५ किमी० की दूरी पर लहार तहसील मुख्यालय है। लहार में प्रवेश करने पर भूतपूर्व चुंगीनाका मिलता है, जिसकी दायीं ओर क्वार्टर है। आगे सहकारिता मंत्री गोविन्द सिंह का निवास है। तिराहे पर लोहिया जी का स्मारक है। यहीं से कुछ आगे चलने पर मंगलादेवी का मन्दिर है।

"संस्थायें एवं सम्पर्क शालेय शिक्षा जिला (जि०शि०अ० भिण्ड) पर हुए उल्लेखानुसार सम्वत् १२१० में राजा इन्द्रदेव ने लहार में मंगलादेवी की स्थापना की।"[१]

"माँ मंगलादेवी की यह कथित देवी प्रतिमा वास्तव में रखे जैन तीर्थकर नैमिनाथ की प्रतिमा है। काले पत्थर पर उत्कीर्ण भगवान नैमिनाथ की यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में है, जिनके दोनों पार्श्वों में खड्गासन मुद्रा में जैनयतियों की दो अन्य प्रतिमाएँ हैं, जिन पर हाथी कलशाभिषेक कर रहे हैं। यह एक दुर्लभ जैन प्रतिमा है, जिसकी प्रतिस्थापना वि०सं० १२१७ में तत्कालीन इन्दुरखी राज्य के नेरश इन्द्रदेव जी ने कराई थी, जिन्हें एक स्वप्नादेश के अनुसार यह प्रतिमा भूगर्भ से प्राप्त हुई थी। यह प्रतिमा चबूतरे

---

१. संस्थायें एवं सम्पर्क शालेय शिक्षा जिला (जि०शि०अ० भिण्ड) १९८२-८३, पृष्ठ-६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पर स्थापित कराई गयी थी। कालान्तर में इन्हीं के वंशज राजा भगवान सिंह गौर ने वि० सं० १७१० में भगवान नेमिनाथ के मन्दिर का निर्माण कराया तथा वि०स० २०२३ में जनसहयोग से इस मन्दिर का जीर्णोद्धार किया गया। अज्ञानतावश लोग भगवान नेमिनाथ की प्रतिमा को देवी प्रतिमा समझते हैं, जो मंगल करने वाला होने के कारण मंगलादेवी के नाम से ख्यात हुई हैं।"[1]

माँ मंगलादेवी का यहाँ एक अतिशयकारी मन्दिर है। माँ मंगलादेवी की यहाँ लोकदेवी के रुप में मान्यता है। इस मन्दिर का मुख्य द्वार उत्तर में है। यह मन्दिर सड़क के किनारे ही स्थित है। मुख्य मन्दिर का दरवाजा पूर्व की ओर है, जिसका हॉल लगभग ६०×६० फीट का होगा। हॉल में घुसने के लिये पाँच सीढ़ियाँ हैं, जो पूर्व से पश्चिम की ओर हैं। यह सब वास्तुशास्त्र के अनुसार उचित है। दांये हाथ पर दायीं ओर हर दिन प्रवचन होते ही रहते हैं। इसी हॉल में दस-ग्यारह कदम आगे बढ़ने पर मन्दिर के अन्दर जाने के लिये जाली लगी है, जिसे प्रसाद चढ़ाना होता है उसे वहीं से चढ़ाना पड़ता है या महाराज को देना होता है।

माँ मंगलादेवी की प्रतिमा काले पत्थर की है। यह प्रतिमा पूर्वमुखी है। इस प्रतिमा की ऊँचाई लगभग ११ × १२ इंच की है। कमरे के ठीक सामने

---

१. दैनिक उद्‌गार : भिण्ड जिला विकास विशेषांक : २६ जनवरी १९९३ : त्रियुगी नारायण शर्मा : मंगलादेवी मन्दिर : राकेश कुमार जैन : पृष्ठ- ३१

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पीछे की दीवार से सटी हुई मंगला माँ की नयी मूर्ति स्थापित की गई है। यह मूर्ति आदमकद शेर पर सवार है तथा माता रानी पूर्व को मुख किये हुए हैं। इस मूर्ति की स्थापना हुए लगभग पच्चीस से तीस वर्ष ही हुए हैं। बुर्ज केवल मुख्य मन्दिर में ही बने दीखते हैं।

यह मन्दिर हिन्दू-मुस्लिम शिल्पकला का उत्कृष्ट नमूना है। चारों कोनों पर गुम्बद बने हुए हैं। इस मन्दिर में प्रसाद वितरण होता ही रहता है। मन्दिर की उत्तरी-पूर्वी दिशा में दस या बारह वृक्ष खड़े हुए हैं। दक्षिण में एक या दो ही पेड़ हैं।

सभी वर्गों के लोगों की मंगला माँ के प्रति अगाध श्रद्धा और आस्था है। यहाँ पर हर साल चैत्र की नवदुर्गा में मंगला देवी का विशाल मेला लगता हैं, जो पन्द्रह से बीस दिन तक चलता है। इस मेले में प्रमुख रूप से लोहे के सन्दूक, टंकी आदि के व्यापारी अधिक आते हैं। मन्दिर के अन्दर जलापूर्ति के लिये ईशान में कुआँ है तथा मन्दिर की दक्षिणी दिशा में यज्ञशाला, धर्मशाला तथा व्यायामशाला बनी हुई है।

मन्दिर का इतना विकास होते हुए भी इसके प्रति भिण्ड के पूरे जिले के लोगों में अभी तक श्रद्धा का संचार नहीं हुआ है। यह मन्दिर लहार तहसील के निवासियों का ही श्रद्धा का केन्द्र है। यदि मन्दिर के वास्तुशास्त्रीय दोषों का निवारण किया जाय तो मन्दिर का विकास दिनों-दिन बढ़नें लगेगा। वास्तुशास्त्रीय दोषों में प्रमुख रूप से मन्दिर की दक्षिणी दिशा में निर्मित यज्ञशाला व धर्मशाला है तथा अन्दर बना हुआ हॉल भी ज्यादा हवादार नहीं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है। यदि मन्दिर में बने हुए हॉल को और अधिक हवादार कराया जाय तथा परिक्रमा मार्ग और भी सुन्दर कराया जाय तथा मन्दिर के दक्षिण में निर्मित यज्ञशाला व धर्मशाला का उचित स्थान पर अर्थात् यज्ञशाला आग्नेय में तथा धर्मशाला को वायव्य में ला दिया जाय तो वास्तुशास्त्रीय दोषों का निवारण हो जायेगा। मन्दिर की वर्तमान स्थिति के अनुसार धार्मिक कार्यकलाप यदि उचित स्थान पर नहीं हो रहे हैं तो इसका कारण मन्दिर से सम्बन्धित लोगों में वास्तुशास्त्रीय ज्ञान का अभाव होना है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:४:७ चामुण्डा देवी मन्दिर, अटेर :

अटेर के किले के दक्षिण में करीब २०० फीट की दूरी पर चामुण्डा देवी का मन्दिर है। यह मन्दिर एक ऊँचे से टीले पर बनाया गया है, जिसका निर्माण अटेर के किले के समकालीन ही प्रतीत होता है। इस मन्दिर का निर्माण भदावर राजाओं द्वारा कराया गया था। जिससे यह सिद्ध होता है कि भदावर नरेश सिद्ध माता के उपासक थे। देवी माँ के मन्दिर में दर्शनार्थ ग्यारह सीढ़ी चढ़कर जाना होता है, ये सीढ़ी विषम संख्या में हैं और वास्तुशास्त्र की दृष्टि से शुभ हैं। मन्दिर में पहुँचकर एक असीम शान्ति का अनुभव होता है। यह मन्दिर उत्तरमुखी है।

मुख्य मन्दिर का द्वार पूर्व की ओर है तथा सिद्धमाता चामुण्डा देवी का मुख भी पूर्व की ओर है, जो स्थापत्य वेद की दृष्टि से शुभ हैं चामुण्डा माता के सामने लंगुरावीर का मन्दिर हैं मन्दिर के आस-पास कई छोटे-छोटे मन्दिर हैं। ये सभी मन्दिर पूर्व तथा पश्चिम दिशा में हैं। जिनमें अधिकांश में कई देवी-देवताओं की प्रतिमायें हैं। शोधार्थिनी ने इन छोटे-छोटे मन्दिरों की संख्या मालूम करने के उद्देश्य से गिनना प्रारम्भ किया तो मन्दिर में आये भक्तगणों ने बताया कि इन मन्दिरों की संख्या को आज तक कोई भी नहीं गिन पाया है, इतना अवश्य है कि इन मन्दिरों की संख्या १०१ है, तो शोधार्थिनी भी इन मन्दिरों की संख्या गिनने के प्रयत्न में असफल रही। यह मन्दिर उस समय के कारीगरों की कुशलता का उत्कृष्ट नमूना है। इन सभी मन्दिरों पर मुगल कालीन शिल्पकला का स्पष्ट प्रभाव है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्दिर के पूर्व में एक प्राचीन कुआँ है जो स्थापत्यवेद के अनुसार इस मन्दिर के लिये शुभ है।

मन्दिर से थोड़ी दूरी पर सतियों की कई मठियाँ हैं। जो पास-पास में बनी हुई हैं, जो उस समय की सती प्रथा की कहानी कहती हैं। इन मठ़ियों के पास जाने से उन सतियों की यादगार में नेत्रों में आँसू झलक आते हैं। लोगों ने बताया कि चैत्र के महीने में नौ दुर्गा में नवमीं के दिन विशाल मेला लगता है। इस मन्दिर के उत्तर में चम्बल नदी है। इस नदी का पानी बाढ़ आने पर मन्दिर के चबूतरे तक आ जाता हैं।

पूरे मन्दिर का अवलोकन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि यह मन्दिर स्थापत्य वेद की दृष्टि से उचित बना हुआ है। इसी कारण यह मन्दिर इतना प्राचीन होनें पर आज भी इसमें माता की कला जग रही है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:४:८ रामजानकी मन्दिर एस०ए०एफ०, भिण्ड :

इटावा रोड पर भिण्ड से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर यह मन्दिर है। यह मन्दिर एस०ए०एफ०, भिण्ड में स्थित है। यह मन्दिर दो भागों में बना हुआ है। दोनों भागों में राम-लक्षमण-सीता की भव्याकर्षक मूतियाँ हैं। ये मूर्तियाँ संगमरमर पत्थर की हैं। यह मन्दिर अधिक पुराना नहीं है।

एक विशाल भू-भाग में यह मन्दिर स्थापित है। मुख्य मन्दिर पश्चिममुखी है, जिसके सामने विशाल सर्प बना है। यह मन्दिर बहुत बड़े हॉल के रूप में है। मन्दिर में सामने ही बहुत बड़े-बड़े घण्टे टंगे हैं, जो श्रद्धालुओं द्वारा चढ़ाए गए है। मुख्य मन्दिर से पश्चिम दिशा में बड़े हाल के रूप में मन्दिर का निर्माण कार्य चल रहा है।

मुख्य मन्दिर के उत्तरी दिशा में हनुमान मन्दिर है, जो दक्षिणमुखी है। मन्दिर में भगवान हनुमान की विशाल आदमकद प्रतिमा है। यह प्रतिमा दक्षिणमुखी है। मुख्य मन्दिर की दक्षिणी दिशा में अन्य मन्दिर बने हैं।

मुख्य मन्दिर की दक्षिणी-पश्चिमी दिशा में हैण्डपम्प लगा है तथा पश्चिमी दिशा में पानी की टंकी है। मन्दिर का परिसर एकदम स्वच्छ है। मन्दिर में तथा इसके चारों ओर शान्ति ही शान्ति रहती है। चारों तरफ पेड़-पौधे मन्दिर के पास तथा दूर-दूर लगे हैं। यहाँ क्वार तथा चैत की नवदुर्गा में मेला लगता है। मेले में चारों तरफ दुकानें, झूले तथा खेल-खिलौने आदि लग जाते हैं, जिससे इन दिनों काफी चहल-पहल हो जाती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह मन्दिर रोड के किनारे ही स्थित है। मन्दिर के चारों ओर स्वच्छ वातावरण, चारों तरफ फैला विशाल भू-भाग तथा उसमें हरे-भरे वृक्ष, मध्य में स्थित विशालतम मन्दिर स्थित है। इतना सब होते हुए भी यह मन्दिर दर्शनार्थियों को एकत्रित करने में सक्षम नहीं है। मन्दिर में अन्दर जाने के बाद भी शान्ति का अनुभव नहीं होता। श्रद्धालुओं के मन में कहीं न कहीं एक खालीपन सा महसूस होता रहता है। मन्दिर में जाते समय भी ऐसा नहीं लगता कि यहाँ कोई मन्दिर है। इस सबका प्रमुख कारण मन्दिर में वास्तुशास्त्रीय दोषों का होना है।

यदि मन्दिर के वास्तुशास्त्रीय दोषों को दूर किया जाय तो वह दिन दूर नहीं जब यह मन्दिर भारी मात्रा में श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करेगा। यदि मन्दिर में पेयजल की व्यवस्था को ईशान में किया जाय तथा मन्दिर के ऊपर गुम्बद का निर्माण कराया जाय तथा इसका बाहर से सुन्दरीकरण कराया जाय तो यह मन्दिर भिण्ड जिले के ही नहीं वरन् दूर-दूर के जिलों के लोगों में श्रद्धा का प्रमुख केन्द्र बन जायेगा। मन्दिर के पास पर्याप्त मात्रा में भूमि होने के कारण वास्तुशास्त्रीय दोषों को दूर करना और भी आसान हो जायेगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

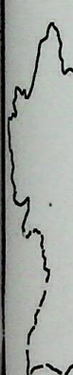

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिला - भिण्ड

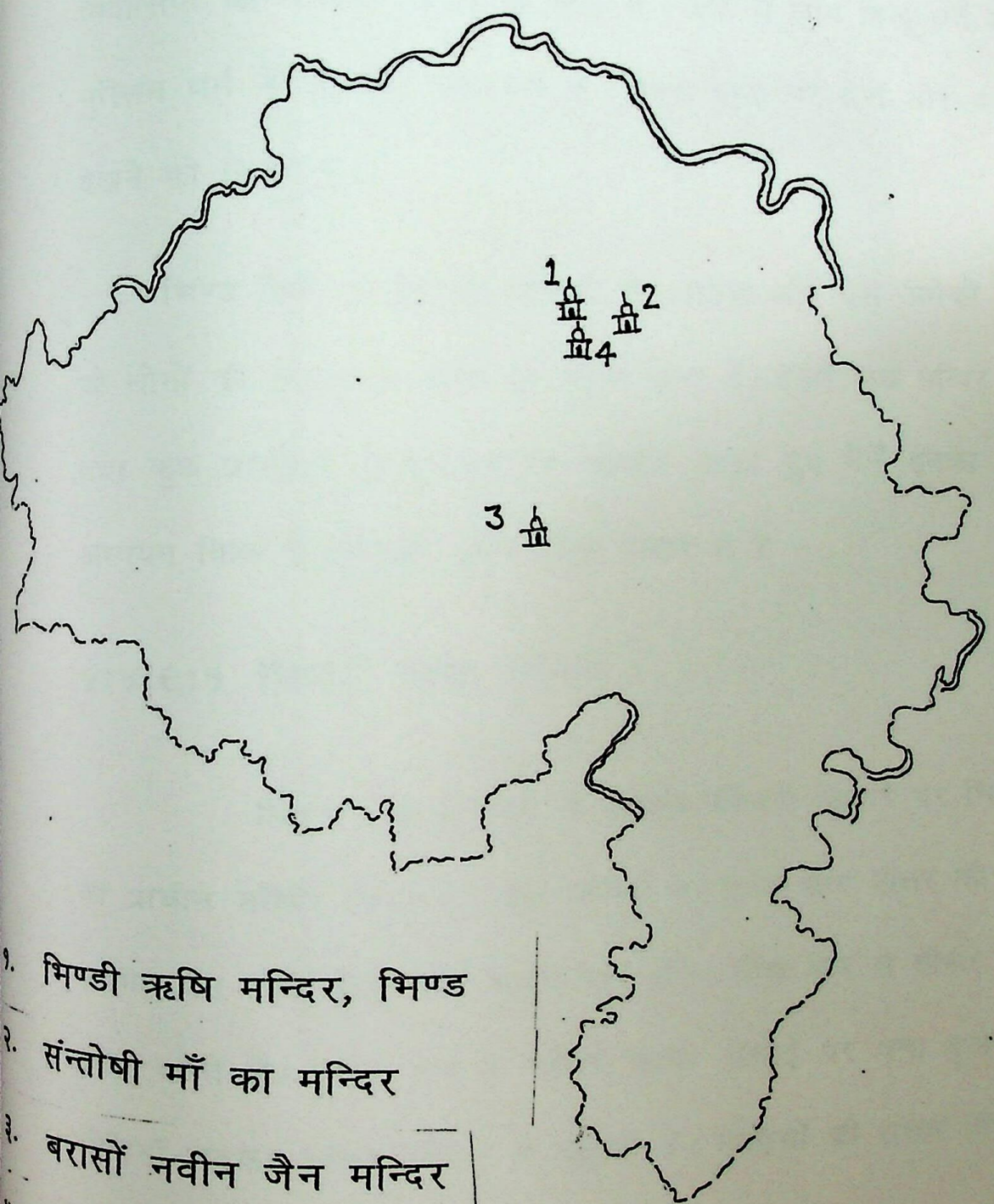

१. भिण्डी ऋषि मन्दिर, भिण्ड
२. संन्तोषी माँ का मन्दिर
३. बरासों नवीन जैन मन्दिर
४. कुण्डेश्वर मन्दिर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:४:६ अन्य मन्दिर :

भिण्ड जिले में यूँ तो बहुत मन्दिर हैं इसका मुख्य कारण यहाँ के निवासियों का धार्मिक प्रवृत्ति का होना हैं। चाहे ये लोग हिन्दू धर्म के हों या मुस्लिम धर्म के या फिर जैन धर्म के। जगह-जगह पर ढेरों छोटे-बड़े मन्दिर देखने को मिलते हैं।

भिण्ड जिले में उपर्युक्त मन्दिरों के अलावा और ऐसे अनेकों मन्दिर हैं जो लोगों की आस्था व श्रद्धा का प्रमुख केन्द्र हैं। इनमें कुछ मन्दिर नवीन हैं तथा कुछ प्राचीन। वास्तुशास्त्र को आधार मानते हुए मैनें इनका शोधपरक अध्ययन किया है जिनका वर्णन निम्न प्रकार से है -

५:४:६:१ भिण्डी ऋषि मन्दिर :

भिण्ड नगर के किले के उत्तरी-पश्चिमी किनारे पर भिण्डी ऋषि का प्राचीन मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर का मुख्य द्वार उत्तर की ओर है। लगभग दस फीट चौड़े और पन्द्रह फीट ऊँचे प्रवेश द्वार से होकर मन्दिर में प्रवेश करते हैं। सड़क तल से मन्दिर काफी ऊँचाई पर बना हुआ है अतः सीढ़ियाँ चढ़कर मन्दिर परिसर में पहुँचते हैं। सीढ़ियों की संख्या बिषम है जो वास्तुशास्त्र के अनुसार शुभ है।

बड़े से अहाते में यह मन्दिर अवस्थित है। मन्दिर के अन्दर राम-सीता तथा अन्य भगवान की सुन्दर मूर्तियाँ हैं। इसी मन्दिर के ठीक सामने समाधि

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

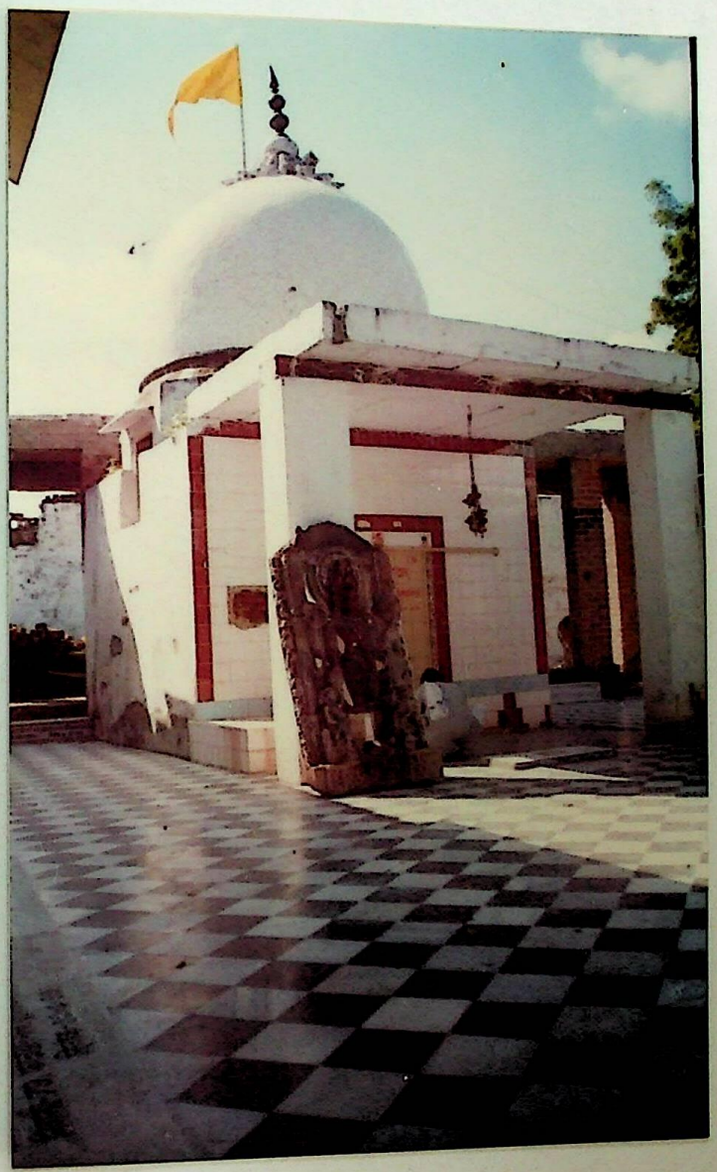

भिण्डी ऋषि मन्दिर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थल के बगल में हनुमान भगवान का छोटा सा मन्दिर बना हुआ है। मुख्य मन्दिर की पश्चिमी दिशा में समाधि स्थल बहुत ही सुन्दर मन्दिर के रूप में बना हुआ है जिसका द्वार हमेशा बन्द रहता है। इसके दरवाजे पर खड़ाऊँ रखी हुई हैं। समाधि स्थल का मन्दिर पूर्वमुखी है।

इन्हीं भिण्डी ऋषि के समय बनवाया गया यह प्राचीन मन्दिर 'भिण्डी ऋषि' के नाम से विख्यात है। जिसके महत्व को भक्तजन श्रद्धा से आज भी स्वीकार करते हैं। जनश्रुति के अनुसार वर्तमान भिण्ड नगर इन्हीं भिण्डी ऋषि के नाम से जाना जाता है। नगर प्रशासन द्वारा इस मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया गया है।

यह मन्दिर दक्षिणी-पश्चिमी हिस्से में बना हुआ है। पूर्वी भाग में टीन शेड द्वारा दर्शनार्थियों के बैठने के लिये काफी लम्बे बरामदा का निर्माण कराया जा रहा है। मन्दिर के पुजारी का कमरा मुख्य मन्दिर से सटकर बना है। दूसरी तरफ बड़ा सा हॉल दर्शनार्थियों के लिये है। मन्दिर के उत्तरी भाग तथा ईशान क्षेत्र में काफी स्थान मैदान के रूप में है। पानी की टंकी पूर्व दिशा में है।

आँगन के उत्तरी भाग में यज्ञशाला बनी हुई है जिसके ऊपर मण्डप है। यह लगभग १५ × १५ फुट की जगह में है। मन्दिर के उत्तर में पीपल का प्राचीन वृक्ष खड़ा हुआ है। इस मन्दिर का नवीनीकरण हो रहा है। ईशान

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिशा में बैठनें के लिये चबूतरा, पक्का टीन शेड, आग्नेय में कुछ कमरे निर्माणाधीन हैं, जो सम्भवतः यात्रियों के ठहरने के लिये ही हैं।

भिण्डी ऋषि के मन्दिर के जीर्णोद्धार के साथ ही यहाँ के निवासियों की इसके प्रति श्रद्धा बढ़ी है। यहाँ गुरुपूर्णिमा के दिन राम-चरित मानस का अखण्ड पाठ एवं भण्डारे का आयोजन किया जाता है। पूरे दिन दर्शनार्थियों का आवागमन होता रहता है। इतना सब होते हुए भी यह मन्दिर भिण्ड नगर के जनमानस में अभी तक अपना स्थान नहीं बना सका है।

इसका प्रमुख कारण मन्दिर में पाये गये वास्तुशास्त्रीय दोष ही हैं। यदि इन दोषों का निवारण हो जाय तो निःसन्देह यह मन्दिर बनखण्डेश्वर मन्दिर से भी अधिक श्रद्धा का केन्द्र बन जायेगा।

दर्शनार्थी भगवान के दर्शन के बाद बरामदा से ही लौट आते हैं, क्योंकि मन्दिर में परिक्रमा स्थल नहीं है। यह एक वास्तुशास्त्रीय दोष है। दूसरा दोष मुख्य मन्दिर का आकार एक सामान्य कमरे जैसा है, जिसमें ऊपर गुम्बद नहीं हैं, जिससे लोगों को यहाँ आने पर शान्ति प्राप्त नहीं होती तथा प्रथम बार आने वाले दर्शनार्थी समाधि स्थल को ही मन्दिर समझ बैठते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:४:८:२ सन्तोषी-माँ का मन्दिर :

सन्तोषी माँ का मन्दिर भिण्ड शहर में अटेर मार्ग पर स्टेशन से थोड़ी दूरी पर स्थित है। यह मन्दिर कॉटन जीन्स कॉलोनी में स्थित है। यह मन्दिर पश्चिममुखी है।

संतोषी माता का मुख्य मन्दिर बहुत बड़े हॉल के अन्दर एक ऊँचे चबूतरे पर है। हॉल के पूर्वी दिशा में ऊँचे चबूतरे पर देवी माँ की भव्याकर्षक मूर्तियाँ स्थापित हैं। इसी हॉल में पश्चिम दिशा में हवन कुण्ड है। मन्दिर की पश्चिम दिशा में पीपल के पेड़ हैं।

मुख्य मन्दिर के पश्चिम में हॉल के रूप में हनुमान मन्दिर है। मन्दिर के उत्तर में काफी जगह खाली पड़ी है तथा ईशान में प्राचीन कुआँ है। मन्दिर में प्रमुख वास्तुशास्त्रीय दोष के रूप में उत्तर में संमाधि बनी है।

सन्तोषी माता के मन्दिर का भिण्ड की महिलाओं में आस्था का प्रमुख स्थान है। शुक्रवार के दिन यहाँ मेला लगता है तथा हजारों की संख्या में महिलायें दर्शनार्थ एकत्रित होती हैं तथा मन्दिर परिसर में नाचती-गाती हैं। मन्दिर के सामनें पहुँचनें पर राहगीरों के कदम भी स्वतः मन्दिर की ओर बढ़ने लगते हैं। इसका प्रमुख कारण मन्दिर का भव्य तथा सुन्दर बना होना है। मन्दिर का चबूतरा और गर्भग्रह पूर्णरूपेण वास्तुशास्त्रीय नियमों के अनुसार निर्मित है। उत्तरी-पश्चिमी हिस्से में हनुमान मन्दिर तथा ठीक उत्तर में स्थित कुआँ वास्तुशास्त्रीय नियमों के अनुसार ही निर्मित है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सन्तोषी माता का मन्दिर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इतना सब होते हुए भी इसका सबसे बड़ा वास्तुशास्त्रीय दोष मन्दिर का पश्चिममुखी होना है, जिसका निवारण भी कुछ सीमा तक हनुमान मन्दिर से हो जाता है। यदि मन्दिर के प्रवेश द्वार के ऊपर गणेश प्रतिमा प्रतिस्थापित कर दी जाय तो इसके अन्दर के सभी वास्तुशास्त्रीय दोषों का निवारण स्वतः ही हो जायेगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:४:११:३ बरासों नवीन जैन मन्दिर :

भिण्ड जिला मुख्यालय से दक्षिण-पश्चिम दिशा में लगभग पच्चीस किलोमीटर की दूरी पर बरासों गाँव में यह मन्दिर स्थित है। यह जैन मन्दिर नया बना हुआ है तथा इसमें निर्माण कार्य अभी भी हो रहा है। यह बंहुत ही भव्य तथा विशाल मन्दिर है। इस मन्दिर की पूर्व से पश्चिम की लम्बाई लगभग दो सौ पच्चीस फुट तथा उत्तर से दक्षिण चौड़ाई तीन सौ पच्चीस फुट होगी।

जैन समाज द्वारा इस मन्दिर के निर्माण में २८.१०.९६ को एक समिति गठित की गयी। समिति के अध्यक्ष उग्रसेन जैन (अडोखर) हैं तथा सचिव प्रेमचंद जैन (नीमगाँव) हैं। "दिनांक ०७.०६.१९९६ को संस्था पंजीयक फर्म्स एवं संस्थायें भोपाल द्वारा विधिवत् पंजीकृत की गई।" [१] ऐसा कहा जाता है कि इस मन्दिर का निर्माण भी देवों ने ही कराया था। जनश्रुति के अनुसार आज भी इसमें कई ऐसे चमत्कार होते हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि भगवान की पूजा के लिये आज भी यहाँ देवों का आवागमन बना रहता है।

---

१. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र : (पुरपट्टन बरनैर) बरासों जिला भिण्ड म०प्र० : दिनांक ०८.१०.१९९६ से ०६.०६.१९९६ तक : श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र संरक्षिणी कमेटी (पुरप-ट्टन बरनैर) बरासों जिला - भिण्ड, पृष्ठ -२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्दिर की दीवारें बहुत मोटी हैं, जो ईंट तथा चूने के मिश्रण से लगभग पाँच फीट मोटी बनायी गयीं हैं। पूरे मन्दिर में सफेद संगमरमर का फर्श बना हुआ है तथा मन्दिर के निर्माण में अधिकाँश भाग में सफेद संगमरमर पत्थर का ही प्रयोग किया गया है। मन्दिर में उत्तर तथा पूर्व की ओर द्वार बनाये गये हैं। पूर्व के मुख्य द्वार में सीढ़ियाँ विषम संख्या में बनायीं गयीं हैं। उत्तर दिशा में बने द्वार में सीढ़ियों की संख्या १८ है। ये सीढ़ियाँ उत्तर-दक्षिण दिशा में हैं। बड़ा आंगन है, जिसके मध्य भाग में बहुत ऊँचा स्तम्भ बनाया गया है। इस आँगन को पार करने के बाद बरामदा तथा बरामदा को पार करके दूसरा बड़ा आँगन है। सामने ही आँगन के बाद वाले बरामदा में ऊँची सी बेदी पर भगवान महावीर स्वामी की मूर्ति प्रतिस्थापित है। यह मूर्ति उत्तरमुखी है। दोनों आँगन के चारों दिशाओं में कमरे जैसे बरामदे बने हुए हैं। अन्दर वाले आँगन में वरामदों के नीचे तलघर है, जिनमें से एक में ऊँची बेदी पर भगवान महावीर स्वामी की सफेद पत्थर पर उत्कीर्ण मूर्ति ध्यानमुद्रा में प्रतिस्थापित है।

इस मन्दिर के आस-पास बहुत सी बंजर भूमि पड़ी है, जिस पर वृक्षों का नितान्त अभाव है। मन्दिर के दरवाजों पर नवीन निर्माण के होने पर भी सुन्दरता का अभाव लगता है। मन्दिर की सीढ़ियों का उतार भी एकदम खड़ा है जो श्रद्धालुओं के चढ़ने में कष्टदायक है तथा सीढ़ियों की संख्या भी सम है। मन्दिर के दक्षिणी भाग में तलघर है, जो बहुत नीचा है।

मन्दिर के सतत विकास के लिये वास्तुशास्त्रीय दोषों का निवारण होना अति आवश्यक है जिसमें मुख्य द्वार पर एक सीढ़ी का निर्माण और कराया

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जाय, मन्दिर के आस-पास वृक्षारोपण किया जाय तथा पूरे मन्दिर परिसर का सौन्दर्यीकरण किया जाय। मन्दिर के बाहर दर्शनार्थियों के लिये विश्रामस्थल तथा पेयजल की व्यवस्था की जाय। मुख्य मार्ग से मन्दिर तक पक्के मार्ग का निर्माण कराया जाय।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५:४:८:४ कुण्डेश्वर मन्दिर :

यह मन्दिर भिण्ड इटावा मार्ग पर जहाँ डायवर्सन रोड आकर मिलती है उसी तिराहे से थोड़ी सी दूरी पर स्थित है। इसके सामनें शहर कोतवाली स्थित है।

यह मन्दिर पूर्वमुखी है। इसकी स्थिति मुख्य मार्ग पर होने के कारण इधर-उधर दुकानें है। मन्दिर के मुख्य द्वार पर चैनल लगा है। इस चैनल के अन्दर छोटा सा बरामदा है, इसे पार करने पर अन्दर बहुत बड़ा दालान है, जिसके पश्चिमी भाग में कुण्डेश्वर का प्राचीन मन्दिर स्थित है। यह शिव मन्दिर है। मन्दिर के मध्य भाग में शिवलिंग है, इसके द्वार पर सफेद संगमरमर के नन्दी महाराज जी विराजित हैं, जिनका मुख पश्चिम की ओर है। इस मन्दिर में अन्दर से खूबसूरत नक्काशी की गयी है। इस मन्दिर के चारों ओर परिक्रमा मार्ग भी है।

मुख्य मन्दिर के ठीक बगल में उत्तरी दिशा में नवीन देवी मन्दिर है, जिसमें माँ काली तथा माँ दुर्गा की सुन्दर प्रतिमायें विराजित हैं। ये प्रतिमायें पूर्वमुखी हैं। इस मन्दिर में अन्दर से ही परिक्रमा मार्ग है।

मुख्य मन्दिर से उत्तरी दिशा में मंशापूर्ण हनुमान जी का मन्दिर है। यह मन्दिर दक्षिणमुखी है। इसमें मंशापूर्ण हनुमान की दक्षिणमुखी प्रतिमा है। मुख्य मन्दिर के दक्षिणी दिशा में एक मन्दिर है, जिसका द्वार उत्तर दिशा में है। यह माँ दुर्गा देवी का मन्दिर है, इसमें दो द्वार हैं पहला द्वार उत्तरी दिशा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में तथा दूसरा द्वार पूर्वी दिशा में खुलता है। बहुत बड़े से आले में माँ दुर्गा की प्रतिमा विराजित है। इसके चारों तरफ परिक्रमा मार्ग है। इस मठिया का फर्श नया बना है।

मुख्य मन्दिर के आग्नेय कोण पर एक समाधि स्थल बना हुआ है। जिसमें छोटी सी कोठरी है। उस पर छः सीढ़ियाँ चढ़ने पर मध्य भाग में लगभग ४ × ४ फीट का चबूतरा बना है। जिस पर सफेद प्रस्तर पर चरण चिन्ह अंकित हैं। उसी के बगल में एक और समाधि स्थल बना हुआ है। मुख्य मन्दिर की उत्तरी दिशा में एक तालाब है।

यह मन्दिर स्टेट काल का बना बताया जाता है। यहाँ के महन्त ब्रह्मऋषि ठाकुर दास जी महराज हैं। महन्त के अनुसार नन्दी महाराज जी लगभग एक कुन्तल बजन के हैं। यह संगमरमर की मूर्ति इटली से मंगाई गयी थी।

मन्दिर परिसर काफी गन्दा रहता है यहाँ पर सफाई की समुचित व्यवस्था नहीं है। मन्दिर काफी पुराना है, इसकी प्राचीनता को देखते हुए तथा ग्वालियर-इटावा मार्ग पर स्थित होते हुए भी यह मन्दिर यहाँ के लोगों में श्रद्धा का प्रमुख स्थान नहीं बना सका है। मन्दिर का परिवेश एवं प्रवेश द्वार दर्शनार्थियों को आकर्षित करने में असफल हुआ है। जैसा कि अन्य मन्दिरों में श्रद्धालुओं की भीड़ तो होती ही है साथ ही राहगीरों को आकर्षित करने की अजीब क्षमता भी होती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुण्डेश्वर मन्दिर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्दिर परिवेश के देखते हुए शिखर की ऊँचाई भी कम है। मन्दिर में प्रमुख वास्तुशास्त्रीय दोष के रुप में मन्दिर के दक्षिणी भाग में दो समाधियों का होना है। यद्यपि ये समाधियाँ मुख्य मन्दिर से थोड़ी सी दूरी पर स्थित हैं फिर भी इसका दुष्प्रभाव तो पड़ ही रहा है।

मंन्दिर में प्रवेश करने पर चित्त प्रसन्न नही होता तथा ऐसा लगता है कि किसी मन्दिर में नहीं, किसी धर्मशाला में प्रवेश कर रहे हैं।

यदि इस मन्दिर को श्रद्धा का प्रमुख केन्द्र बनाना है तो कई बातों पर ध्यान देना पड़ेगा जिसमें वास्तुशास्त्रीय दोषों का निवारण प्रमुख है। मन्दिर परिसर में स्थित समाधियों और मुख्य मन्दिर के बीच में एक ऊँची सी दीवार का निर्माण करा दिया जाय तथा उसके प्रवेश द्वार को नया रूप देने के साथ-साथ उस पर गणेश प्रतिमा की स्थापना करा दी जाय। मन्दिर परिसर में सुन्दर पुष्प वृक्षों का रोपड़ किया जाय तथा इसमें यथा सम्भव परिवर्तन आवश्यक हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय - छः

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्राचीन मठों - मस्जिदों का अध्ययन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चतुर्वर्ग फलप्राप्तिः सलोकश्च भवेद् ध्रुवम्।
शिल्प शास्त्र परिज्ञाना न्यर्त्येऽपि सुरतां व्रजेत्।।

इदं पवित्रं परमं रहस्यं यः पठेन्नरः।
स्यात्तस्यावि तथा वाणी सत्यं वदाम्यहम्।।

आचार्य विश्वकर्मा

वास्तुशास्त्र के ज्ञान का अध्ययन करने पर मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार फलों की प्राप्ति होती है। इस प्रकार वह मनुष्य अलौकिक गुणों से युक्त होकर सबका कल्याण तथा हित करने में भी सफल होता है। विश्वकर्मा जी कहते हैं कि जो व्यक्ति इस शिल्पशास्त्र को जो कि अत्यंन्त पवित्र तथा रहस्यमय है, अध्ययन करता है उसकी वाणी सदा सत्य पर आधारित हो जाती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६. प्राचीन मठों-मस्जिदों का अध्ययन :

भिण्ड जिले में प्राचीन मठ के रूप में प्रमुख रुप से कुशवाह मठ गोहद चौराहा है। इसका निर्माण विशेष प्रकार से किया गया है। भिण्ड जिले में मुसलमानों की अच्छी आबादी है। यहाँ के विकास में मुस्लिम भाइयों का विशेष प्रकार का योगदान है। भिण्ड नगर में महावीर गंज में तथा नयापुरा में दो प्रमुख मस्जिदें हैं, जिनमें भिण्ड शहर के ही नहीं बल्कि पूरे जिले के मुस्लिम भाई नमाज अदा करने आते हैं। तीसरी प्रमुख मस्जिद आलमपुर में है यह भी बहुत प्राचीन है।

यद्यपि इन मस्जिदों का निर्माण मुस्लिम शिल्पकला से हुआ है, फिर भी मैनें इनका वास्तुशास्त्रीय अध्ययन किया।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिला - भिण्ड

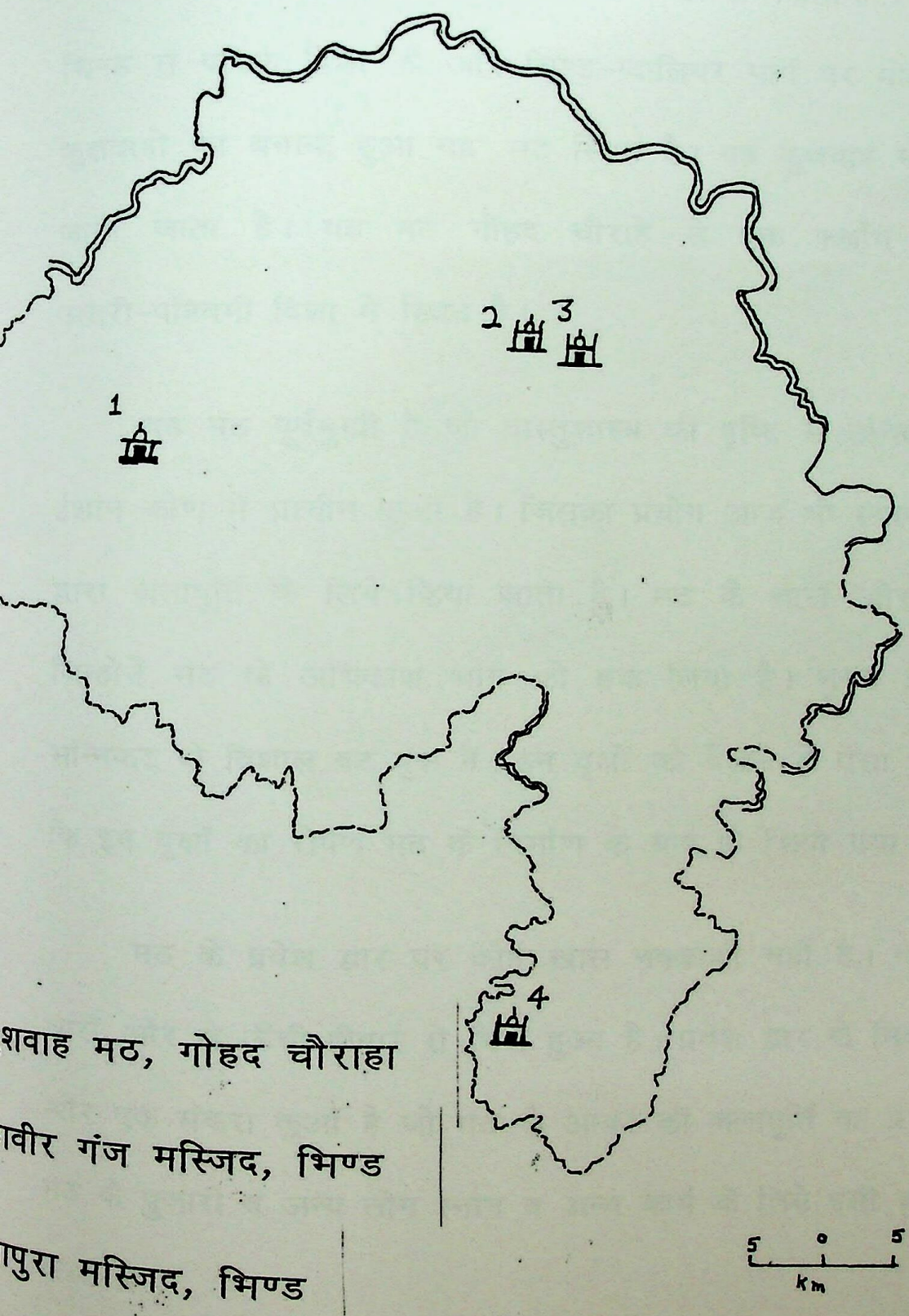

शवाह मठ, गोहद चौराहा

ावीर गंज मस्जिद, भिण्ड

ापुरा मस्जिद, भिण्ड

लमपुर की प्राचीन मस्जिद

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

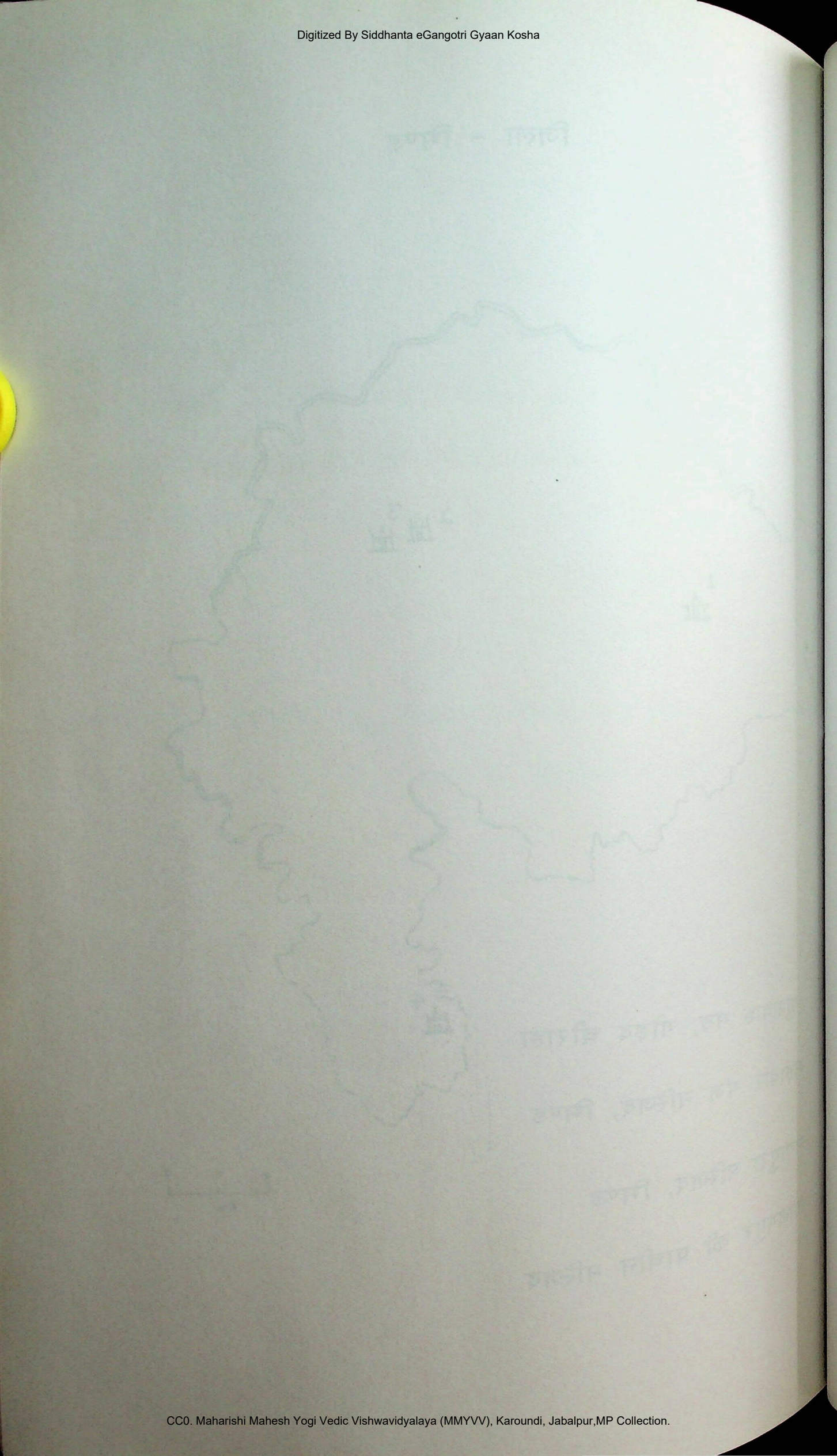

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६:१ कुशवाह मठ गोहद चौराहा :

भिण्ड जिला मुख्यालय से लगभग चालीस किलोमीटर की दूरी पर भिण्ड से दक्षिण दिशा की ओर भिण्ड-ग्वालियर मार्ग पर गोहद चौराहे पर कुशवाहों का बनाया हुआ यह मठ स्थित है। यह कुशवाह मठ के नाम से जाना जाता है। यह मठ गोहद चौराहे से एक फर्लांग की दूरी पर उत्तरी-पश्चिमी दिशा में स्थित है।

यह मठ पूर्वमुखी है जो वास्तुशास्त्र की दृष्टि से उचित है। मठ की ईशान कोण में प्राचीन कुआँ है। जिसका प्रयोग आज भी स्थानीय निवासियों द्वारा जलापूर्ति के लिये किया जाता है। मठ के चारों ओर घने वृक्ष हैं जिन्होनें मठ के अधिकांश भाग को ढक लिया है। मुख्य प्रवेश द्वार के सन्निकट दो विशाल वट वृक्ष हैं। इन वृक्षों को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि इन वृक्षों का रोपण मठ के निर्माण के बाद ही किया गया है।

मठ के प्रवेश द्वार पर कोई खास नक्काशी नहीं है। मठ का प्रांगण चारों ओर से ऊँची दीवार से घिरा हुआ है। प्रवेश द्वार के निकट उत्तर की ओर एक संकरा कुआँ है जो मठ के अन्दर की जलापूर्ति का प्रमुख स्रोत है। मठ के पुजारी व अन्य लोग स्नान व अन्य कार्य के लिये इसी कुएँ का प्रयोग करते हैं।

मुख्य मन्दिर मठ प्रांगण के दक्षिणी दिशा में है, जो उत्तरमुखी है। मुख्य मन्दिर (मठ) के चौखट और कपाटों पर विशेष प्रकार की नक्काशी की

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुशवाह मठ

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गयी है। यह नक्काशी तत्कालीन हिन्दू काष्ठ शिल्पकला का उत्कृष्ट नमूना है। इस मठ में क्रमशः लक्ष्मण, राम, जानकी, विष्णु तथा लक्ष्मी की मूर्तियाँ स्थापित हैं। यह मठ हिन्दू शिल्पकला का बेजोड़ नमूना है।

मठ के उत्तरी दिशा में दक्षिणमुखी हनुमान मन्दिर है। बीच में शिवलिंग तथा अन्य देवताओं में ब्रह्मा, गणेश, दुर्गा देवी आदि की प्रतिमायें स्थापित हैं।

इस मठ में विशेष बात यह है कि मठ के पश्चिमी दिशा में पूर्व महन्तों की प्रतिमाएँ स्थापित हैं। जिनमें क्रमशः श्री श्री शंकरदास जी १०८, श्री श्री विष्णदुास जी १००८ तथा श्री श्री रामदास जी १०८ की भव्य मूर्तियाँ स्थापित हैं जो मठ में घुसते ही दिखाई देती हैं।

इस मठ के जीर्णोद्धार के नाम पर जो मरम्मत कार्य कराया गया है उससे प्राचीनता तो विलुप्त सी हो गई है लेकिन नवीनता भी परिलक्षित नहीं होती है। मठ की परिक्रमा करने पर चित्त प्रसन्न नहीं होता है।

इस मठ में कई स्थानों पर वास्तुशास्त्र की बातों का ध्यान रखा गया है फिर भी इसमें अनेकों दोष विद्यमान हैं। मठ के बाहर ईशान कोण पर प्राचीन कुआँ स्थित है, यह बहुत बड़ा वास्तुशास्त्रीय दोष रखता है। इस कुएँ की स्थिति ईशान से या तो थोड़ी सी उत्तर या थोड़ी से पूर्व में होनीं चाहिए थी। ईशान की ठीक सीधी रेखा में वास्तुशास्त्र के अनुसार कुआँ बनाना वर्जित होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दू शिल्पकला तथा हिन्दू काष्ठ कला

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दूसरा मुख्य दोष मठ प्रांगण में प्रतिस्थापित पूर्व महन्तों की बड़ी-बड़ी प्रतिमाओं का है। इस मठ में छायादोष भी है। मठ में प्रवेश करने पर ऐसा लगता ही नही कि यह भगवान का मठ है। यदि पूर्व महन्तों की प्रतिमाओं के लिये अलग से मन्दिर का निर्माण किया जाय तथा मठ के बाहर वाले कुएँ को बन्द करके मठ के बाहर वृक्षों को हटा दिया जाय तो इसका वास्तुशास्त्रीय दोष खत्म हो जायेगा। तो यह निश्चित ही सभी के दिलों में आस्था व श्रद्धा का केन्द्र बन जायेगा। इसकी स्थिति गोहद चौराहे पर होने के कारण दर्शनार्थ्रियों की संख्या में वृद्धि होने लगेगी।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६:२ महावीर गंज की मस्जिद :

यह मस्जिद भिण्ड नगर के महावीर गंज में स्थित है। इसका प्रवेश द्वार पूर्व की ओर है, जो स्थापत्य वेद की दृष्टि से उचित है। यह प्रवेश द्वार मस्जिद के बीचों बीच में है, जिसमें लोहे का चैनल लगा हुआ है। उत्तर की दीवार ठीक सीधी है तथा दक्षिण में मस्जिद का कुछ भाग निकला हुआ है। दक्षिणी भुजा पर बनी दीवारें टेडी-मेढ़ी हैं, जो कई हिस्सों में अपने निर्माण की कहानी कहती हैं।

मस्जिद के दक्षिण-पूर्व में पुराना एक अर्रु का वृक्ष है, जिसकी छाया मस्जिद के ऊपर बनी रहती है। यह वृक्ष स्थापत्य वेद की दृष्टि से उचित नहीं है। इस मस्जिद के आस-पास कोई चहार दीवारी नहीं है। मस्जिद के ठीक सामने भिण्ड नगर पालिका के कुछ क्वाटर्स हैं, जिसमें नगर पालिका के कर्मचारी रहते हैं। इन क्वाटर्स की चहार दीवारी का कोना मस्जिद के सामने तक चला गया है, जिससे मस्जिद की सुन्दरता बाधित होती है। इस मस्जिद का निर्माण आधुनिक काल में हुआ है, जिस पर मुगल कालीन शिल्प कला का प्रभाव है। मस्जिद का रख-रखाव ठीक प्रकार से हो रहा है।

'मुहम्मद अली'[1] से प्राप्त जानकारी के अनुसार - "जहाँ पर आज मस्जिद निर्मित है वहाँ पर मस्जिद से निर्माण के पूर्व कब्रिस्तान था।" जो

---

१. मुहम्मद अली निवासी महावीर गंज, भिण्ड, उम्र ५६ वर्ष

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महावीर गंज की मस्जिद

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थापत्यवेद की दृष्टि से बहुत बड़ा दोष है। इस मस्जिद में वास्तुशास्त्र की दृष्टि से कई और भी दोष दिखाई दिये। मस्जिद के अन्दर पेयजल की व्यवस्था आग्नेय कोण में है, जो वास्तुशास्त्र की दृष्टि से उचित नहीं है। ऊपर जाने के लिये सीढ़ियाँ भी घड़ी की सुई के विपरीत दिशा में है।मस्जिद में कुछ वास्तुदोष होने के कारण मस्जिद की रख-रखाव की सही व्यवस्था होने पर भी इसका पर्याप्त विकास नहीं हो पा रहा है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६:३ नयापुरा की मस्जिद :

भिण्ड जिले के नयापुरा मुहल्ले में यह प्राचीन मस्जिद स्थित है। इस मस्जिद का निर्माण काल १८२३ का है। नयापुरा की मस्जिद 'जामा मस्जिद' के नाम से मशहूर है। मस्जिद में लगे शिलालेख के अनुसार "इस मस्जिद का निर्माण हिजरी १३४१ का है। यह मस्जिद बहुत विशाल है। मस्जिद के पूर्व तथा पश्चिम में शहर की गलियाँ हैं। मस्जिद के अन्दर की बनावट काफी सुन्दर है। मस्जिद के ऊपर बने गुम्बद और मीनारों में मुगलकालीन वास्तुशिल्प के दर्शन होते हैं। मस्जिद के दक्षिण में एक मदरसा है, जिसका नाम अंजुमन इस्लामिया उर्दू मिडिल स्कूल है, जिसका निर्माण काल १९२३ का है।

इस जामा मस्जिद के आग्नेय कोण में नीम का प्राचीन वृक्ष है, जो वास्तुशास्त्र की दृष्टि से उचित नहीं है। इस मस्जिद में पेयंजल की व्यवस्था ईशान कोण में नहीं है। इस मस्जिद का आँगन ब्रह्म स्थान में है जो स्थापत्य वेद की दृष्टि से उचित जगह पर है।

---

१. शिलालेख - निषादखान अदन अंजुमन
मदरसन मुर्खीदुम इस्लाम सन् १९२३
हिजरी - १३१४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नया पुरा की मस्जिद

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६:४ आलमपुर की प्राचीन मस्जिद :

भिण्ड जिला मुख्यालय से सौ किलोमीटर की दूरी पर आलमपुर स्थित है। आलमपुर में इस्लाम धर्म की मुख्य इमारत के रूप में आलमपुर की पुरानी मस्जिद के नाम से विख्यात यह धार्मिक स्थल है। जनश्रुति के अनुसार इस मस्जिद का निर्माण किसी अलहकार ने करवाया था।

मस्जिद के निर्माण के बारे में "इस बात की पुष्टि पुरालेख द्वारा तो नहीं होती, पर इतना अवश्य मिलता है कि सम्वत् १८०८ से १९०२ तक मिर्जा हैदरअली अमीन पद पर कार्यरत रहे। उनका सहयोग मिलाहोजो कि यहाँ दो बार उक्त पद पर आसीन रहे। धार्मिक भावना, सजातीय मिर्जा वर्ग का होना और इबादत खाने के अभाव की पूर्ति हेतु उनको प्रेरणा मिली हो और इमारत की रचना करा डाली हो। इमारत की आयु भी लगभग डेढ़ सौ वर्ष मालूम होती है।[1]

इस मस्जिद में आलेख मिलता है कि इसका निर्माण आलमपुर ने हिजरी १३१६ में अल्लाह की मदद से करवाया। यह मस्जिद ईंट तथा चूने के मिश्रण से बनायी गयी है। मस्जिद का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में है। इस

---

१. होल्कर राजवंश और आलमपुर : वीरेन्द्र सिंह चन्देल, चन्देल भवन, आलमपुर (भिण्ड) मध्य-प्रदेश प्रकाशक : नरेन्द्र सिंह चन्देल, चन्देल भवन आलमपुर, प्रथम संस्करण १९९४ : पृष्ठ - १८२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मस्जिद के निर्माण में अधिकांशतः लाल पत्थर का प्रयोग किया गया है। छत पर जाने के लिये सीढ़ियों की संख्या सम है। यह मस्जिद टेढ़ी-मेढ़ी जगह में बनायी गयी है।

यह मस्जिद बहुत बड़ी है तथा देखने में अति सुन्दर लगती है। यहाँ पर हजारों लोग नमाज अदा करने आते हैं। यहाँ पर विशेष बात यह है कि जुमे के दिन सभी नमाजियों को एक-एक गिलास मीठा शर्बत मिलता है। मस्जिद में नमाज अदा करते वक्त यहाँ सिर पर टोपी पहनकर आना अनिवार्य होता है।

इस मस्जिद मेंसौन्दर्य तथा चारों ओर वृक्षारोपण का प्रभाव है। आलमपुर में जुमें के दिन लगभग सभी मुस्लिम बन्धु नमाज अदा करने आते हैं। वास्तुकला की दृष्टि से यह एक उत्तम कलाकृति है तथा इसके कुछ गुणों को छोड़कर यह मस्जिद वास्तुशास्त्र के अनुरूप नहीं है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मठ की प्राचीनता एवं इसके निर्माण में प्रयुक्त वास्तुशिल्प कला अपने में अनूठी है। मठ के निर्माण में हिन्दू शिल्प कला का प्रयोग किया गया है। यहाँ प्रमुख बात यह है कि कुशवाह शासकों ने किलों के ही समान इस मठ के निर्माण में सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा है जिससे मठ पूर्णतः हवादार नहीं हैं और न ही यज्ञशाला तथा पेयजल की व्यवस्था उचित स्थान पर की गयी है। यहाँ का प्रवेश द्वार भी संकीर्ण है।

ये सभी बातें मठ के विकास में बाधा पहुँचाती रहीं है। यदि इसका पुनरुद्धार कराकर कुछ परिवर्तन किये जायें तो निश्चित रूप से इसमें दर्शनार्थियों की भीड़ उमड़ पड़ेगी।

यही हाल भिण्ड जिले की मस्जिदों का है। मस्जिदें तो बना दी गयीं लेकिन उनके सौन्दर्य, रख-रखाव, पेयजल, वृक्षारोपण इत्यादि पर उचित ध्यान नहीं दिया जा रहा है। यदि इन बातों पर ध्यान दिया जाय तो ये मस्जिदें भिण्ड नगर एवं आलमपुर के लिये ही नहीं अपितु पूरे जिले के लोगों की श्रद्धा के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बनी रहेगीं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय - सात

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपसंहार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वास्तुशास्त्रद्वते तस्य न स्याल्ल क्षणनिश्चयः।
वस्माल्लोकस्य कृपया शास्त्रमेतदुदीर्थते।

समरांगण सूत्रधार १/५

वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तो के अतिरिक्त अन्य कोई प्रकार नहीं जिससे यह निश्चित किया जा सके कि कोई भी भवन सही निर्मित है या नही। वस्तुतः सभी के लिए वास्तुशास्त्र का एक अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

७. उपसंहार

भिण्ड जिला मध्य प्रदेश का उत्तरी जिला होने के कारण उत्तर-प्रदेश के जालौन, इटावा तथा आगरा से मिला हुआ है। चम्बल, सिंध, क्वारी तथा पहूज यहाँ की प्रमुख नदियाँ हैं, जिनका प्रभाव यहाँ के मानव जीवन पर स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। प्रशासनिक दृष्टि से यहाँ पर सात तहसीलें (गोहद, भिण्ड, अटेर, मेहगाँव, रौन, मिहोना और लहार) हैं।

भौगोलिक दृष्टि से इस जिले की कृषि योग्य भूमि, हरे-भरे पेड़ पौधे जंगल और नदियाँ यहाँ के निवासियों के लिये सहयोगी हैं। यहाँ लोग परिश्रमी हैं, ऐसा होते हुए भी भिण्ड जिले के बीहड़ यहाँ के निवासियों के वरदान के बजाय अभिशाप बने हुए हैं। इसी जिले की चम्बल की घाटी दुर्नाम दस्युओं के लिये पूरे भारत में ही नहीं वरन अखिल विश्व में जानी जाती है।

जनश्रुति के अनुसार भिण्ड शहर और जिले का नाम भिण्डी ऋषि के नाम पर रखा गया है। जिसके प्रमाण स्वरूप भिण्डी ऋषि का मन्दिर तथा उस मन्दिर में रखी ऋषि की चरण पादुकायें दर्शनीय हैं। यहाँ पर विभिन्न जातियों, धर्मों व संस्कृति के लोग रहते हैं। धरातल की बनावट का यहाँ के निवासियों के जीवन पर स्पष्ट प्रभाव पड़ा है। कहीं बीहड़-भरके हैं तो कहीं समतल मैदान हैं। यदि यहाँ की चम्बल की घाटी दुर्नाम दस्युओं के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लिये विश्व में जानी गयी है तो दूसरी ओर यहाँ के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों ने भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया, आज भी इस क्षेत्र के हजारों बाँके वीर भारतीय सेना तथा विभिन्न प्रान्तों के पुलिस विभागों में अपनी अदम्य वीरता और साहस का परिचय दे रहे हैं।

यहाँ के निवासियों में किसान, व्यापारी, नौकरी पेशा, मजदूर, सैनिक तथा अर्द्धसैनिक बलों में कार्यरत लोग प्रमुख हैं। यहाँ के सामाजिक परिवेश को डाकुओं ने बहुत प्रभावित किया है।

सन् १९९१ की जनगणना के अनुसार भिण्ड जिले की कुल जनसंख्या १२,१९००० है। अधिकांश जनसंख्या कृषि तथा मजदूरी पर निर्भर है। मालनपुर औद्योगिक क्षेत्र के विकसित होने पर कुछ लोग इन औद्योगिक इकाइयों में मजदूरी करते हैं। आर्थिक रूप से सम्पन्न लोग व्यापार-धन्धों में लगे हुए हैं। विभिन्न जातियों के निवास को देखते हुए भिण्ड जिले को विभिन्न घारों (कछवाह घार, भदावर घार, कोरव घार, सराय घार, नरवरिया घार, जटवारा घार, राजपूत घार, तौंर घार तथा गूजर घार) के रूप में भी जाना जाता है।

यहाँ पर हिन्दू तथा मुसलमानों की एकता दर्शनीय है। ये खान-पान तथा वेश-भूषा में एक दूसरे पर विशेष प्रभाव डाल रहे हैं। हिन्दू स्त्रियाँ प्रमुखतः साड़ी-ब्लाउज पहनना पसन्द करती हैं, जबकि मुस्लिम स्त्रियाँ सलवार कुर्ता तथा बुरखा पहनती हैं। पुरुषों में धोती-कुर्ता, पैन्ट-शर्ट पहनना पसन्द

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किया जाता है। कृषक परिवारों में कृषि के साथ पशुपालन भी होता है। यहाँ पर दिनों दिन शिक्षा का प्रसार बढ़ रहा है।

भिण्ड जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांशतः संयुक्त परिवार पाये जाते हैं। संयुक्त परिवार से समाज में आपसी प्रेम और भाई चारा बढ़ता है तो दूसरी ओर इनमें आये दिन लड़ाई-झगड़ा और आपसी विवाद होता रहता है, जिसके फलस्वरूप संयुक्त परिवार दिनों-दिन विघटित होते जा रहे हैं।

हिन्दुओं के धार्मिक संस्कार जन्म से लेकर मृत्यु तक चलते हैं। यहाँ के लोग बहुत फिजूलखर्ची करते हैं। मृत्युभोज या तेरहवीं संस्कार में हजारों लोगों को भोजन कराना शान समझा जाता है। सम्पन्न लोगों की बात तो छोड़िये गरीब और मजदूर लोग भी अपनी खोखली शान को कम नहीं होने देते भले ही उन्हें उपर्युक्त कार्य़ के खर्च के लिये कर्ज ही क्यों न लेना पड़े।

यह जिला संगीत और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का केन्द्र है। वर्तमान में यहाँ एक टैगोर संगीत विद्यालय है जो विभिन्न प्रकार के वाद्यों और नृत्य की शिक्षा दे रहा है। बिहारी बाल विद्या मन्दिर ने भी अपने विद्यार्थियों के माध्यम से संगीत और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पूरे जिले में धूम मचा दी है इसके प्रबन्धक श्री शर्मा जी संगीत और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बहुत रुचि रखते हैं। लोक संस्कृति, संस्कृत एवं जनकल्याण परिषद यहाँ की प्रमुख सांस्कृतिक संस्था है जो पूरे भारत वर्ष में भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा का प्रचार-प्रसार कर रही है। जिले की अन्य संस्थायें भी संगीत और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रुचि ले रहीं हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिण्ड शहर में वर्ष में एक बार नुमाइश भी लगती है। बाईपास रोड पर कोतवाली के निकट नुमाइश ग्राउण्ड है। यहाँ निराला रंग बिहार के नाम से एक पण्डाल है जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। यहाँ विभिन्न धार्मिक अवसरों पर मन्दिरों, मस्जिदों एवं गुरुद्वारों पर मेलों का आयोजन किया जाता है जिनमें बाल, बृद्ध, नर-नारी सभी आनन्द लेते हैं। मेलों से अपनापन तथा भाई-चारा पनपता है।

भिण्ड विस्तृत क्षेत्र में फैला है जिले में अनेकों ऐतिहासिक स्मृतियाँ आज भी विद्यमान हैं। कई ऐतिहासिक कालों की वास्तुशास्त्रीय कलाकृतियाँ विभिन्न किलों, गढ़ियों, मन्दिरों एवं मस्जिदों के रुप में विद्यमान हैं। पूरे भिण्ड जिले का भ्रमण करके तथा इन कलाकृतियों को शोध परक दृष्टि से देखा इनका अवलोकन करने से विभिन्न प्रकार की वास्तुशास्त्रीय विशेषताओं के दर्शन होते हैं। इस जिले में मुख्यतः तीन किले हैं जिनमें अटेर का किला सबसे अधिक सुन्दर है। किले के निर्माण में भारतीय वास्तुशास्त्र का विशेष ध्यान रखा गया, फिर भी इसमें कई वास्तुशास्त्रीय दोष पाये गये है। इन वास्तुशास्त्रीय दोषों के कारण इस किले को कई आक्रमणों का सामना करना पड़ा। सिंधिया के आक्रमण के समय किले के कई भाग ध्वस्त हो गये थे तथा भदावर नरेश की जान बड़ी मुश्किल से बच सकी। इस किले की ही तरह भिण्ड और गोहद किले में भी कई वास्तुशास्त्रीय दोष पाये गये हैं जिनके कारण यह किले भी सुरक्षित नहीं रह सके।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजाओं के अस्तित्व के बाद जमींदारी प्रथा में कई गढ़ियों का निर्माण हुआ। इन गढ़ियों में भी सुरक्षा का अधिक ध्यान रखा गया। भारतीय वास्तुशास्त्र का स्थान सुरक्षा के बाद दूसरे नम्बर पर आ गया है या फिर इसका बिल्कुल ध्यान नहीं रखा गया है। जिसके कारण इन गढ़ियों में रहनें वाले जमींदारों का जीवन कभी भी सुखमय नहीं रहा है। मद्दण्ड की गढ़ी में जल निकास एवं अवरोध का ध्यान नहीं रखा गया है जिसके कारण यहाँ के जमीदारों को आज भी विभिन्न प्रकार के शारीरिक कष्ट झेलने पड़ रहे हैं। ऐसा लगता है मानों इन्हीं दोषों के कारण गढ़ी अपनी दुर्दशा पर आँसू बहा रही है। यही स्थिति इन्दुरखी, आलमपुर एवं जमुहाँ की गढ़ी की है।

यहाँ के निवासी धार्मिक प्रवृत्ति के हैं जो विभिन्न धर्मो में आस्था रखते हैं। गाँव में मन्दिरों की बहुलता है तो नगरों में मन्दिरों के साथ-साथ मस्जिदों और गुरुद्वारे भी आस्था के केन्द्र बिन्दु हैं। सबसे प्राचीन मन्दिर भिण्डी ऋषि इसके बाद मलखान का रेंहकुलादेवी का मन्दिर, बनखण्डेश्वर मन्दिर, चामुण्डा देवी मन्दिर एवं विभिन्न जैन मन्दिरों का निर्माण हुआ। नवीन मन्दिरों में रामजानकी मन्दिर एस०ए०एफ० भिण्ड, स्वामी केशवानन्द मन्दिर रजपुरा, हनुमान मन्दिर डिड़ी, हनुमान मन्दिर दँदरौआ आदि हैं। इन मन्दिरों में शोध के उपरान्त पाया गया कि जिन मन्दिरों में वास्तुशास्त्रीय अनुकूलता है वे आस्था के प्रमुख केन्द्र हैं तथा जिनमें वास्तुशास्त्रीय प्रतिकूलता है वे लोगों को आकर्षित करने में समर्थ नहीं हो पाये हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यहाँ की लगभग सभी मस्जिदें नवीन हैं केवल आलमपुर की मस्जिद ही प्राचीन है। भिण्ड शहर में नयापुरा मस्जिद एक भू-भाग में फैली हुई है। अधिकांश मुसलमान यहीं नमाज अदा करने आते हैं।

परम् पूज्य महर्षि महेश योगी के अनुसार किसी भी नगर या गाँव का प्रवेश द्वार उत्तर दिशा से होना चाहिए। भिण्ड नगर में पूरे मध्य प्रदेश के लोग दक्षिण से प्रवेश करते हैं। इसका पूर्वी और उत्तरी भाग ऊबड़-खाबड़ है। ये दोनों ही बातें भिण्ड जिले के लिये दोषपूर्ण एवं अशुभ फलदायी हैं। यही कारण है कि यहाँ हमेशा दस्युओं की समस्या बनी रहती है। यहा के निवासियों में डाकुओं का भय व्याप्त रहता है। दस्यु उन्मूलन के विभिन्न प्रकार के प्रशासनिक प्रयासों के बावजूद भी यह समस्या जस की तस बनी है, यदि ग्वालियर भिण्ड मार्ग को लगभग ५ किलोमीटर भिण्ड से पहले पूर्व की ओर मोड़कर फिर उत्तर की ओर लहार चुंगी पर भिण्ड में प्रवेश कराया जाय तथा भिण्ड के पूर्व में ही राजकीय बस स्टैण्ड का निर्माण किया जाय तो इस दोष का निवारण हो सकता है। इसी प्रकार गुना व इटावा का रेल मार्ग पूर्व से होकर जाना ही उचित होगा। भिण्ड जिले की उत्तरी सीमा में चम्बल नदी के प्रवाहित होने के कारण ही यहाँ सभी विकास हो पा रहा है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संदर्भ ग्रन्थ सूची

भूगोल

१.	भौतिक भूगोल	एस०एम० जैन, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा १९९७
२.	आधुनिक भारत का भूगोल	डा० चतुर्भुज मामोरिया, साहित्य भवन आगरा
३.	मानव भूगोल के सरल सिद्धान्त	डा० एस०डी० कौशिक, ए०के० शर्मा १९८८-८९
४.	अधिवास भूगोल	राम सुरेश, जी०पी० यादव, एम०पी० करन, किताब घर आचार्य नगर कानपुर
५.	नगरीय भूगोल	बंसल, किताब घर आचार्य नगर, कानपुर
६.	'रूरल हाउस टाइप्स' अरबन एण्ड रूरल प्लेनिंग थॉट	के०आर० ऊनी, नई दिल्ली
७.	मैन कल्चर एण्ड सैटिलमेन्ट	सी० सिंह, के०एन० सिंह राना कल्यानी पब्लि० न्यू देहली
८.	इण्डियाज विलेजिज	एम०एन० श्रीवास्तव एशिया पबिलिकेशन हाउस, मुम्बई
९.	रूरल सैटिलमेन्ट ज्यॉग्राफी	एस०बी० सिंह उ० भारत भूगोल प्रकाशन गोरखपुर
१०.	ग्रामीण बस्ती भूगोल	जी०पी० यादव, राम सुरेश किताब घर आचार्य नगर कानपुर
११.	दैनिक उद्‌गार	भिण्ड जिला विकास विशेषांक १९९३
१२.	चम्बल के आस-पास	प्रथम संस्करण, १९९८ डा० कालीचरण स्नेही

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१३.	भदावर का इतिहास	डा० एस०के० जैन, डा० शिवशंकर कटारे, १९८४
१४.	भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन	डा० श्यामसुन्दर सौनकिया, आराधना ब्रदर्स कानपुर १९९६
१५.	मानव और संस्कृति	श्यामाचरण दुबे
१६.	सोसाइटी	मेकाइबर एण्ड पेज
१७.	द ज्वाइन्ट फेमिली इन इण्डिया	एन आर्टिकल इन सोशियोलॉजिकल बुलेटिन वॉल्यूम (V) न० २ सितम्बर १९५६
१८.	उच्चतर समाजशास्त्रीय सिद्धान्त	रवीन्द्र नाथ मुखर्जी १९७४
१९.	समाजशास्त्र	जे०एन० सचान, बाई०एन० कंचन, चित्रा प्रकाशन इटावा १९८६-१९८७
२०.	इण्डिया रीजनल ज्यॉग्राफी	आर०एल० सिंह, १९७१
२१.	मानव भूगोल	डा० चतुर्भज मामोरिया, साहित्य भवन आगरा, १९९७
२२.	आर०एल० सिंह	बनारस ए स्टडी ऑफ अरबन ज्यॉग्राफी १९५५
२३.	सी०ए० डिक्सियादिस	दि ह्यूमन सैटिलमेन्ट दैट बी नीड न्यू देहली, टाटा एम०सी० गर्वहिल पब्लिशिंग कम्पनी लि० १९७६
२४.	मानचित्रांकन एवं प्रयोगिक भूगोल	डा० चतुर्भुज मामोरिया, एस०एम० जैन १९९५
२५.	भिण्ड क्षेत्र का सांस्कृतिक सर्वेक्षण	डा० आदर्श मिश्रा (शोध प्रबन्ध) १९८७
२६.	डा० हरिहर प्रसाद द्विवेदी के साहित्यक कृतित्व का मूल्यांकन	डा० सुखदेव सिंह सेंगर (शोध प्रबन्ध) १९९३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२७.	भिण्ड जनपद के संस्कार गीत	डा० अनीता जैन (शोध प्रबन्ध) १९८९
२८.	रीजनल प्लानिंग फॉर सोशियों इकनोमिक डवलपमेन्ट इन डिस्ट्रिक भिण्ड (एम०पी०) ए प्रोजेक्ट रिपोर्ट, स्पॉन्सर्ड बाई इण्डियन कॉन्सिल ऑफ सोशल साइन्स रिसर्च नई दिल्ली	डा० किशोरी सिंह श्री शाहू जी महाराज कानपुर यूनीवर्सिटी, कानपुर
२९.	जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर	भिण्ड मुरैना के लोक गीत डा० प्रताप नारायण उपाध्याय १९७१
३०.	ग्वालियर सम्भाग के साहित्यकार	डा० सुखदेव सिंह सेंगर
३१.	कामायनी महाकाव्य	जयशंकर प्रसाद
३२.	हिन्दू संस्कार	डा० राजवलि पाण्डेय
३३.	संस्कार विधि	स्वामी दयानन्द सरस्वती
३४.	सोडस संस्कार विधि	पं० भीमसेन शर्मा
३५.	फनकार काजी तनवीर अभिनन्दन ग्रन्थ	पं० सुरेश नीरव, डा० सुखदेव सिंह सेंगर १५ अगस्त २०००
३६.	होलकर राजवंश और आलमपुर	वीरेन्द्र सिंह चन्देल, चन्देल भवन, आलमपुर भिण्ड (म०प्र०) प्रथम संस्करण १९९४
३७.	दैनिक नवभारत टाइम्स	नई दिल्ली २१ नवम्बर १९८१
३८.	आउटपोस्ट साप्ताहिक	भिण्ड गणतन्त्र दिवस विशेषांक १९९८
३९.	डी०एन० वाडिया	जियोलॉजी ऑफ इण्डिया (१९५७) मेकमिलन एण्ड कं० लिमिटेड लन्दन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४०.	अम्बिका प्रसाद अग्रवाल	भू वैज्ञानिक समीक्षा (१९७१) मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
४१.	द नेशनल फॉरेस्ट पॉलिसी ऑफ इण्डिया	१९५२, पृष्ठ - २२
४२.	मध्य प्रदेश सन्देश भोपाल स्वाधीनता आन्दोलन विशेषांक	१५ अगस्त, १९८५
४३.	डा० श्याम बिहारी श्रीवास्तव	दतिया उद्‌भव और विकास
४४.	इन्दौर एडमिनिस्ट्रेटिह्व डिव्हीजन्स एण्ड गजेटियर	चन्देल पुस्तकालय, आलमपुर
४५.	जिला सांख्यिकी पुस्तिका	जिला सांख्यिकी कार्यालय, भिण्ड
४६.	मनोरमा ईयर बुक	१९९१
४७.	सेंसस ऑफ इण्डिया १९६१ तथा १९९१ (मध्य प्रदेश)	सेंसस हैण्डबुक, भिण्ड डिस्ट्रिक
४८.	भारतीय संस्कृतिक का प्राण	डा० सम्पूर्णानन्द (सम्मेलन पत्रिका) १९७३
४९.	संस्कृति और सभ्यता	डा० प्रसन्न कुमार आचार्य, १९७३
५०.	वैदिक संस्कृति के मूल तत्व	पं० श्रीपाद दमोदर सतवलेकर सम्मेलन पत्रिका, १९७३
५१.	त्रेमासिक योग ज्योति	डा० श्याम सनेही लाल शर्मा, योगीराज श्री कृष्णदेव ऋषीश्वर सिद्ध ध्यान योग (लोक न्यास) संस्थान, हाउसिंग कालोनी भिण्ड, म०प्र०
५२.	कैलाश श्रीवास्तव स्मारिका	सम्भाग स्तरीय क्रीडा प्रतियोगिता, १९७६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५३.	रिपोर्ट ऑन रिक्लमेशन वर्क इन एम०पी०	डिपार्टमेन्ट ऑफ एग्रीकल्चरल सॉइल एण्ड वाटर कन्जरवेशन ऑफिस ऑफ द एग्जीक्यूटिव इन्जीनियर मुरैना (एम०पी०) १९७६
५४.	रिपोर्ट ऑन द जिओ हाइड्रोलॉजिकल इन्वेस्टीगेशन इन भिण्ड ब्लॉक डिस्ट्रिक	ऑफिस ऑफ द चीफ इन्जीनियर (इन्वेस्टीगेशन) डिपार्टमेन्ट, भोपाल, १९७८ (एम०पी०)
५५.	रिपोर्ट ऑन द जिओ हाइड्रोलॉजिकल इन्वेस्टीगेशन इन अटेर ब्लाक डिस्ट्रिक भिण्ड (एम०पी०)	ऑफिस ऑफ द चीफ इन्जीनियर (इन्वेस्टीगेशन) इरीगेशन डिपार्टमेन्ट भोपाल, १९७८ (एम०पी)
५६.	रिपोर्ट ऑन द जिओ हाइड्रोलॉजिकल इन्वेस्टीगेशन इन गोहद ब्लाक डिस्ट्रिक भिण्ड (एम०पी०)	ऑफिस ऑफ द चीफ इन्जीनियर (इन्वेस्टीगेशन) इरीगेशन डिपार्टमेन्ट भोपाल, १९७८ (एम०पी०)
५७.	रिपोर्ट ऑन द जिओ हाइड्रोलॉजिकल इन्वेस्टीगेशन इन लहार ब्लाक डिस्ट्रिक भिण्ड (एम०पी०)	ऑफिस ऑफ द चीफ इन्जीनियर (इन्वेस्टीगेशन) इरीगेशन डिपार्टमेन्ट भोपाल, १९७८ (एम०पी०)
५८.	रिपोर्ट ऑन द जिओ हाइड्रोलॉजिकल इन्वेस्टीगेशन इन रौन ब्लाक डिस्ट्रिक भिण्ड (एम०पी०)	ऑफिस ऑफ द चीफ इन्जीनियर (इन्वेस्टीगेशन) इरीगेशन डिपार्टमेन्ट भोपाल, १९७८ (एम०पी०)
५९.	द ज्यॉग्राफी ऑफ दि रैवाइन लैण्डस ऑफ दि भिण्ड डिस्ट्रिक	के०पी०एस० राघव १९६६ यूनीवर्सिटी ऑफ सागर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वास्तुशास्त्र

१.	अग्निपुराणम्	अनुवादक तारिणीश झा, डा० घनश्याम त्रिपाठी १९८६
२.	गुप्तकालीन कल्प एवं वास्तु	पृथ्वी कुमार अग्रवाल
३.	ग्रह निर्माण व्यवस्था	पंडित बद्रीश त्रिपाठी
४.	ज्योतिष एवं वास्तु	विजय तेलवाले
५.	श्री टोडमल्ल विरचितं वास्तु सौख्यम्	व्याख्याकार श्री कमलाकान्त शुक्ल
६.	भारतीय स्थापत्य	डा० द्विजेन्द्र नाथ शुक्ल
७.	भारतीय भवन निर्माण योजना	नन्दकिशोर झाझरिया
८.	भारतीय वास्तुकला	एस०सी० सरदाना
९.	भारतीय वास्तु एवं भवन निर्माण	पं० जगदीश शर्मा
१०.	भारतीय वैदिक वास्तुकला	डा० के०सी० अग्रवाल
११.	भारतीय वास्तुकला एवं वास्तुशिल्प	अशोक कुमार गोयल
१२.	भारतीय वास्तुकला	बृजमोहन दम्माणी
१३.	भारतीय वास्तु एवं भवन प्रारूप	पं० जगदीश शर्मा
१४.	भारतीय वास्तुशास्त्र	डा० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'
१५.	मानसार सीरीज नं० १ से ७ तक	प्रसन्न कुमार आचार्य, १९९५
१६.	मत्स्यपुराणम्	अनुवादक राम त्रिपाठी शास्त्री, १९८८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१७.	नवगृह उपासना और गृह दोष के उपाय	डा० उमेशपुरी ज्ञानेश्वर
१८.	वास्तु रत्नाकर	विन्ध्येशवरी प्रसाद द्विवेदी
१९.	वृहद् वास्तुमाला	पं० रामनिहोर द्विवेदी
२०.	विश्वकर्मा प्रकाश	डा० उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर'
२१.	वास्तुसूत्र	नन्दकिशोर अग्रवाल
२२.	वास्तुकला और भवन निर्माण	डा० उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर'
२३.	वाणिज्य वास्तुशास्त्र	उमेश शास्त्री
२४.	वास्तु विज्ञानम्	उमेश शास्त्री
२५.	वास्तुशास्त्र (प्रकृति नियम और हमारी वास्तुरचना)	ए०आर० तारखेडकर
२६.	वास्तु मंगलम	पं० जगदीश शर्मा
२७.	वास्तुशास्त्र	पवन अग्रवाल, दीपक अग्रवाल
२८.	विज्ञान भारती प्रदीपिका	वास्तुशास्त्र विशेषांक खण्ड - १ विज्ञान भारती प्रकाशन, जबलपुर
२९.	'वृहद्धास्तुमाला' चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला - १२	डा० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पं० स्व० रामनिहोर द्विवेदी
३०.	समरांगण सूत्रधार	डा० द्विजेन्द्र नाथ शुक्ला
३१.	सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र	पं० केवल आनन्द जोशी
३२.	समरांगण वास्तुशास्त्र	वी०के० सक्सेना
३३.	समरांगण वास्तुशास्त्र - भवन निवेश	डा० द्विजेन्द्र नाथ शुक्ला
३४.	सम्पूर्ण वास्तु विज्ञान	डा० भोजराज द्विवेदी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पूर्व

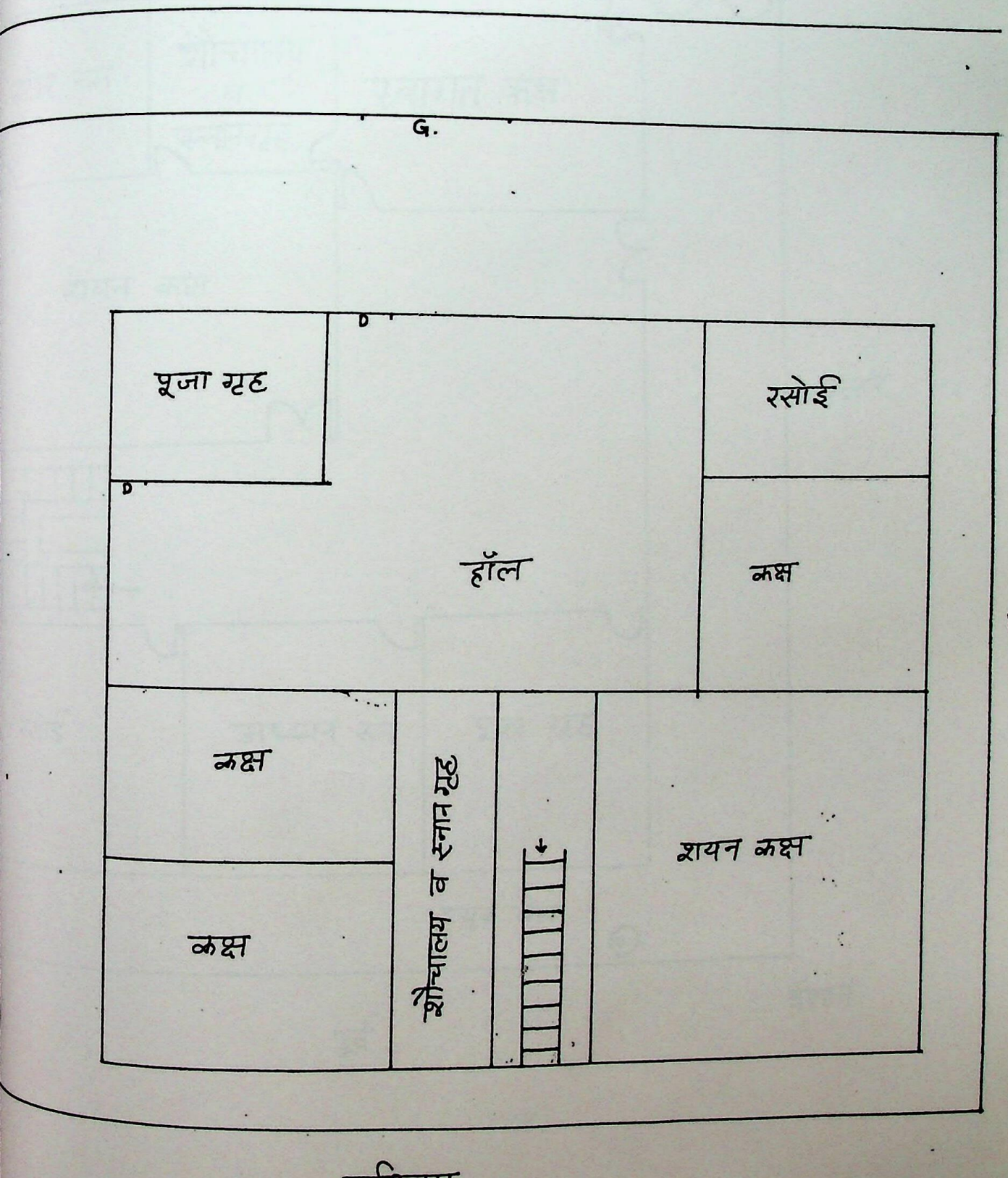

पश्चिम

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

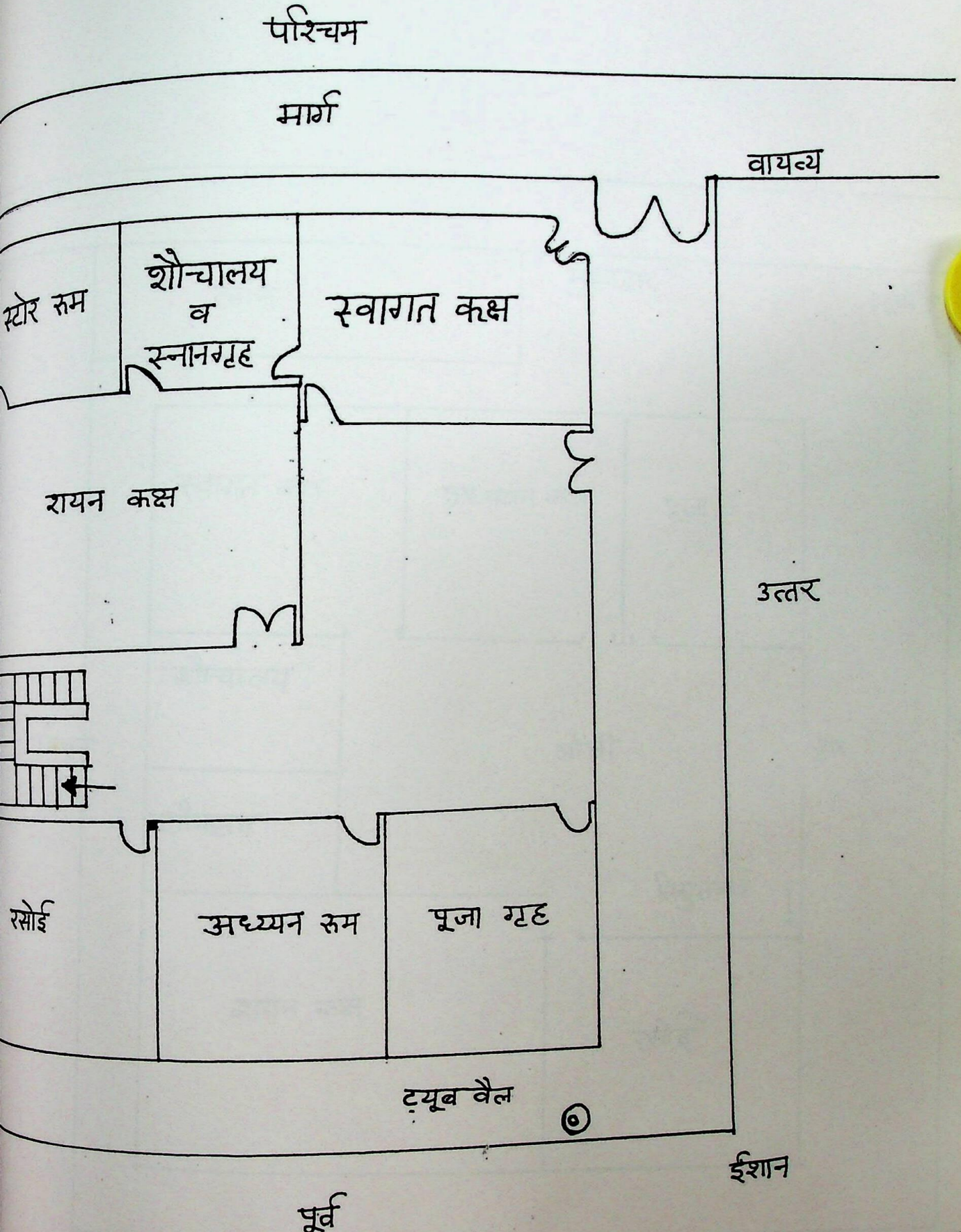

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

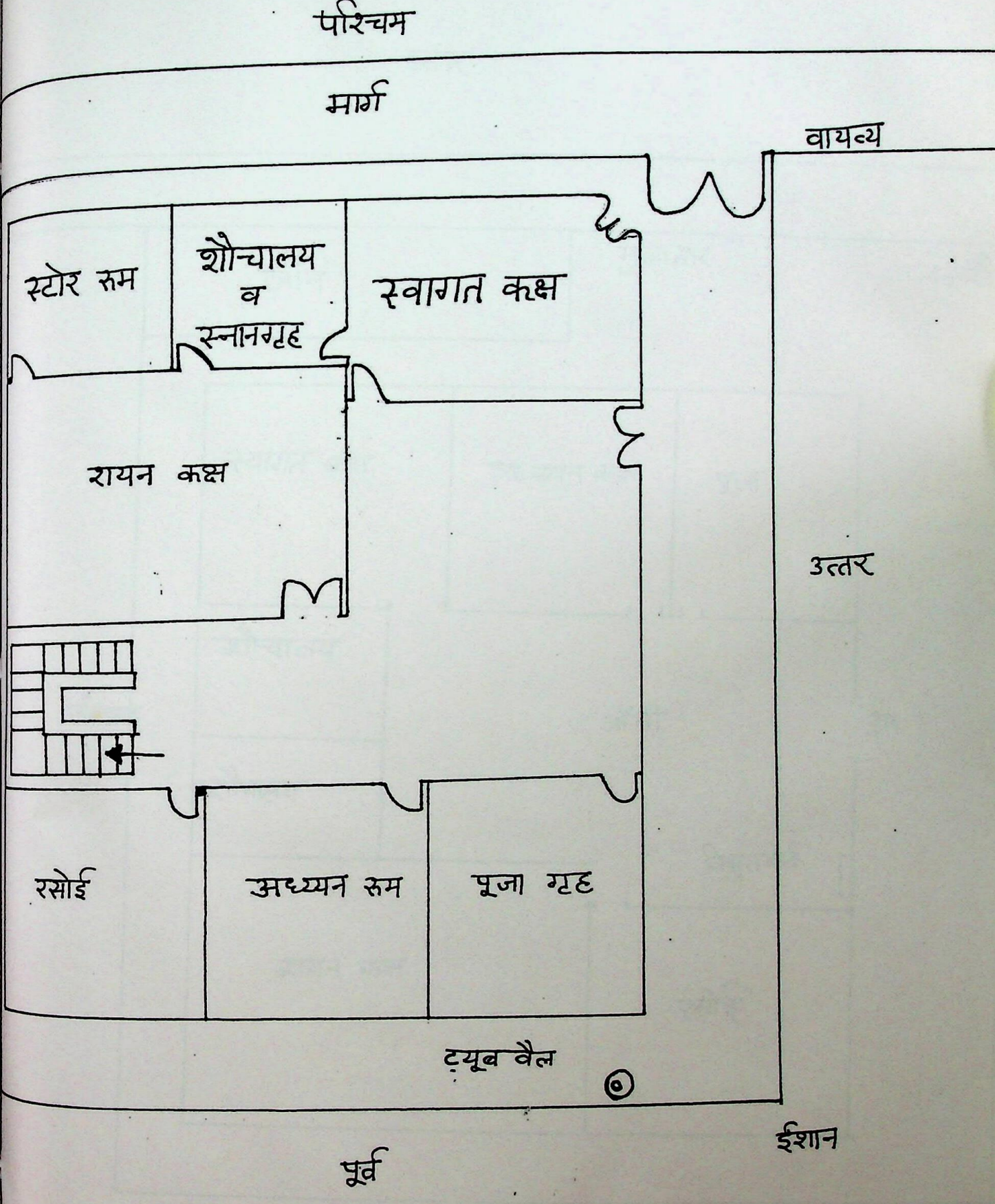

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

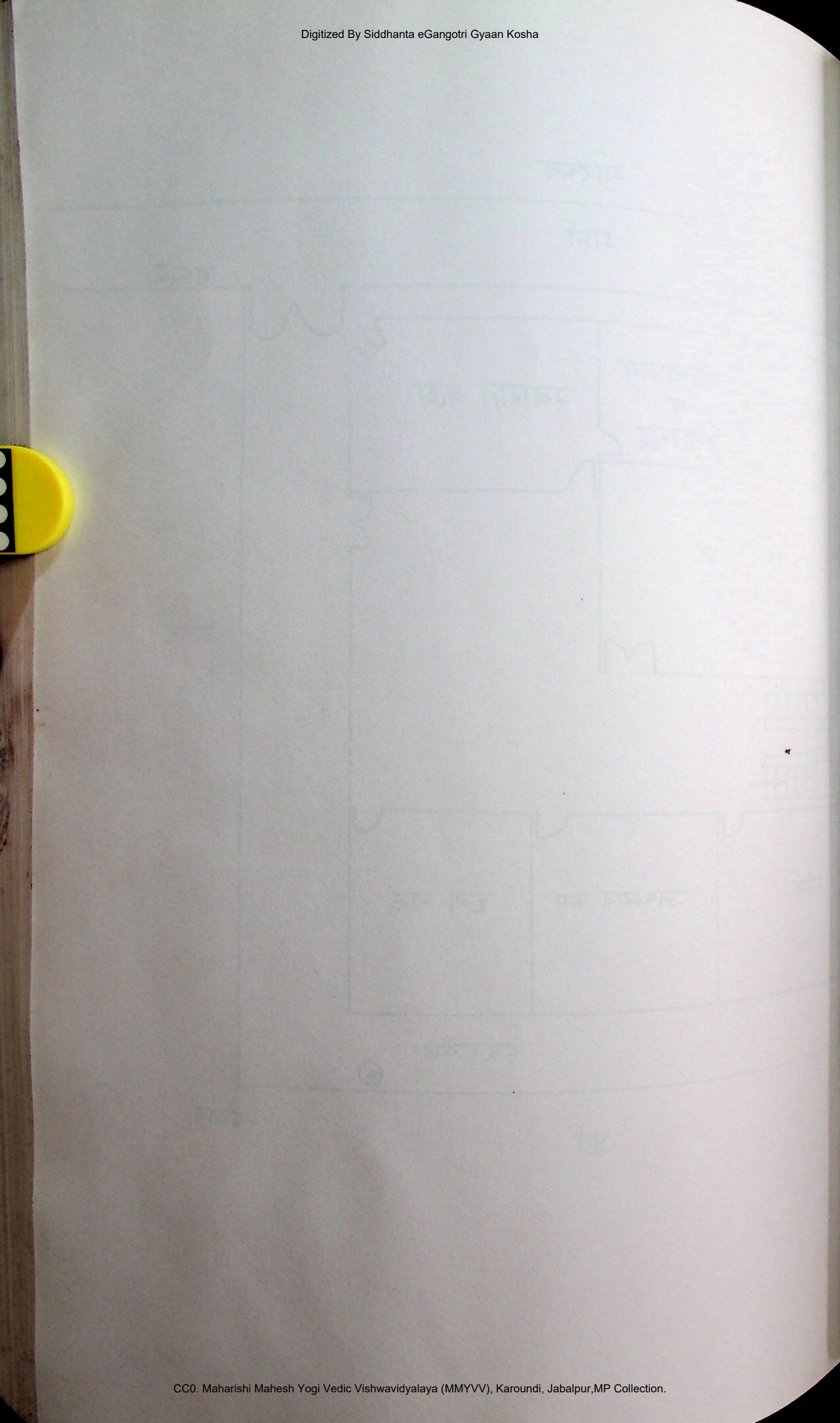

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

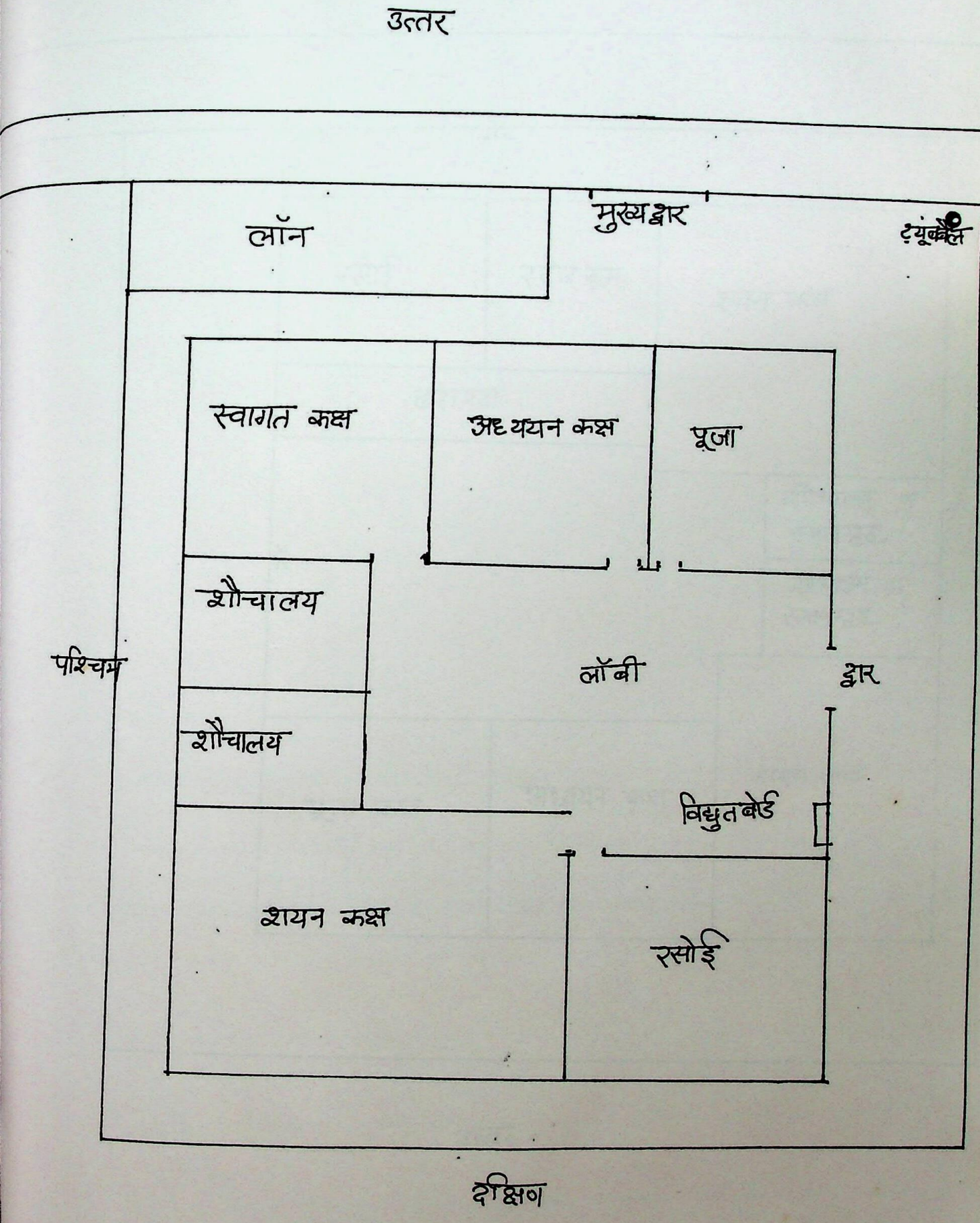

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दक्षिण

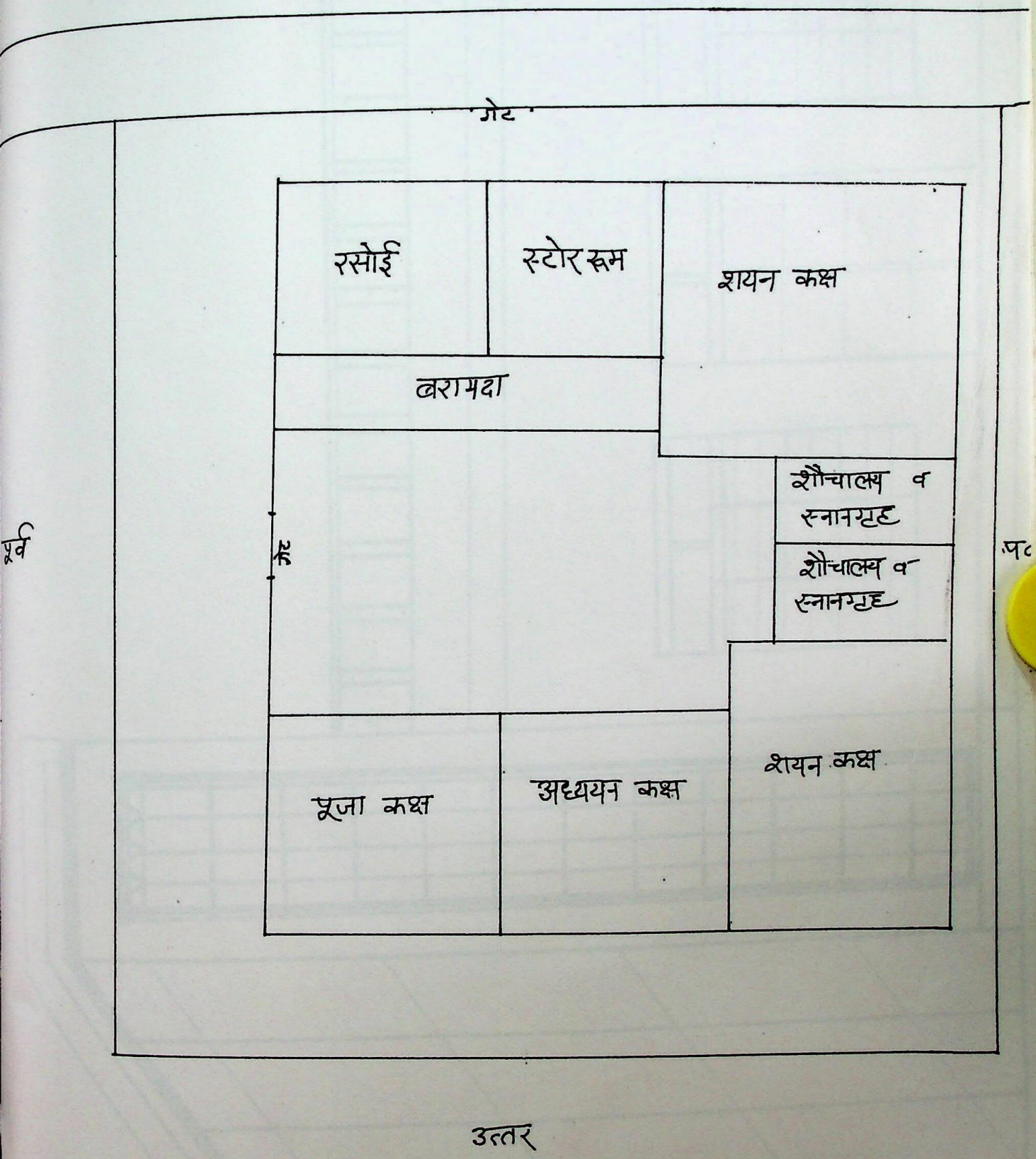

उत्तर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

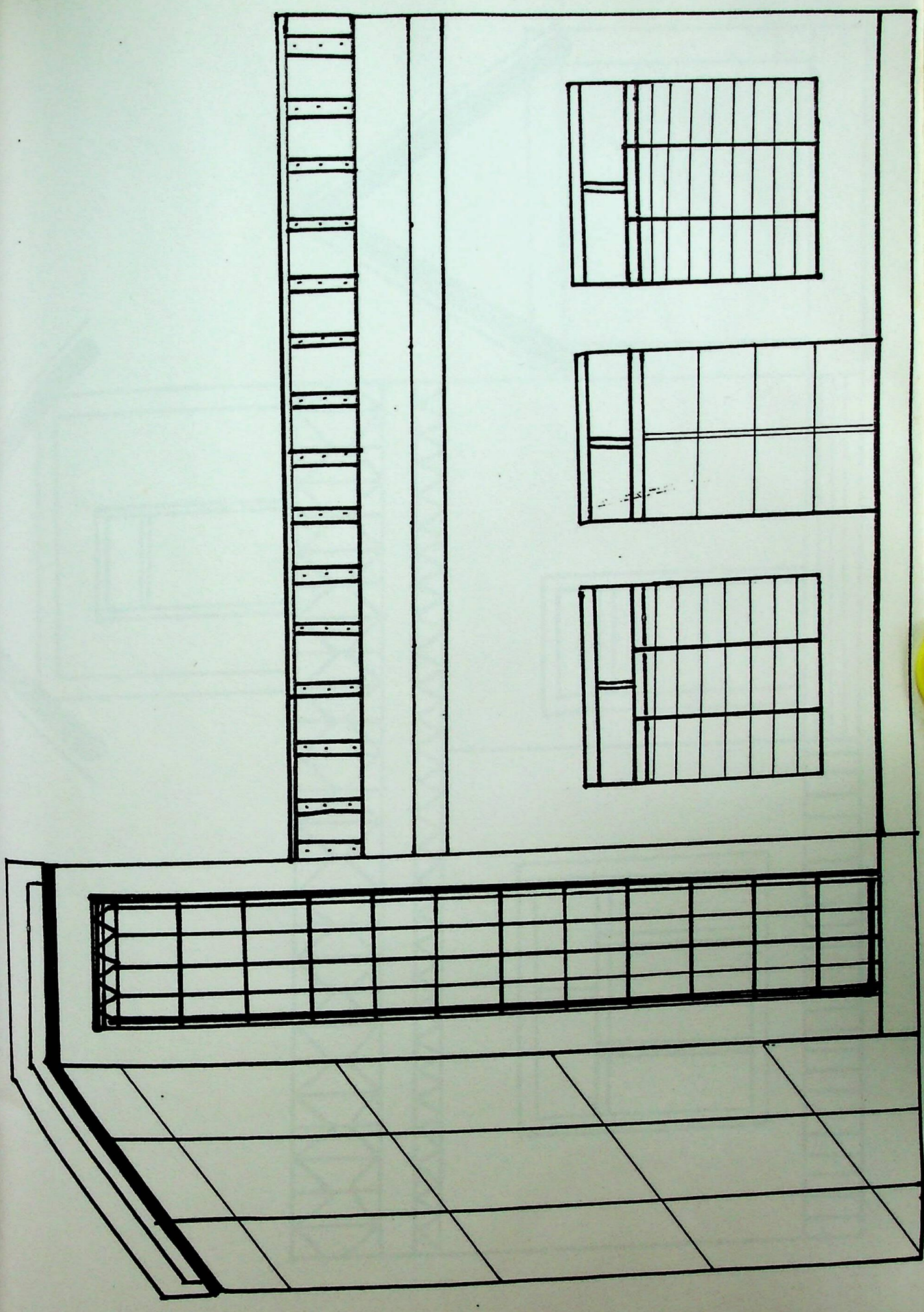

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

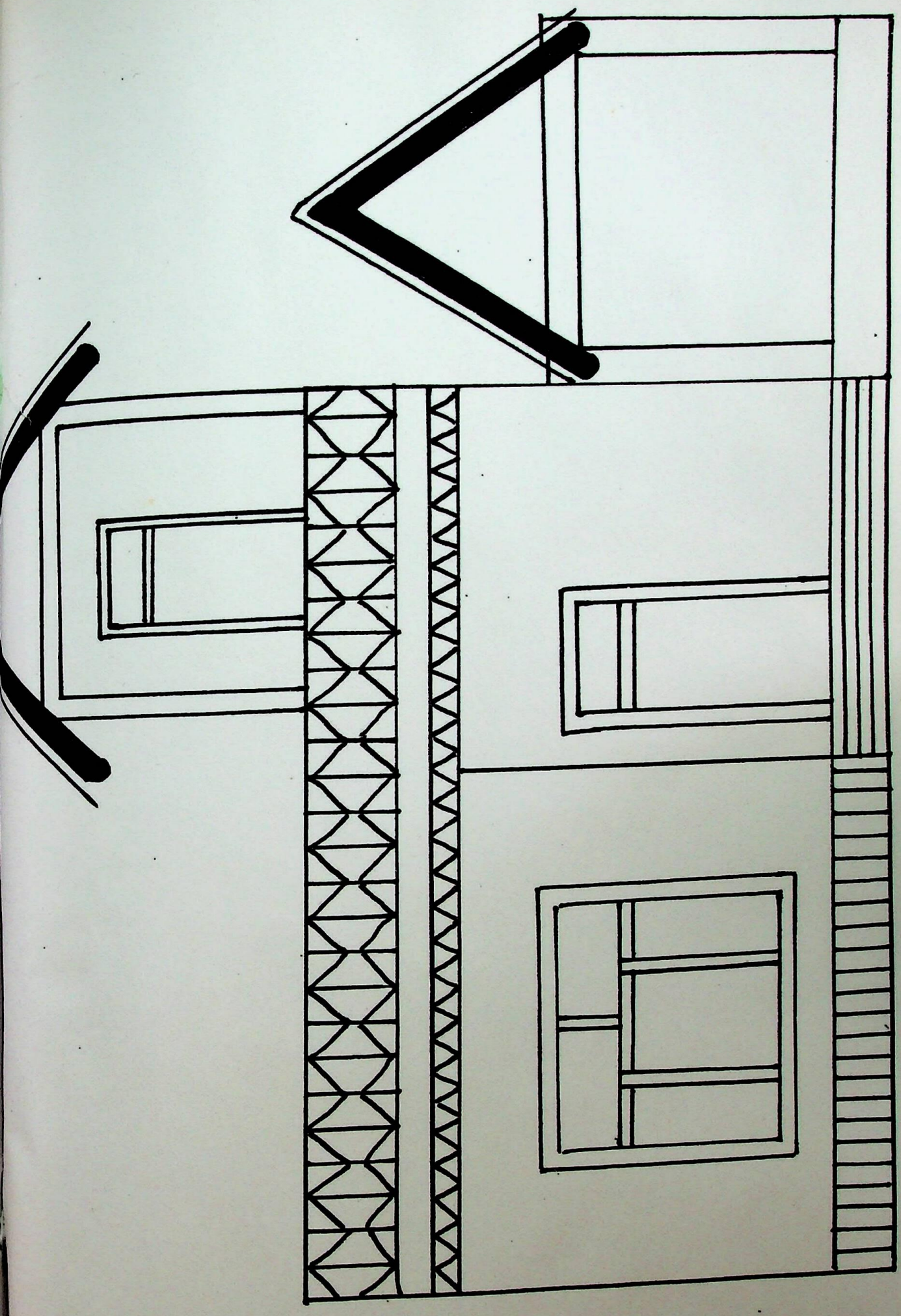

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Maharishi Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vèdic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.